चोट्टि मुंडा
और उसका तीर
महाश्वेता देवी
किफ़ायती संस्करण

राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित महाश्वेता देवी की अन्य रचनाएँ

जंगल के दावेदार

1084वें की माँ

घहराती घटाएँ

भटकाव

अग्निगर्भ

चोट्टि मुंडा और उसका तीर

महाश्वेता देवी

हिन्दी रूपान्तर

जगत शङ्खधर

राधाकृष्ण

करुणा प्रकाशनी, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित बंगला पुस्तक
"चोट्टि मुण्डा एवं तार तीर" का अनुवाद

प्रथम हिन्दी संस्करण : 1981

मूल्य
35 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

अपने पिता
मनीश घटक को—
जो आजीवन संघर्षशील
मानव के प्रति आस्था में
अविचल रहे।

एक

आदमी का नाम था चोट्टि मुंडा। चोट्टि एक नदी का नाम भी है। नदी के नाम पर उसका नाम होने की एक कहानी है। उसको लेकर हमेशा क़िस्से चलते रहते हैं। उसका पुरखा पूर्ति मुंडा जहाँ जाता, वहीं मिट्टी से या तो अबरक निकलती, या कोयला। इसके परिणामस्वरूप उसे लेकर भी उसी तरह बातें चलतीं। पूर्ति अपनी पत्नी-लड़के-लड़की को चाईबासा से पलामू ज़िला ले आया। वहाँ जंगल साफ़ कर रहने का प्रबंध किया। इस बार उसके खेत की मिट्टी के नीचे से निकले पत्थर के औज़ार। उसे लेकर बातें चलीं और अचानक एक दिन अँग्रेज़-बंगाली-बिहारी—तरह-तरह के लोगों ने आकर उसे उसके ठिकाने से हटा दिया। जब प्रस्तर युग के औज़ार मिले हैं, तो उस क्षेत्र पर पुरातत्व विभाग का अधिकार है।

उसका मन टूट गया। उसके मिट्टी खोदने पर कोयला या अबरक क्यों निकलता है और साथ-ही-साथ आ पहुँचते हैं अँग्रेज़-बंगाली-बिहारी लोग। इसका कारण क्या है? उसे कहीं शान्ति से रहने को क्यों नहीं मिलता? वह कैसी ही निर्जन जगह क्यों न जाये, वहाँ की मिट्टी के नीचे से कुछ-न-कुछ ज़रूर निकलता और वहाँ अच्छी-खासी बस्ती बन जाती। उसकी मुंडा धरती और भी छोटी हो जायेगी। उसे तो कुछ नहीं चाहिए। बस, एक छोटा-सा गाँव हो, जहाँ सब बाशिन्दे आदिवासी हों—हरम देवता की पूजा करने वाले। पहान के अनुगत।

उसकी पत्नी ने भी वही बात कही। बोली, "तुम जहाँ जाते हो, वहाँ मिट्टी के नीचे से इधर-उधर की चीजें क्यों निकल पड़ती हैं?"

"चलो, कहीं और चलें।"

उन्होंने चोट्टि नदी के किनारे घर बनाया। नदी का पाड़ पहाड़ की तरह था, वहाँ घर। साँझ को वह नदी में से मछली पकड़ता। एक दिन झुटपुटे में मछली पकड़ने जाने पर वह अचम्भे में पड़ गया—उसके जाल में

जो बालू आयी थी, उसमें सोने के कण थे !

वह रेत पर बैठ गया । कोयला और अबरक देखकर अँग्रेज और बिहारी जिस तरह बड़े लालच में भरकर आ जाते, क्षण-भर में आदिवासियों की जगह को घनी ईंटों और मकानों से भोंडी बस्ती बना देते—यह उसे याद था । सोना देखकर पता नहीं वे लोग क्या करें ! यह पहाड़-जंगल-नदी सब बरबाद हो जायेंगे । बड़े टूटे दिल से उसने फिर अँजुली भरकर रेत उठायी । उसमें भी सोना था । अब उसने अपने मन को स्थिर किया ।

हिन्दू सदान संन्यासी, ईसाई मिशनरी और चाय बागान के कुलियों के ठेकेदार—तीनों ही उसे लेना चाहते हैं । पूर्ति मुंडा कुलियों के ठेकेदार की तलाश में चला । पत्नी-बेटा-बेटी तो ज़िन्दा रहें । जाने के पहले पत्नी से कह गया, 'तेरे पेट में बच्चा है । लड़का हो तो उसका नाम चोट्टि रखना ।'

पूर्ति मुंडा बड़ा अभागा था । ठेकेदार की तलाश में चलते-चलते एक भरे-पूरे हिन्दू गाँव में जाकर वह आम के पेड़ के नीचे सो गया । उसके नीचे से ज़मींदार के चोरी गये बर्तन निकले । परिणामस्वरूप वह पकड़ा गया और जेल गया । जेल से निकलते ही ठेकेदार के पास और फिर मॉरिशस । उसके बाद पता नहीं उसका क्या हुआ । लेकिन उसके वंश के लड़कों के नामकरण में नदी के नाम आते रहे । इसीलिए पूर्ति मुंडा के परपोतों के दोनों नाम नदी के नाम पर थे—चोट्टि मुंडा और कोयल मुंडा । चोट्टि नदी के किनारे ही उनका मकान था । आज भी है । लेकिन पूर्ति मुंडा की आशा पूरी नहीं हुई । सोने की तलाश में बाहर से आकर लोग उस जगह को उलट-पलट कर डालेंगे, इसी डर से वह भागा था । अब उस जगह से तीन मील दूर होकर साउथ ईस्टर्न रेलवे चली गयी है । चोट्टि नाम से एक स्टेशन है । स्टेशन उस जनपद के कारण बना है जिस जनपद में बिहारी, बंगाली, पंजाबी रहते हैं । आदिवासी लोग दूर-दूर पर गाँव में रहते हैं । बरस में एक बार चोट्टि स्थान आदिवासियों से भर जाता है—विजयादशमी के दिन चोट्टि मेला में । उस दिन पच्चीस-तीस गाँवों के आदिवासी उस मेले में आते । बाँस के बनाये आकारों पर कागज़ लगा कर वे लोग बड़े-बड़े बाघ, हाथी, घोड़े बनाते । उनको उठाकर नाचते । लड़कियाँ भी नाचतीं । महुआ की शराब पीते । उस मेले में नाच के आस-पास ग़ैर-आदिवासी मर्दों के जाने का निषेध था । जाने पर बाहरी लोग आदिवासी लड़कियों के साथ असभ्यता कर सकते थे और सूखी घास में आग लगाना सरकार को पसन्द न था । उस तरह की कोई वारदात न हो जाये, इसलिए तोहरी थाने से पुलिस आती । वह नाच सवेरे के ग्यारह बजे से तीन बजे तक चलता । उसके बाद चोट्टि मेला का असली आनन्द शुरू होता । मेला एक

लम्बे-चौड़े मैदान में लगता । उसी मैदान में आदिवासियों की तीर चलाने की प्रतियोगिता होती । टार्गेट क्रमशः पीछे हटा दिया जाता था । अन्त में जो आख़िरी निशाना लगाना होता, वह बहुत ही मुश्किल होता । एक-पर-एक दो बाँसों में लोहे के छल्ले बाँधे जाते । इस तरह के तीन छल्ले रहते । उनके पीछे आँख बना बोर्ड रहता । छल्लों में होकर उस आँख का निशाना लगाना होता था ।

यह तीरन्दाज़ी की बहुत कठिन परीक्षा होती । पुरस्कार होता—आदिवासियों की ओर से एक सूअर । लेकिन इधर कई सालों से थाने के दारोगा पाँच रुपये देते थे । तीरथनाथ लाला पाँच रुपये देते थे, ईंटों के भट्टे के मालिक हरबंस चड्ढा पाँच रुपये देते थे, फलों के व्यापारी अनवर पाँच रुपये देते । हर बरस इस परीक्षा को जीतने के लिए बड़ी प्रतिद्वंद्विता होती । दारोगा हर बरस सोचते, कहीं दंगा न हो जाये । किन्तु हर बरस ही इस प्रतियोगिता के सूअर के साथ और भी दो-चार सूअरों को मारकर सारे प्रतिद्वंद्वी मांस, भात खाकर और मद पीकर रात बिताते । जो लोग जीतते या जो हारते, उनमें झगड़ा न होते देखकर दारोगा को हर बार ताज्जुब होता ।

चोट्टि मुंडा कहता, "झगड़ा क्यों होगा ? एक-एक बार एक गाँव जीतता है । यह तो खेल है । इसमें झगड़ा क्यों होगा ?"

अठारह बरस पहले तक चोट्टि मुंडा ने हर बरस यह प्रतियोगिता जीती । लेकिन अन्तिम बार जब वह जीता तो उस बार उसके वंश के डोनका मुंडा ने फ़ैसला करने वालों से कहा, "यह ठीक नहीं है ।"

"क्या ठीक नहीं है ?"

"चोट्टि मुंडा को मैदान में उतारना ।"

"क्यों ?"

"सब जानते हैं कि उसके तीर मंतर-पढ़े रहते हैं । वह अगर आँख बंद करके भी छोड़े, तो भी तीर निशाना वेध देंगे ।"

"चोट्टि, क्या यह सच है ?"

चोट्टि ने कहा था, "हाँ ।"

उसके बाद सबको अचंभे में डालकर उसने निशान से किसी का तीर उठा लिया । डोनका से बोला, "अपना धनुष तो दे ।"

डोनका के धनुष पर तीर चढ़ा, चिल्ला खींच उसने तीर से कहा था, "बच्चा, अगर निशाना न वेध सका तो तेरी बदनामी होगी, जा तो बेटा, निशानी छेद आ ।"

बात कहते-कहते ही उसने तीर छोड़ा और निशाना वेध दिया ।

डोनका ने घुटना छूकर सम्मान प्रदर्शित किया था। चोट्टि ने कहा था, "जितने लोग न कर सकें, उतने लोगों के धनुक लेकर दिखा दूँगा ! मन्तर पढ़ा तो है। लेकिन देखो, मंतर-पढ़ा तीर नहीं चला रहा हूँ। जिस तीर से निशाना लगाया है, वह मेरे नाती का तीर है। यह बात भी सच है कि मन्तर पढ़ा हुआ तीर पास रहते मैं निशाना नहीं चूकूँगा।"

किसी ने कहा, "तब तो तुम्हारा तीर का खेलना ठीक नहीं है। साठ बरस की उमर हुई, तुम फ़ैसला करने वाले क्यों नहीं बन जाते? एक आदमी तो तुम्हारे समाज से रहता ही है।"

"वही बनूँगा।"

तभी से चोट्टि मुंडा इस तीरों के खेल में निर्णायक बनता है। दारोगा ने कहा था, "तेरा ऐसा हाथ है। अगर कहीं बंदूक चलाता होता तो !"

चोट्टि ने जवाब दिया था, "तीर छोड़ते हैं मरद। गोली चलाते हैं नामरद।"

बात चोट्टि ने कही थी, इसीलिए दारोगा पी गया। चोट्टि की बात क्यों पी ली, उसका एक क़िस्सा है। चोट्टि मुंडा के जीवन में तरह-तरह के कारणों से तमाम क़िस्से हैं।

दो

जिस साल चोट्टि का जन्म हुआ, उस साल चोट्टि नदी में असाधारण बाढ़ आयी हुई थी। बाढ़ के बहाव से पत्थर बह जाते थे। चोट्टि के पैदा होने के साथ ही बाढ़ का ज़ोर कम हुआ। उस समय ब्राह्मण स्टेशन-मास्टर ने कहा कि यह लड़का सामान्य नहीं है।

यह हुई शुरू की कहानी। स्टेशन-मास्टर को पता भी न था कि चोट्टि पैदा हुआ है। मालूम होने पर भी वे उस बात को न कहते। कहने पर भी कोई समझता नहीं, क्योंकि स्टेशन-मास्टर की जीभ थुलथुली थी। बात अटक जाती। वे इशारों से ही काम चलाते थे। ये सब बातें बताना बेकार है। क़िस्सा बहुत दिनों से चला आ रहा है। बाढ़ के क़ायदे से बाढ़ उतर गयी थी। वह बात भी किसी को याद नहीं है।

चोट्टि बचपन से ही ज़िद्दी था। तीर-धनुक में कोयेल का हाथ बहुत पक्का था। लेकिन चोट्टि की हठ थी कि पक्का धानुकी बनेगा, चोट्टि के मेले में लक्ष्य-वेध करेगा। वह जब किशोर था, तब अपनी बहन की ससुराल

गया। वहाँ उसने बहन के ददियाससुर धानी मुंडा को देखा। उसने जब देखा, तब धानी की उम्र निश्चय ही अस्सी-नब्बे की होगी। धानी के पास उसकी उम्र का हिसाब इस तरह था—उसके बचपन से अब तक जंगलों में दो-बार साल गाछ, सागौन के पेड़ पूरी उम्र के और पक्के हो गये थे।

धानी मुंडा बुड्ढा था लेकिन उस पर बुढ़ापा अभी छाया न था। उसने आँखें मटका कर चोट्टि से कहा, "मेरे पास एक मंतर पढ़ा हुआ तीर है। आकाश में अगर दस चिड़ियाँ उड़ी जा रही हों, और मैं तीर से कहूँ कि तीसरी चिड़िया ला दे तो वह ला देगा।"

"सच बात है?"

"सच है या झूठ, यह अपनी उस परमी दीदी से पूछ ले।"

बहन के साथ बकरी दुहाने जाते हुए चोट्टि ने पूछा, "दीदी, उसने जो कुछ कहा, वह क्या सच है?"

परमी बोली, "कोई नहीं जानता। लेकिन वह तीर चलाना ज़रूर जानता है। पर वह अगर तीर छोड़ेगा तो उसे पकड़कर थाने ले जायेंगे।"

"क्यों?"

"सो मुझे नहीं पता।"

चोट्टि बहुत जोश में आ गया। उस समय उसकी उम्र चौदह बरस की थी। सूखा पड़ रहा था। चोट्टि का अंचल जल गया था। परमी का ससुर भला आदमी था। चोट्टि की माँ से बोला था, "तुम लोगों के मैदान में घास नहीं है, नदी के कलेजे की बालू धूप की तपन से हवा में मिलकर उड़ती है। बड़े लड़के को भेज दो। गायें चरायेगा। इस ओर आजकल सूखा नहीं है।"

कोयेल बोला था, "मैं भी जाऊँगा।"

बहन के ससुर ने कहा था, "दोनों को नहीं रख सकूँगा।"

इसी कारण चोट्टि परमी की ससुराल गया। बड़ा गाँव था। रहना राह के किनारे था। थाना मिशन-पुरोहित के आश्रम के पास था। गाँव में कभी यही लोग रहते थे, यह समझने का कोई साधन न था। गाँव में बिहार की दूसरी जातियों की प्रमुखता थी। उच्च वर्ण के ग़रीब और धनी लोग थे। मुंडा लोग दूर रहते थे। उनकी बस्ती भी बड़ी थी। इस गाँव में मुंडा लोग हिन्दुओं के खेत-खलिहान में मेहनत-मजूरी करते। चोट्टि की बहन की सास बकरी का दूध बेचती। यहाँ पर वैसा प्रचंड सूखा नहीं था। चोट्टि बरस-भर रह गया। खूब मेहनत किया करता था। फ़सल होने पर जब परमी का ससुर, उसका पति, देवर, सास—सभी बेगारी देने जाते, उस समय वह अकेले गाय-बकरी दुहता, दूध बाँटता, गाय-बकरियों को

चराता। परमी के सास-ससुर उसका बहुत ध्यान रखते। अफ़सोस की बात है कि उनके कोई अविवाहित लड़की नहीं है। होती तो लड़के को जमाई बना लिया जाता। लेकिन उन दोनों ने चोट्टि से एक बात कही, "धानी मुंडा के पास मत जाना।"

"क्यों?"

"यह मत पूछो। और कभी उससे तीर-धनुक लेने को मत कहना। धानी मुंडा हमारे परदादे का भाई है। फिर भी कहते हैं, उसके हाथों में जब धनुक उठेगा तो मुंडा समाज, मुंडा परिवार पर विपत्ति आ जायेगी।"

ये बातें सुनकर चोट्टि के मन में धानी के प्रति आकर्षण बहुत अधिक बढ़ गया। धानी ने क्या किया है? क्यों उसके बारे में सबके मन में यह भय-मिश्रित सम्मान है?

वह धानी को छिप-छिपकर देखता। धानी दिन-भर कुछ न करता। बलोया-फरसा सभी मुंडा लोगों के पास रहता है। धानी का बलोया बहुत ही पैना था और बलोया की लकड़ी के हत्थे पर कुछ अजीब किचिर-मिचिर लिखा हुआ था। दिन-भर लकड़ी काट-काटकर धानी मुंडा बच्चों को सुंदर खिलौने बनाकर देता। किसी से बोलता न था। अपना भात खुद राँध लेता। वह घाटो नहीं खाता था। गाँव के लुहार दाव, साग-मछली काटने की बैरी, छुरी-बलोया-हँसिया-दराँती-कुदाल-खुरपी बनाते। लुहारखाने के सामने बैठकर धानी सबके लकड़ी के हत्थे और मुट्ठे बना देता। उसने यह बढ़ई का काम कहाँ से सीखा था?

परमी कहती, "किसी को पता नहीं।"

धानी बहुत ही गण्यमान्य व्यक्ति था। लुहारखाने के सामने शिरीष के पेड़ की छाया में उसे न देखकर धानी की खोज में थाने से कांस्टेबल चला आता। जो पुलिस हाट में पैसा लेती, मालिक-महाजन के घर होली-दीवाली पहुँचती, वही सर्वशक्तिमान पुलिस धानी के पास आकर बड़े कोमल स्वर में कहती, "क्यों रे धानी, कई दिन से दिखायी क्यों नहीं पड़ा?"

"मन दुख रहा था।"

"धानी! जानता तो है सब-कुछ। कहीं जाना मत, बाबा! मेरी नौकरी चली जायेगी। बुढ़ा गया है। थोड़ा समझकर चल।"

"तेरी नौकरी, तू जाने।"

"दुहाई तेरी।"

"जिस दिन तबीयत होगी, मंतर के बल से ग़ायब होकर चला जाऊँगा।"

"जाना मत, धानी!"

"हाट में मुंडा लोगों पर जुलुम कर पैसे क्यों लेता है?"

"किसने कहा?"

"मैंने कहा। दारोगा से कहना होगा। तुलाई के पैसे उठाकर मुंडा लोगों को खफा करने पर फिर...। समझा? तब दारोगा को भी जवाब देना पड़ेगा। हाँ, मैं मुंडा लोगों को नाराज नहीं करूँगा। लेकिन गौरमेन भी चाहती है कि नये जुलुम हों और मुंडा लोग बिगड़ जायें।"

नये जुल्म नहीं, पुराने जुल्म ही होते रहते। कौन-सा जुल्म नया और कौन-सा पुराना था, इसे चोट्टि नहीं समझता था। समझता कि परमी के ससुर सभी फ़सलों में महाजन के यहाँ बेगार देने जाते।

"कहाँ जा रहा है?" धानी गरज उठा, "बेगार देने?"

"हाँ, दादा!"

"बेगार देने जा रहे हो? तुमको मालूम नहीं—वह जिन तमाम जुलुमों के लिए लड़ा था, उनमें बेगारी भी एक था।"

"वह नहीं, दादा! उसका नाम तुम भूले जा रहे हो।"

"हाय बीरसा! अभी पंद्रह बरस भी नहीं बीते हैं। जुलुम के डर से मुंडा उसी तरह काँपते हैं।"

धानी घर से निकल गया। दीदी ने दोपहर में चोट्टि से कहा था, "घर के लोगों के बुलाने से वह नही आयेगा। तू बुला ला।"

"कहाँ गया है?"

"जंगल में।"

"तू मुझे उसकी बातें क्यों नहीं बताती? कहाँ खोजूँ? बुला लाऊँगा, तब खायेगा?"

"हम लोगों का खाना नहीं खाता है।"

"तो देखूँ।"

चोट्टि धानी की तलाश में निकला। उसे तलाशने जाने के मामले ने उसे एक नये और महत्वपूर्ण क़िस्से के साथ बाँध दिया।

चोट्टि मुंडा के जीवन में सारा कुछ एक-एक क़िस्सा था। मुंडा जीवन की और कहानियों की तरह यह कहानी भी महाकाव्य-सी थी। पृथ्वी किस तरह बनी, वह पृथ्वी सेंगेल दा की आग में किस तरह जल गयी थी, दो नर-नारी किस तरह बच गये, किस प्रकार नयी पृथ्वी की सृष्टि हुई—मुंडा जीवन में यह चिरकाल से चली आती कहानी थी। मुंडा जीवन का

महाकाव्य बीस बरस पहले उत्पन्न हुआ था, यह चोट्टि को नहीं पता था।

धानी ने उसे बताया। धानी के साथ उसका जो सम्बन्ध बन गया, उसके परिणामस्वरूप चोट्टि भी महाकाव्य के नायकों की तरह विशाल और संभावनापूर्ण था।

यह 1915 के साल की कहानी है। तब चोट्टि की उम्र पंद्रह थी। खोजते-खोजते उसने धानी को घने जंगल में पाया था। एक गढ़ैया के किनारे पत्थर पर धानी बैठा था। चोट्टि को देखकर उसने नज़र उठायी।

चोट्टि ने उसके पैर पकड़ लिये।

"पैर क्यों पकड़ता है ?"

"मुझे तीर चलाना सिखा दो।"

"मैं ?"

"हाँ, तुम तीरन्दाजों के हरमदेउ हो।"

"क्यों सीखना चाहता है ? तीर तो सारे मुंडा चलाते हैं। मैं तुझे कौन-सी नयी विद्या सिखाऊँगा ?"

"मैं चोट्टि मेला में जीतना चाहता हूँ।"

"ओहो, इसलिए ?"

"तो क्या यह बेकार की बात है ?"

चोट्टि का दमकता चेहरा देखकर धानी सहसा हँसा था। बोला था, "कैसे सिखाऊँ ? तीर उठाने पर पुलिस फिर मुझे जेहल में डाल देगी !"

"क्यों ?"

"ये सब बड़ी बातें हैं। बातें बताना चाहता हूँ लेकिन सुनने वाला आदमी नहीं है। यहाँ के मुंडा लोगों की तो कमर टूट गयी है, दिकू लोगों की दया पर रहते हैं। मुझे चाईबासा में रहने न देंगे। वहाँ मेरी बातें सुनने वाले आदमी अभी हैं लेकिन वहाँ रहने नहीं देंगे।"

"कौन नहीं रहने देगा ?"

"गौरमेन।"

"क्यों ?"

"वह एक पुराना क़िस्सा है। तू तो मुंडा है। तुम सब लोगों के लिए दुनिया में एक आदमी आया था—धरती का आबा। बीरसा भगवान।"

"उसकी कहानी तो मुझे मालूम है।"

"मालूम है ? किसने बतायी ?"

"मेरी माँ के आबा ने। मेरे नाना ने।"

"उसका क्या नाम है ?"

"हारा मुंडा। बड़ा बलोया[1] हुआ था। उसी में बीरसा भगवान मर गये थे। उसके बाद पुलिस ने बड़े ज़ुलुम किये। उसके बाद नाना राँची से यहाँ चले आये। बस, और कुछ नहीं मालूम।"

"मैं, धानी मुंडा, उसका साथी था।"

"तुम ! तुम तो बूढ़े हो।"

"तो क्या हुआ ?"

"तुमने उसे देखा था ?"

"बहुत दिनों तक। जेहल में भी खटा। उसी कारण घर से अलग हूँ और इसी से मेरे लिए हाथ में तीर लेना मना है।"

"क्यों ?"

धानी, मानो बात न कर पा रहा हो इस प्रकार असह्य कष्ट से बोला, "वे जानते हैं कि मैं तीर में हरमदेउ हूँ। वे सोचते हैं कि मैं तीर उठाऊँगा तो फिर उलगुलान[1] का नारा लगाऊँगा।"

"मैं किसी से बताऊँगा नहीं।"

"उलगुलान ! कहाँ क्या है ? कहाँ छोटे-से गाँव पर कब्ज़ा ? कहाँ महाजनों के खाते नहीं हैं ? कहाँ बेगार नहीं है ? कहाँ मुंडा सुख से हैं ? फिर भी इन्हें डर लगता है। मेरे तीर उठाने से पुलिस उन पर ज़ुलुम करेगी। मैं यहाँ नहीं रहूँगा।"

"कहाँ जाओगे ?"

"उससे तुझे क्या ? जा, जा, यहाँ से जा।"

उस दिन चोट्टि चला आया। लेकिन जब तक यह बेगार चलती रही, उतने दिन धानी तड़के निकल जाता मानो मुंडा लोगों की बेगार उसे सहन न होती हो। अपना काम-काज निबटाकर चोट्टि उसके पीछे-पीछे फिरता। इस बीच एक दिन बड़ा शोरगुल हुआ। परमी की सास बोली, "कल से मैं नहीं जाऊँगी, मेरे लड़के नहीं जायेंगे।"

"क्यों ?" धानी को कुतूहल हुआ।

आदिवासी समाज में बुड्ढे-बुढ़ियों का बहुत सम्मान है। परमी की सास बोली, "तुम उमर में सबसे बड़े हो। तुम सोचकर कहो, मैं क्यों जाऊँ ?"

"जाती तो थी !"

"क्यों जाती थी ? तुम्हारे भाई, इस लड़के के बाप के परदादा के कारन। तुम लड़ाकू थे, तुमने गौरमेन को अपने भाई-बाप-लड़के का

1. मुंडा लोगों के आंदोलन।

परिचय नहीं दिया। तुम्हारा भाई कैसा था ?"

"मुझे पता नहीं। मैंने जिसे भाई माना, वह कोई नहीं है। तेरी तरह मैंने किसी जगह धरती में बीज नहीं बोये। साँउताल के हूल[1] में मैं कहाँ गया था, कहाँ सरदारों की लड़ाई में धनुष-बाण उठाया था, आज याद नहीं आता। यह भगवान सिखा गये हैं कि खून का संबंध ही सब-कुछ नहीं होता।"

परमी की सास सूखी और गंभीर आवाज़ में बोली, "वह पता है। तुम्हारे आगे नहीं कहती, लेकिन मन में तुम्हारे लिए गरब रख रखती हूँ, और कुछ नहीं कहती, क्योंकि पुलिस के जुलुम करने पर कहीं ठाँव नहीं है।"

"अब बता भी।"

"तुम्हारे भाई ने कब किस अकाल में दस कच्चे सेर चावल लिये थे, उसके लिए बेगार दिया, उसके लड़के ने, मेरे ददिया ससुर ने, मेरे ससुर ने। हम देते सो नहीं दी। देखें, तो हमारी जमीन जरा-सी है। दो दिन की छुट्टी चाहिए, धान काटेंगे, सो छुट्टी नहीं देगा। न दे छुट्टी, मैं नहीं जाऊँगी। जो करना हो करे। तुमसे भी कहे दे रही हूँ, भगवान का उलगुलान अगर होता, तो मुंडा बच जाते। बचे ? बताओ।"

धानी ने सिर हिलाया। उसके बाद बोला, "तुम लोगों का महाजन भला नहीं है। महाजन भले नहीं होते। और सब बेगार दे रहे हैं, तेरे अकेले न देने से लाभ नहीं है। फिर यहाँ सब हिन्दू रहते हैं, आदिवासी कहाँ हैं ? अकेले लड़कर मारी जायेगी ?"

"हिरन धान खाये जा रहे हैं।"

"नहीं खायेंगे।"

"क्यों ? हिरन क्या भले हो गये हैं ?"

धानी बोला, "यह भी नये जमाने की रीत है। पहले नहीं मालूम था कि बूढ़े आदमी के कुछ कहने पर बेटे की बहू जवाब देगी।"

दूसरे दिन धानी ने परमी से कहा, "घर से चावल लेकर भात राँधके रखना। मैं और चोट्टि धान काटेंगे। दोपहर को चोट्टि आकर हम दोनों का भात ले जायेगा। देख, जाल में खरगोश पकड़ा है। मांस पकाना।"

उस समय भी जंगल बहुत था। खरगोश-बराह-हिरन-साही-तीतर-फ़ाख़्ता थे। मांस की कमी न थी।

बीघे-भर ज़मीन थी। धानी और चोट्टि ने धान काटे। पहले दिन धान

---

1. आंदोलन।

काटने के बाद धानी बोला, "रात में हम लोग मचान पर रहेंगे। नहीं तो जितने हिरन हैं उतने ही मोर हैं।"

चोट्टि को अचानक धानी का साथ, सहकर्मी की हैसियत मिली। ठंडी-ठंडी अगहन की रात में तारों भरा आकाश जब चोरी से धरती के आस-पास उतर आया, जाजपुर के राजा के जंगल में हाथी बाँस के पेड़ को तोड़ रहा था। ऐसे अलौकिक समय में धानी चोट्टि से बोला, "तीर चलाना सीखेगा ? इस अँधेरे में मतवाला हिरन धान खा रहा है। उसे मार सकता है ?"

"दिखायी नहीं देगा !"

"अपना धनुक दे।"

धानी मचान पर खड़ा हो गया। उसने ज़रा-सा झुककर तीर छोड़ा। बोला, "कल उसे खींचकर ले जाना होगा। मांस खायेंगे। चल, पास चलकर पहरा दें। नहीं तो भेड़िया आकर खा जायेगा।"

चोट्टि को यह सब जादू-मन्तर का खेल लगा। लेकिन हिरन तो सचमुच का था। अच्छा-ख़ासा चीतल था। दोनों वहाँ बैठ गये। धानी बोला, "मैं तो चला ही जाऊँगा, पर तुझे सिखा जाऊँगा।"

"मेरा धनुक छोटा है।"

"अच्छा !"

"हाँ। जंगल में छिपाकर रख दिया है। मेरा बलोया हाथ में ले। बेंट पर उँगलियाँ फेर।"

"कौन-सा नक़्शा खुदा है ?"

तारों के प्रकाश में धानी अरण्य की दुर्जय आत्मा की तरह हँसा। बोला, "भगवान ने अपने हाथों से नाम लिख दिया है। यह उनका नाम है। पढ़ना तुझे नहीं आता, मुझे भी नहीं आता। जरूरत भी नहीं है। इस पर उँगलियाँ फेरने से तेरे हाथों में भी मन्तर आ जायेगा।"

"आ जायेगा ?"

"जरूर।"

"तब ?"

"तब तू चोट्टि मेला में जीत जायेगा ? तेरे समय में भगवान नहीं हैं, उलगुलान नहीं है, मुंडा लोगों का जीवन बदल जाये, इसके लिए कलेजे में आग नहीं है, उस आग की गर्मी से महाजन-पुलिस-सिपाहियों को तीर से वेधना नहीं है, चोट्टि का मेला है। गौरमेन ने मुंडा जाति को इस तरह भुला रखा है।"

हिरन किसने मारा यह सब लोग समझ गये, लेकिन किसी ने कुछ

कहा नहीं। धान की कटाई हो जाने पर धानी ने कहा, "कागजी धान से तुम लोगों की कितने दिन की खूराक होगी? मिर्चा लगाओ, उसमें पैसे जादा मिलते हैं।"

परमी का ससुर बोला, "जमीन लाला लोगों की है। अच्छी फसल न होगी इसलिए मुझे दे रखी है। जब पता चलेगा कि मिर्चें हो रही हैं तो ले लेंगे। मिर्च होती है यह हमें भी पता है। जानकर भी कुछ कर सकने की राह नहीं है। यह जो धान हो रहा है, वही अच्छा है।"

"सारी जमीन मुंडा और उराँव लोगों की बसायी हुई है।"

"वह तुम्हारे जमाने में थी। हमने कभी नहीं देखा कि मुंडा और उराँव जमीन के मालिक हों। कब से वह दिकू लोगों की ज़मीनें हैं।"

"हमने ही क्या देखा है!"

"अब और भी जुलुम होते हैं। हिरन का मांस सभी खायेंगे, मजे आयेंगे। मुंडा लोगों को नाच-गाना करते देख कर भी वे डरते थे। पुलिस यों आती है कि उसे देखते ही बनता है। पुलिस वाले आने पर खायेंगे, रहेंगे, जाने-आने का खर्च लेंगे।"

"लड़ाई खतम नहीं हुई?"

"तुम्हें पता है, तुम्हारे नाती के बेटे जुजुहातू में रहते हैं?"

"इसके जानने से मुझे क्या फ़ायदा?"

धानी को जैसे कहीं कुछ याद आ रहा था। वह चोट्टि को जंगल ले गया। वह जंगल को अपनी माँ कहता था। कहा, "तुझे जंगल पहचनवा दूँ। जंगल पहचान लेने पर भूखा नहीं मरेगा। जंगल में क्या नहीं है?"

धानी के साथ रहना-सहना कितनी मूल्यवान जानकारी थी। तभी चोट्टि ने सीखा कि किस लता की जड़ में मीठा कन्द होता है, किस गढ़ैया में मछली है, किस तरह फंदा लगाकर हिरन पकड़ा जाता है। मोरों के नाच की विशेष जगह से गिरे हुए पंख कब लाये जाते हैं और उन्हें बाजार में बेचा जाता है।

"तीर चलाना नहीं सिखाओगे?"

"वन में लाल और काली घुंघचियाँ हैं। घुंघचियों से कुचला विष बनता है...।" धानी के अन्दर कहीं बहुत जल्दी थी, नहीं तो वह चोट्टि को इतनी बातें क्यों सिखाता भला? चोट्टि तो ग़रीब मुंडा किशोर है। बहन के घर इसलिए आया था कि अकाल वाले बरस दो कौर खाकर रह जायेगा। उसके जीवन का एकमात्र स्वप्न था चोट्टि मेला में तीर चलाकर जीतना।

धानी उसे सारे पुराने विद्रोहों की बातें तोते की तरह सुनाता। चाईबासा के स्कूल में जब बीरसा विद्यार्थी था, उस समय धानी ने ही उससे कहा था, "तू धरती पर आबा बनने के लिए ही पैदा हुआ है।"

हमेशा का पगला धानी साँउतालों के हूल विद्रोह में बीस बरस का लड़का था। खरुसआ का विद्रोह, सरदारों की मुल्की लड़ाई और अन्त में बीरसा का विद्रोह। युद्ध और लड़ाई भी एक नशा है। मुंडा लोग शांति से अपने अधिकार के लिए जंगल की उपयुक्त जमीन पर गाँव बसाकर खेती करेंगे और दूसरे आदिवासी भी वैसा ही करेंगे, इसी के लिए सारे विद्रोहों में वह गया था। लेकिन खेती करने वाले शांत मुंडा लोगों को देखकर वह समझता कि यह शांति उसे नहीं चाहिए। महाजन, गौरमेन और दिकू लोगों से मुक्त किसी अंचल में जाने पर भी शांति मिलती या नहीं, यह नहीं पता था, क्योंकि आदिवासियों का वैसा जीवन भारत में कहीं नहीं है। उसे बहुत अकेलापन लगता। फिर इक्यासी बरस के बूढ़े धानी मुंडा के हाथों में धनुक देखते ही पुलिस चौकन्नी हो जायेगी। कहीं मुंडा लोग फिर कोई गड़बड़ न खड़ी कर दें। सारा मामला बहुत ही पेचीदा था।

तीर के मामले में सबसे जरूरी चीज एकाग्रता है। एक लक्ष्य पर स्थिर होना और तीर छोड़ना। "वह देख, पका फल लटक रहा है। गिरा दे उसे। वह देख हिरनों का झुंड। मार तो नर को। शिकार की बातें सुन। जब मारेगा तो एक तीर से घायल करेगा। बेकार के लिए कष्ट नहीं देगा। चिल्ला खींचने में हाथ क्यों काँपता है?"

धानी को भी कहीं किसी चीज की प्रेरणा थी। चोट्टि को बीच-बीच में क्रूरता से मारता। कहता, "इतने जतन से तो सिखाता हूँ और तू सब भूल जाता है? पेड़ से फल को गिरा। डाल में तीर क्यों लगा?"

जिस दिन चोट्टि ने शाम के झुटपुटे में हरे पत्तों की ओट से हरे हारियल को मारा, उस दिन धानी बोला कि तेरा होगा।—उस दिन मचान पर बैठे-बैठे धानी बोला, "चोट्टि, सो गया?"

"नहीं, तारे देख रहा हूँ।"

"उत्तर में वह तारा देख, वह हिलता-डुलता नहीं। जंगलों-पहाड़ों में उस तारे को देखकर हम राह की पहचान करते थे।"

"देखा है।"

"टेसन पर पुरोहित ब्राह्मण लोग महाभारत गा रहे हैं, सुन रहा है?"

"हाँ।"

"तीरों का युद्ध था।"

"हाँ।"

"उन तीरों को चलाना हिन्दू देवी-देवताओं ने कहाँ से सीखा?"

"कहाँ से ?"
"हम से।"
"हम से ?"
"हाँ।"
"याद रहेगा।"
"चोट्टि मेला में जीतने के लिए तीर चलाना सीखने के लिए जादा दिन नहीं हैं। लेकिन खाना या न खाना, तीर जरूर चलाना। अभ्यास न रहने से विद्या चली जाती है।"
"चलाऊँगा।"
"वह सीख जाने पर असली विद्या सिखाऊँगा।"
"सिखाओगे ?"
"हाँ, सीखने का अन्त नहीं। अब अँधेरे में नजर दौड़ाना सीख। देख, खेत के किनारे कितने पेड़ हैं।"
"तीन।"
"नहीं, पाँच हैं। सवेरे देखना। अँधेरे में देखना सीखना पड़ेगा। अँधेरे में जंगल में चलना सीखना होगा।"
"क्यों ?"
"पता नहीं। चाहता हूँ कि तुझे सिखा जाऊँ। मैं अब थोड़े दिनों का मेहमान हूँ। और कौन मुंडा लड़का मुझसे तीर चलाना सीखने आयेगा ?"
"तुम क्या मर जाओगे ?"
"हूल नहीं है। मुल्की लड़ाई नहीं है। उलगुलान नहीं है। भगवान ने कहा था, धानी, मैं फिर मुंडा माँ के पेट से पैदा होऊँगा। उसका भी कोई चिह्न नहीं। मुंडा लोग अब सिर झुकाये बेगार देते हैं, महाजनों के हाथों मारे जाते हैं। तमाम जगह रेलें बिछ गयी हैं, पुलिस चौकियाँ हैं, राजा-महाजन-दारोगा के जुलुम हैं—इनका अन्त नहीं है। अब दुनिया में मेरा मन नहीं लगता, चोट्टि !"
"तुम मरना मत।"
"तुझे असली विद्या सिखाकर मरूँगा।"
सच तो यह था कि धानी के साथ रहने की बात ऐसी उत्तेजक और आनन्द देने वाली थी कि चोट्टि के मन में मेले में तीर चलाने की बात धीरे-धीरे गौण होती जा रही थी। तीर चलाना सिखाने का काम पूरा करने के लिए धानी को बहुत मेहनत करनी पड़ती। सवेरे परमी आदि के जोते हुए खेत पर खेती का काम करता। दोपहर से जंगल में चोट्टि को शिक्षादान चलता। शाम होते-होते लुहारखाने के आगे बैठना पड़ता। नहीं

तो पुलिस खोज करने के लिए घर पर आ धमकती।
उस समय भी इस रेल-मार्ग पर अधिक गाड़ियाँ नहीं चलती थीं। आस-पास उस समय भी बहुत घना जंगल था। मारवाड़ी ठेकेदारों ने पत्थर तोड़ मोरम बजरी को चालान करना शुरू नहीं किया था। जंगल विभाग ने साल के पुराने जंगल को काटना शुरू नहीं किया था। इससे जानवर बहुतायत में थे। राजे-ज़मींदार भी बहुत-से थे। निजी जंगल भी बहुतेरे थे। चोट्टि के तीर चलानासीखने के कारण हिरन-साही का मांस खूब खाने को मिलता। परमी का ससुर भी खुश था। धानी अब इन लोगों के साथ ही खाता।
लेकिन वह भात खाता था। कहता था, "घाटो नहीं खाऊँगा रे। भगवान मुंडा-दिकू लोगों की तरह भात खाने के लिए लड़े थे। जिन कारणों से लड़े थे, उनमें यह भी एक कारण था।"
जंगल के बीच एक छोटी-सी. उपत्यका थी। उस पर घास छायी हुई थी। पेड़ों पर धानी चूने से आँख बना देता। चोट्टि तीर चलाता। धानी दूरी बढ़ा देता। कहता, "चोट्टि, जल्दी-जल्दी सीख ले।"
उस दिन दो पेड़ों के बीच में एक पेड़ पर बनायी आँख पर चोट्टि ने निशाना लगाया। उस दिन धानी बोला, "बस। अब रोज अभ्यास करने पर तू चोट्टि मेला में जरूर जीत जायेगा।"
"अब असली विद्या सिखाओ।"
"सिखाऊँगा।"
'सिखाऊँगा' कहने के साथ ही धानी मानो क्षण-भर के लिए बदल गया। ज्यों असंभव रूप से वह हजारों-लाखों बरस का बूढ़ा हो गया। इतनी उम्र हो जाने पर बुढ़ापा खाल से झरने लगता है, उसी तरह जैसे विषाणगढ़ के हिन्दुओं के देवता के मंदिर में। सात सौ बरस बीत जाने पर भी मंदिर पर खुदे आदमी-वानर-हाथी-पक्षियों की उम्र बढ़ती नहीं। धानी उस तरह का हो गया। धीमी आवाज में जैसे किसी से बोला, "मैं अब अकेला नहीं रह सकता। मेरा समय आ गया।"
उसके बाद वह पहचाना हुआ धानी हो गया। चोट्टि से बोला, "दो दिन रुक जा। एक काम की बात समझ लूँ।"
"जल्दी करना पड़ेगा।"
"क्यों ?"
"होली पास आ रही है। सभी लोग जंगल में शिकार खेलेंगे।"
"दो दिन बीतने दे। तू जा। मैं थोड़ा अकेला रह लूँ।"
"अकेले-अकेले तुम कान लगाकर क्या सुनते हो ?"

साँस छोड़कर धानी बोला, "किसी का रोना सुन रहा है ?"

"नहीं तो !"

"वह सुन सकता था।"

"कौन ?"

धानी ने उस बात का जवाब न दिया। बात को आगे बढ़ाकर बोला, "जंगल रोता है। उससे कहता था, दिकू-मालिक साहब—सबने मिलकर मुझे अशुच, नंगा, बिना कपड़ों का कर दिया। बीरसा, तू मुझे शुद्ध कर दे। चोट्टि, किरिया खा, तुझसे जितनी बातें कही हैं, किसी से नहीं कहेगा ?"

"नहीं कहूँगा। तीर छूकर किरिया खाता हूँ।"

किरिया लेने के साथ-ही-साथ चोट्टि की समझ में आया कि उसकी उम्र बढ़ गयी है। धानी की बात पर गोपनीयता रखकर चलना—वह दुस्सह भार उसे ही उठाना पड़ेगा।

दो दिन बाद धानी बोला, "आज चल।" वह चोट्टि को वन की गहनता में ले गया। बोला, "सामने देख।"

दो दिन में धानी ने आदमी का एक पुतला बनाया था। पेड़ के आगे आदमी का पुतला खड़ा किया।

"चोट्टि, उसे अच्छी तरह देख।"

"देख तो रहा हूँ।"

"असल शिक्षा यही है, चोट्टि।"

"आदमी को किसलिए मारूँगा ?"

"बीच-बीच में मारना पड़ता है।"

धानी की आवाज़ में कोई परेशानी की बात थी। उसके पास समय नहीं था, बिलकुल समय नहीं था। सिदू-कानू के हूल के समय वह जवान था। हूल से खारुआ के, खारुआ से मुल्की लड़ाई, मुल्की लड़ाई से उलगुलान, एक विद्रोह से दूसरे विद्रोह पर चलते-चलते, कुचला विष खुरचते-खुरचते, 1915 में उसकी उम्र इक्यासी हो गयी थी। अब वह बहुत परेशान था। चाईबासा से निष्कासित। "धानी मुंडा इज़ नाट टू एंटर चाईबासा पोलिस स्टेशन एरिया ऑन द पेरिल ऑफ़ हिज़ डेथ।"[1] और धानी मुंडा केवल वहीं रहना चाहता था। अभी भी वहाँ वे सब गाँव हैं, जहाँ वह बीरसा की लड़ाई में शामिल होकर लड़ा था। धानी उलगुलान का 'बोलपे-बोलपे' गीत सुनना चाहता है। बीरसा का दत्तक पुत्र परिवा,

1. धानी मुंडा अपनी मौत का ख़तरा उठाकर चाईबासा पुलिस स्टेशन में प्रवेश नहीं करेगा।

मंत्रशिष्या साली को देखना चाहता है। बीरसा के अन्तिम युद्ध-क्षेत्र डोमबारी पर्वत पर सैलराकार में मरना चाहता है।

धानी मुंडा यहाँ बहुत ही अकेला और सूना-सूना अनुभव करता है, लेकिन चोट्टि ने उससे तीर चलाना सीखना चाहा था। असल शिक्षा उसी को सिखा कर चला जायेगा मानो कहीं किसी की पुकार है, वक़्त नहीं है। धानी अब समझ सकता है कि अवसर पर वह जीवित रहने की तरह जीवित रहा था। वह समय अतीत हो गया है। मुंडा लोग किसानी करने वाले हैं। धानी कभी भी वैसा नहीं था। अपनी जाति के लिए वह एक शान्तिमय जीवन छीन लेगा। उसी के लिए लड़ाई है, लेकिन जिसके लिए लड़ाई है, वह नहीं मिला। चोट्टि को सिखाया जाये। चोट्टि को फूस के आदमी को वेधना सिखा कर वह उसे क़िस्सा-कहानियों के मुंडा जीवन के साथ गूँथ कर जाना चाहता है। लेकिन चोट्टि ने क्या कहा था ?

"बीच-बीच में आदमी को क्यों मारना पड़ता है ?"

"हमने मारे थे।"

"क्यों ?"

"यह निश्चय कर कि घाटो नहीं खायेंगे, महाजन-दिकू-पुलिस के जुलुम नहीं मानेंगे। आबादी जमीन और किराये पर उठायी खेती के गाँव पर दखल करेंगे, जंगल का अधिकार लेने के लिए।"

"लिया था ?"

"न। कुछ नहीं मिला। हम लोगों को एक आदमी ने राह दिखायी थी। हम लड़े थे। तुम लोगों को कोई राह दिखा सकता है। सब कारण तो बचे ही रह गये, चोट्टि ! अगर वैसे दिन आयें तो तू भी मारना। और हाँ, धानी मुंडा का नाम लेकर मारना। उससे मुझे शान्ति मिलेगी।"

"आदमी मारूँगा ?"

"अगर दरकार हो तो।"

"तुम्हारे...तुम्हारे हाथों में क्या है ?"

"मेरा धनुक, देख। छाती में मारूँगा, इस तरह से। जा, तीर ले आ। बहुत दामी तीर है। देख, तुझे दिखाये जा रहा हूँ। वह फूस के आदमी के पीछे पेड़ पर एक पंछी है। हारियल। पंछी को यह मारा। उस पंछी का झुंड आकाश में है। कई मारूँ ? अपना तीरकमान दे। तू देख। बहुत-से पाखी हैं, घर में बहुत-से खाने वाले हैं। अब देख, फिर आदमी की छाती पर मारता हूँ। ले, धनुक उठा।"

एक ही दिन नहीं। एक-एक कर अनेक दिन। अन्त में धानी ने कहा था, "और जो होगा, अभ्यास से होगा। जीवन के आरंभ में जो सीखना

होता है, इतनी जल्दी नहीं होता।"

"तुम कहीं जाओगे?"

"क्यों? यह क्यों पूछ रहा है?"

धानी सावधान हो गया था। चोट्टि को क्या पता कि वह लौट जाना चाहता है साली के पास, परिवा के पास, जहाँ शान्ति है।

"होली में शिकार खेलूँगा न? सबको अचंभे में डाल दूँगा।"

"होली में? देखें।"

"महाजन मद देगा, रंग देगा।"

"और क्या करेगा?"

"महाजन के घर के आगे नाच होगा।"

"सब जायेंगे?"

"सब।"

धानी की आँखें धुँधली हो गयीं। मामूली-सा हँस कर वह बोला, "तब तो होली का मज़ा देखकर जाना होगा।"

"हाँ।"

होली का दिन आ पहुँचा। धानी ने कहा, "जा, शिकार खेलने जा। आज की बात याद कर तुझे अपना यह तीर दिया।"

"अपना तीर? मुझे?"

"हाँ। बहुत मज़बूत तीर है, सैलराकार में यह तीर लिया था! इस तीर को पास रख, चोट्टि, जब तक बहुत ही ज़रूरत न हो मत छोड़ना। इसको पास रखने पर कभी भी कोई तुझे हरा नहीं सकेगा, पर अभ्यास चालू रखना।"

"जरूर।"

मुरुडि में उस दिन होली की मस्ती थी। हिन्दुओं की होली थी। आदिवासियों का शिकार का उत्सव था। शिकार के बाद मद पीकर गान और नाच। महाजन ने आदिवासियों को शराब दी थी। अंत्यज गाँव वालों को रंग दिये। चोट्टि ने एक दाँतों वाला वराह मारा था। उसकी खूब वाह-वाही हुई। सबके शिकार लेकर गाँव लौटने में शाम हो गयी। धानी घर पर न था।

धानी जो घर छोड़कर निकला तो फिर न लौटा। पुलिस आती, खोज-ख़बर लेती। चोट्टि को मालूम था कि धानी अब न लौटेगा।

चोट्टि मुंडा के जीवन की एक और कहानी थी बीरसा भगवान के साथी धानी मुंडा के साथ दोस्ती। कहानी का उपसंहार चोट्टि ने बाद में सुना था। मुरुडि लौट जाना बाद में हुआ।

कहानी किंवदन्ती की तरह थी, जैसे कि किंवदन्ती सदा किसी-न-किसी जगह किसी-न-किसी तरह घटित होती रहती है। इस तरह चीज़ों के घटित होने से ही इतिहास आगे बढ़ता है। किंवदन्ती ऐसी थी कि धानी मुंडा उसी से अमर हो गया। उसका भूखा और लड़ाकू अस्तित्व महाकाव्य के समान विशाल और विशिष्ट हो गया।

किंवदन्ती इस प्रकार थी।

बीरसा मुंडा के नेतृत्व वाले मुंडा विद्रोह के मुक़दमे में अभियुक्त और जेल काटने वाला असामी धानी मुंडा राँची जेल में सज़ा काट रहा है। निकलने के बाद उसे राँची और चाईबासा से बाहर रहने की आज्ञा देकर पलामू भेजा गया, टाहाड़ थाने के अधीन मुरुडि गाँव में। मुरुडि में पुलिस चौकी है। धानी ख़तरनाक असामी है। उसके बारे में चौकी को सावधान कर दिया गया। उसका नज़रबन्दी की हालत में रहना ही अच्छा था, क्योंकि वह जेल में पड़े बीरसा के 'मैं फिर लौटकर आऊँगा' जैसे प्रलाप पर विश्वास करता था। मरे हुए के प्रलाप पर विश्वास करना ख़तरनाक है। धानी के हाथों में किसी हथियार का रहना भी ख़तरे की बात थी। खासकर तीर-कमान। कुछ दिन इस तरह रख सकने पर धानी समय के नियम से मर जायेगा।

धानी के ग़ायब होने से मुरुडि पुलिस चौकी और टाहाड़ थाना बड़ी मुसीबत में पड़ गया। किसी भी तरह उसका पता न चला और राँची और चाईबासा को सावधान कर दिया गया। मुंडा लोग अपने घर में मरना अच्छा मानते हैं। धानी क़ायदे से अलग क़िस्म का आदमी था। चाईबासा उसका घर नहीं था और जिन्हें वह छोड़कर गया था वही उसके अपने थे। लेकिन चाईबासा कभी उसका कर्मक्षेत्र था। धानी कहाँ जा सकता है? पंद्रह बरस पुराने खाता-पत्तर खोजने पर बहुत-से गाँवों के नाम मिले। उन सारे काग़ज़ात को उलटते-पुलटते अचानक अधिकारप्राप्त अफ़सर को रोशनी की एक किरण दिखायी दी। चाईबासा मिशन के मुंडा भाषा जानने वाले एक उत्साही फ़ादर थे। वे बोले, बीरसा की मृत्यु के दिन बीरसा के साथ के पुराने योद्धा सैलराकार जाते हैं और उसे याद करते हैं छिपकर। इसलिए धानी कहाँ जा सकता है, उसके लिए और लंबा-चौड़ा इलाक़ा नहीं है। समझ लिया जाये कि जेजुड़ थाना ही उसके जाने की जगह के सबसे पास का थाना है। जून महीने में बीरसा की मृत्यु का दिन जिस तरह समीप आता जाता है, बहुतेरे धानी मुंडा पकड़े जा सकते हैं। 'धानी' नाम बहुतों का है। अफ़सोस की बात है, पकड़े जाने वालों में कोई भी वह असली धानी मुंडा नहीं है। बहुत जोश दिखाने वाली पुलिस, और तो

और, हार।पीटकर दस-बीस धानी मुंडा पकड़ लाती है और थाने के मुंशी को परेशानी में डाल देती है। धीरे-धीरे लगता है कि सारी घटना गढ़ी हुई कहानी है।

सब लोग फिर ऊब गये और एक दिन शाम को जेजुड़ के हाट में बड़ी चहल-पहल हो उठी।

धानी मुंडा आ रहा है! सिपाही ने बताया। हेड कांस्टेबल को लेकर दारोगा मुनेश्वर सिंह फ़ौरन चल पड़े और एक ग़ैर-मामूली दृश्य देखा। देखकर डरते हुए बन्दूक निकाली।

एक हाथ में बलोया और दूसरे हाथ में धनुष सिर की ऊँचाई तक उठाये एक कमज़ोर और पकी देह का वृद्ध मुंडा बढ़ रहा था। उसके दोनों ओर आदिवासी जनता थी। उसने हाँक लगाकर कहा, "मैं धानी मुंडा हूँ। मुझे भगा दिया था। मैं फिर आ गया हूँ। कहाँ है थाना? मैंने कोई भी थाना नहीं देखा। मैं कोई भी रुकावट नहीं जानता। मैं आ गया हूँ।'

"ठहरो, रुको।" मुनेश्वर सिंह चीखे।

धानी बिना दाँत के मुँह को कँपा कर बच्चों की-सी खुशी में हँसा और बोला, "कोई भी पुलिस मुझे रोक नहीं सकती। मैं आ गया हूँ, मैं वही धानी मुंडा हूँ।"

"धानी मुंडा! धानी!"

"तू डोनका है!"

"धानी!"

"तू वही खोया मुंडा है।"

"धानी!"

"अरे कनू! साली कहाँ है? परिवा कहाँ है?"

बूढ़े खुशी के साथ बूढ़ों से बातचीत करते रहे। मुनेश्वर सिंह एक और मुंडा विद्रोह की संभावना देख रहे थे। धानी बड़े उल्लास से बलोया और धनुष शून्य में घुमाकर नाचते हुए बोला, "मैं घर लौट आया हूँ। नीचा होकर बैठूँ, धूल खाऊँ, घर की धूल खाऊँगा। घर की धरती में भात की सुगन्ध है। मिट्टी खाऊँगा!"—सचमुच धरती में मुँह रगड़ डोनका रो पड़ा, धानी हँसता था और रोता था। मुनेश्वर सिंह ने धानी के सिर पर गोली चलायी।

इस तरह देश-निकाले की आज्ञा की उपेक्षा के परिणामस्वरूप खतरनाक धानी मुंडा की मृत्यु हुई और जिनकी लिखित भाषा नहीं है, उन सारे मुंडाओं ने धानी की कहानी को वीरता की कहानी के साथ मिलाकर गान बनाकर धानी को अमर बना दिया।

कहानी पुलिस के द्वारा मुरुडि पहुँची और क्रमशः चोट्टि को पता लगा। चोट्टि के जीवन के साथ इस तरह एक कहानी और जुड़ गयी। चोट्टि मुंडा के जीवन में सब-कुछ एक-न-एक कहानी थी।

तीन

चोट्टि मुंडा के जीवन में सब कहानियाँ हैं। मुंडा लोगों की भाषा की लिपि नहीं है। इसीलिए महत्वपूर्ण घटनाओं की कहानी बनाकर वे किंवदन्ती बना देते हैं, गाना बनाकर रखे रहते हैं। वही उनका इतिहास भी है। धानी मुंडा का समाचार पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार मुरुडि पुलिस चौकी पर ठीक-ठीक पहुँचा।

चोट्टि ग्राम में क्रम से समाचार पहुँचा : बीरसा भगवान जब जेहल में थे, इस बात को अकेले धानी मुंडा जानता था कि भगवान फिर लौटकर आयेंगे। उनके शरीर का मरण है, लेकिन उनकी आत्मा का विनाश नहीं हो सकता है। वह धरती के आबा हैं, पृथ्वी के जनक। धानी यह जानता था। भगवान की देह मर जाती है। धानी जेल में मेहनत करता है।

धानी तुम जेहल से निकले
पुलिस के बड़े साहब ने आँखें लाल कर कहा,
राँची और चाईबासा में तुम्हारे लिए रोक है
धनुक और तीर तुम उठाओगे नहीं।
राँची और चाईबासा में आओगे नहीं
जब तुम जेहल से निकले
पुलिस के बड़े साहब ने यह बात कही॥
धानी, तुम जेहल से निकले
एक आग के तीर ने तुम्हें राह दिखायी,
तुम मुरुडि में आये
जहाँ जेहल से निकले थे॥
मुरुडि में तुम जिसके यहाँ ठहरे वे पुण्यात्मा हैं
मुरुडि का जल-आकाश-माटी पवित्र हो गये हैं
धानी, मुरुडि में तुम्हारे रहने से
धानी, तुमको धरती के आबा ने पुकारा है
उनकी देह के मरण के दिन सैलराकार में

वे अपने शिष्यों को खोजने आते हैं।
वे पहाड़ को कँपाकर हाँक लगाकर कहते हैं,
किसने मुझे याद रखा है, कौन भूल गया है
कौन है उलगुलान के लिए दीवाना मानुस !
तुमको धरती के आबा ने पुकारा ।।
तुमने कहा, आ गया—
काले मेघ पर बैठे थे तुम
मेघ चला चला आया जेजुड़—
जेजुड़ के हाट में तमाम मानुस हैं !
वे बोले, राब, जौ का सत्तू खाओ—
जब तुम जेजुड़ आ गये।
तुमने कहा, घर की मिट्टी मेरा गुड़ है,
तुमने वह मिट्टी हाथ में ली
माटी राब बन गयी—
उस माटी को खाकर काले मेघ पर सवार होकर
तुम साँय-साँय कर चले गये डोम्बारि
सैलराकार के पाथर में मिल गये ।।
दारोगा रोकर कपाल ठोंककर लौट गया
तुम सैलराकार में मिल गये ।।
हाँक लगाकर बोले, धरती-आबा की देह के मरण-दिन
उसके गले से गला लगाकर मैं तुमको पुकारूँगा
आः ! सैलराकार के पत्थरों पर अब जो फूल खिले हैं
वह फूल तुम हो ।।

इस तरह, क़िस्सा और गीत बनकर धानी चोट्टि मुंडा के पास लौट आता है। जब तक नहीं आता, चोट्टि नदी की ओर देखकर पत्थर बना रहता। जब उसने धानी को तान और क़िस्से में लौटा पाया तब वह पत्थर से फिर मानुस हो गया।

चोट्टि मेला के दिन चोट्टि मुंडा भी गया। बूढ़ा सुगाना मुंडा आदि-वासियों की ओर से न्याय करनेवाला था, वह पहान भी था।

हाटवालों के बिसातवाना रखने के माचे पर चटाई बिछाकर निर्णायकों का आसन बनाया था। सुगाना, दारोगा, लाला बैजनाथ निर्णायक थे, इनाम देने वाले। प्रतियोगिता शुरू हुई। चोट्टि को देखकर सुगाना बोला, "तू बिसरा मुंडा का लड़का है ?"

"हाँ, पहान।"

"तू तो छोटा है रे।"

"एक बार कोशिश करने दो।"

"चोट्टि गाँव में जवान लड़के नहीं हैं ?"

"वे भी हैं।"

"एक तीर क्यों ?"

"हो सका तो एक तीर से निशाना मार दूँगा।"

"पहले खेला में उतरेगा ?"

"आखिरी खेला में।"

"आ, उतर जा। गाँव का नाम डुबायेगा।"

चोट्टि ने गाँव का नाम नहीं डुबाया। वह पीली धोती पहने था। कुसुमी फूलों के पीले रंग में उसने धोती रँग ली थी। बालों में लकड़ी की कंघी थी। उसने तीर को धनुक पर चढ़ाकर मन-ही-मन धानी को याद किया। धानी की बातें भूल जानी होंगी। तू है, और निशाने पर आँख है।

केवल वह आँख।

चोट्टि ने तीर छोड़ा।

आँख की मणि में वह तीर लगा।

खुशी, आश्चर्य, उल्लास। चोट्टि को लेकर चोट्टिग्राम के मुंडाओं का नाच। रात। सूअर का मांस बन रहा है। भात खदक रहा है। चोट्टि के कलेजे में रुलाई का सागर टूट रहा था। उसके बाप बिसरा ने उसके हाथ में मद का पात्र दिया। बोला, "आज से तू जवान हो गया। मरद ! अब तेरा ब्याह कर दूँगा।"

तभी पहान, सुगाना मुंडा ब्याह का प्रस्ताव लाया। उसकी एक नातिन है। चोट्टि को वह बहुत पसन्द आयी। बहन के घर खा-पीकर उसका चेहरा खूब निखर गया था। जिस तरह का साहस था, उसी तरह दिमाग़ ठंडा था।

"मेरे घर कुछ नहीं है।"

"किसके घर क्या रहता है ?"

"जमीन से दो महीने की भी खुराक नहीं होती।"

"वह उसका भाग्य है।"

"तुम्हें अच्छा वर मिल सकता है।"

"अच्छा वर, मैं चाहता हूँ, घर के पास दूँ। नातनी को मादा सूअर, मादा बकरी दूँगा। फिर उसकी हैसियत ठीक हो जायेगी।"

बिसरा ने साँस ली। बोला, "उसकी माँ से पूछूँ ?"

"तुम्हारे बेटे को क्यों चाहता हूँ ?"

"तुम जानो।"
"लड़का साधारण नहीं है। नदी के नाम पर उसका नाम है।"
"वह तो वंश का एक नियम है।"
उसके बाद...मुरुडि में...सब कहते हैं कि लगता है उसने धानी मुंडा से कोई मंतर सीख लिया है।
"इस बात को छोड़ो। धानी मुंडा ! मेरे बेटे की बातों में उसका नाम क्यों लेते हो ? कोई मुसीबत लानी है ? पुलिस पकड़ बुलायेगी।"
"नहीं, नहीं।"
"तुम्हारा उधर ध्यान क्यों गया ? धानी था बीरसाइत, और बीरसा भगवान तो पहानों को नहीं मानते थे ?"
"फिर भी...!"
चोट्टि लोगों के समाज में माँ का सम्मान बाप के समान था। चोट्टि की माँ ने सब-कुछ सुनकर पति से कहा, "बात बुरी नहीं है। पहान के साथ दारोगा, लाला, ठेकेदार, जंगल के बाबू—सभी का अच्छा संबंध है। हमें तो कहने को कुछ भी नहीं है, पूर्ति मुंडा को सोना मिलने की कहानी एक सम्पत्ति की तरह है, चोट्टि का मंतर पढ़ा हुआ तीर अब नयी सम्पत्ति बन रहा है।"
"वह क्या ?"
"सभी कहते हैं कि तीर में मन्तर था। मन्तर। असल में उसका हाथ बहुत पक्का है। हिरन मारता है, पाखी मारता है, हमें मांस खाने को मिलता है, इससे सब चिढ़ते हैं। नहीं तो तीर में कैसा मन्तर ?"
"तो ब्याह की बात ?"
"होने दो।"
"समाज को भोज देना होगा।"
"उधार ले लेंगे।"
"उधार ले लेंगे ! वंश में किसी ने नहीं लिया।"
"सभी लेते हैं।"
"उधार लेने से चुकती नहीं होता।"
"पता है।"
"मकान-जमीन छोड़कर निकलना पड़ता है।"
उनका पहान भरत मुंडा बोला, "अच्छी जमीन होने पर महाजन कर्जा देता है। तेरी वह जमीन बेकार है, महाजन उधार न देगा। उस जमीन पर दखल करने से उसे फायदा ?"
"तब कोई आसान बात बताओ।"

"ब्याह हो। भोज बाद में देना।"
"जो तुम कहो वही होगा।"
"लड़का कहाँ है ?"
"जो काम करना होता है वह करता है, नहीं तो वन में धनुक-बाण चलाता है।"
"इस बार तो तुम्हें बहुत मिला।
"सो तो मिला। दस रुपये।"
"क्या किये ?"
"चोट्टि की माँ ने गाय मोल ले ली, और...।"
चोट्टि की माँ बोली, "कनू मुंडा ससुराल चला जायेगा। वहीं रहेगा। उसकी बहू दासकी के बाप के अब एक ही संतान है। भाई मर गया। उसकी जमीन ले लेना पड़ेगी।"
"उसमें घास नहीं है। महाजन के पास बन्धक है।"
"तब नहीं जाऊँगा।"
"सुनो, अभी कातिक महीना है। सोलह मील जाना पड़ेगा। लेकिन नरसिंहगढ़ के राजा लोग अगहन में काली पूजा का मेला लगाते हैं। तीर चलाने का खेल होता है। मेरे मन में बड़ा दुख है कि चोट्टि ग्राम से कभी उस खेल में कोई नहीं जीता। रुपये मिलते हैं, सूअर मिलता है, कपड़ा भी मिलता है।"
"लड़का छोटा है, इतनी दूर नहीं भेजूँगा।"
"मुरुडि नहीं भेजा था ?"
"भूखा मर जायेगा, इसलिए भेजा था।"
लेकिन चोट्टि नाच उठा। उसके जीवन में सब क़िस्से कहानी थे। उसकी उम्र सोलह बरस की थी। कोयेल की वयस चौदह थी। बाप भी साथ में चला, पहान भी।
"कौन-सा निशान वेधना होगा ?"
"पता नहीं।"
नरसिंहगढ़ का मेला बहुत बड़ा था। प्रतियोगिताएँ भी बहुतेरी थीं। निशाना था ऊँचे मचान पर कलसी, कलसी के सिर पर एक कुम्हड़ा। चूने का निशान लगाया हुआ। कलसी में पानी रहेगा, कलसी पर तीर नहीं मारा जायेगा। कलसी में तीर नहीं लगेगा, कलसी हिलेगी नहीं और कुम्हड़ा गिरा देना होगा। चोट्टि को देखकर दूसरे तीरन्दाज़ लोग पहले मज़ाक करने लगे। उसके बाद उसका परिचय मालूम कर खुसफ़ुस शुरू हुई। "हाँ, यह वही चोट्टि मुंडा है, जो धानी मुंडा के पास था। धानी आवाज

सुनकर अँधेरे में तीर छोड़कर बराह मारता था। संध्या को चंद्रमा की रोशनी में उड़ते पक्षी मारता था। उसके तीर में मंतर है। उसको हराना किसी के बस का नहीं है।" चोट्टि ने सब बातें सुनीं। उसने मन-ही-मन धानी को याद किया।

कुम्हड़ा तीर की चोट से गिर गया, कलसी रह गयी। बिसरा और पहान ने आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखा। उसके बाद पहान ने नाचना शुरू किया। जीत गया, चोट्टि गाँव जीत गया। दस बरस बाद पहान का बेटा दूसरा पुरस्कार ले गया था। उसके बाद कोई न ले सका।

एक सूअर, एक कपड़ा, पाँच रुपये।

सूअर मारकर स्थानीय आदिवासियों के साथ उत्सव मनाया गया। जो लड़का द्वितीय हुआ, उसने चोट्टि से कहा, "माघ मास में जुजुहातू के मेले में चलेंगे। वहाँ सूअर देते हैं, दस सेर चावल देते हैं।"

"दस सेर चावल!"

"हाँ जी। तुम्हारे रहने पर हिम्मत होगी।"

"बाप से पूछ लूँ। पहान से पूछ लूँ।"

पहान ने शराब पीते-पीते कहा, "जरूर चलेंगे।"

चोट्टि सोचते-सोचते घर लौटा। लौटकर बाप से बोला, "आबा, एक बरस तक आसपास जितने मेले होते हैं, उन मेलों में जाने दोगे?"

"जाकर तीर खेलेगा? उससे जिंदगी चलेगी?"

"तुम्हारी तरह महाजन का खेत जोतकर जीवन नहीं बीतेगा, बाबा। तीर सभी चलाते हैं। लेकिन यह अभ्यास की चीज है।"

"तू कहना क्या चाहता है?"

"तीर चलाकर अगर रुपये मिलते हैं तो उन रुपयों से भोज देंगे।"

"सिर्फ चावल खरीदना होगा?"

"चावल ख़रीदेंगे, मद बनायेंगे, मांस मैं ले आऊँगा।"

बिसरा चुप लगाये रहा।

माँ बोली, "उधार नहीं लेंगे?"

"न! उधार लेने से बेगार करनी होगी। और बेगार तेरे वंश में सबने की है। मुरुडि में देखा। यहाँ भी देख रहा हूँ।"

चोट्टि के जीवन में सब कहानी थीं। कोई मुंडा लड़का उसकी तरह आचरण नहीं करता था। लाला बैंजनाथ ने बिसरा से कहा था, "रुपयों के लिए क्या सोच? उधार ले ले। बेगार कर चुका देना।"

"ना, उधार नहीं लूँगा।"

"नहीं लेगा?"

"ना।"

"नहीं लेगा, तुम लोगों की बुद्धि जंगली है।"

"बुरा मत मानना, महाराज।"

"बुरा? बुरा क्यों मानूँगा? लड़का तीर खेल रहा है, तमाम रुपये लाता है। लेकिन यह मंतर-पढ़े तीर की बात क्या सुनी जा रही है?"

"यह किस्सा-कहानी है, महाराज।"

लाला बैजनाथ ने पुलिस के दारोगा से कहा, "बिसरा मुंडा की बात नहीं समझा।"

"क्यों? वह तो बड़ा भला आदमी है।"

"उधार क्यों नहीं लेता?"

"नहीं लेता। देखिये लाला बाबू, इसे लेकर गड़बड़ मत करना। मेरे थाने में आदिवासी लोगों को लेकर कोई हंगामा नहीं है। मैं कोई हंगामा नहीं चाहता। सात बरस और नौकरी है, शांति से नौकरी करके जाना चाहता हूँ। आदिवासी लोगों को लेकर गड़बड़ करने से मुश्किल होगी।"

"न-न, हंगामा क्यों होगा?"

"बिसरा का लड़का सारे तीर के खेलों में कैसे जीतता है?"

"उसका तीर मंतर-पढ़ा है।"

"क्या ऐसा होता है?"

"ज़रूर होता है। एक कहानी सुनिये।"

"कहिये।"

"नरसिंहगढ़ के राजा को जानते हैं?"

"मैं ऐसे रईस आदमी को कैसे जानूँगा? बस नाम-भर जानता हूँ।"

"उसके सौतेले भाई थे। उनके ही राजा बनने की बात थी। गद्दी पर उन्हें ही बैठना था। वे गये शिकार खेलने, और जंगल में एक कोठी में थे, छप्पर के छाजन का बँगला। उनके ही राज में। वर्तमान राजा की माँ ने दीवान को पकड़ा। उसके बेटे को राजा बनाना होगा। लेकिन कमिश्नर साहब तो सुन नहीं रहे थे। दीवानजी ने वादा किया।"

"इसमें मंतर की क्या बात है?"

"उनके इलाके में था भरत महतो। बहुत बड़ा गुनी था। दीवानजी की बात पर वह बोला, काम पूरा करूँगा, लेकिन मुझे लगान की दस बीघा ज़मीन देनी होगी। दीवानजी ने उस बात को मान लिया। भरत ने तभी रात में मंतर पढ़कर जलता दीपक हवा में उड़ा दिया। उस दीये ने चलते-चलते जाकर जंगल का बँगला जला दिया। बड़े कुमार मर गये।"

"छोटे कुमार राजा बन गये?"

"बन गये, लेकिन और भी क़िस्सा है।"

"क्या ?"

"दीवानजी को कुबुद्धि आयी। भरत को बुलाकर उन्होंने कहा, 'ले जा दस रुपये। ज़मीन तुझे नहीं मिलेगी।' तो भरत बोला, 'जी मेहरबान, यह रुपये आप रखिये।' लेकिन काम पूरा होने पर बाद में दीवानजी कचहरी में बैठे थे। सहसा सबके सामने उनके पूरे शरीर में आग भड़क उठी। जलते-जलते मर गये।"

"ऐसा तो हो सकता है।"

"तो बिसरा के बेटे का तीर मंतर-पढ़ा क्यों नहीं हो सकता है ?"

"लालाजी, जिसका मंतर-पढ़ा तीर होगा, उसके दिन क्या भूखे रहकर बीतेंगे, लँगोटी पहनकर !"

"ठीक कह रहे हैं।"

"वह तीर जिस हाथ में जायेगा वही निशाना लगायेगा ?"

"अरे बाबा ! वह तीर हुआ उसके बस में। और किसी के उस तीर को लेने पर तीर गेहुँअन साँप बनकर उसे डँस लेगा।"

"जाने दो उसकी बात। मुंडा लोग, जंगली लोग, तीर तो हमेशा ही छोड़ते हैं। तीर उनके संगी-साथी हैं।"

"हाँ।"

चोट्टि को पता भी न था कि मुंडा समाज के बाहर भी उसे लेकर किस्से बन रहे हैं। उस समय वह रोज तीर का अभ्यास करता था और शिकार करता था। हाट के दिन से पहले शिकार की चिड़ियाँ, हिरन का मांस चौकी के पुलिस वाले मोल ले लेते। स्टेशन के बाबू भी ख़रीदते। हिरन मारने पर खाल को नमक और राख घिसकर बड़ी हाट में बेच देता। इसके सिवा मेले में तीर छोड़ने की प्रतियोगिता में जाता। कोयेल ने कहा, "चोट्टि, तुझे तो मंतर-पढ़ा तीर मिल गया है, तो पागलों की तरह रोज तीर का अभ्यास क्यों करता है ?"

"वह अभ्यास ही मन्तर है।"

चोट्टि तीर खेल-खेलकर ही एक बरस में पच्चीस रुपये लाया। 1915-16 में पच्चीस रुपये बहुत होते थे। उसकी माँ ने एक गाय और ख़रीद ली। भोज का भात, मद सब हुआ, चोट्टि की बहू की नाक में चाँदी की नथुनी तक। बहुत खुशी की बात हुई। और चोट्टि के माँ-बाप दोनों की गाँव में मर्यादा भी बढ़ गयी। बहू लायी एक सूअर, एक बकरी। माँ की दो गायें थीं। इसी समय रेल लाइन तोहरी तक खुल गयी और रेल के लोगों की छावनी पड़ी। यह बाहर से आये लोग थे। इन्हें चोट्टि की माँ दूध दिया करती थी।

चोट्टि के लोगों के जीवन में यह समय सबसे अधिक सुख और शान्ति का समय था। मगर समय बहुत मामूली कारणों से बिगड़ जाता है।

बिसरा मुंडा के घर का सुख-चैन लाला बैजनाथ को अच्छा न लगा। उसका सबसे बड़ा कारण था—बैजनाथ के खेत-खलिहान का काम स्थानीय मुंडा, उराँव लोग करते थे। इसके सिवा कुछ अंत्यज जाति के लोग थे। आदिवासियों से काम कराना बैजनाथ को ज्यादा अच्छा लगता था। आदिवासी लोग कल्पना से भी कम मजदूरी पर काम करते थे। खिटखिट पसंद नहीं करते। जैसी बात करते, वैसा काम कर देते।

आदिवासियों का कर्जदार होना बड़ी सीधी बात थी। काग़ज़ पर एक बार अँगूठा-निशानी से जन्म-जन्म तक बेगार देते रहते। यह ठीक है कि यह बात अंत्यज लोगों पर भी उसी तरह लागू होती थी।

अंत्यजों और मुंडा लोगों, जिनके साथ बैजनाथ का कर्जदार और महाजन का संबंध था, के साथ काम करने में ही अधिक चैन था। जिस तरह भी हो, अंत्यज और आदिवासी लोगों का ग़रीब रहना ही उचित था। बिसरा अब वैसा ग़रीब न था। बिगड़कर बैजनाथ ने एक दिन बिसरा को बुला भेजा।

"उधार न लेना हो तो न ले। खेत-ज़मीन के काम से तो आयेगा ? तू तो दिखायी ही नहीं पड़ता। तू क्या मुंडा लोगों का महाजन बन गया है ?"

बैजनाथ ने 'महाजन' शब्द गौरव के लिए कहा। वह भूल गया था कि महाजनी कारबार मुंडा लोग नहीं करते। बिसरा को इस बात से अपमान लगा और वह बोला, "चोट्टि, कोयेल, मैं—गाय चराना, बकरी चराना, सूअर भगाना इन सब कामों से निबट नहीं पाते, इसीलिए नहीं आते। मुंडा लोग उधार-कर्ज लेते हैं किन्तु महाजनी नहीं करते। महाजनी करके भाइयों का खून नहीं चूसते। तुमने महाजन कहकर मुझे गाली दी, महाराज।"

दोनों एक-दूसरे का मतलब न समझने के कारण गुँथ गये।

बैजनाथ बोला, "महाजन कहना गाली देना होता है ?"

"मुंडा तो महाजन नहीं होते।"

"मैंने गाली दी ?"

"तुमको अगर कहूँ कि मुंडा हो गये हो ?"

"मुझे गाली दी ?"

"इससे भी बड़ी गाली होती है ?"

"मुंडा क्या घृणा की चीज़ होते हैं ?"

गुस्से में बिसरा गाँव चला आया। पहान के घर गया और बोला, "लाला बैजनाथ ने मुंडा लोगों को 'महाजन' कहा।"

धीरे-धीरे चोट्टि गाँव के सारे मुंडा बिगड़ गये। 'महाजन', 'सूद' इत्यादि शब्द मुंडा लोगों के निकट बहुत घृणा के थे। बड़े दुख की बात थी। महाजन की बात के अनुसार काग़ज़ पर अँगूठा-निशानी लगाकर वे सूद के जाल में जकड़ जाते हैं। फ़सल की बुआई के समय मुंडा लोग नहीं आये।

सब बोले, "लाला पुलिस के पास जायेगा।"

पहान बोला, "जाये! कुछ अपराध नहीं किया है। और दारोगा मुकुन्द पाँडे है। वह मुझे पहचानता है।"

बैजनाथ पुलिस के पास गया। जय बाबा विश्वनाथ। मुकुन्द पाँडे रहता तो कहता, आदिवासियों के साथ गड़बड़ मत करो लालाजी। मेरे इलाक़े में कोई गड़बड़ नहीं है। सात बरस और मेरी नौकरी है और मैं शांति से नौकरी करना चाहता हूँ।

मुकुन्द पाँडे नहीं था। छपरा में उसकी ज़मीन-जायदाद को लेकर मामला चल रहा था। वह छुट्टी पर गया हुआ था। उसके बदले जो दरोगा था उसका नाम महावीरसहाय था। उसके आगे पंद्रह बरस की नौकरी थी और उसका खून गरम था, और नौकरी में शुरू से ही 'शान्ति चाहिए' कहकर चिल्लाने वालों से वह ख़फ़ा रहता था। चोट्टि अंचल यों ही दूर है, अगर यहाँ कुछ हो जाये तो राँची तक ख़बर पहुँचेगी भी—इस बात का विश्वास उसे नहीं था।

क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, उसने सब जान लिया। बोला, "आप जाइये, मैं देखता हूँ।"

लाला बैजनाथ उसी चोट्टि ग्राम का रहने वाला था। हर आदमी उसका जाना-पहचाना था। वह उधार देता था, सूद लेता था, बेगार लेता था। लेकिन चूँकि उसका संसार भी उस गाँव में था, इसलिए ऐसी कुछ ज़ोरदार कार्रवाई भी नहीं करना चाहता था जिसका नतीजा बुरा हो। आदिवासी मजूरों को ख़फ़ा करने की तो उसकी ज़रा भी इच्छा न थी।

महावीरसहाय बोले, "वही कहता हूँ। ज़्यादा कहने क्यों जाऊँगा? थोड़ा कहने से ही अगर काम हो जाये तो?"

"बिसरा से मत कहियेगा। पहान से कहियेगा।"

बैजनाथ के यह बात कहने के मतलब हुए कि आदिवासी समाज-व्यवस्था में उनके पहान या पुरोहित हुए ग्रामसमाज के सिरमौर। वे कोई

समस्या होने पर पहान के पास बैठकर सोच-विचार कर ठीक कर लेते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि पहान और ग्राम-प्रधान अलग-अलग हों। तब उस हालत में ऐसा न होता। बैजनाथ को आदिवासी समाज का नियम मालूम था।

महावीरसहाय ने सोचा, बैजनाथ सोच रहा है बिसरा से सीधे-सीधे कुछ कहने का अर्थ है गड़बड़ पैदा करना। निश्चय ही बिसरा शैतान आदमी है। उसने बिसरा को पकड़कर लाने के लिए दो कांस्टेबल भेजे।

चोट्टि ग्राम के मुंडा-उराँव लोगों ने कभी नहीं देखा था कि उनको पकड़ने के लिए गाँव में पुलिस आती हो। उनकी समझ में नहीं आया कि मामला क्या है। चोट्टि नदी के बहाव से ऊपर पानी का एक छोटा झरना है, वहीं नदी तक दो सौ फुट उतरकर फिर समतल है जहाँ यायावर बतखें मारने के लिए अँग्रेज़ों का कैंप लगता था। राँची के साहब लोगों का। गाँव वालों ने सोचा, उसी कैम्प के किसी काम से पुलिस आयी है। उस समय भी बीच-बीच में घूम-घूमकर तंबू गाड़कर ज़िले के अफ़सर लोग आंचलिक समस्याओं का समाधान और उन पर विचार करते थे जिसके फलस्वरूप आदिवासी और ग्रामवासी लोगों की बहुत-सी प्रार्थनाओं पर वहीं-का-वहीं विचार हो जाता। ग़रीब लोग बहुत-से झंझटों से बच जाते। इस नियम से ज़मींदार-रैयत-महाजनों को विशेष असुविधा होती है, इसलिए इस क़ायदे को दूसरे कारण दिखाकर वापस ले लिया गया। अफ़सर और प्रजावर्ग के लोगों में असली संबंध हो जाना सरकार की, विदेशी या स्वदेशी सरकार की, इच्छा नहीं होती। संपर्क का पूरी तरह अवास्तविक स्तर पर रहना ही सरकार के लिए अच्छा है। ऐसा होने पर अफ़सर की नज़र में आदमी लोग नीचे से पाये परिसंख्यक अंकों के गणित-भर थे। लोगों की नज़र में प्रशासन राजा के हाथी के रूप में रहता है—ऐसा हाथी जो उनके काम नहीं आता और जिसे उनको पालना-पोसना पड़ता है।

गाँव के लोगों की नज़रों में दोनों कांस्टेबल पहले तो कुतूहल की चीज़ बने रहे। शांत जीवन में हाथ में बैटन, लाल पगड़ी और मचमचाते बूटों वाली पुलिस देखने में अच्छी लगती है। लड़के-बच्चे उनके पीछे लग गये।

दोनों कांस्टेबल जब गाय चराने में व्यस्त बिसरा की कमर में रस्सी बाँध-पकड़कर ले चले तो पहले तो सब अचंभे में पड़ गये, उसके बाद वह डर की बात हो गयी। ख़बर पहुँची पहान तक। पहान तभी बोला, "चल, चलकर देखूँ कि हुआ क्या है।" पर सहसा उसे लगा कि वह बहुत ही बूढ़ा हो गया है। थाना-पुलिस-प्रशासन—उसे दुर्बोध्य लगे। बिसरा-से दब्बू और डरपोक आदमी की दारोगा को क्यों ज़रूरत पड़ सकती है? यह उसकी

समझ में नहीं आ रहा था। मुंडा लोग कभी समझ नहीं सकते कि प्रशासन की नज़रों में उनका कौन-सा अपराध सज़ा के क़ाबिल है।

दो-चार आदमी पहान के साथ चले। सना मुंडा डाक-बँगले में पंखा-कुली का काम करता है, इसलिए आसपास के मुंडा समाज में, दिकू और पुलिस की हरकतें समझने के सिलसिले में उसकी शोहरत थी। उसने कहा, "चल, मैं चलूँ।" चलते-चलते पहान बोला, "तू आया, अच्छा हुआ। कौन जाने वह दारोगा मुंडारी बात समझता है या नहीं।" सना ने एक लोटा ले लिया क्योंकि पुलिस के पकड़ने पर प्यास ज्यादा लगती है। जीभ नहीं हिलती, लगता है मुँह की लार बरगद का दूध बन गयी है।

वे जब पहुँचे तब तक महावीरसहाय ने बिसरा को लात-घूँसे-थप्पड़ मार-मारकर लहूलुहान कर दिया था। पहान के कातर प्रश्न के उत्तर में सहाय बोले, "इसे छोड़ा नहीं जायेगा। यह खुद लाला बैजनाथ के घर काम करने नहीं जाता, तुम लोगों को भी भड़काया है।"

"इसका क्या होगा?"

"जेल होगी।"

"जेहल?"

पहान की आवाज पहचानकर बिसरा रो पड़ा, "मैं जेहल नहीं जाऊँगा।"

"जाओगे या नहीं, यह लाला समझें।"

सना ने पूछा, "इसे हजित में रखेंगे?"

"नहीं तो क्या?"

"ज़रा छोड़ दीजिये, पानी पिला दें।"

"पानी हमारे पास नहीं है?"

सिर हिलाकर पहान बोले, "चलो, लाला के पास चलें।"

लाला बैजनाथ पहान की सारी बातें जानकर खुश भी हुए और घबरा भी गये। अभी भी चोट्टि वैसी ख़राब जगह नहीं हुई है कि मुक़दमा करके आदिवासी-हरिजनों को क़ाबू में लाना पड़े। लाला की बात ही काफ़ी है। मुक़दमा करने पर लाला को खलारी भागना पड़ेगा। अभी वह समय नहीं है। और इस कारण अगर आदिवासी बिगड़ जायें? दूसरे गाँवों के जमींदार-किसान लाला को ही दोष देंगे। आदिवासी बिगड़ सकते हैं। संयुक्त जाति है। सारा कुछ होने के बाद दारोगा भी हाथ अलग कर लेगा। बड़ी मुश्किल होगी।

बैजनाथ बोला, "मैं जाकर देखूँगा।"

"अभी चलो।"

"अभी क्यों? मुझे गाली दे गया, थोड़ी उसकी सज़ा भुगत ले। मैंने भली बात कही, उसने गाली दी।"

पहान बोला, "महाराज, तुम्हारी बात हम कभी नहीं समझते। आज भी नहीं समझे। तुमने उससे कहा, वह महाजन है। मुंडारी में यह गाली होती है। तुम्हारा दोष नहीं है। उसने कहा, तुम मुंडा। वह गाली हुई, बिसरा का कसूर भी हुआ। हमारे लिए खुद के सिवा हमारा अपना कोई नहीं होता। एक आदमी के शरीर पर लगने से सबको कष्ट होता है। आज हो रहा है। लड़कों को होगा या नहीं, मालूम नहीं। बिसरा काम पर नहीं आता, गाय-बकरी की देखभाल करता है। हम सब आ रहे थे। उसका अपमान होने से हम सब नहीं आये। तुमने दारोगा से कहा कि बिसरा सारे मुंडा लोगों को भड़का रहा है?"

"यह बात मैंने नहीं कही।"

"तुम सच कह रहे हो या दारोगा सच कह रहा है? देखो महाराज! अभी भी मुंडा लोगों ने कुछ नहीं किया है। बिसरा अगर थाने पर मर जाता है, तो तुम्हारे कसूर से मरेगा। तुम्हें पाप होगा। तब अगर सब लोग भड़क जायें तो? उसका लड़का है, उसे तीर चलाने के खेल में कितना सम्मान मिला है, वह मानेगा?"

यह बात सुनते ही लाला के मन में मन्तर-पढ़े तीर की बात आयी। बाप रे! तिल का ताड़ बन गया। कहीं जान न चली जाये!

"चलो, मैं चलता हूँ।"

बैजनाथ के साथ पहान आदि फिर थाने आये। चोट्टि आकर बैठा हुआ था। घटना घटने के वक़्त वह घर पर नहीं था।

बैजनाथ और दारोगा के बीच क्या बातें हुई इसका पता न चला लेकिन दारोगा ने बिसरा को छोड़ दिया। बोला, "उसे जेल नहीं की, छोड़ दिया। इसलिए गाँव पर जरीमाना हुआ। मुंडा लोग मुझे थाने पर पाँच रुपये दे जायें। तीन दिन के अन्दर।"

चोट्टि आगे बढ़कर आया। "अभी नहीं दूँगा। मेला में खेल जीतकर तुमको रुपया दूँगा। अभी तो गाँव में पाँच रुपये नहीं हैं।"

"तू कौन है?"

"मेरे बाप को पकड़ा था।"

"रुपये देगा? तू देगा?"

"मैं दूँगा। मुंडा लोग झूठ नहीं बोलते।"

वे लोग चले गये। दोनों कांस्टेबल बहुत डरे-डरे रहने लगे। वे भी यहीं रहते हैं और आसपास की खबर रखते हैं। पहले के दारोगा दूसरी

तरह के थे। इस दारोगा की बात पर वे लोग बिसरा को पकड़कर ले आये थे जरूर, लेकिन उन्होंने मारा नहीं था। अब वे आपस में बातें करते। चोट्टि गाँव में बैठकर मंत्रपूत तीर चलाकर मार सकता है। चोट्टि का तीर मंत्र-पढ़ा है, इसमें उन्हें कोई सन्देह नहीं। मंत्रपूत तीर न होता तो हर मेले में चोट्टि जीतता नहीं। थाना और दारोगा चोट्टि के पिता को बिना कसूर तंग कर मारना चाहते थे। मरें! वे मरना नहीं चाहते।

दोनों सलाह कर रात के अँधेरे में बिसरा के घर गये। चोट्टि को बुला कर बाहर ला दोनों ने हाथ जोड़े। बोले, "चोट्टि, अपने बाबा से पूछ, उसको ले तो गये थे, बदन को हाथ नहीं लगाया। फिर भी हम ले गये थे, कसूर किया। तू जरीमाना के यह पाँच रुपये रख। हम दे रहे हैं। बन-जंगल में चाकरी करते हैं, इसी से डर लगता है। तू अपना तीर भेजकर हमें मत मारना। हमारे घर हैं, बच्चे हैं।"

चोट्टि बोला, "तुमको मारने को कहा था?"

"सबको मालूम है, तू मंतर जानता है। तेरे तीर भेज देने से वह दस थाने पारकर आदमी मारकर तेरे पास लौट आयेगा।"

वे रुपये रखकर भाग गये। तारों के प्रकाश में खड़े चोट्टि ने समझने की कोशिश की, मामला क्या है। उसके चारों ओर क़िस्सा बन रहा है। वह किंवदन्ती बना जा रहा है। रुपयों को उठाकर उसने घर में रख दिया। दूसरे दिन पहान से बोला, "थाने के सिपाही जरीमाना के रुपये दे गये। क्या करूँ?"

पहान बोला, "तुझ पर हरमदेउ की किरपा है।"

"क्यों?"

"अरे, लाला डर गया कि मंतर-पढ़ा तीर भेजकर तू उसे मारेगा। उसने भी कल रात मुझे बुलाकर तुझसे कहने को कहा था कि तू उसे माफ कर दे। उसने भी जरीमाना के रुपये दिये हैं।"

"यह कैसी बात है?"

"तुझे तो मंतर आता है, मेरे बाप। नहीं तो मुंडा ग्राम पर जरीमाना हो और लाला वह जरीमाना दे, यह किसी से नहीं सुना। जो बाप से नहीं हुआ, तूने लड़का होकर दिखा दिया।"

"पर सुनो।"

"कहो।"

चोट्टि की कहने की तबीयत हुई, उसे मंत्र-तंत्र नहीं आता। मगर फिर उसने यह भी समझा कि इस बात का पहान भी विश्वास नहीं करेगा।

"कह रे।" वह फिर बोला।

पहान खिन्न और गंभीर आवाज़ में बोला, "रुपये तेरे कारण से हैं, तुझे बता दिया। अब जिस-जिस के रुपये हैं, उन्हें लौटाना होगा।"

"मैं भी वही कहने आया था।"

"चोट्टि रे! दस रुपये बहुत होते हैं। रुपये में मन-भर चावल आता है। लेकिन मुंडा जात में ऐसे रुपये कोई नहीं लेता।"

"तीर खेलकर रुपये दूँगा, यह कहा है। वही दूँगा। नहीं तो मेरा धर्म नहीं रहता। मेरा बाबा सूअर काटने पर रोता है। ऐसे बाबा को जिसने पकड़वाया, जिन्होंने पकड़ा, उनके रुपये लेकर बाबा का जरीमाना का रुपया नहीं दूँगा।"

"ठीक। मैं रुपये लौटा आता हूँ। एक काम अच्छा हुआ, हम बिना दोष उनसे पंद्रह आना डरे रहते हैं। वे तेरे कारन हमसे एक आना डरे रहते हैं। लाला भी डर गया है।"

चोट्टि घर लौटा। बाप से बताया। सारी बातें बतायीं। बिसरा सुनते-सुनते अचानक बोल पड़ा, "तीर खेला के रुपयों से और थोड़ी-सी जमीन मोल लेनी होगी।"

"क्यों?"

बिसरा पिटी हुई डरी आँखों से बोला, "तेरी बहन का ब्याह हो गया है। कोयेल का ब्याह होगा। तुम लोगों की गृहस्थी बढ़ेगी। तब इस जमीन से काम चल पायेगा?"

"खरीदी तो हुई है न।"

"वह भी बेकार जमीन। अच्छी जमीन लेने पर लाला ले लेगा।"

"न बाबा, नहीं लेगा।"

"प्रायश्चित भी करना पड़ेगा।"

"किस बात का?"

"मुझे जेल में लिया था न।"

"जेहल में कहाँ, बाबा? थाने में।"

"तू जानता है? तो जान। तेरा तीर मंतर-पढ़ा है।"

"ना, बाबा, ना।"

कई दिन बाद बिसरा बोला, "उस दिन से मन बहुत दुखी है, चोट्टि! अच्छा, अगर तू मंतरबल से तीर चलाये तो वह तीर दारोगा के हाथों को जख्मी नहीं कर सकता?"

"देखूँ।"

चोट्टि माँ के पास गया। माँ बोली, "वह किये बग़ैर फिर क्या बात

हुई। हाँ चोट्टि, आँखें घुमाकर क्या कहता है, पागल हो गया है क्या ?"

पहान ने सब-कुछ सुनकर कहा, "यह बहुत चिन्ता की बात है। तू आ, तुझे सब बताऊँगा। बिसरा की माँ मेरी दूध की माँ थी। मैं बिना माँ का बेटा हूँ।"

"अब धान काटने का समय है।"

"तू तो जाना मत।"

"नहीं। मन नहीं करता।"

"इससे लाला ने समझ लिया है कि तू उसे जरूर मारेगा। मैं कहता हूँ, नहीं मारेगा। पता नहीं उसने क्या समझा है। वह जलपान देता है, और दो पैसे भी।"

"जलपान और दो पैसे ?"

"तू मत जा। कोयेल को भेज दे।"

चोट्टि की माँ गुस्से से भरी थी। वह बोली, "तेरे बाप के रहते ऐसा नहीं चलता। हुँह, दो पैसे! दो पैसों में नमक-मिर्च-तेल भी खरीद नहीं सकते।"

पहान भी बोला, "कह दूँगा, चोट्टि को समय नहीं है। कोयेल को देख-कर जानेगा कि तुझे उस पर गुस्सा नहीं है।"

चोट्टि गहरी साँस लेकर बोला, "सचमुच समय नहीं मिलता। गाय बज्जात है। जंगल में घुस जाती है। कभी बाघ मार देगा।"

बाघ की बात उठने पर पहान बोला, "नेउन्द्रा में एक बाघ ने बहुत परेशान कर दिया है। बहुत-से गाय-बछड़े मार डाले हैं। वहाँ के पहान ने कहा है, तू मार देगा तो तुझे बहुत-सा चावल देगा। तुझसे कहने को कहा है।"

"वहाँ कोई नहीं है ?"

"पकड़ में नहीं आता। मरे जानवर की लहास में जहर लगाने से नहीं खाता। कहते हैं कि बाघ नहीं, शैतान है। कोई बुरा आदमी प्रेत बन गया होगा। तेरे तीर से घायल होगा।"

"देखूँ।"

चोट्टि ठंडी साँस लेकर उठ आया। पिता के लिए उसके मन में बड़ी फ़िक्र थी। ऐसा कामकाजी आदमी अजीब अवसाद से सदा खिन्न रहे। जहाँ तक हो सके बात न करता। बीच-बीच में अपने-आप दो-एक बात कहता। पता नहीं उन बातों के क्या अर्थ होते! उस दिन अचानक बोला, "हमेशा घाटो खाता था, बेटे के भाग्य से बहुत दिनों से भात खाया, कोरा कपड़ा पहनता हूँ, यही जान कर मुझे जेहल में बन्द कर दिया। मुंडा का

भात खाना, कोरा कपड़ा पहनना कसूर होता है। यही जानने से पानी में सोना देखने पर मेरे पुरखे भाग खड़े हुए थे।"

आज आँगन में खड़ा-खड़ा कह रहा था, "वह सीधा पेड़ यहाँ कैसे आया? पहले तो नहीं था। गाछ काट देना पड़ेगा।"

गाछ हमेशा से था। इस पेड़ की डाल में झूला डाल बच्चों को सुला कर माँ काम करती थी। बाबा क्या पागल हुए जा रहे हैं?

यह एक फ़िक्र थी। घर-बार के काम का भार माँ के उठाने की बात थी। माँ तक बात-बात में चोट्टि के चेहरे की ओर देखती। यह सब लोगों का विश्वास था कि चोट्टि को मंत्र आता था, चोट्टि असाधारण है। इस विश्वास के पत्थर के-से भार से चोट्टि थक गया था। वह अकेला पड़ता जा रहा था। नेउन्द्रा ग्राम जाकर वह बाघ मारेगा। इसका क्या ठिकाना?

चोट्टि की माँ बोली, "मैं तुझे जाने न दूँगी।"

"पहान ने कहा है।"

"पहान का बेटा जाये। वह बाघ नहीं है। बड़ा पिशाच है। तू मारेगा तो तुझे मारेगा। कोयेल बीमार रहता है। बाघ अकल खोता जा रहा है, तुझे भी खो दूँगी?"

"उन लोगों ने आकर मुझसे क्यों कहा?"

"तू मत जाना।"

चोट्टि को बाघ न मारना पड़ा। रेल के इंजीनियर साहब ने गोली से बाघ को मार दिया। चोट्टि समझा कि बराबर अभ्यास करके तीर की बाज़ी उसे जीतनी होगी। जीतने वालों में खुशी होती है, जीतने से सम्मान होता है, ईनाम मिलता है। एक बाज़ी जीतने के बाद दूसरी बाज़ी को लेकर उसके लिए किंवदन्ती बन गयी, उस किंवदन्ती को बचा कर रखने का दायित्व है। लेकिन वह किंवदन्ती का नायक नहीं बनना चाहता था। चोट्टि मेला के तीर के खेल में जीतने वाले का जो सम्मान होता है, उसने वही पाना चाहा था। धानी मुंडा ने उसका जीवन उलट-पलट कर दिया था। लेकिन धानी ने यह कैसे किया, उसे चोट्टि समझा नहीं सकता था।

दूर पहाड़ के नीचे के एक पत्थर पर चाँदमारी कर तीर चलाने का अभ्यास करने के लिए जाने पर उसके जीवन में एक किस्सा और जुड़ गया।

चोट्टि नदी के किनारे एक अँग्रेज़ ने तंबू लगाया। राँची का साहब था। चोट्टि गाँव के लोगों ने सोचा था, साहब ज़रूर ही हाकिम-उकुम होगा। लेकिन कुछ दिनों में ही पता चला कि साहब पूरा पागल है। दूध-घी-मांस जो भी ख़रीदता है, उसका पैसा देता है। केवल दो कुली और दो

घोड़े लेकर आया है। पहान बोला,"घोड़े की घास मोल लेने पर दाम देता है। दिन-भर घूम-घूम कर तसवीरें बनाता है, शाम को तंबू में बैठ कर कुछ लिखता है, बीच-बीच में चिड़ियाँ मारता है।"

चोट्टि के मन में इससे भी कोई कुतूहल नहीं हुआ। इक्कीस बरस की उम्र में समर्थ बाप के रहते गृहस्थी का भार उस पर है। मन बहुत खिन्न है। अब वह अपनी ज़मीन की देखभाल करता, भाई गाय चराता। ख़राब जानवर थे, इसलिए उसे भी बीच-बीच में जाना पड़ता था। कोयेल की उम्र उन्नीस हो गयी थी। उसका ब्याह आदि न कराना अन्याय होगा। उसकी अपनी पत्नी प्रसूता थी। माँ का हाथ बटाने के लिए एक बहू की ज़रूरत थी। वक़्त निकाल कर वह तीर चलाने का अभ्यास करता रहता। धानी के दिये तीर को उसने उठाकर रख दिया था। केवल तीर के खेल के दिन वह उस तीर को साथ ले जाता। धानी अब गीत बन गया था। काले मेघ पर सवार होकर वह सैलराकार में मिल गया था। बीच-बीच में चोट्टि को सन्देह होता कि धानी किसी दिन था भी? या वह केवल कल्पना, स्वप्नमात्र था? तब वह तीर को देखता था। पुलिस! पुलिस ने धानी को मारा था। पुलिस ने उसके बाप को पकड़कर बेकसूर मारा था। अब दारोगा भी डरता था कि चोट्टि तीर भेज कर उसे मार सकता है। वैसा अगर होता, तब तो चोट्टि धानी के तीर से कह देता कि जिस आदमी ने धानी को मारा है, जाकर उसे मार आ। चोट्टि कौन-सा अलौकिक काम नहीं कर सकता है, उसे लेकर तमाम किस्से हैं।

धानी नहीं था, इसलिए बहुतेरी बातें चोट्टि को नहीं मालूम थीं, मालूम न हुईं। मुंडा लोग जब स्वतंत्र थे, जब उनके जीवन में दिकू और गौरमेन और ठेकेदार और कुली भरती करने वाले और मिशनरी नहीं घुसे, उस समय की ही बात सुनने को नहीं मिली।

सोचते-सोचते वह तीर छोड़ता। छोड़ता रहा। हाथ की तैयारी है या नहीं, यह देखने के लिए उस दिन संध्या के समय झीनी पूर्णिमा की ज्योत्स्ना में उसने उड़ती बत्तख मारी। मरी बत्तख निकालने नदी में उतरा और खड़ा हो गया। सामने साहब, हाथ में बत्तख। साहब साफ़ मुंडारी भाषा में बोला, "तुमने मारी?"

"हाँ।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"चोट्टि मुंडा।"

"नदी के नाम पर नाम!"

"नदी के नाम पर।"

"क्यों? किस वार को पैदा हुआ था?"

"सोमवार को।"

"तो फिर सोमरा, सोमाई, सोमना क्यों नहीं है?"

"हमारे वंश में नदी के नाम पर नाम रखते हैं।"

"तुमने तीर चलाना कहाँ सीखा?"

"क्यों? खुद ही।"

"वाह! खूब। शाम की चाँदनी में मैं तो बन्दूक से उड़ती हुई बत्तख नहीं मार सकता।"

"बत्तख तुम लोगे?"

"नहीं, नहीं।"

"लो, मैं फिर मार लूँगा।"

"इससे अच्छा है कि कल आना, तुम्हारे साथ मैं भी मारूँगा।"

"साहब, तीर में आवाज़ नही होती। बन्दूक छोड़ने पर आवाज़ होती है और बत्तख डर कर उड़ जाती है। तुम तो तीर छोड़ न सकोगे।"

"यहाँ क्या कर रहे थे?"

"अभ्यास।"

"क्यों?"

"मेले में तीर खेलूँगा।"

"कहाँ है मेला?"

"नेउन्द्रा का मेला आने वाला है।"

"कल आना।"

"क्यों?"

"तुम्हारी तसवीर बनाऊँगा।"

"मेरी! तसवीर!"

"हाँ।"

घर लौट कर चोट्टि बोला, "माँ, साहब पागल है। कहता है, कल आना, तुम्हारी तसवीर बनाऊँगा।"

"शायद तेरा नाम और यश मालूम हो गया है।"

"दुत्, पगला है।"

दूसरे दिन साहब ने उसे सही-सही पकड़ लिया। बोला, "मैं तसवीरें खींचने ही आया हूँ। चलो, तुम्हारे गाँव चलें। पहले मेरे तंबू में चलो।"

सचमुच साहब चोट्टि से साथ गाँव में आया। पेंसिल को कई बार चला कर पहान की तसवीर खींचीं, हरमदेउ के थान की। बोला, "मैं यहाँ

घूमने और तसवीरें बनाने ही आता हूँ। इसीलिए तुम्हारी तसवीर बना रहा हूँ।"

"मुंडारी क्यों बोल रहे हो? तुम क्या मिशनरी हो?"

"ना। लेकिन मुंडारी सीख ली है।"

"कहाँ?"

"राँची में।"

सब चुप रहे। साहब अपने-आप बोला, "गजब ढंग है। ये लोग आपस में बातें करते हैं। मेरी बात का केवल जवाब देते हैं, बस।"

पहान ने चोट्टि की ओर देखा। साहेब माने गौरमेन। चोट्टि गौरमेन को साथ ले आया है। ऐसी बात पहले कभी नहीं हुई। इसीलिए ऐसा होने पर लोग क्या करें, क्या कहें, कुछ पता नहीं।

सबको बचाया पहान की पत्नी ने, औरतों की सहज बुद्धि से। मुंडारी औरतें सामान्यतः मुसकराती रहती हैं। बहू ने हँसते-हँसते बानों से बना हुआ स्टूल लाकर साहब को बैठने को दिया। उसके बाद बोली, "तुम लोग आओ।"

गाँव की औरतें आगे बढ़ीं। एक के हाथों में पीतल की चमचमाती थाली में भुट्टे की खीलें, गुड़ का टुकड़ा था। एक और स्त्री पानी ले आयी। पहान की बहू बोली, "ठाकुरथान पर आये। जरा पानी पी लो। उसके बाद हमारी तसवीर बना दो।"

असल में पुरुषों को बगलें झाँकते देखकर स्त्रियों को मजा आया। साहब जब खाने लगा तो औरतों ने मुँहज़बानी गीत बनाकर गाया :

घर गौरमेन आयी है
गौरमेन ने तसवीर बनायी है
गौरमेन बन्दूक लेकर आयी नहीं
हम लोगों को मारा नहीं
गौरमेन ने परसाद खाया।

तभी साहब बोला, "और गाओ।" उसने गाना लिख लिया। औरतों ने फिर गाया। उसके बाद सब हँसने लगीं। सना की माँ ज्ञानी बुढ़िया थी। वह बोली, "पागल नहीं है रे। अच्छी गौरमेन है।"

साहब उसके बाद चोट्टि को लेकर उसका घर देखने गया। मुंडा का घर देखे, दीवारों पर बनी तसवीरें देखे, यह उसकी बड़ी इच्छा थी।

साहब का नाम था रोनाल्डसन। बिहार के छोटे लाट के दफ़्तर के सेक्रेटरी का भाई था। राँची में घूमने आने पर हफ़मैन की डिक्शनरी पढ़कर पहले मुंडारी भाषा और मुंडा लोगों के बारे में उत्सुकता जागी।

अनुसंधान किया। विलायत में कुछ काम न कराये जाने पर भी मुंडा भाषा सीखने की उसकी तबीयत हुई। मुंडा ग्राम और वहाँ के निवासियों की जानकारी के बारे में किताब लिखने की इच्छा जागी। चित्र बनाने की दक्षता उसमें थी ही। इन सब कारणों से उसका आना हुआ।

चोट्टि के बारे में फैले प्रवादों का उसे पता चल गया था और चोट्टि के साथ वह नेउन्द्रा मेले में गया। हमेशा की तरह चोट्टि ने लक्ष्यभेद किया। सूअर मारा गया और चोट्टि के अनुरोध पर मुंडा लोगों ने इस पगले गौरमेन को अपने भोजन का साथी रहने दिया। साहब ने मद न पीकर उन्हें ताज्जुब में डाल दिया और पेंसिल से सबकी आकृति बनाकर सबको खुश कर दिया। नेउन्द्रा का पहान बोला, "तू अगर अच्छा गौरमेन है तो हमें इतना कष्ट क्यों है?"

साहब बोला, "इस बात का जवाब उसे मालूम नहीं। लेकिन उन लोगों को चाहिए कि जब जहाँ अफ़सरों का तंबू लगे, वहाँ जाकर सीधे उनको अर्ज़ी दें।"

पहान बोला, "कौन सुनेगा?"

"देकर देखा है?"

"नहीं।"

"देकर देखो।"

इसके बाद चोट्टि और साहब, साहब के तंबू में लौटे। साहब ने उसी आधी रात के वक़्त चोट्टि को अपनी बनायी तसवीर दिखायी। अचानक चोट्टि ने देखा, धनुक और बलोया ऊँचा किये हुए धानी मुंडा की तसवीर है।

"यह तसवीर तुमने कहाँ खींची?"

"जेजुड़ में।"

"तुम जेजुड़ गये थे?"

साहब बोला, "यह एक आश्चर्यजनक आदमी था। ज्यों ही देखा कि वह आ रहा है, मैंने तसवीर खींच ली, उसकी तसवीर बनायी। लेकिन दारोगा ने उसे मार डाला। वह शायद बहुत बड़ा विद्रोही था। उसका नाम धानी मुंडा था।"

"तसवीर मुझे दोगे?"

'लो। ठहरो, कल लेना। मैं एक नक़ल बना लूँ।"

मद के नशे में भी चोट्टि ने नहीं कहा कि वह उसे जानता है। दूसरे दिन उसकी तसवीर और धानी की तसवीर उपहार में देकर साहब ने तंबू उठाया। चोट्टि ने धानी की तसवीर छिपाकर रखी। उसके बाद स्टेशन के

पास नमक और तेल मोल लेने के लिए बाज़ार गया। वहाँ लाला बैजनाथ को देखा। लाला बड़े आदर के साथ बोला, "चोट्टि! तेरे बाबा की बात दारोगा से कही। गुस्सा आ गया था। उसके बाद जो कुछ हुआ उससे बहुत शर्मिन्दा हूँ। गौरमेन साहब भी तेरा दोस्त है। तू मेरे नाम से कुछ मत कहना रे!"

"किससे कहूँगा?"

"गौरमेन के जो आदमी आते हैं। तंबू लगाते हैं।"

"न, नहीं कहूँगा।"

लौटते वक़्त पहान ने उसे बुलाकर बैठाया। बोला, "तुझसे हमारा मान बढ़ गया। सो तुझे बुलाया है बात बताने को।"

"क्या कहना है?"

पहान साँस छोड़कर बोला, "बाप-दादे से सुना था, आँखों नहीं देखा। हम मुंडा लोगों में किसी-किसी के मन में दुख बैठ जाता है। वह दुख फिर नहीं जाता। दुख आदमी को मार डालता है। शायद बिसरा उस राह पर नहीं है।"

चोट्टि ने ठंडी साँस लेकर कहा, "क्या करूँ?"

"मैं पूजा देकर देखूँगा।"

"देखो।"

यह 1921 का साल चोट्टि के लिए बहुत याद रखने का था। इस बरस वह बाप बना और बेटे का नाम अपनी अनदेखी नदी के नाम पर रखा—हरमू। इस नदी को उसने आँखों से नहीं देखा था। धानी से सुना था कि हरमू नदी के किनारे उन लोगों ने भगवान का दाह किया था। मुंडा लोग दाह नहीं करते। गौरमेन ने किया था। मुंडा लोग समाधि देते हैं। गौरमेन ने गोबर के उपलों से भगवान की लाश जलायी थी, भगवान की लाश का अपमान करने के लिए। धानी ने बताया था कि जेहल से निकल कर हम हरमू के किनारे से एक-एक मुट्ठी मिट्टी लेकर चले आये। माँ बोली, "सोमवार का लड़का, सोमरा क्यों न होगा? कहाँ की है हरमू नदी?"

चोट्टि बोला, "बाद में लड़का होने पर अपने मन से नाम रखना।"

लड़का हुआ। इसी बरस चोट्टि ने आसपास के दूसरे-दूसरे तीर के मुक़ाबले जीते। इस साल पहान ने बिसरा के कल्याण के लिए पूजा का आयोजन किया। पूजा के बाद जब सभी प्रसाद खाने में व्यस्त थे, बिसरा धीरे से उठ गया। किसी ने उसे जाते नहीं देखा। वहाँ से आधा मील चल-कर लाला बैजनाथ के घर के सामने आम के पेड़ से धोती की फाँस बाँध-

कर लटक गया।

आत्महत्या का केस। लाश उतारने के बाद दारोगा आया था। चोट्टि बोला, "तुम किसलिए आये? आबा क्यों मरे? मेरा आबा कभी सूअर का काटना तक नहीं देख पाता था। उसे बेकसूर मारा तुमने, तभी से आबा का माथा कैसा हो गया!"

महावीरसहाय का चेहरा स्याह पड़ गया। दूसरी जगह वह ऐसी बात सहन न करता। लेकिन चोट्टि के गुस्से और आत्मघाती बिसरा की प्रति-हिंसक आत्मा के डर से चुप रहा। बिसरा के शरीर की सद्गति हुई। लाला बैजनाथ के मन में सारी घटना ने बहुत अधिक चोट पहुँचाई क्योंकि उसके बाद ही सारी ज़मीन-जायदाद बेटे तीरथनाथ लाला को सौंपकर वह काशीधाम चला गया और वहाँ शिव-चतुर्दशी के दिन बहुत अधिक भाँग के नशे में नाव पर नाचते हुए गंगा जी में गिरकर मर गया।

इसके बाद ही बार-बार बुखार होने से महावीरसहाय ने छुट्टी ले ली। पहान बोला, "चोट्टि! यह तूने बड़ा अच्छा किया। बिसरा के मरने का दोष जिनका था, उनमें एक मर गया, एक ने छुट्टी ले ली। तेरी बड़ी सामर्थ्य है।"

"बड़ी सामर्थ्य है, इसीलिए मुट्ठी-भर लोगों का पेट नहीं भर पाता हूँ!"

"लाला के खेत पर नहीं जायेगा?"

"जाऊँगा। पेट पर जोर नहीं चलता।"

पहान बोला, "यह ठीक होगा। तेरे रहने से तीरथ हम लोगों पर वार नहीं करेगा।"

इसी तरह चोट्टि के जीवन में और भी किंवदन्तियाँ जुड़ गयीं। चोट्टि ने हार मान ली और उसने काम के बीच फ़ुरसत में तीर का अभ्यास जारी रखा। तीन बरस में वह एक बार फिर पिता बना। कोयल की सगाई सना मुंडा की लड़की मुंगरी के साथ हो गयी। चोट्टि की माँ बाज़ार से लौटते समय साँप के काटने से मर गयी। चोट्टि ग्राम में सूखा पड़ा।

चार

सूखा, भयानक सूखा। ऐसे ही एक सूखे में बहुत दिन हुए, माँ ने चोट्टि को दीदी के घर भेजा था। अब दीदी की गृहस्थी बड़ी थी, वहाँ भी सूखा था।

उसके सिवा दुनिया में भागने की जगह बहुत कम है।

मुंडा लोग बोले, "तीरथनाथ के पास जायेंगे।"

"क्यों ?" चोट्टि ने पूछा।

"उधार लेंगे।"

"उधार देगा ?"

"अँगूठा-निशानी लेने पर उधार देगा।"

"अँगूठा-निशानी देने पर कामिया—मजूर—बनकर बेगारी देना पड़ेगी।"

"देंगे। अभी तो जिन्दा रहना है।"

"पहान क्या कहता है, सुन।"

पहान बोला, "अँगूठा-निशानी देकर बेगारी देंगे। लिखी खुराकी चावल-गेहूँ में जुड़ जाती है, उसके लिए मैं 'हाँ' नहीं कहूँगा। यह बेगार दस पुरखों में भी नहीं चुकती। इसके फंदे में सब फँसते हैं। गंजू, दुसाध, चमार, धोबी—सबको देख लो बेगार में बँधे हैं। मैं किसी से 'हाँ' नहीं कहूँगा। पर इस बात में 'न' भी किसी से नहीं कही जाती। क्यों नहीं कहूँगा ? तब तुम लोग कहोगे, कागज पर निशानी देने से खाने को मिलता।"

चोट्टि बोला, "छुटकारा कैसे हो ?"

"छुटकारा नहीं है।"

"एक साथ काम-काज करते हैं, फिर भी गंजू-दुसाधों से पूछ लो न ?"

उनका प्रधान बोला, "जिसकी तबीयत हो टीप देकर कर्ज ले। मैं क्या कहूँ ? सुना है कि चोट्टि मुंडा हर काम कर सकता है।"

"क्या करने को कहते हो ?" चोट्टि बिगड़ उठा।

"गुस्सा क्यों होता है ? तुम लोग गरीब हो, हम भी हैं। हम कहते हैं, तोहरी में साहब आयेगा, देखेगा कि अकाल है या नहीं, तब खैराती देगा, और गौरमेन के 'अकाल' मानने पर मिशन के साहब-मेम भी आयेंगे। वहाँ जाकर अर्जी दे न।"

"थाने में अर्जी नहीं दूँगा।"

"यह दारोगा ? यह तहसीलदार ?"

"जाकर कहूँ।"

दारोगा बोला, "तुम लोगों को क्या समझायें ? जंगली छोटे लोग। हाँ, सूखा है, लेकिन अकाल कहाँ है ? अकाल में आदमी मरते हैं, गाँव छोड़कर भागेंगे, तब होगा न अकाल ! सरकार का पैसा क्या ऐसा सस्ता है ?"

"तीरथनाथ के सिवा किसी के घर गेहूँ-चावल नहीं है।"

"वह तो देना चाहता है।"

"टीप देने को कहता है।"

"बिना टीप के क्यों दे ?"

"तुम अर्जी नहीं दोगे ?"

"जब देनी होगी, तब दूँगा।"

धरम दुसाध थाने से निकलकर बोला, "चोट्टि, कुछ समझा ?"

"क्या समझें ?"

"तीरथनाथ और दारोगा आपस में मिले हुए हैं। दारोगा अभी अगर अर्जी देता, तो कुछ खैराती मिल जाती। तब तीरथनाथ बेगार के फंदे में इस गाँव को नहीं बाँध पाता। उसे इस मौसम में दो सौ किसानों की जरूरत है। बेगार में किसान मिल जायें तो काम बिना खर्च के निकल जायेगा। मैं जानता हूँ, मेरे परदादा ने उसके परदादा से टीप देकर साल पाई भुट्टा लिये थे। आज भी उसके लिए बेगार देते हैं।"

"इसलिए अर्जी नहीं देगा।"

"अब असाढ़ है। पानी नहीं है। लेकिन पलास, डाहार, कोमाण्डि में पानी हुआ है। यहाँ भी हो सकता है। तब कौन टीप देगा ?"

"जा।"

" 'जा' क्यों ? चल। सबको चलना पड़ेगा।"

तीरथनाथ के कानों में भी खबर पड़ी। वह मन-ही-मन घुमड़ता रहा। स्टेशन ही यहाँ एक घूमने की जगह थी, उसके सिवा इस सूने अंचल में, स्टेशन पर जाने से दुनिया-भर की खबरें मिलती हैं। स्टेशन पर बैठकर उसने स्टेशन-मास्टर से कहा, "इस चोट्टि मुंडा ने बहुत शैतानी कर रखी है। उसके बाबा और मेरे बाबा में ऐसा क्या हुआ कि उसका गुस्सा ठंडा नहीं हो रहा है।"

"क्यों ? चोट्टि मुंडा तो बहुत शान्त लड़का है।"

"इस सूखे में, लोगों को धान-गेहूँ देने के लिए बैठा हुआ हूँ। न खुद लेगा, न औरों को लेने देगा। और उसके साथ सब छोटी जात वाले इकट्ठा हुए हैं। क्या ? मैं कागज़ लिखाऊँगा, बेगार लूँगा। आदिवासी और अछूत से बेगार लेना तो मेरा धरम है।"

तीरथनाथ की एक धोबिन प्रेमिका थी। उसके प्रेम-प्रसंग में मोतिया धोबिन ने कुटनी का काम किया था। मोतिया स्टेशन आयी थी अपने भांजे की तलाश में। मोतिया ने घर जाते हुए तीरथनाथ से कहा, "तुम्हारे बाप ने चोट्टि के बाप को 'महाजन' कहा था, उससे यह सब गड़बड़ हुई।

उसके बाद तुमने चोट्टि के नाम कहा, 'शैतान जमा किये हैं'।"

"कब कहा ?"

"अरे बाप ! कहकर 'न' कहते हो, महाराज ! यही तुम्हारा धरम है ? चोट्टि किसे भड़का रहा है ?"

झटपट मोतिया चोट्टि के पास चली गयी। सारी बात साफ़-साफ़ कहकर बोली, "दे बाबा, उसे एक तीर मार दे। झगड़ा दूर हो।"

चोट्टि बोला, "अभी तोहरी जाऊँगा। साहब से कहूँगा। तुझे भी चलना पड़ेगा।"

"गौरमेन मार तो न देगी ?"

"ना, ना। मैं गौरमेन के पास गया हूँ। मैं जानता हूँ।"

"तेरे पास गौरमेन आया था न ?"

पहान भी बोला, "तो चल।" चोट्टि समझ गया कि पहान के रहने पर भी उसके ऊपर चोट्टि मुंडा समाज के नेतृत्व का भार चला आ रहा है और तीर के मामले में उसके मंत्रसिद्ध होने की बात पर सबके विश्वास करने के कारण आपत्ति-विपत्ति में दुसाध-गंजू-चमार-धोबी भी उसे काम का आदमी समझकर चलेंगे। बहुत ही गड़बड़ की बात है।

1924 के जून महीने में चोट्टि से जो दल पाँच मील वन पार कर तोहरी गया, इसके पहले वैसा दल कभी भी ऐसे उद्देश्य से नहीं गया। ज़मीन की पैमाइश के अफ़सर कैम्प डाले हुए थे। साथ ही, उस अंचल में दुर्भिक्ष है या नहीं, यह देखने का दायित्व भी उनका था। इस ख़बर का चोट्टि के दारोगा के पास से ही आना स्वाभाविक था। ग्रामांचल में दारोगा ही सरकार का प्रतिनिधि होता है। सरकार का नदी किनारे का अंचल चोट्टि था, नहीं तो सारा राजा और ज़मींदार का इलाक़ा था। मगर ये लोग तो दारोगा नहीं, ये लोग कौन थे ? आफ़िसर बंगाली थे। इस अंचल में कर्मक्षेत्र होने से मुंडारी, उराँव, आंचलिक हिंदी जानते थे। तीन पुरखों से राँची के बाशिंदे थे।

दारोगा बोला, "यह क्या ? मुंडा, गंजू, दुसाध—सब एक साथ ?"

"अर्ज़ी है ?"

"भीषण सूखा है, कौए मर रहे हैं। किसी के घर गेहूँ नहीं है, मक्का नहीं है, चावल नहीं है, धान नहीं है। भूखे मर रहे हैं।"

"अर्ज़ी है क्या ?"

"वहाँ दारोगा से कहा, बता दो—अकाल हो गया है। वह बतायेगा नहीं।"

"तुम कौन हो ?" अफ़सर ने पूछा।

"चोट्टि मुंडा।"

"चोट्टि ही न ! क्या तुझे पहचानता नहीं ?" दारोगा बोला।

"दारोगा क्यों नहीं बतायेगा ?" अफ़सर जवाब जानते थे। यह जानकारी उन्हें थी। आंचलिक ज़मींदार या किसान और दारोगा आपसी स्वार्थ देखते हैं।

चोट्टि ने सबकी ओर देखा। उसके बाद बोला, "मैं ही बता रहा हूँ।"

उसने सब साफ़-साफ़ कहा, "तीरथनाथ ने कहा है, मैं सबको मिलाये हुए हूँ। हम एक हो गये हैं, भूख की परेशानी से। किसी को खफा नहीं करते।"

अफ़सर बोले, "ऐसा तो नहीं लगता कि सरकार यहाँ कोई सेंटर खोलेगी।"

"क्यों ?"

दुगन दुसाध ने कुछ दिनों कोयला खान में काम किया था। हिंदी लिखना-पढ़ना जानता था। वह बोला, "हुजूर, हम तो बिना खाये मर जायेंगे।"

"मान लो अगर खैराती आये तो उसमें भी समय लगेगा।"

इस दारोगा के साथ तीरथनाथ के स्वार्थ का कोई संबंध नहीं था। वह बोला, "तुम सभी अगर तीरथ लाला के खेत में काम करो तो वह देगा ?"

"बेगार के खाते में टीप लेगा।"

लोगों के सूखे और दीन चेहरे देखकर अफ़सर बोले, "देखूँ।"

वे प्रशासन को राज़ी न कर सके। लेकिन जैन मिशन और सरतोली के बैप्टिस्ट मिशन को ख़बर भेजी। इन दोनों मिशनों ने चोट्टि आकर लंगर खोला और लगभग महीने-भर खाना बाँटने का काम चलाया। उसके बाद अचानक वर्षा हो गयी। इन दोनों मिशनों की सहायता का यश भी चोट्टि को मिला। पहान घमंड के साथ कहता फिरता, "चोट्टि के साथ गौरमेन का परिचय है। इसी कारण सहायता मिली।"

"बेगारी के कागज पर अँगूठा नहीं लगायेंगे।"

"खुराकी कर्ज दो।"

"जिसे जो दोगे मजूरी में काटोगे।"

तीरथ ने कहा, "मारोगे क्या ? तो हम पर चोट क्यों ? खैरात देगी तो गौरमेन देगी। मैं क्या गौरमेन हूँ ? टीशन का बाबू गौरमेन का आदमी है। उसके पास जाओ। सूखा मैं लाता हूँ ?"

"महाराज, काश अगर मार सकते ! मारने की इच्छा होती है। यह

हमारे हाथ में धनुक जो झूल रहा है। तीर कहता है, लहू चाहिए।"

"मारने पर तुझे फाँसी होगी, चोट्टि !"

"तुम तो लौटकर नहीं आओगे !"

तभी चील की तरह चिल्लाकर तीरथ की माँ ने बुलाया। बोली, "तेरा बाप इस जंगली देश में खेती करके चोट्टि के बाप को घायल कर खुद मर गया। तू भी मरना चाहता है? हमारे भाइयों ने इस मौके पर धरमक्षेत्र खोल दिया। हम जैन हैं। दे देने से तुझे कमी पड़ेगी? दे, उन लोगों को खुराकी दे। मंतर पढ़कर तीर भेज देने पर तू जिन्दा रहेगा? तुझे डर नहीं लगता?"

पत्नी बोली, "जंगली जात का गुस्सा! उन्हें जेहल, फाँसी का डर है? गुस्से में वह जात लाश को कंधे पर लादकर थाने चली जाती है। कहती है, गुस्से से मार दिया। उसके बाद जेहल-फाँसी चढ़ते हैं। जब धोबिन घर से आयेगी, तीर मार देगी।"

"हाँ, तीर मारना हो गया।"

"कौन बचायेगा? दारोगा?"

माँ बोली, "अरे गधे, तू मर गया तो तू तो गया। उसके बाद जिसे जेहल, जिसे भी फाँसी लगे उससे क्या तेरी जान लौट आयेगी?"

इन सारी बातों की सचाई के बारे में गुमाश्ता भी हाँ-में-हाँ मिलाता और कहता, "हमें छुट्टी दे दीजिये। उस लातेहर में ज़मींदार के लगान बढ़ाने पर गुमाश्ते को तीर मार दिया। मैं उस जंगली जात से डरता हूँ।"

तीरथनाथ को लगा कि यह उसकी पराजय है। सारे ज़मींदार-महाजन-बड़े किसान इस समय अँगूठा-निशानी लेकर बेगार क़ायम कर रहे हैं। उदास चेहरे से वह बोला, "पिछली साल का मक्का उनको दे दो। उसमें घुन लग गये हैं, बिकेगा नहीं।"

गुमाश्ता बोला, "अढ़ाई सेर देकर दस सेर लिख लूँगा। सोच क्या रहे हैं?"

इस समय छगन दुसाध की लिखाई-पढ़ाई काम आयी। उसने बड़े जोश के साथ कहा, "बेगार नहीं दी, खुराक लेंगे, यह बात हो गयी? मैं लिखे लेता हूँ। नहीं तो गुमाश्ता हरामीपन करेगा। वह साला बाघ के शरीर का कीड़ा—किलनी—है।"

तीरथनाथ ने सारी घटना दारोगा को बतायी। दारोगा तीन महीने बाद छुट्टी से रामगढ़ जाकर बात कर आया। ख़बर रामगढ़ से राँची गयी। वह विवरण राँची पहुँचा तो इस तरह—चोट्टि मुंडा तथा और लोगों ने धनुक लिये मुंडा और बलोया लिये अंत्यजों का एक विशाल दल बनाकर

स्थानीय ज़मींदार को डर दिखाकर चाभी छीन ली और उसका गोदाम लूट लिया।

चूँकि कोई ख़बर पुलिस के ज़रिये नहीं आयी, इसलिए ख़बर को पहले प्राप्त करने वाले ने इस पर बिलकुल ध्यान न दिया। संध्या को क्लब गया। वहाँ बातचीत में क्रम से सूखे की बात उठी और एक आदमी हँसते हुए बोले, "राँची-पलामू-चाईबासा बेल्ट बहुत अच्छा है। भूखी जनता भी खेती नहीं लूटती। ऐसा कुछ नहीं...।"

उसकी बात पूरी न हो पायी। रिटायर होनेवाला सेना विभाग का डॉक्टर बोला, "शान्तिपूर्ण? तुम क्या जानो, बाइस बरस पहले इस क्लब-घर में हम बैठे हैं, अँग्रेज लोग, और बीरसा मुंडा के डर से काँप रहे हैं। बाद में उसको जरूर हराया गया। लेकिन उसे पीसफुल मत कहो। टुइला बजाता है, अखाड़े में नाचता है, उसके बाद ही जाकर तीर छोड़ता है। बहुत गड़बड़ जात है।"

छोटे लाट का सेक्रेटरी सूखी हँसी हँसकर अधिकार के स्वर में बोला, "भूल जाना ठीक न होगा। उस दिन साउथ इंडिया के ट्राइबल आंदोलन के नेता अल्लूरी राजू को मार दिया गया। आदिवासी बेल्ट में कोई अशांति होने से उसे बहुत गंभीरता से लेना उचित है।"

"यह राजू कौन है?"

"विशाखापत्तनम् की एजेंसी के पहाड़ी आदिवासियों का नेता।"

"मारा गया माने?"

"मार डाला गया। फाँसी नहीं हुई।"

"अहिंसक संग्राम में, या हिंसात्मक लड़ाई में...?"

चोट्टि की ख़बर पानेवाले को मन-ही-मन बहुत अजीब-सा लगा। दूसरे दिन अनुमति लेकर छोटे लाट के सेक्रेटरी से घर पर मुलाक़ात की। मिलने पर माथे का पसीना पोंछ घटना के बारे में जो मालूम था, कह गये। सुनकर सेक्रेटरी का भाई बोला, "इस तरह की एक ख़बर है, उसकी कोई रिपोर्ट नहीं है?"

"नहीं, सर।"

"तुमको कहाँ से पता चला?"

"रामगढ़ होते हुए।"

"फिर मुंडा विद्रोह है क्या? न-न, कह रहे हो कि और गाँववाले भी थे। बहुत गोलमाल लग रहा है।"

"मैं कुछ कर नहीं पा रहा हूँ, सर।"

जिसने कहा वह छोकरा साहब था। 'मैं कुछ कर सकता हूँ' कहने

के साथ-साथ उसके मन में चलती तसवीरों का जुलूस तैर उठा। मुंडा अभ्युत्थान हो रहा है। वह जाकर रोकता है ? तरक्की। प्रशंसा। उसके उत्साह पर पानी डालते हुए सेक्रेटरी तीती और रूखी आवाज़ में बोले, "क्या करेंगे ? थाने पर बात सुनकर फ़ोर्स जायेगी ? न-न ! मुंडा लोगों के बारे में सारी बातें ख़तरनाक हैं। सावधानी से संभालना होगा। महा-जन-ज़मींदारों की बात तो जानता हूँ। बहुत बदज़ात होते हैं। उन लोगों के निरन्तर शोषण न करने पर आदिवासी शान्तिपूर्ण ग्राम दिखायी पड़ते। अत्यन्त सतर्कता और सावधानी से देखना होगा कि मामला क्या है। अगर देखूँ कि वैसा कुछ नहीं है, तो ठीक करने जाकर सचमुच झगड़ा हो जायेगा। तब क्या रेला रुकेगा ? तुम जाओ। मैं देखता हूँ। क्या नाम बताया ?"

"किसका ?"

"मुंडा का।"

"चोट्टि गाँव का चोट्टि लड़का। चोट्टि नदी पर गाँव है। नदी के किनारे चिड़ियों का शिकार बड़ा अच्छा होता है। जंगल में बाघ और हाथी भी हैं।"

"समझ गया। जाओ।"

अफ़सर चला गया। अब एक दूसरी कुर्सी से खुले कागज़ खिसक आये। अलस कंठ से पूर्वपरिचित पगला साहब बोला, "क्या नाम बताया ?"

"चोट्टि गाँव का चोट्टि मुंडा।"

"उसने क्या किया ?"

"सुना नहीं ?"

"सुना। बकवास !"

"तुमको क्या पता क्या कहा ?"

"गाँव को जानता हूँ, आदमी को पहचानता हूँ। बहुत अच्छा जवान आदमी है। तीर चलाने में उस्ताद है। आस-पास के तमाम मेलों में तीर के खेल होते है, वह उन सब में जीतता है।"

"बहुत अच्छी ख़बर नहीं है।"

"क्यों ?"

"तीर चलाने में उसके इतना होशियार होने से मुंडा लोग उसे लीडर बना देंगे।"

"मेरा मतलब है चोट्टि के बारे में। क्या हुआ, जानते हो ?"

"जानता हूँ।"

"मुझे बताओ।"

"सचमुच हिउ, सारी करतूत तुम्हारी है।"

"क्यों ?"

"सारी गंदी घटनाएँ तुम्हारे पीछे-पीछे चक्कर लगाती हैं।"

"मैंने क्या किया ?"

"जेजुड़ के हाट में तसवीरें बनाने गये, धानी मुंडा की घटना। चोट्टि जाकर जिससे दोस्ती की, वह ग़द्दार है।"

"पहले मालूम कर लो। लेकिन वह मोटा लाला, उसे मैंने देखा है। बेटा, शैतान का हाड़ है। उसे सबक़ मिलना ही चाहिए। पता है ? चोट्टि ग्राम के आधे आदमी उसके बँधुआ मज़दूर हैं।"

"हम-तुम क्या करेंगे ?"

"बँधुआ मज़दूर !"

"यह तुम्हारा शानदार इंडिया है।"

"चोट्टि की तसवीर देखोगे ?"

"देखें। वाह ! देखने में तो अच्छा है।"

"शांत। भलामानुस।"

"वह बात मत कहो। उससे कुछ साफ़ नहीं होता। मेरे वक़्त के बहुत पहले की घटना है। लेकिन जिन लोगों ने देखा है; उनका कहना है कि बीरसा की मुसकान बड़ी ही मधुर थी।"

"तुम लोग भूत से डरते हो। बीरसा ! मैंने तो घूम-घूमकर देखा है। मुंडा लोग बहुत शांतिप्रिय हँसमुख लोग होते हैं।"

"मेरा काम मुझे करने दो।"

भाग्य से रामगढ़ में तोहरी का दारोगा मिला। सरकारी हुक्म पाकर वह कुर्बानी के बकरे की तरह काँपता-काँपता भागा आता है। आँखें पोंछकर सारी घटना बता देता है। सेक्रेटरी को पता चला कि अकाल की घोषणा की जाये, यह बात कहने चोट्टि गया था।

"क्यों, तुमने रिपोर्ट क्यों नहीं की ?"

"ग़लती हो गयी, हुज़ूर !"

"लेकिन चोट्टि अकाल-पीड़ित क्षेत्र था। यह किसकी रिपोर्ट थी ?"

इसके बाद ज़मीन की पैमाइश के अफ़सर भी आये। उन्होंने अपना विवरण दिया। अकाल पड़ा हुआ था। और तीरथनाथ बेगार के पट्टे पर टीप लेगा। तब उसे समय देने के लिए दारोगा ने रिपोर्ट नहीं की, यह सुन-कर सेक्रेटरी खफ़ा हो गये। दारोगा को फिर तोहरी नहीं भेजा गया। उसे कैफ़ियत देने का हुक्म दिया गया। उसकी पदावनति कर बदली की गयी। सेक्रेटरी ने पुलिस-कमिश्नर से कहा, "वह तुम्हारे दफ़्तर का आदमी है।

उसे समझा दो कि उसके द्वारा ज़मींदार की स्वार्थ-सिद्धि में मदद पहुँचाने पर, आदिवासियों और निम्नवर्ग के लोगों में असंतोष होने से उसे बाक़ी जीवन जेल काटनी होगी। बेवकूफ़ बदज़ात कहीं का !"

नये दारोगा ने तोहरी जाकर रिपोर्ट दी। सब शांतिपूर्ण है। कोई गड़बड़ नहीं है। तीरथनाथ की तरफ़ से भी कोई शिकायत नहीं है।

अब ह्यू अपने बड़े भाई से कहता है, "अरे मैंने ही तो कहा था कि कैम्पिंग अफ़सर से अपनी शिकायत सीधे-सीधे बताओ।"

सेक्रेटरी ने अब भाई को विलायत वापस बुला भेजा। उनके ही भाई ने मुंडा लोगों से यह बात कही थी, यह बात खोंचा-खाँची करने से निकल पड़ेगी ही। मुंडा लोग खून करने पर भी गर्व के साथ स्वीकार करते हैं। एक अँग्रेज़ ने यह बात कही थी। अँग्रेज़ माने गवर्नमेंट, इस बात को वे ज़ोरों के साथ कहेंगे। वे छोटे लाट के समीप ह्यू की किस तरह व्याख्या करेंगे? धानी मुंडा, चोट्टि मुंडा—उनका भाई प्रत्येक गड़बड़ आदमी की तसवीर बनाकर बैठा है! भाई से बोले, "विलायत जाकर तुम्हारा अभागा भाई किताब छपायेगा। उनमें उन दोनों तसवीरों को मत देना।"

जवाब में ह्यू हँसता और क़ायदे के मुताबिक़ 'द फ़्लूट ऐंड द ऐरो' प्रकाशित होने के बाद उसमें दोनों तसवीरें दिखायी पड़ीं। इसको लेकर और कोई शोर-शराबा करने का मौक़ा नहीं मिला, क्योंकि उगांडा के आदिवासी लोगों की तसवीर बनाते हुए क्रुद्ध ग्रामवासी लोगों के बरछे से बिंध कर ह्यू ने ईश्वर की इच्छा पूर्ण की और भाई को चैन पहुँचाया।

सारे सवालों का फ़ैसला होने के बाद भी सेक्रेटरी के दिमाग़ में यह ख़याल चक्कर काटता रहा कि शिकार के लिए चोट्टि अच्छी जगह है। चोट्टि मुंडा तीरंदाज़ों में भी बहुत प्रसिद्ध तीरंदाज़ है। हर मेले में वह तीर की प्रतियोगिता में जीतता है। इसी कारण उसके नाम पर तमाम क़िस्से गढ़े हुए हैं। इस तरह के आदमी ज़रा भी भड़कने की बात पर विद्रोही हो सकते हैं। ग़ैर-मुंडा लोगों पर भी उसका प्रभाव है। उसका कार्य-कारण जो भी हो, ऐसे लोगों का जेल में रहना ही ठीक है। लेकिन मुंडा बहुत ही बिगड़ैल जात है। उठाईगीरी भी नहीं करते।

हर मेले में यह तीर चलाने की प्रतियोगिता ही क्यों होती है? इस सवाल के जवाब में वे गज़ेटियर खोलकर देखते। इस प्रतियोगिता का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आदिवासियों के उत्सव का अंग है। राजा-ज़मींदारों की मदद रहती है। वे ग़ैर-सरकारी ढंग पर सरकारी इच्छा बता देते हैं, अब से दुर्भिक्ष की खबर प्रसार के मार्ग से ही ग्राह्य होगी। इससे ज़मींदार-महाजनों को दुख न होगा। उपयुक्त अधिकारियों को यह

बात भी बता दी गयी। अकाल होने पर इसके बाद ज़मींदार-महाजन को आदमियों के प्रति दयावान होना होगा। सब-कुछ होने पर भी उन्हें अब हज़ारों तरह का परिरक्षण प्राप्त होता है। बदले में दो-तीन बरस बाद एक इंसान के आचरण की अपेक्षा करना क्या बहुत अनुचित है? थोड़ी-सी हृदय-परिवर्तन की कामना क्या बहुत ज़्यादा चाहना है? हृदय-परिवर्तन होने और दान-ध्यान करने पर वह सरकार की नज़र से छिपा नहीं रहता है। दान-ध्यान से ख़िताब मिलता है।

छानने की प्रणाली में यह ख़बर एक बार चू-चू कर ग़लत पहुँची। तब अचानक एक बहुत अजीब अर्ज़ी सदर आ पहुँची।

"ग़रीबों की माँ-बाप सदाशय जगज्जननी गौरमेन लाट साहेब सभी से निवेदन किया जा रहा है। इस अधम तीरथनाथ लाला—मौजा के—तहसील चोट्टि के आदि बाशिन्दा। गत 1924 साल के जून मास में जब अकाल हुआ 117 ग्रामवासी लोगों को तीरथनाथ ने रोज़ खाना देकर बचाया, इसके बाद मिशन की मेम लोग आयीं। तीरथनाथ न रहता तो गाँव वाले मर जाते। अधम की बात को कोई कहने वाला न था, इसलिए यह सेवा-कार्य अनदेखा और उपेक्षित रह गया। अब उपयुक्त ख़िताब देकर अधम को धन्य करने से वही काफ़ी पुरस्कार होगा। यह भी निवेदन है, छोटे लाट बहादुर के दुर्भिक्ष त्राण भंडार में अधम ने एक सौ एक रुपये दिये हैं।" इत्यादि इत्यादि...।

अर्ज़ी को सरकार ने सस्नेह देखा। हृदय-परिवर्तन का जाज्वल्यमान केस था। 'रायसाहब' ख़िताब दिया गया।

इसके बाद, एक शुक्लपक्ष में किसी और कारण से नहीं, शिकार की चाह से सेक्रेटरी चोट्टि की ओर रवाना हुआ। बाद में तोहरी में कैम्प लगाने के समय, स्थानीय ज़मींदार के अनुरोध पर मेले में आदिवासियों के तीर का खेल देखने गये। दुबला-पतला, सीधे तना और तेजस्वी एक मुंडा तीरन्दाज पहचाना हुआ-सा लगा। सब उसकी तरफ़ कैसे आदर के साथ देख रहे थे। युवक ने अविश्वसनीय दक्षता से लक्ष्यबेध दिया, यह देखकर वे चौंक गये। काफ़ी ऊँचे पर काठ की खूँटी मिट्टी में गड़ी थी। खूँटी पर आँख बनी हुई थी। खूँटे के सिरे पर एक लकड़ी की थाली रखी थी। थाली के किनारे में छेद था। छेद में से रंगीन डोरी की झालर लटक रही थी। डोरी के किनारे काग़ज़ की बनी चिड़िया थी। नीचे से गरारी खींचकर थाली घुमायी जाती थी। डोरी में बँधी चिड़िया भन्न-भन्न घूम रही थी। उसके बीच से लकड़ी पर आँख बेधी गयी।

"वह कौन है?" ज़मींदार ने हाथ मलते हुए बताया, "चोट्टि गाँव का

चोट्टि मुंडा, हुजूर ! उसे तीर का मंत्र आता है। आज कई बरस से अव्वल हो रहा है। आपने तो खुद देखा, और लोग न कर सके।"

चोट्टि ने पुरस्कार सेक्रेटरी के हाथों से ही लिया।

"वे लोग कौन हैं ? खुशी से चिल्ला रहे हैं। बाजे बजा रहे हैं ?"

"उसके गाँव के लोग हैं।"

"सब मुंडा हैं ?"

"न, न, दूसरे छोटी जात के भी हैं।"

इसके बाद सेक्रेटरी ने चोट्टि नदी के किनारे एक दिन का कैम्प किया। साहब की देखभाल का सारा इंतज़ाम तीरथनाथ ने ही किया था। सेक्रेटरी के तलब करने पर चोट्टि डरता हुआ आया। सेक्रेटरी बोले, "देखें, चाँदनी रात में उड़ती बत्तख मार सकते हो या नहीं ?"

"मार सकता हूँ, मालिक !"

ज्योत्स्ना जिस प्रकार चाँद से झरती है, बत्तख के पंख उसमें मिल जाते हैं। ये बतखें यायावर थीं, इस समय बालू पर उतर पड़तीं। शीत बीत जाने पर न जाने कहाँ चली जातीं। चोट्टि ने धनुष उठाकर स्थिर लक्ष्य पर बत्तख मारी। सेक्रेटरी ने बन्दूक से बत्तख मारी। दूसरे दिन जाने के समय पहान से कह गये, "तीर खेलो, चिड़िया मारो, लेकिन तुम्हारे आदमी गड़बड़ न करें।"

पहान और चोट्टि आदि सिर झुकाये रहे।

"सचमुच तुम्हारा तीर का हाथ अच्छा है।"

चोट्टि के लिए यह कहकर सेक्रेटरी स्पेशल सैलून कार में बैठ गये। उनके लिए विशेष ट्रेन आयी थी।

इसके बाद तीरथनाथ का ख़िताब आया। तीरथनाथ चोट्टि के बारे में बड़े आदर के साथ बोला, "माँ ! उस समय अगर चोट्टि न आता, तो मैं ख़ैरात न बाँटता। ख़ैरात दी, इसीलिए ख़िताब आया।"

"कहती थी कि उसे मंतर आता है।"

चोट्टि के जीवन में यह एक और किंवदन्ती जुड़ गयी। इसके बाद गाँव के तीन मुंडा युवक उसके पास आये थे। लगभग छः बरस बाद।

पाँच

इन छः बरसों में चोट्टि के जीवन में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं

हुई। मुंडा लोगों के जीवन में होती भी नहीं। बीच में मुंडारी गाँव में दुख-दारिद्र्य के रहते 'करम' या 'सोहराइ' या 'हो' के जातीय अर्द्ध-हिन्दू उत्सव या हरमदेउ की पूजा के उपलक्ष में कुछ विचित्रता ज़रूर आयी। पँचमेल गाँवों की मुंडा टोली में वह उत्सव उस तरह की चहल-पहल नहीं लाते। इससे ज़्यादा शिकार के उत्सव के दिन उनका उत्साह दिखायी पड़ता। पहले शिकार-उत्सव आदिवासियों का हुआ करता था; अब दूसरी जातिवाले भी इसमें भाग लेते थे। शिकार-उत्सव, आंचलिक मेला—इनमें बड़ा आनंद रहता।

मुंडारी जीवन में और कुछ न होता। चोट्टि की तरह के मुंडा लोगों के जीवन में। तीरथनाथ के खेत जोतना। अपनी ज़मीन जोतना, भाई को लेकर यह सब काम करना। तमाम मुंडा औरतों की तरह उसकी और कोयेल की बहू भी बहुत मेहनत करतीं। चोट्टि की पत्नी पति-परायणा थी। कोयेल की पत्नी अगर शान्त औरत न होती तो मुश्किल होती। इस घर की बड़ी बहू गाय और बकरी चराती। बकरियाँ स्टेशन पर या जंगल के ठेकेदार को बेचकर जो कुछ मिलता, उसे टीन के डिब्बे में रखकर चूल्हे के पास गाड़ दिया जाता। चूल्हे के आस-पास रुपये रखने से वे चोरी न जाते। फ़सल होने पर वह हाट से चावल या गेहूँ या मक्का ख़रीदकर लाती। छोटी बहू खाना बनाती या घर के और काम-काज करती।

सब-कुछ पुराने ढँग से चल रहा था। बाहर से देखने पर यह नहीं लगता था कि कहीं कोई अशान्ति है। लेकिन स्टेशन पर रहने से कभी-कभी बाहर की ख़बरें मिलतीं। हमेशा ट्रेन रुकती नहीं थी। लेकिन जो ट्रेन चली जाती थीं, वे भी देखने में कैसी अच्छी लगतीं ! ट्रेन माने आधुनिकता की शक्ति, यंत्र। प्लेटफ़ार्म पर खड़े ग़रीब लोगों का इससे कोई मतलब नहीं। फिर भी खड़े-खड़े देखने में अच्छा लगता। देखते-देखते अँधेरा होने पर घर लौटना होता।

1930 के वर्ष में यह नया दृश्य देखा गया। गाड़ी के किसी-किसी डिब्बे में पुलिस रहती। यात्रियों के सिर पर सफ़ेद टोपियाँ रहतीं। वे चिल्ला-चिल्ला कर क्या कहते थे, यह समझ में न आता।

सना मुंडा ख़बर पाकर बोला, "दिकू लोग गांधी राजा के चेले हो गये।"

चोट्टि बोला, "गांधी राजा ! वह कौन है ?"

"मुझे मालूम नहीं है। सब लोग कहते हैं कि बहुत बड़ा राजा है।"

"ये लोग चेले हैं ?"

"हाँ रे ! साहब लोगों को भगायेंगे, इसलिए बलोया उठा रहे हैं। इसीलिए चारों ओर उनको जेहल में लिये जा रहे हैं।"

"ऐसा ! तो इतने दिकू ? दिकू लोगों का अन्त नहीं ?"

चोट्टि की नासमझी पर सना हँसा। बोला, "दिकू अनगिनती हैं।"

"मैं तो चारों ओर जाता हूँ। एक भी दिकू दिखायी नहीं देता।"

"दिकू लोग शहर में रहते हैं। वहाँ तमाम मकान हैं, सड़कें हैं। वे लोग इस जंगली देश में आयेंगे कि तू देखेगा ?"

ठंडी साँस लेकर चोट्टि चला आया। सना बोला, "इस बार तीन मेलों में नहीं गया। क्यों रे चोट्टि, क्या हुआ ?"

"समय कहाँ है ?"

इसके बाद ही उसके पास तीन मुंडा युवक आये—दुखाई, बिखना और सुखा। चोट्टि के पैरों के नीचे एक जोड़ी काली मुर्गी रखकर उन्होंने धरती पर प्रणाम किया।

"यह क्या ? तुम लोग कौन हो ?"

"हम कुरमी गाँव के मुंडा हैं।"

"यह क्यों लाये ?"

"एक बात है।"

"क्या बात ?"

"अलग कहेंगे।"

वे नदी के किनारे चले गये। सुखा बोला, "इस बार तुम सब मेला में नहीं गये। इसलिए भी खबर लेने आये हैं। एक बात और है।"

"क्या बात ?"

उन लोगों ने एक-दूसरे की ओर देखा। सुखा बोला, "तुम हम लोगों को सिखा दो। हम जनम से हाथों में धनुक लिये हैं। किन्तु तुम्हारी तरह निशाना नहीं लगाते। मंतर दो ?"

"तुम मेरा मंतर चाहते हो ?"

"हाँ।"

"मंतर, मंतर, सब मेरा मंतर देखते हैं। इन हाथों को देखो। चिल्ला खींच-खींच कर कड़े पड़ गये हैं। आज भी अभ्यास करता हूँ। तुम करोगे ?"

"करेंगे।"

"दुपहर से सिवा समय नहीं है।"

"हमको भी।"

"गर्मी बढ़ने पर सूरज उठने से पहले।"

"तभी आयेंगे।"

"क्यों सीखना चाहते हो ?"

सुखा पापरहित शुभ्र हँसी हँसा। बोला, "तुम हम लोगों की नज़र में राजा हो। किन्तु हमारी साध है कि मेले में निशाना बेधें।"

"वह हुआ।"

सुखा इस समय तरुण है। चोट्टि की उम्र तीस हो गयी है। फिर भी याद है कि पहला निशाना बेधने के बाद दर्शकों के जयोल्लास से कलेजे में कैसा आनंद उठा था। रक्त में गर्जन था, आनंद से कलेजा मानो फट गया हो। एक साथ चोट्टि से तोहरी तक, दिगन्त तक जैसे लाल पलास खिल उठे हों, कलेजे में। हाँ, इनको भी वह अधिकार है। निशाना बेधने के बाद भी मेले के राजा को अँधेरे घर में ही लौटना पड़ा।

"और तुम जब नहीं रहोगे तो हम बता सकेंगे कि तुमसे सीखा था।"

"तुम लोग गुस्सेवर हो। नाकाटा के राजा का गुमाश्ता हाट में तौलाई लेता है, इस बात को लेकर उसके साथ झगड़ा है। मैं तो उसे छुड़ाने में दम निकाल दूँगा। तब ?"

"तुम ठोकर भी क्यों न मारो। जहाँ तुम्हारे पाँव हैं, हम वहाँ की धूल चाटेंगे। तुम देखना, हम धूल खायेंगे।"

चोट्टि के कलेजे के नीचे मानो कुछ फट पड़ा हो। जेजुड़ की हाट। धानी मुंडा कह रहा है, "धूल फाँकता हूँ देश की। घर की माटी फाँकता हूँ।" गोली छूट कर आयी थी।

आँखों में गहरी पीड़ा थी। असीम प्रेम से चोट्टि बोला, "तुम लोग आओ। मैं सिखाऊँगा। मेरे सिखाने से तुम निशाना लगाना।"

सुखा आदि प्रणाम कर चले गये।

पहले ही दिन चोट्टि ने मन-ही-मन धानी से क्षमा माँग ली—आज पंद्रह-सोलह साल से तुम नहीं हो, फिर भी तुम्हारे लिए मेरा मन दुखी है। बाबा के मरने पर दुनिया ऐसी सूनी नहीं लगी। जब गान गाता हूँ तब मन में उठता है कि तुम मेघ पर बैठकर सैलराकार[1] में मिल गये हो। आकाश में तो बहुत मेघ हैं। तुम कौन-सा मेघ हो, समझ में नहीं आता। तुमसे मुझे शिक्षा मिली थी, अब मैं जवान नहीं रहा। आज मेरे पास भी सीखने के लिए लड़के आते हैं। उनको क्या सिखाऊँगा ? वही न जो तुमने सिखाया था। तुम आशीर्वाद दो।'

उसके बाद वह तीनों लड़कों को लेकर नदी के पश्चिम की ओर

1. सैलराकार—पहाड़ जहाँ बीरसा मुंडा अँग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था। देखें—लेखिका की पुस्तक 'जंगल के दावेदार'।

चलता रहा, जहाँ कि पहाड़ बहुत पास दिखायी पड़ते हैं, लेकिन पास नहीं आते। बन के अंचल में आँवले के पेड़ हैं। फलों के भार से पेड़ मानो झुके पड़ रहे हों।

"ठहरो !" चोट्टि उनसे फुसफुसा कर बोला। वे लोग रुक गये। चारों चुपचाप खड़े रहे। थोड़ी दूर पर घास हिल उठी। कुछ देर बाद साँस छोड़ कर चोट्टि ने माथे का पसीना पोंछा।

"बाघ लेटा था। उठ गया।"

"हमने तो देखा नहीं।"

"तो यहीं से शिक्षा शुरू। जंगल में चलना जानना पड़ेगा। तुम लोगों ने बाघ को नहीं देखा। उसने हम लोगों को ठीक देख लिया। उसके रोम-रोम में आँखें होती हैं। उससे अधिक सावधान कोई नहीं है।"

जंगल और पहाड़ के बीचोंबीच की भूमि में कई पलाश के पेड़ थे। उनके नीचे पत्थर थे। चोट्टि ने उन लोगों से रुकने को कहा। खुद दूर चला गया। पत्थर पर कड़े चूने से निशाना बनाया। लौटकर बोला, "धनुक उठाओ। और कुछ नहीं। सिर्फ़ यही निशाना है। निशाना बेधने का मंतर यही है। आँखों को ठीक करो।"

सिखाना चलता रहा। सुखा और बिखना हँसमुख थे। अपने गाँव के अखाड़े में नाच-गाने के बड़े उत्साही सदस्य थे। दुखिया चोट्टि को बहुत दुर्बोध्य लगता। एकाग्रता और दक्षता उसी में अधिक थी, लेकिन बोलता बिलकुल न था। हमेशा गुमसुम-सा बना रहता था।

"तू इस तरह चुप्प क्यों है, दुखिया ?"

"उससे उसने हल्दी ली, करमी ने चूड़ी ली, लेकिन सगाई की कनू से।"

दुखिया बोला, "थू, करमी के नाम पर थू !"

"क्यों ?"

"दुखिया नाकाटा के राजा के गुमाश्ते की बेगार करता है। हम भी करते हैं। लेकिन उसका कुछ नहीं है। जमीन-जायदाद सब-कुछ टीप-छाप में बंधक हैं।"

"चुकता कब होगा ?"

दुखिया सूखे गले से बोला, "बेगार उसके खाते में चुकता नहीं होता। मेरे बाप के बाप ने कर्ज लेकर वंश को बाँध दिया है।"

"क्या लिया था ?"

"दस पाई धान।"

"दस पाई धान ?"

"हाँ।"

कुछ दिन बाद दुखिया अपने-आप चोट्टि से बोला, "घर के साथ एक टुकड़ा जमीन है। उसमें मिर्च, लहसुन, प्याज लगाता हूँ। वह गुमाश्ते का है।"

"कैसे ?"

दुखिया सूखे और दुखी गले से बोला, "बेगार बाप-दादे ने दी। मैं भी दूँगा। क्या बेगार नहीं देता हूँ ? देता हूँ। लेकिन वह मुझे कहता है—कामचोर, हरामी, गू खाने वाला। क्यों कहता है ? बेगार एक-सी देता हूँ। वह राजा की कचहरी जाता है। हम पालकी उठाते हैं। वहीं दिन बीतता है। साँझ को पालकी लेकर लौटते हैं। तब तक हम भूखे-प्यासे बैठे रहेंगे। किसी दिन गुड़-पानी भी नहीं देता। कहता है, तुम लोग तो उपासे ही रहते हो। मुंडा लोगों को खाये बिना कष्ट नहीं होता ?"

"नहीं, मुंडा आदमी नहीं है।"

"हाट में उगायी हुई सब्जियाँ बेचता हूँ, बेचकर धान लेता हूँ। उस पर भी बाजारी लेता है। कुरमी के हाट की बाजारी लेने का मामला पुराना है। इसी कारण से उराँव एक-एक कर गाँव छोड़ रहे हैं। मन होता है कि भाग जाऊँ।"

"कहाँ जाओगे ?"

"यही तो बात है !" दुखिया सूखी आवाज़ में हाय निकालता हुआ बोला, "जायेंगे कहाँ ? कहीं जाने का ठौर नहीं है। लेकिन मन में ऐसा उबाल उठता है कि किसी दिन कुछ कर बैठो। गुमाश्ता जब गाली देता है तो मन-ही-मन बुरा लगता है। गाली देने से मुंडा का खून गुस्से से भर जाता है। मन भड़क उठता है।"

दुखिया को देखकर चोट्टि को बिसरा की, अपने पिता की बात याद आयी। वह धमका कर बोला, "कैसे रहेगा ? यह बात नहीं सोचता।"

"सोचना नहीं चाहता, मन में उठता है।"

और कुछ दिन बीते। सुखा और बिखना उम्र में तरुण होने पर भी दुनियावी ज्ञान में पारंगत थे। उन्होंने दुखिया से कहा, "माना कि गुमाश्ता बहुत ही हरामी है, लेकिन हाट में बाजारी के लिए मुझसे भी कचहरी में कह आया। हमें भी गुस्सा है।"

दुखिया सिर हिला कर बोला, "अच्छी चीज पर पंजा मारता है।"

"मेला में जायेंगे, तीर खेलेंगे, निशाना लगायेंगे। छोटा-सा तो मेला है, दो-चार रुपये मिलेंगे।"

"रुपया नहीं लूँगा, धान लूँगा, रुपया वह छीन लेगा।"

"यह बात सच है कि तुझे जादा गाली देता है।"

"हाँ, देता है। तुम्हें गाली क्यों नहीं देता है? क्योंकि तुम लोगों के पीछे बाप-भाई हैं। मेरा कोई नहीं है। इसलिए गाली देता है।"

"अब तूने हम लोगों को गाली दी।"

"कैसे?"

"तेरा कोई नहीं है! हम नहीं हैं? हम लोगों के घर में एक आदमी के पीछे मुंडा-उराँव सब रहते हैं। देखता नहीं है?"

"कसूर हो गया।"

"तीर के खेल में निशाना लगाने पर...," चोट्टि बोला, "तीर के खेल में निशाना लगाने पर मन अच्छा हो जायेगा। दो-चार रुपये मिलें, सगाई कर लो। उल्टी बात मत सोच, दुखिया! जो सब लोग करें, वही करने में सुख है।"

चोट्टि ने सोचा था कि दुखिया आत्महत्या की बात सोच रहा है। 'किसी दिन कुछ कर बैठें' यह मानो हत्या की बात ही हो। दुखिया की बात सोचने पर आजकल उसे धानी मुंडा की बात याद आती है। क्यों याद आती है? लगता कि जेजुड़ जाने पर पुलिस की गोली से मरना ही होगा, धानी को यह मालूम था। वह फिर भी गया। क्यों गया? दुखिया की बात सोचते ही धानी के बारे में यह एक बात क्यों याद आ गयी?

उसने दुखिया से कहा, "एक तीर-खेला में तुम अगर अकेले जीत सके तो मन में जो खुशी होगी, उसके जोर से तेरे सिर का भूत उतरेगा।"

"तब गुमाश्ता मुझे गाली न देगा?"

"शायद इतनी गालियाँ न दे।"

"देखूँ। तुम झूठ तो कहोगे नहीं।"

'कुछ करके रहूँगा'—कहने से दुखिया क्या कर सकता था? यह बात चोट्टि नहीं समझा। देउ ग्राम का मेला हुआ। तीर के खेल में दुखिया अव्वल भी आया और उसे दो रुपये नक़द भी मिले। सचमुच इससे उसे बहुत ख़ुशी हुई और उसने चोट्टि से यह बात कह भी दी। बोला, "बाप रे! ऐसी ख़ुशी! चोट्टि में बाढ़ आने पर जिस तरह पत्थर तैरने लगता है, इस ख़ुशी ने मेरा सारा दुख बहा दिया। कलेजा हलका-हलका लग रहा है। कितने दिनों से छाती में क्रोध और दुख लिये फिरता था। लेकिन अब ठीक हूँ।" यह बात कहकर दुखिया पैर के अँगूठे से ज़मीन कुरेदने लगा। गुमाश्ते को देखकर भी उसे होश न हुआ।

चोट्टि बहुत ही ख़ुश हुआ।

उसके बाद सब-कुछ शांत-शांत रहा। अहिंसा के सेनानियों को ट्रेन

[illegible] जाते थे। वह तो बाहरी संसार की घटना थी। अगहन में धान पक रहे थे। चिड़ियों के झुंड झुक पड़ते हैं, खेतों से हिरनों को भगाना पड़ता है। फिर यायावर पक्षियों का चोट्टि की बालू में उतरना, चाँदनी में उड़ती हुए बत्तखों के मिलने का मौसम आ रहा है। चोट्टि ने हाट से एक टाट मोल लिया। टाट में पुआल भर लेंगे, उसमें घुसकर उसके लड़के जाड़ों में सोयेंगे। इसी बीच सहसा बहुत-से लोगों का एक भयंकर जुलूस चोट्टि के जीवन को, जीवन के विश्वास को कँपाकर और उसे बदलकर चला गया। जुलूस के आगे दुखिया मुंडा था।

उस समय तीन का वक़्त होगा। चोट्टि ग्राम के सब लोगों ने देखा था कि कुरमी पहाड़ से आकाश की पृष्ठभूमि से लगा एक जुलूस आ रहा है—क़तार-दर-क़तार आदमी। जुलूस के आगे कोई बल्लम की नोंक पर कुछ लिये आ रहा है। क़तार-के-क़तार आदमी। जुलूस जैसे एकाग्र होकर चोट्टि में घुस आया और आगे वाला आदमी बोल उठा, "चोट्टि, मैं दुखिया हूँ।"

अब सभी ने देखा। चोट्टि ने भी देखा कि दुखिया के हाथ में बल्लम है और बल्लम की नोंक पर किसी का कटा सिर है। उसे लगा कि गुमाश्ते के सिर और छाती में मानो तीर लगे हों। वह चीख़कर बोला, "दुखिया, यह क्या किया?"

दुखिया मानो नशे में हो, नशे में। मानो उसे अपने अन्तर की सहस्रों यंत्रणाओं की बेगार से मुक्ति मिली हो। उसके दो पैर थोड़ा हिल रहे थे। संसार-भर के आश्चर्य से पापरहित आँखों से वह बोला, "तुमने कहा था कि वह गाली न देगा। पर हाट में बाजारी वसूल करने आया। मैं मिर्चें लेकर बैठा था—बाजारी लेने के लिए उसने जूते की ठोकर से मेरा हाथ क्यों हटाया? जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को ढँके रहता है, उसी तरह मैं मिर्चों की टोकरी को ढाँके हुए था। मेरे हाथ पर सिपाही ने जूते की ठोकर मारी—सिपाही के हाथ में बल्लम था। सिपाही से बोला, 'उठा ले' उसकी टोकरी। तीर खेलने से उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है। साला, कामचोर, निमकहराम, मेरी बेगारी में बेकार करता है और अपने खेत में मन लगा कर मिर्चें पैदा करता है।' थोड़ा पानी देना।"

दुखिया ने ढकर-ढकर कर पानी पिया। बोला, "तुमने कहा था, वह बात मत सोचना। मैं सोचना नहीं चाहता, लेकिन उसने मुझसे यह काम कराया। उसके बाद माँ की गाली देने जा रहा था, मैंने पूरी न होने दी। बलोया से सिर झुकाकर सिपाही के बल्लम से छेद दिया।"

"कहाँ, दुखिया कहाँ?"

विस्मित होकर दुखिया बोला, "क्यों ? तोहरी में।"

"जेहल होगी, फाँसी होगी, दुखिया !"

"तब ?"

"तू भाग जा।"

दुखिया मानो गहरे ज्ञान से, गहरी ममता से बोला, "कहाँ ? मेरे भागने की कोई जगह नहीं है। तुमसे कहा था न ? जगह होती तो बेगार देता ? मुंडा भी जिंदा रहना चाहते हैं। बताओ।"

"दुखिया, मेरा कलेजा फटा जा रहा है।"

"मैं नहीं चाहता।"

दुखिया ने बड़े चाव से चोट्टि को, नदी, ग्राम, प्रान्तर की ओर ताका। उसके बाद बोला, "चलो, पुलिस कुछ और न समझ ले। मेरे खुद न जाने पर पुलिस तुम पर जुलुम करेगी।"

परिणामस्वरूप फाँसी होगी, यह जानकर भी दुखिया ने गुमाश्ते को काट डाला था। दुखिया का मुक़दमा हुआ और उसे फाँसी हुई। तब चोट्टि की समझ में आया कि धानी जेजुड़ क्यों गया था---उसका नतीजा मौत होगा, यह जानकर भी तथा अपने प्रति सच्चा रहने के लिए। हरमदेउ के उत्पन्न किये हुए मनुष्यों को बीसवीं शती में पहुँचकर कभी-कभी कोई काम करना होता है। वही धानी और दुखिया ने किया था।

पहले जेल में, उसके बाद फाँसी। तोहरी के दारोगा ने सदर जेल में सारी ख़बर पाकर कहा था, "मुंडा भी एक ही जात है। सरकार ने वकील दिया। वकील ने बहुत समझाया कि ऐसे कहो। बुद्धू ने सच्ची बात ही कही। और, दुभाषिये ने वकील को उसकी बात बतायी। वकील की बातें दुभाषिये ने उससे कहीं। तीनों में कोई किसी की बात ठीक से नहीं समझा। अन्त में कहा गया, क्यों ? 'नहीं मारा' यह क्यों कहूँ ? मारा, सैकड़ों लोगों के सामने मारा। मैं मिर्चें लेकर गया था। उसने जूते की ठोकर से मिर्चों की टोकरी क्यों फेंक दी ? शहर में, सदर में दूसरी जात वाले खून कर भाग जाते हैं। एक भी मुंडा-उराँव-हो को भागते नहीं देखा।"

मुँह फेरे हुए यह बातें सुनकर चोट्टि वेदना से व्याकुल मुसकरा रहा था। जो जात 'भागना' नहीं जानती, उस जात का लड़का क्यों भागे ? कोई ग़लत काम किया कि भागे ? अगर भागेगा तो गौरमेन घेरकर उसे खोज नहीं निकालेगी ? राजा-जमींदार तो भागने वाले को पकड़ने के लिए जंगल में कुत्ते छोड़ देते हैं। जंगल को छानकर कुत्ते भागने वाले को पकड़ लेते हैं।

कोई भी भाग नहीं सकता, दुखिया के लिए तो भागना और भी मुश्किल था। जन्म से ही वह जानता था कि वह बेगार से बँधा है। इस बात को वह मान ले सकता था, लेकिन गुमाश्ता दुष्ट था। औरत ने भी उसे धोखा दिया। तरह-तरह की वंचनाओं के कारण दुखिया पागल-सा हुआ जा रहा था। 'किसी दिन क्या कर बैठूँ' इस बात के मन में घुमड़ते रहने से बिसरा ने आत्महत्या कर ली। दुखिया ने गुमाश्ते को मार दिया। दोनों ही सच्चे थे। चोट्टि ने सोचा कि न्यायकर्त्ता के आगे, गौरमेन के आगे चवन्नी की मिर्चों की बात दुखिया ने कितनी गहरी अभिलाषा से समझानी चाही थी। लगता है कि दुखिया के मन में यह बात घर कर गयी थी कि उसे जेहल हो गयी है, अब फाँसी होगी। उसे तो सब-कुछ मालूम था और उसने सब मान भी लिया था। फिर भी मिर्चों का मामला कितना भड़काने वाला था ! क्या उसे न्यायकर्त्ता समझेंगे ? न्यायकर्त्ताओं को ज़रूर लगा था कि यह सनकी जाति एक टोकरी मिर्चों के लिए फाँसी तक चढ़ सकती है। चोट्टि मन-ही-मन जानता था कि फाँसी चढ़ने तक दुखिया की आँखों के आगे दुनिया-भर का विस्मय था। ऐसा क्यों हुआ ? क्यों एक आवश्यक हत्या के बाद उसे फाँसी हो रही है ?

सब-कुछ दुर्बोध्य है। दुर्बोध्य रह गया दुखिया, मुंडाओं के जीवन में। सुखा और बिखना ने मुंडा लोगों के श्मशान में एक पत्थर रख दिया। उन्होंने गाँव के पहान से पूछा, "वहाँ तो फाँसी के बाद लहास को जला देते हैं। तो एक पत्थर लगा दें ?"

"लगा दो।" पहान को मानो चैन मिला। दुखिया के मामले में कुरमी गाँव की छाती पर आज भी वह पत्थर रखा हुआ है। क्या से क्या हो गया ? एक चिकना पत्थर रखकर भी मानो उस अभागे के लिए कुछ हो गया हो। पहान ने उस अवसर के उपयुक्त मंत्र पढ़ा और दुखिया की परलोक-वासी आत्मा के लिए चावल और चार आने पैसे दिये। सुखा आहिस्ता से बोला, "बस, एक चवन्नी-भर की मिर्चें ही टोकरी में थीं।"

उसके बाद वाला गुमाश्ता बहुत होशियार था। वह गाँव बिलकुल न आता और उसके पियादे ने ढोल पीटकर बताया, "बेगार हो या न हो, हर हाट के पहले सामान का चौथाई भाग कचहरी में देकर जाना होगा। उसके बाद सामान बेचा जायेगा।"

गुमाश्ता होने पर थाने से मेल-जोल रखना ही पड़ेगा। दारोगा ने नये गुमाश्ते को सरकार की इच्छा बतायी, शहर में और ग़ैर-आदिवासी गाँवों में अहिंसक संग्राम का जो शोर है सरकार उसमें ही उलझी हुई है, जेलें उफनी पड़ रही हैं। इस समय किसी भी कारण से, प्रजा को दबाने के जोश

में, हिंसा का कोई काम नहीं करना। अंत में जिम्मेदारी तो थाने की ही होगी। उस जंगली गाँव में कौन जायेगा? बे-सोचे-समझे काम करने के फल से ही तो सियाराम गुमाश्ते ने जान दी। छोटे लोगों को ठीक करने के काम में थाना भी होशियार है, और गुमाश्ता जी भी इस बात को समझ लें। आजकल कोई ऐसा काम करना ठीक न होगा जिसमें जंगली लोग बिगड़ जायें। यह लोग परोक्ष शोषण को नहीं समझते। इसलिए नीति से ही काम लेना अच्छा है।

नया गुमाश्ता परम वैष्णव था। पालकी उठाने पर यह मुंडा लोगों को जलपान देता। 'बच्चा' के सिवा कभी कुछ और न कहता। समय पर आसानी से खेती के लिए कर्ज देता और इसकी कुशल नीति के परिणाम-स्वरूप एक बार सवेरे के वक़्त कुरमी का पहान सिर पर दोनों हाथ रख कर बोला, "इसी को दिकू बुद्धि कहते हैं, आँ? कल कचहरी से पता चला कि गाँव के सब लोग, और तो और, मैं तक उनका बेगार करने वाला हूँ।"

"कौन-सी तरकीब की उसने?"

इस बेगार के मामले में गौरमेन की जनगणना को उसने परोक्ष में नहीं, प्रत्यक्ष में ख़त्म कर दिया, लेकिन वह बाद में। इसे ख़त्म करने के मामले में छोटा गाँव कुरमी बड़े गाँव चोट्टि का पथ-प्रदर्शक बन गया। कई बरस बाद। दुखिया की फाँसी, उसका पत्थर लगना इत्यादि हो जाने के बाद एक दिन हरमू चोट्टि से बोला, "आबा, मुझे एक धनुक बना दोगे?"

"क्या करेगा?"

"मैं तो गाय चराता हूँ।"

"तो गाय को पकड़ने पर बाघ को मारेगा?"

पिता की नासमझी पर हरमू भोलेपन से हँसा। बोला, "आबा, तुम कुछ नहीं समझते। मैं क्या दूर चला जाता हूँ कि बाघ गाय को पकड़ लेगा?"

"तो करेगा क्या?"

हरमू नज़र झुकाकर बोला, "सोमाई, रूपा—इन लोगों के हाथों में धनुक आया। पहान के पास जाकर उन्होंने धनुक लिया। उसके बाद वे लोग तीर से पटापट कच्चे आम तोड़ते हैं।"

"यह बात है।"

"तुम्हारी तरह तो कोई नहीं है। ब—हुत सुन्दर धनुक बना दो।"

"अपनी माँ को बुला।"

हरमू की माँ आयी। बोली, "क्या बात है?"

"लड़के को धनुक चाहिए। धनुक पर मैं खाँचा काट दूँगा। तू उस खाँचे पर लाल तागा लपेट देना।"

"मेरे पास समय कहाँ है?"

"समय निकाल लेना। लड़का कह रहा है।"

"तुम्हारा बेटा है न। मुझे डर लगता है कि धनुक देने पर यह दिन-रात उसी को लेकर दीवाना बना फिरेगा।"

"दूँगा।"

"धनुक नहीं लेगा तो क्या लेगा?"

"कह तो दिया कि दूँगा। तुमने जो कुछ कहा उस पर कभी 'ना' किया है?"

पत्नी हँसकर चली गयी। चोट्टि बोला, "कभी 'ना' नहीं कहती।"

"मुझे मारती क्यों है?"

"मेरी माँ भी मारती थी।"

हरमू के लिए चोट्टि धनुक बना रहा था। सना आकर बोला, "चोट्टि, दारोगा ने तुझसे एक बार थाना आने को कहा है। कहा है कि जल्दी नहीं है, वक्त मिलने पर आये।"

चोट्टि शाम को ही गया। तोहरी में हाट थी। लाइन के किनारे-किनारे रास्ते पर चार मील दूर तक हाट लगी थी। पत्नी आज हाट में नहीं गयी। चोट्टि ने ही चार भुट्टे, सूखी मिर्चें बेचीं। मिर्चों के पौधे उसकी पत्नी की जान थे और ज़मीन कोयेल की जान थी। इस ज़मीन में मक्का लगाना आसान बात न थी। कोयेल ने उससे पाँच रुपये माँगे थे। पास ही राई में बड़ी हाट लगती थी। वहाँ दवाइयों के कारख़ाने के लिए आँवले और हर्र ख़रीदने को आदमी आता। रुपये देकर कोयेल हाट में पक्की जगह लेगा। ज़मींदार का नायब रुपये लेकर रसीद लिख देगा कि वह जगह हाट के दिन कोयेल की है। जंगल में अनगिनत आँवले के पेड़ हैं। हर्र के पेड़ भी हैं। इनकी चीज़ें दूर जाकर बेचने की बात चोट्टि ग्राम के मुंडा सोच भी नहीं सके, लेकिन कोयेल सोचता था। उसके भी लड़का हुआ था, घर में खाने वाले बढ़ रहे थे। कोयेल को एक ही फ़िक्र थी—घर को किस तरह बाँध कर रखा जा सकता है। कोयेल और चोट्टि की पत्नियाँ, दोनों को एक ही फ़िक्र थी। चोट्टि ने कहा था कि तीर के खेल का समय आने पर तुमको रुपये दूँगा। हरमू की माँ मुर्ग़ी पालेगी। मुर्ग़ी ख़रीदने के लिए रुपये दूँगा। तीर के खेल का समय आये—यही सब सोचते-सोचते चोट्टि ने लाल अन्न ख़रीदे, सूअर की एक रान, तेल, सोडा ख़रीदा। कोयेल की बहू गन्दे कपड़े नहीं देख सकती थी। उसके बाद वह थाने गया। दारोगा का नाम

था नन्दलाल सिंह। बहुत ज़बरदस्त आदमी था। प्रौढ़।

"बैठो, चोट्टि !"

चोट्टि ज़मीन पर बैठा।

"क्या ख़बर है?"

"दिन बीत रहे हैं, हुज़ूर !"

"बेटा कितना बड़ा हुआ है?"

"गायें चराता है।"

"एक बात है।"

"कहिये हुज़ूर !"

"चोट्टि ! दुखिया मुंडा का पहला इज़हार मैंने लिया। उसने कहा था, वह तुम्हारे पास तीर सीखता था। तुमने उसे 'बलोया' उठाने को मना किया था। थाना आने के रास्ते में वह तुमसे ही सब कह आया था। पर यह बात मैंने इज़हार में नहीं रखी। तुम्हारा नाम अलग रखकर इज़हार भेजा था। इसी से तुमको किसी गड़बड़ का सामना नहीं करना पड़ा।"

"हुज़ूर ! दुखिया कहा करता था, 'पता नहीं क्या कर बैठूँ।' सो मैं कभी नहीं समझ सका कि वह यह काम कर बैठेगा। बहुत दुखी रहता था। हँसता नहीं था। मैं डरता था कि मेरे बाबा की तरह शायद अपने ही गले में फाँसी लगा ले।"

अपना दोष क़बूल करके सरकारी वकील द्वारा बचाये जाने की कोशिशों पर पानी डालकर दुखिया ने अपने गले में आप ही फाँसी लगा ली। वह बात दारोगा ने चोट्टि से नहीं कही। ग़ैरमुंडा बात किसी मुंडा को नहीं समझायी जा सकती।

"चोट्टि ! मैं इस थाने में तीन बरस रहूँगा। इन तीन बरसों तक तुम किसी मेले में किसी तीर के खेल में नहीं उतरोगे।"

"यह बात न कहें, हुज़ूर ! तीर खेलने में मिले पैसों से भाई हाट में जगह लेगा। बहू मुर्गी खरीदेगी। यह बात न कहें।"

"न चोट्टि ! इसमें मेरी मुसीबत है। तीरथनाथ कहता है, चोट्टि भी दुखिया के पीछे था। दारोगा ने उसे बचा लिया। कहीं कुछ होने पर तुम्हारा नाम आता है। तीन बरस अगर तीर न खेलो, तो तुम पर से लोगों की नज़र हट जायेगी।"

"मैं जा रहा हूँ।"

उम्मीदें टूटने पर मुँह उदास किये चोट्टि घर लौटा। सब सुनकर पत्नी बोली, "इससे क्या हुआ? कोयेल बिना पक्की जगह के ही आँवले बेचेगा। मुर्गियाँ बाद में हो जायेंगी।"

चोट्टि कोयेल से बोला, "दादा मे छिपकर जनम बिताया। क्यों? तू मेरा भाई है, तू तीर नहीं खेल सकता?"

"कहाँ तुम और कहाँ मैं?"

"क्यों? मेरे तीर खेलने के वक्त सिर्फ नगाड़ा पीट सकता है!"

चोट्टि की कही हर बात में यंत्रणा थी। कोयेल बोला, "ठीक, देखा जायेगा। लेकिन वादा करो कि न जीतने पर मुझे मारोगे नहीं।"

"तुझे मारूँगा? तू बच्चे का बाप हो गया है।"

कोयेल बोला, "अभी भी मार सकते हो।"

"कल से अभ्यास करना। सुखा कर सकता है, दुखिया कर सकता है, तू नहीं कर सकेगा?"

"कहा तो कि देखा जायेगा।"

चोट्टि की पत्नी ने राब का शर्बत बनाकर पति को दिया। बोली, "जरा पी लो, तबीयत ठंडी हो जायेगी। ऐसा उदास चेहरा मत बनाओ। तुम थे कि वैसी बात कहने पर छोड़ दिया। दूसरा मुंडा होता तो मारकर खतम कर देता।"

"बहुत मान दिया था!"

मन की पीड़ा से, अबोध्य वेदना से चोट्टि रात में वर्षा का लाल जल हो गया, पत्नी ने नदी बन छाती खोलकर उसे अपने अन्तर में लिया, मिला लिया। सवेरे के समय चोट्टि बोला, "इस बार तेरी जैसी लड़की होगी।"

"किन्तु उसका नाम दिन के नाम पर रखना।"

"वही होगा। मुझे लगता है कि माँ मेरी बेटी बनकर संसार में फिर आना चाहती है। पता है कि उसकी आशा पूरी नहीं हुई।"

"यह सब दिकू लोगों की बातें हैं।"

"हाँ रे।"

"भोर का तारा नहीं निकला, सो जाओ।"

चोट्टि सो गया।

छः

कौओं की आवाज़ पर सवेरे कोयेल ने चोट्टि को पुकारा। कहा, "चलो।"

"कहाँ?"

"पहान के पास चलो ।"

"क्यों ? पहान को क्या हुआ है ? कोई काम मेरे सिवा नहीं कर सकता है । चोट्टि ग्राम में सबका एक ढँग है । इसी से दारोगा मुझसे सब कामों में मिलता है ।"

"चल, चल ।"

"तू भी उससे मिला है । सारे मुंडाओं की तरह जब पेट नहीं चलेगा तो अलग रहना । न, दादा मैं हमेशा रहूँगा । सना की भांजी, तेरी बहू मुंगरी हरमू की माँ को पहचानती है, और तू पहचानता है दादा को !"

कोयेल बोला, "मरते समय माँ कह गयी थी न—दोनों भाई एक साथ रहोगे । माँ की बात तो माननी पड़ेगी ।"

चोट्टि बोला, "माँ की बात साँप के विष में चली गयी । फिर भी तू सारी बातों में कहता है, माँ यह बात कह गयी थी ।"

"वह बात कही थी ।"

"तू बड़ा सियार हो गया है, रे कोयेल !"

कोयेल बोला, "अच्छी बात है । वह सियार बहुत तेज हो गया है । साला बछड़े पकड़ने आता है । उसे मार दो ।"

"मैं सियार को भी मारूँगा ।"

"चल, चल । दिन निकल आया ।"

पहान घर के बाहर बैठा हुआ था । चोट्टि को देखकर बोला, "हाँ चोट्टि, कोयेल यह क्या कह रहा है ? तुझे तीर के खेल में नहीं उतरने देगा ?"

"मना किया है । सुनकर चला आया । दारोगा से क्या झगड़ा करूँ ?"

"नहीं-नहीं, हम लोग वन देश के लोग हैं । हमें तो दारोगा ही गौरमेन है ।"

"सवेरे-सवेरे क्यों बुलाया ?"

"एक अच्छी बात कहने के लिए ।"

"अब अच्छी बात है ?"

"तू जब न उतरेगा, तो चोट्टि मेला का नाम डूब जायेगा ।"

"क्या करने को कहते हो ?"

"अकेले कोयेल को ही क्यों ? तू सारे मुंडा लड़कों को सिखा ।"

"सारे मुंडा लड़कों को ?"

"हाँ रे !"

"उसके बाद ?"

"वे हर गाँव में, हर मेले में जीतेंगे ।"

"क्या इतना आसान है ? उन सब गाँवों में मुंडा नहीं हैं, उराँव नहीं हैं ?"

"फिर भी जायेंगे !"

"मैं इनको सिखाऊँगा तो दारोगा को पता चलेगा । उसके बाद कहेगा, चोट्टि मुंडा सबको तीर सिखाकर तैयार कर रहा है । बलोया करेगा । वे लोग सब हमारे कामों में बलोया उठाना देखते हैं । कहीं सारे मुंडा बलोया उठाते, तो वे लोग कहाँ रहते ?"

"दारोगा को कैसे पता चलेगा ? अभी भी चोट्टि ग्राम में कोई मुंडा ऐसा नहीं है कि मैं 'ना' कर दूँ तो वह किसी को कोई बात बताये । यह तो लड़कों के लिए भी इज्जत की बात है ।"

चोट्टि ने कुछ सोचा । उसके बाद बोला, "ठीक । लेकिन सिखाना तड़के में ही अच्छा रहेगा । इससे भी पहले । लेकिन तुम बात कर लेना ।"

"अरे तू सिखायेगा तो तमाम गाँव के लड़के आयेंगे ।"

"वे लोग तुझे परनामी क्या देंगे, दादा ?"

"क्यों ? सालों के पास बहुत पैसे हो गये हैं ?"

पहान क्षुब्ध होकर बोला, "सब कामों की रीत होती है ।"

"जो चाहे समझो । तुम्हारे कहने पर मैंने कब किसी काम में 'ना' कहा ? और सुनो ! हरमू के हाथों में धनुक देना होगा ।'

"दे दूँगा । चाँद का पखवाड़ा आये ।"

चोट्टि ग्राम के लड़के एक-एक जोड़ा मुर्गी-मुर्गा लाये । हरमू की माँ बोली, "इनको मैं खाने न दूँगी । इनको मैं पालूँगी । कोयेल, मेरे लिए एक कोठरी बना देना । मेरी कोठरी की तरह इसकी दीवार मोटी रखना ।"

चोट्टि हँसकर बोला, "अभी तो मचान के नीचे रख ।"

कोयेल बोला, "इन दोनों को खाने से भला न होता !"

हरमू की माँ ने कोठरी में रोशनी कर कहा, "हिस्, तेरे दादा के मंतर से लड़के एक जोड़ा मुर्गी लाये । मेरी साध पूरी हुई ।'

चोट्टि बोला, "ओ, तेरे बेटे का बाप मंतर जानता है । उससे ही तीरथनाथ की जमीन जोतती हो, लड़के को बड़ा शौक है, लड़के को पीतल से मढ़ी एक कंघी नहीं मोल लेकर दे सकता ।"

वह तुनक कर बोली, "बेगार भी नहीं करते, कर्ज भी नहीं लेते । बुरी बात क्यों कहते हो ? अच्छी बात कहो । पीतल-मढ़ी कंघी ! मेरे बाप का बाप पहान है । अपने घर कभी तो पीतल-मढ़ी कंघी नहीं देखी । यह सब सहर की हवा है । टीसन के पास गाँव है, उससे तरह-तरह की जिनिस

देखते हैं। अभी कहेगा कि कपड़े पहनेंगे।"

"तू भी पहनेगी? छोटी बहू भी लेगी।"

"हाय माँ! मुझे तो सरम आती है। कुर्ती पहनूँगी?"

"राँची की मुंडानी पहनती हैं।"

"तब उनको सरम नहीं है। मुंडानी क्यों न सजें? सजेंगी। कान में सफेद सोला लगायेंगी, सिर पर फूल लगायेंगी, बालों में तेल लगायेंगी, और सफेद कपड़े पहनेंगी। पोत की माला और पीतल का बाला तो अच्छा है। हमने तो काठ के बाले पहने हैं।"

"ले, अपनी मुर्गी उठा। गीदड़ गुस्सा हो गया है। होश में रहना।"

"एक बत्तख तो मार दो। उससे उनका गुस्सा उतार दें।"

कोयेल की बहू चूल्हा पोतते हुए बोली, "बछड़ा पकड़ने में भागता-फिरता है। जल्दी करने से कैसे दाँत निकालता है। उस समय डर लगता है।"

चोट्टि बोला, "कोयेल, उन्हें मारकर गाय, बैल, सूअर, मुर्गी, बकरी बचा, ये हमारी दुनिया को जिन्दा रखे हैं। इस साल भेड़िये झुंड बनाकर घूम रहे हैं, सियार इधर बिगड़े हुए हैं। चारों ओर हाल खराब है। तेरे बच्चे को भी पकड़ सकते हैं। बहू, होशियार रहना। कुरमी में भेड़िये ने माँ के पास से बच्चा उठा लिया।"

बहू बोली, "कोयेल की बहू अपने बच्चे को पीठ से बाँधकर काम करती है। कोयेल ने जो बेड़ा बाँधा है, वह ऐसा ऊँचा है कि टट्टर हटाये बिना आदमी का सिर नहीं दिखायी पड़ता।"

आकाश में भोर का तारा उगा। तभी चोट्टि उठा। गाँव के युवक प्रतीक्षा कर रहे थे। जंगल की ओर चलते-चलते चोट्टि बोला, "एक साथ दस लड़के देखकर तरह-तरह की बातें उठेंगी। सब अलग-अलग आया करो। अगर टीसन के कुली भी देखेंगे तो बात होगी।"

वही जंगल, वही मैदान था। दुखिया, सुखा और बिखना आये थे। चोट्टि ने ठंडी साँस छोड़ी। पत्थर पर निशान बनाया। लौटकर बोला, "उठाओ धनुक! तुम लोग कहते हो मंतर, मैं कहता हूँ अभ्यास। जान लड़ाकर कोशिश करने से, क्यों न होगा?"

कोयेल बोला, "जीतने के बाद, आः! तुम्हारे सिर पर नाचूँगा।"

"फिर धनुक उठा। निशाना लगा। सबके पहले निगाह ठीक कर। निशाना है, तुम लोग हो। और कोई नहीं, कुछ नहीं।"

तीर छूट गया।

"जा, तीर उठा ला। फिर लगा। यह निशाना सात दिन चलेगा।

एक हफ्ते के बाद अगले हफ्ते निशान दूर हटाया जायेगा।"

तीर छूटा।

"उठा कर ले आ। फिर लगा। मुझे देख।"

लड़कों ने चोट्टि की ओर देखा।

सवेरा हो रहा है। दिन बढ़ रहा है।

इस तरह से अभ्यास चला। दिनोंदिन। चोट्टि ने देखा कि उसके तीरों के खेल में जो था, वह उत्साह और जिद थी। इन लोगों को सिखाने में आश्चर्यजनक आनंद है। एक नया जोश है। यह लोग अगर स्थानीय और आंचलिक मेलों में जीत सकें, तो इनमें ही कोई उसका उत्तराधिकारी निकलेगा। अगर कोई बहुत ही दक्ष हो, बार-बार जीते, तो उसके पास भी शायद उन दिनों के मुंडा युवक आयेंगे। कहेंगे, हमें सिखाओ।

यह लोग जिस दिन जीतेंगे, अगर जीते तो वह खुशी होगी, जो दुखिया को मिली थी। यह सब बातें सोचते-सोचते याद आया कि बहुत दिनों से सुखा और बिखना की खबर नहीं मिली है, न ही यह कि कुरमी गाँव में क्या हो रहा है? कुरमी जाने के रास्ते में घने जंगल और ऊँचे-नीचे पहाड़ हैं। इस गाँव के लोग हाट करने दक्खिन की ओर बिराडगंज जाते हैं। चोट्टि और कुरमी में कोई मेल-जोल न रखा जाये तो वह नहीं रहता। मेलजोल सुखा, बिखना और दुखिया ने बनाया था। लेकिन चोट्टि के जीवन में सब किस्सा-कहानी बन गया। चोट्टि के चारों ओर दुखिया मुंडा की जीवन-कथा भी किस्सा बन गयी।

विजयादशमी के दिन चोट्टि मेला हुआ। मेला सचमुच बहुत बड़ा और बहुत पुराना था। सरकार की ज़मीन में मेला लगता था। मेले में विक्रेता लोगों को ज़मीन देकर तहसीलदार अच्छी कमाई कर लेता था। आदिवासी लोग तो आते ही थे, और लोग भी आते थे। सात दिनों तक मेला चलता था। आस-पास के लोग दरवाज़े-खिड़कियाँ, लकड़ी की थाली और कटोरी-चक्की-ओखली-बर्तन-कपड़े-चादर-गमछा-मसहरी-गुड़-चावल सब्ज़ी—सब तरह की चीज़ें इस मेले से ही खरीदते थे। बैलगाड़ी के पहिये भी बिकते थे, हल, कुदाल, खंती—सब-कुछ बिकता था।

मेले के बीचोंबीच आदिवासियों का लोकनृत्य होता था। उसके बाद तीरों का खेल शुरू होता था। आसान प्रतियोगिताओं में चोट्टि बहुत दिनों से नहीं उतरता था। वह गंभीर खेलों में भाग लेता था। इस बार वह मात्र दर्शक था। यह सबको नहीं मालूम था। इसी दिन बिराड में भी मेला होता था, और प्रतियोगिता भी होती थी। नाकाटा के राजा लोगों का निवास बिराड ही था। राजा लोग दुर्गा-पूजा करते थे। इस

उपलक्ष्य में सरायखेला से लाये हुए मुखौटों के नाच का दल आता। मुखौटों का नाच देखने के लिए उस अंचल के गाँव टूट पड़ते। कुरमी के लोग भी।

चोट्टि ने ताज्जुब से देखा कि कुरमी के मुंडा लोग यहाँ प्रतियोगिता देखने आये हैं। फ़ैसला करने वाले और पुरस्कार देने वाले वही लोग थे—तीरथनाथ, दरोगा, तहसीलदार। सभी बैठे थे। तीरथनाथ उसे देख हँस कर बोला, "यह अच्छा ही है रे चोट्टि! तू हर बरस जीतता है। इन लोगों को एक मौका मिलेगा।"

चोट्टि ग्राम का पहान, आदिवासियों के प्रतिनिधि के रूप में फ़ैसला करने वालों में एक था। वह जाकर ज़मीन पर बैठ गया। प्रतियोगिता के समय खड़े होकर देखेगा। चोट्टि ने आश्चर्य से देखा कि कुरमी के लड़के मेले में आये तो हैं, लेकिन प्रतियोगिता में नहीं उतरे। सुखा और बिखना स्वतंत्र रूप से उतर सकते थे। कहीं कुछ गड़बड़ थी।

चोट्टि मुंडा नहीं उतर रहा था। इसलिए इस बार सब आश्चर्य कर रहे थे। प्रतियोगियों में चोट्टि गाँव के मुंडाओं में से बहुतेरे हैं, यह देख कर दारोगा थोड़ा गंभीर हो गये। तीरथनाथ ने चोट्टि के न उतरने का कारण दूसरों से सुना था, दारोगा के मुँह से नहीं। इसीलिए अनजान बनकर बोला, "पहान, चोट्टि को उतरने से किसने मना किया है?"

पहान कुछ न बोला।

तीरथनाथ मानो मन-ही-मन बोला, "उसकी क्या कम सामर्थ्य है? मंतर-पढ़ा बाण भेजकर वह सब कर सकता है। बहुत बार देखा है।"

दारोगा और भी गंभीर हो गये। बोले, "अगर रोज़ 'गीता' या 'रामचरित मानस' पढ़ते हैं और उससे जो पुण्य होगा लालाजी, तो मंत्र-पढ़ा तीर आपका कोई नुक़सान न कर सकेगा।"

"दरोगाजी, हमारा देश जंगली है।"

"यहाँ रामजी का परताप बेकार हो जायेगा?"

"जंगली देश में बहुत कुछ हो जाता है जिसका हिसाब किसी तरह नहीं मिलता। यहाँ ऐसी नज़ीर है कि हवा में दीपक जलाकर उसने बहुत दूर की कोठी जला दी। नाकाटा के राजा के दो बेटे जन्मान्ध थे। राजा की बड़ी रानी बाँझ थी। गुणी लोगों से उन्होंने ऐसा मंतर कराया कि बाप के घर से छोटी रानी ने दो बार अंधे लड़कों को जन्म दिया। चोट्टि की ऐसी बहुतेरी कहानियाँ हैं। आपको बाद में बताऊँगा।"

"हूं।"

"अरे, साहेब आये थे, साहेब। लाट के सेक्रेटरी के सगे भाई। वह

उसका तीर चलाना देखकर उसके साथ दोस्ती कर गये। जब सेक्रेटरी शिकार पर आये, तो वे भी उसके साथ बहुत-सी बातें कर गये।"

"कब? मुझे तो नहीं मालूम।" दारोगा विचलित हुए।

तीरथनाथ को बड़ी ख़ुशी हुई। बोला, "कैसे मालूम होगा, बताइये? आपको लिखना-पढ़ना आता है, ख़बर लेते हैं थाने के लोगों से। हम लोगों को जंगली जानवर समझते हैं। इसी से बार-बार बुलाने पर भी नहीं आते हैं।"

"न, न, मैंने इस साल गुरुमंत्र लिया है। एक बरस कहीं भी जलपान करने का निषेध है। मेरे गुरु बहुत ही सख़्त हैं, समझे?"

"वह देखिये, शुरू हो गया।"

चोट्टि के दिल में बड़ी उत्तेजना थी। अपने वक़्त में पहली बार उसके साथ भी इसी तरह हुआ था। सोचने पर भी आँखें भाप से ढँक जातीं। कभी चोट्टि उन लोगों की तरह जवान था। तब धनुष उठाने के बाद कलेजे के नीचे बाढ़-सी उठी थी।

"तुम कौन हो?" तहसीलदार ने आवाज़ लगायी।

"चोट्टि गाँव के चोट्टि मुंडा का भाई कोयेल मुंडा।"

कोयेल बड़े भाई की ओर नहीं देख रहा था। उसकी आँखों में और चेहरे पर, चोट्टि के लड़कों की आँखों में और चेहरों पर अजीब उत्तेजना और संकल्प था।

"हाँ, कोयेल ने निशान बेध दिया!"

शोर, शोर। चोट्टि की आँखों से आँसू बहने लगे। लड़के कम नहीं हैं। कोई उसकी ओर नहीं देख रहा है। कोयेल भी नहीं। सुखा और बिखना देख कर उछल रहे हैं। उनको ऐसी ख़ुशी क्यों है?

चोट्टि ने बीड़ी सुलगायी। वह अपने को बहुत बुज़ुर्ग महसूस कर रहा था।

तीर चलाने की सहज प्रतियोगिता में प्रथम और द्वितीय स्थान चोट्टि के लड़कों ने लिये। बाद की कठिन प्रतियोगिता में सना का भतीजा रूपा और कोयेल ने दोनों में दूसरा स्थान पाया। सबसे कड़ी प्रतियोगिता में सभी उतरे। मानो साँठ-गाँठ हो। पाँच गाँव के सोलह प्रतियोगियों ने इधर-उधर तीर मार दिये। "कोई नहीं कर सका"—तहसीलदार की इस बात पर सब जीत की ख़ुशी में चिल्ला उठे। तोहरी का गया मुंडा चिल्लाकर बोला, "सब बाप लोगो, वह सिर्फ़ चोट्टि कर सकता है। नहीं कर सके, इसमें तुमको कोई दुख नहीं होना चाहिए।"

दारोगा मन-ही-मन बोले, 'खचड़ापन है। हारने पर सब शोर मचाते

हैं, इसलिए दुख नहीं उठाते। निश्चय ही चोट्टि नहीं उतरा, यह देखकर उन्होंने इस तरह शोर मचाया।'

चोट्टि गाँव के ही लड़कों को कुल मिलाकर आठ रुपये मिले। तीरथनाथ बोला, "चलिये, अब हम चलें। अब ये लोग पूरा सूअर लायेंगे, मारेंगे,, मद-मांस खायें-पियेंगे, नाचेंगे, और पता नहीं क्या-क्या करेंगे।"

"हमेशा यही सब होता है।"

"बराबर। यह मेला तो उनका ही है। हम तो बाद में आये हैं। नहीं जानते, उनकी नजरों में हम सभी दिकू हैं?"

अब सब में बड़ा जोश था। दूसरे गाँवों के प्रतियोगी लोगों ने भी चोट्टि को घेर लिया। बोले, "हमें भी सिखाओ। हर मेले में जीतकर तुम्हारा नाम ऊँचा कर आयेंगे।"

"अच्छा, कोमान्डि का भरत मुंडा कहाँ है?"

"यह रहा, चोट्टि!"

"भरत! मुझे तो पता है कि तुम आखिरी निशान को वेध सकते हो। कम-से-कम आँख के पास तो तुम्हारा तीर जायेगा ही। कोशिश ही नहीं की। क्या बात है?"

"जंगली बात है।"

"बात क्या है"

चोट्टि का पहान बोला, "जिसमें तुझे नहीं उतरने देंगे, उस निशाने पर कोई भी मुंडा कोशिश करके नहीं देखेगा।"

"यह क्या बात है?"

"तुझे तो पता नहीं, जितने लोग मेलों में तीर खेलते हैं, अब मन-ही-मन तेरा नाम लेने के बाद ही धनुक उठाते हैं।"

चोट्टि की आवाज़ रुँध गयी। वह बोला, "तुम लोग इतना मान देते हो!"

भरत बोला, "हम तीन बरस तक इस तरह चलायेंगे। उसके बाद देखा जायेगा। दारोगा को भी सजा मिलेगी, देखो।"

"न, न, वह सब बातें रहने दो। एक दुखिया से कुरमी गाँव में जो... यह क्या? बहू, तुम घर नहीं जा रही हो?"

"हम औरतें तो जायेंगी ही। तुम लोग अब मस्ती करो। लेकिन एक बार हम लोग नाच लें, उसके बाद जायेंगे।"

आदमी लोग पीछे हट गये। औरतें घेरा बनाकर नाचने लगीं। नाचते-नाचते चोट्टि की बहू बोली, "मरद लोग क्या मर गये? बाजा कहाँ है?"

कोयेल आदि ने बाजा बजाया। औरतों ने नाचते-नाचते गाया:

मेला चलो हे सखियो, मेला चलो।
आहा, कौन बोला रे कौन बोला?
मैं तेरे रूप का पागल रे।
यह चोट्टि नदी पार कर मेरा हाथ धरे रे?
मोहे मेला ले चल।

चोट्टि कोयेल से बोला, "हरमू की माँ का ढँग तो देखो। जब जीतकर आता था, तब तो उसके चेहरे पर ऐसी खुशी नहीं देखी!"

कोयेल बोला, "आज हमारे लिए एक मान का—गरब का—दिन है।"

सूअर का मांस और भात, और मद। सहसा चोट्टि ने सुना, लड़के एक गाना गा रहे हैं। कोयेल साथ ही नगाड़े पर चोट दे रहा है।

तुम धनुक उठाओ, निशाना लगाओ
दारोगा को बड़ा भय है
तुम गौरमेन को अर्जी बताओ
दारोगा को बड़ा डर है!
तुम्हें तीर नहीं चलाने दिया
तुमने तीर सिखाया दुखिया मुंडा को
बेगार वाले दुखिया को हे!
दुखिया ने काटा गुमास्ता का सिर
डर है दारोगा को हे!
तुम्हें तीर खेलने देगा नहीं।
कौन मुंडा जानता तीर का मंतर?
अकेले तुम जानते हो।
कौन मुंडा होता गौरमेन का मिता?
अकेले तुम बने हे।
इससे तुम्हें तीर खेलने न दिया।

गाना रुकने पर सभी हँसे। चोट्टि ने गमछा उठा मुँह पोंछ कर कहा, "अब और नहीं। मुझे बहुत लाज आती है। जाने-बूझे आदमी के लिए ऐसा क्यों करते हो, लाज आती है।"

अब दूसरा गान और नाच चला। चोट्टि जाकर सुखा और बिखना के पास बैठ गया। बोला, "तुमने तीर नहीं खेला?"

सुखा बोला, "खुशी के दिन अपने दुख की बात नहीं कहूँगा। बाद में की जायेगी। जब से दुखिया गया, गाँव जैसे जल गया।"

बिखना बोला, "आज नहीं। आज हम लोग, पेट भरकर मांस खायेंगे, खुशी मनायेंगे। ओह ! कितने दिनों से हँसे नहीं।"

खुशी की रात छोटी होती है, दुख की रातें बड़ी लम्बी। रात पलक मारते बीत गयी। धूप निकली तभी सबने अपने-अपने घरों की राह पकड़ी। जाते-जाते भरत मुंडा बोला, "यही बात पक्की रही। जो जैसे आयेगा, तुम सिखाओगे।"

"जो आता है, सिखा दूंगा।"

"वह मंतर भी ? 'हाँ' कहो, मैं तुम्हारी बेगार बन कर जाता हूँ। तुम लोग सुनो, चोट्टि मुझे मंतर सिखायेगा, मैं उसका बेगार करने वाला बनूँगा।"

चोट्टि ने बड़ी शान्त आवाज में, उसके बदन पर हाथ रख कर कहा, "मंतर नहीं भरत, केवल अभ्यास, और अभ्यास, और अभ्यास।"

"सच कहते हो ?"

"सच ही कहता हूँ।"

"तब वही मंतर है।"

"और कुछ नहीं मालूम है।"

"वही मंतर है।"

कई दिन बाद सुखा आया। रात में। बोला, "इस समय मेरे ऊपर बहुत दबाव है। तुम्हारे पास आने का दोष है। उसी से ! भालू का क्या डर ? सब साले पके बेर की गंध से जंगल में घूमते हैं।"

"बहुत पाजी जानवर होता है। बाघ आदमी को देखता है, खुद नहीं दिखायी पड़ता। भालू साला आकर आदमी को जकड़ लेता है और नाखूनों से नोचता है।"

"लेकिन शहर में भालू को कैसे नचाते हैं ?"

"बचपन में पकड़ लेते हैं।"

"चल, घर में बैठें। मुंडानी तो गुस्सा नहीं होगी ?"

"न। आ।"

सुखा बोला, "दुखिया ऐसे चला गया, जैसे गाँव जल गया हो। तुमको गौरमेन ने रोक दिया। हम राजा की बस्ती में रहते हैं। नये गुमास्ते ने सबको बेगार में बाँध लिया है। उसके अलावा भी कितना जुलुम है। बात-बात में माल दो। कचहरी में उसके कमरे में किसी के मरने पर बेगार नहीं, पर महसूल दो। उसके घर जनम में, बियाह में, मरने में—और

राजा लोगों की तो अनगिनती पूजाएँ हैं—महसूल लेते हैं। राजा लोगों को आँखों से नहीं देखा है, पर उनके घर कुछ होने पर महसूल लगता है। वह एक कचहरी से दूसरी कचहरी जाता है। हम पालकी ढोते हैं, ले जायेंगे। और ले आयेंगे। वह पैदल चले तो सिर पर छाता लगाकर हम दौड़ेंगे। जिन्दगी राख हो गयी है !"

"क्या मुसीबत है।"

"कहते हैं, उस चोट्टि मुंडा के सिखाने से दुखिया मुंडा बिगड़ गया। तुम लोग उसके पास नहीं जाओगे। और दुखिया का गाँव कुरमी, वहाँ से कोई मुंडा लड़का तीर के खेल में नहीं उतरेगा। मैं तुम्हारी कमर तोड़ दूंगा।"

"इसका उपाय क्या है ?"

"कोई उपाय नहीं है खतम होने का। इसी से...।"

"क्या ?"

सुखा ने नाखून से जमीन कुरेदी। उसके बाद बोला, "तोमारू में मिशन है। वहाँ मिशन के मुंडे ठीक हैं।"

"वह तो बहुत दूर है।"

"दूर तो है।"

"धरम छोड़ देगा ?"

"क्यों ? धरम क्यों छोडूँगा ?"

"क्रिस्तान बनना पड़ेगा।"

"ऐसा होने पर क्या फिर धरम में लौटा जा सकता है ?"

"ऐसा बहुतों ने किया है...।"

"अभी तो बचें। वहाँ जाने पर, धरम छोड़ने पर मिशन के गौरमेन जमीन देंगे, बसायेंगे। भाग कर जहाँ भी जायेंगे, राजा के फंदे से छूट न पायेंगे। वे पकड़ लेंगे, और मरवा डालेंगे।"

"तब ? मान ले तू भाग गया। घर के लोग ?"

"मिशन में जाने पर राजा का अख्तियार नहीं रहता है।"

"घर के सभी लोग ? गाँव के सब लोग ?"

"एक गया तो सबको जाना पड़ेगा। नहीं तो जो रह जायेगा, उसकी चमड़ी से वह गुमास्ता जूते बनवायेगा।"

"सब जायेंगे ?"

"वही तो चक्कर है।"

"तू जा, सुखा ! ठहर थोड़ा, कोयेल को बुला लें।"

"इस अँधेरे में जाओगे ?"

"तू अकेले जायेगा ?"

"डर-वर सब भूल गया है।"

वही होगा। कैसी अँधेरा रास्ता है ! आकाश के तारों के प्रकाश से कुछ भी आलोकित नहीं होता, और शुक्लपक्ष था। सुखा डर-वर सब भूल गया था। नहीं तो आया कैसे ? चोट्टि की पत्नी ने लालटेन दी। वे लोग लालटेन अबेरे-सबेरे जलाते थे। किरासिन, मिट्टी का तेल, बहुत महँगी चीज़ थी। हमेशा वे लोग रोशनी का काम अभी भी महुआ के तेल के दीये से चला लेते।

रास्ते में चलते-चलते चोट्टि बोला, "बलोया लेकर मैं आगे चलता हूँ। तू पीछे आ। बात मत करना।"

चोट्टि ने थोड़ा भी आगे न बढ़ने दिया। सुखा को गाँव की हद पर पहुँचा दिया। बोला, "इस काम से जल्दी आना। रात को मत आना। जंगल में क्या नहीं है ? बाघ, भेड़िया, गुलदार, भालू—सभी हैं।"

"मैं सब भूल गया। धरम छोड़ने की बात सोचने पर कलेजे के नीचे तीर-सा लगता है। खून बहता है। पूजा-परब में कितना आनन्द रहता है !"

"मिशन जाना हो तो जा। लेकिन कुलियों के ठेकेदारों के हाथ मत पड़ना। वे जाने कहाँ ले जाते हैं, कहीं चा-बागान में।"

"न-न। मिशन बिना गति नहीं है। गौरमेन के पास जाने पर ही राजा के हाथ से बचा जा सकता है।"

लौटते वक़्त कोयेल बोला, "गाना गाऊँ ?"

"क्यों ?"

"उससे भालू समझेगा कि बहुत-से आदमी जा रहे हैं। डरेगा।"

"कोयेल, तुझे अकल नहीं आयी। पुकारकर मौत बुलायेगा ?"

दोनों जब लौटे तो रात और भी गहरा गयी थी। कोहरे-भरी हवा में ठंडक थी। नदी के किनारे की बालू से कोहरा उठ रहा था।

कुरमी गाँव के मुंडे आसानी से गाँव नहीं छोड़ते थे। घोर जंगल काटकर गाँव बसाने में बहुत कष्ट होता है। उस गाँव को छोड़ने में और भी कष्ट होता है। "कहाँ है तुम्हारा मिशन ? वहाँ क्या ऐसा पहाड़ है, चारों ओर माँ के आँचल का-सा जंगल है ?"

"वह तो नहीं है, पर गुमास्ता भी नहीं है।"

"मिशन का जीवन दूसरी तरह का है। वहाँ क्या त्यौहार बराबर और सबके होते रहते हैं ?"

"वह तो नहीं है, पर बेगार नहीं है।"

"वहाँ जाकर हरमदेउ की पूजा की जा सकेगी ?"

"सो तो नहीं होगा, लेकिन बेकार का महसूल भी न देना होगा।"

पहान बोला, "तू जा रहा है तो जा। मैं किसी से रुकने को नहीं कह रहा हूँ। यह कुरमी गाँव हमें जंगल से मिला है। पहले मुंडा लोगों ने जंगल काटे, फिर खेती शुरू की। गाँव बसाये। ज्योंही उस जमीन में पैदावार हुई कि दिकू-महाजन घुस पड़े। मुंडा लोगों के गाँव अलग रहे। उस तरह से हमारे पुरखों ने गाँव बसाये। बहुत बाद में यह बस्ती राजा ने अपने अधिकार में कर ली।"

"तुम नहीं चलोगे ?"

"मैं ? मिशन में ?"

पहान पोपले मुँह से आश्चर्यजनक हँसी हँसा। गहरे विश्वास के साथ बोला, "मैं इस बयस में कहाँ जाऊँगा ? हरमदेउ का धरम छोड़कर ? तुम लोगों को जिन्दा रहना है, तुम लोग जाओ। ऐसे जुलुम में मैं किसी को रहने को नहीं कहता। पर...!"

"क्या ?"

"होली के दिन शिकार खेलकर जाओ। मैं आँख भरकर देख लूँ। सारे गाँव के बच्चे-बूढ़े तीर-बलोया लेकर भागेंगे। गान की गति से लौटेंगे। उसके बाद नाच होगा, गान होगा।"

पहान एक दिन हाट आया। चोट्टि को पास बुलाकर कहा, "दूसरे मुंडा रह नहीं पायेंगे। वे जायेंगे।"

"क्या कहूँ, बताओ ?"

"किसी से कुछ मत कहना।"

"घर-बर छोड़ने को किसी से नहीं कहता। पर बलोया उठाकर एक और गुमास्ता मार देने पर भी छुटकारा नहीं है, यह तो देख लिया।"

" 'बलोया उठाने' को कहने से तुम्हारा मतलब हथियार उठाने से है। लोग अगर हथियार उठा पाते तो कुछ होता। या शायद तब भी कुछ न होता। मुंडा लोगों के लिए तो बीरसा भगवान ने बलोया उठाया था। पर उससे भी काम न हुआ।"

"हिन्दू लोगों का, गौरमेन का जोर कितना है, उनके पास हथियार कितने हैं !"

"गुमास्ता हमें मारकर भी पालकी चढ़ता है, जूते पहनता है, पान खाकर घूमता है ! और दुखिया को, गुमास्ते को मारने पर, फाँसी होती है !"

"गौरमेन का कानून है।"

"गुमास्ते के लिए कानून क्यों नहीं है ? नहीं चोट्टि, मैंने उन्हें जाने को कहा है, पर मेरा दिल टूट गया है। और देख, यह बात किसी से मत कहना। पता लगा तो कहेंगे कि मुंडा लोग दिकू लोगों के खिलाफ 'बलोया' उठा रहे हैं।"

"मेरे भी मन में दुख है। हम कम हो जायेंगे।"

"शिकार खेलकर जाने को कहा है। जितने भी परब हैं, उनमें शिकार का खेल हमारे पितर-पुरखों का सबसे अच्छा परब है।"

हमेशा की तरह ज़बरदस्ती कर गुमास्ते ने मुंडा लोगों को गाँव छोड़ने के सिलसिले में इकट्ठा किया। मुंडा, कुरमी मुंडा, इस पर एक राय न हुए। बड़ी उमर वाले तो बहुत ही नाराज़ थे। गाँव छोड़कर अस्सी-बयासी लोग चले जायेंगे। नये लोग आकर रहेंगे। मुरगी-बकरी-बकरे-गाय-बैल लेकर उनकी तरह उनके ठौर पर घर बसायेंगे। किसी-किसी ने कहा भी, "देंगे, बेगार देंगे, महसूल देंगे, पर गाँव नहीं छोड़ेंगे।"

गुमाश्ते ने ठीक परब के पहले घोषणा की—"कुरमी गाँव के मुंडा लोग बहुत धोखेबाज़ हैं, इसीलिए इस बरस उनका शिकार-परब मना है।"

शिकार-परब रोक दिया गया है, यह ख़बर पल-भर में फैल गयी। बड़ा क्षोभ था। सभी हैरान थे। किसी भी दिन मालिक ने मुंडा लोगों का परब नहीं रोका था।

सुखा बोला, "इसके बाद भी जिसे रहना हो रहे। हम तो चले जायेंगे। इसके बाद अब नहीं रहेंगे।"

सुखा के भड़काने पर उन लोगों ने मुंडा-स्वभाव के विपरीत एक अजीब बात की। बड़ी मौज में सभी ने टीप-छाप देकर बारी-बारी से धान और मक्का कर्ज़ लिया। उसके बाद एक दिन शाम के बाद सबने गाँव छोड़ दिया। जानवरों की पीठ पर दरवाज़े, खिड़की, किवाड़ बाँध दिये, धान और मक्का और चावल भी बाँध दिये। गाय-बैल-बकरे-बकरी-सूअर—सबको राह चलते बेचेंगे, इसलिए साथ ले लिये। उसके बाद पहान को प्रणाम कर सारे मुंडाओं ने घर छोड़ दिये। घने जंगल में गाँव था। कचहरी में जल्दी ख़बर न पहुँचेगी। सीधी राह नहीं, जंगल की दुर्गम राह से वे लोग चले गये। तोमारू तक दो दिन की राह थी।

दोल[1] के मौके पर कचहरी में परब होता था। खुद राजा हाथी पर चढ़ कर आयेंगे। इस बार वे यहाँ शिकार खेलेंगे। बेगार की ज़रूरत थी। जंगल हँकाने के लिए। प्यादे लोग गाँव-गाँव गये। उसके बाद असली खबर का पता चला।

---

1. होली।

प्यादा बोला, "मालिक, सिर्फ पहान बैठा हुआ है। और कोई नहीं है। घर के किवाड़ भी उतारकर ले गये हैं।"

"कहाँ गये हैं ?"

"पहान को नहीं पता।"

चारों ओर खोज शुरू हुई। उनका कहीं पता न चला। अन्त में ख़बर आयी कि उन्होंने तोमारू मिशन की शरण ली है। गुमाश्ता सर पर जूता रखकर राजा के आगे खड़ा हुआ। राजा बोले, "छटाँक-भर राज्य के लिए मिशन के साथ लड़ाई ?"

"हुजूर, अर्ज़ी देने का हुक्म दें।"

"क्या अर्ज़ी दोगे ?"

"विद्रोही प्रजा आयी है, वापस कर दो।"

"देंगे वे लोग ? क्रिस्तान बनाने के लिए तो जंगल में बैठे हैं, नया गुमाश्ता आयेगा, उसे काम समझाकर तुम बिदा हो।"

गुमाश्ता सुँदकता-सुँदकता कचहरी लौटा। पहान को बुलवाया। उसे ज़रूर सब पता होगा। सब जानकर भी कुछ बताया नहीं। प्रजा चली गयी तो प्रजा आ जायेगी। लेकिन यह अपमान ! बदज़ात लोग एकदम कान उमेठ गये। इतना धान-मक्का कर्ज़ ले गये। गुमाश्ते की दुर्दशा पर खुश होता अमीन बोला, "अब क्या करेंगे ? तोमारू के मिशन के साहब की राँची में गौरमेन से दोस्ती है। वे लोग ज़बरदस्ती क्रिस्तान बना लेते हैं, तभी तो इतने लोग सीधे जाकर क्रिस्तान बन रहे हैं, वह क्या छोड़ देगा ? राजा पर भी तो गौरमेन खुश नहीं है। उसका गद्दी बचाये रखना मुश्किल हो रहा है। दोनों लड़के अंधे हैं। राजा भी वैसा कुछ नहीं है। गौरमेन किसलिए सुनेगी ? छोटे-छोटे राजाओं को गौरमेन अच्छी नज़र से नहीं देखती है।"

गुमाश्ता बोला, "लोग मुझे क्या कहेंगे ?"

इस बात पर अमीन गाढ़े दूध की तरह चिपचिपी और मीठी आवाज़ में बोला, "आप यह मत सोचिये। लोग क्या सोचेंगे, क्या कहेंगे—यह सोचने से काम नहीं चलेगा। और हम जिन्हें 'लोग' कहते हैं वह तो कहावत-भर हैं। यहाँ लोग कहाँ हैं ? जंगली देश। बातें ? बातें तो हमेशा ही होती रहती हैं। मैं तो खुद राजवाड़ी में सुन आया हूँ। सब ही छिपकर कहते हैं कि यह मुंडा लोगों के भगाने का काम आपका ही किया हुआ है।"

"मेरा ? क्यों ?"

"आहा ! मुंडा लोग हरामी होते हैं, यह तो सभी जानते हैं, बहुत ही बदज़ात। लेकिन गुमाश्ताजी ! ज़माना ऐसा ही आ गया है। दुखिया का

मामला तो कल की बात है। पुलिस ने गाँव में आकर उनका क्या हाल किया था ? लेकिन वे गाँव छोड़कर तो गये नहीं ?"

"सो मैंने उनको दबाकर रखा था।"

"वही बात है न, गुमाश्ता बाबू ! आपने खुद कबूल किया कि आपने उनको दबाकर रखा था। सो तो रखेंगे ही। लेकिन लोग, माने यहाँ के लोग, कहते हैं कि लड़के को आदमी बनाने के लिए मारना पड़ता है, और गुड़ भी देना होता है। आपने मारा था, फिर गुड़ भी दिया था, यह कचहरी के लोग कहते हैं।"

"कैसे ?"

"यही कि धान उधार दिया और यह भी समझाया कि राजा की गद्दी ज़्यादा दिनों नहीं रहेगी। सेक्रेटरी साहब राजा से सन्तुष्ट नहीं हैं, छोटी रानी के दोनों लड़के जब अंधे हैं तो बड़ी रानी ने जिसे गोद लिया, उसे ही स्टेट देंगे। यह सब समझाकर आपने ही उन लोगों से जाने को कहा था, क्योंकि आप चाहते हैं कि यह ज़मीन नीलाम हो और आप बोली लगाकर ले लें।"

"ऐसी बात है ?"

"हाँ जी।"

"लोगों का कहना है ?"

"जी हाँ।"

"यहाँ लोग कहाँ हैं ? यह तो जंगली जगह है।"

अमीन हँसकर बोला, "आप काम करें और बातें न हों ! मैं तो कहूँगा कि वे चले जायेंगे—यह गुमाश्ताजी को मालूम था या नहीं यह नहीं पता, पर इस बार हाथ खोलकर कर्ज़ दिया। यह देखकर मुझे ताज्जुब हुआ था।"

"बही पर टीप ली हैं।"

"बेगार की टीप-सही का तो बही में पहाड़ हो गया है। सुखा के बाप सयाँ मुंडा को लें। सयाँ के परदादे ने टीप की, वह अभी भी उसकी बेगार दे रहा है। सयाँ से आपने बही पर निशानी लगवायी, वह भी ठीक है। सुखा आज का लड़का है। परदादा के निशान के लिए शायद बेगार न देना चाहे, तब उससे कहा जायेगा कि तेरे बाप का टीप-पट्टा है। फिर भी सयाँ से टीप क्यों दिलवायी ? एक आदमी को कितनी बार बेगार में घसीटेंगे ? आपके पहले के गुमाश्ते का सिर चला गया, फिर भी आपने इतनी सख़्ती की कि हम लोग समझ गये कि आपका कोई मतलब है। ज़मीन ख़रीदेंगे। खरीदिये न ! नाकाटा के किसी टुकड़े में अब गुड़ नहीं है,

सब नमक है।"

"तो यह सब आपकी ही बात है ?"

"और लोग कहाँ हैं ? जंगली देश है।"

सियार और बाघ की कहानी में, चिड़िया और बिल्ली की कहानी में, अंत में बाघ या बिल्ली जिस तरह खिसिया जाते हैं, वही हालत गुमाश्ते की हुई। अमीन ने आख़िरी चुटकी ली, "होली का दिन तो आ गया। राजा ने भी जानना चाहा था, मैं भी पूछ रहा हूँ। आप उनका शिकार खेलना क्यों बन्द करने गये ? इस बार हम बाल-बाल बच गये। शिकार खेलना बन्द। वे लोग अगर बलोया शुरू कर देते तो ?"

गुमाश्ता समझ रहा था कि सचमुच उसके भाग्य में यहाँ की धरती नमक हो गयी, गुड़ नहीं रही। अब उसे अपना ठिकाना खोजना होगा। इधर कचहरी में होली का मामला था। राजा ने शिकार पर जाने को कहा था। उसका सारा गुस्सा निकला पहान पर। उसे सब मालूम था, फिर भी उसने कुछ नहीं बताया। भयंकर क्रोध में गुमाश्ता प्यादे से बोला, "कुरमी चल।"

वे कुरमी गये। दो दिन बाद होली थी। पहाड़ और जंगल लाल-लाल हो रहे थे। पलाश खिले थे। कुरमी गाँव की शक्ल इस प्रातःकाल में भी बहुत ही डरावनी हो रही थी, क्योंकि गाँव जनहीन था। बिना किवाड़ों के घर खाने को दौड़ रहे थे। प्यादा बोला, "लगता है जैसे गाँव भूतों का हो। कैसा सुनसान है !"

"पहान !—पहान हो ? पहान !" पुकारते हुए गुमाश्ता रुक गया। कान लगाकर गाने का स्वर सुना। होली की तैयारी का गान। मन में असंभव आशा जागी—कोई-कोई है। ख़ुशी हुई। काम छोड़कर अगर जाना पड़े, तो जो मिले उसे कोड़ा मारकर निकाल ले जायेगा। प्यादे से बोला, "चुप, चुप ! आवाज़ सुनकर वे भाग जायेंगे। गाँव में ही हैं, नहीं तो गा कौन रहा है ?"

"आप आगे बढ़िये।" प्यादे की स्मृति में दुखिया के हाथ में बल्लम में खोंसा ताज़ा कटा सिर उभर आया। उसने गरदन पर हाथ फेरा। अगर वैसा ही कुछ फिर हुआ तो वह भाग सकता था ? गुमाश्ता भाग नहीं सकता था। उसे दौड़ने की आदत नहीं थी।

गुमाश्ता आगे-आगे और प्यादा पीछे-पीछे चला। गुमाश्ता गुस्से से अंधा हो रहा था। उसके मन में एक ही दृश्य एक ही ढँग से झलकता। यह लोग आगे बढ़ते गये और गाने का स्वर साफ़ होता गया :

पूरब दिस रहा बाघ, आहा मरद बाघ—

बल्लम में बींध दिया उसको—
शिकार-परब के दिन गया था बन में
तुम थीं घर में—हाँ
ड्योढ़ी पकड़े ताक रही थीं, पच्छिम ओर
मैं तो तब था पूरब दिसा
शिकार-परब के दिन गया था बन में ।

उन लोगों ने बढ़कर एक पुटुस की झाड़ी पार कर गाने वाले को देखा । घर के आगे साल के पेड़ के नीचे पहान बैठा था । उसके पास कई कुत्ते लेटे हुए थे । हवा में साल के पत्ते झर रहे थे । आँगन में पत्ते उड़ रहे थे । कुत्ते बिना खाये मरियल-से हो रहे थे, फिर भी वे पुकारने पर उछल-कर उठ खड़े हुए । पहान बल्लम लेकर, उसे हाथ में हिलाता हुआ चला । पहान गाना गा रहा था । गुमाश्ते को देखकर उसने गाना रोका नहीं, गाता रहा, "शिकार के दिन...।"

"पहान, ए पहान, गाना बन्द करो !"

"पूरब दिस रहा बाघ, आहा मरद बाघ—!"

"पहान !" गुमाश्ते को डर लग रहा था । फिर भी बूढ़ा, दुबला-पतला पहान जिसके बल्लम पर मोर्चा लगा था, बैठा ही रहा । उसका बदन पेड़ से छिला हुआ था ।

"बल्लम में बींध दिया उसको—शिकार परब के दिन—"

"पहान !" गुमाश्ते की आवाज़ क्षीण हुई । सूने गाँव में एक बुड्ढे की आवाज़ से शिकार-परब का गाना इस तरह डर क्यों पैदा कर रहा है !

"पहान !"

पहान गाना समाप्त करता है, रुकता है । फिर ऐसे बोला जैसे हवा से कहता हो, 'कुत्तो ! गुलदार के डर से मेरे पास आये हो । कुत्तो !'

उसने फिर गाना शुरू किया और अनजाने डर का चाबुक खाकर गुमाश्ता और प्यादा भागने लगे । बिना किवाड़ के घरों के अंदर से हवा बहती है, सूखे पत्ते उड़ते हैं । वे भागते रहे ।

ओट में खड़े होकर चोट्टि ने सारा दृश्य देखा । वह भी आया था और दम साधकर पहान के पीछे खड़ा था । अब आगे बढ़ा और पहान के आगे उसने मक्का का सत्तू, राब और जल रखा । पहान के पास से बल्लम हटा लिया । गान समाप्त होने पर पहान का दुबला-पतला हाथ सत्तू पर ले गया । आहिस्ता से बोला, "खाओ ।"

"खाऊँ ?"

"हाँ, पहले उनके डर से नहीं आया । वे लोग फिर आ सकते हैं, अब

नहीं रुकूँगा । फिर आऊँगा, फिर दे जाऊँगा ।"

पहान जैसे बहुत दूर चला गया था । दूर से तैरते आते क्षीण स्वर में वह बोला, "चोट्टि, चोट्टि मुंडा । बिसरा का बेटा, एतोया का नाती, गोमाइया का पोता ।"

"खाओ, मैं चला ।"

"एतोया के साथ मैंने कभी होली की आग जलायी थी ।"

"आज जलाओ, कल होली है ।"

"हाँ, याद है । इन कुत्तों को ले जा सकता है ?"

"जायेंगे ?"

"ना ! तुझे पहचानते नहीं ।"

"मैं चलूँ ।"

"जा ।"

सहसा पहान पास आ गया और बड़े चाव से बोला, "सावधान होकर जाना, बाप ! तुझे देखने पर गुमास्ता जुलुम ढायेगा । तेरे नाम पर बहुत-सी बातें कहता है ।"

'सावधान होकर जाना बाप !' सुनकर चोट्टि के कलेजे के नीचे जैसे कुछ दर्द के मारे फट-सा गया । पहान का ढंग ऐसा आन्तरिक था । सारे धार्मिक विश्वासों में आत्मघात के अपराध में महापापी सिद्ध हुए पिता बिसरा मुंडा की याद आयी । वह ऐसी ही आवाज़ में, ऐसी ही बातें करता था । चोट्टि बोला, "सावधान होकर ही जाऊँगा ।"

उस दिन शाम को गाँव-गाँव में होली जलाकर बड़ी खुशी से छोटे लोग जब उस आग को घेरे थे तो कुरमी में आज होली की आग नहीं जलेगी, यह सोचकर चोट्टि के कलेजे में दुख था । तभी सब चिल्ला उठे और उन्होंने दक्षिण की ओर हाथ उठा कर एक-दूसरे को दिखाया ।

पहाड़ के ऊपर कुरमी गाँव जल रहा है ।

सना ने कहा, 'गुमास्ते ने जला दिया गाँव ।"

चोट्टि ने कुछ नहीं कहा ।

पहान चला गया ।

चोट्टि ने कोई बात नहीं की ।

दूसरे दिन शिकार-परब के दिन चोट्टि तड़के उठ खड़ा हुआ । पत्नी से बोला, "कोई पूछे तो कह देना, खेत गया है । मैं गया और आया ।"

"कहाँ जा रहे हो ?"

"कुरमी । पहान जिन्दा है या नहीं, यह देख आऊँ ।"

चोट्टि की बहू भी दूसरे गाँव के एक पहान की नातिन थी । वह बोली,

"पहान कभी आत्महत्या नहीं करता। उसके लिए फ़िकर क्यों कर रहे हो?"

"तुझे क्या पता, बहू?"

"मेरी पानी की लुटिया गयी—अलमुनिया की लुटिया।"

"तुझे पता है?"

"यह भी मालूम है, यह आग उसने लगायी है। मेरा मन कह रहा है।"

चोट्टि चल पड़ा। सिर और बदन चादर से लपेटकर उसने दौड़ना चाहा। उसका रास्ता ख़तम ही नहीं हो रहा था। उसके बाद वह कुरमी पहुँचा। सूना, सब सूना था। राख का ढेर। राख उड़ रही थी। घर का ढेर मानो श्मशान के पत्थर-सा बड़ा हो रहा था। पेड़ की डाल तोड़कर उसने राख को उलटा-पलटा। वह राख में पहान की हड्डियाँ खोज रहा था। पहान नहीं था, कुत्ते नहीं थे। तो चले गये? अचानक उसको चौंकाकर दूर पर कुछ कुत्ते भूंके और उसने मुँह उठाकर एक अविश्वसनीय दृश्य देखा। गाँव के बिलकुल सामने पहाड़ की चोटी सपाट थी, और पहाड़ लम्बा था और नीचा भी। पहाड़ की ढाल से दस मील तक बड़ा घना जंगल था। पहाड़ की चोटी पर बल्लम ऊँचा कर पहान जा रहा था, उसके पीछे कई कुत्ते थे। वह पहाड़ की ढाल से जंगल की ओर उतर रहा था। आज शिकार-परब का दिन था। पहान और कुत्ते उतरे। जंगल ने उनको निगल लिया। चोट्टि ने सिर हिलाया। उस जंगल में पैदल चलने का कोई रास्ता नहीं था। भालुओं के डर से उधर कोई जाता न था।

पहान का जंगल में जाना प्रतीकात्मक था। उसी के साथ उषा और रात्रि के सन्धिकाल में कुरमी ग्राम के मुंडा लोगों की कहानी समाप्त हुई। तोमारू मिशन के जोज़ेफ़ सुखा मुंडा, दाऊद बिखना मुंडा की कहानियाँ अलग हैं। कई किंवदन्तियों ने जन्म लिया। सभी किस्से-कहानियाँ हैं चोट्टि मुंडा के जीवन में। कहानी से गान है:

बड़ा जुलुम उठाया दयालराज गुमास्ता ने
कुरमी के मुंडाओं को बाँधा था बेगार में
बेगार देते-देते-देते-देते—
सुखा मुंडा गया था चोट्टि मुंडा के पास
चोट्टि मुंडा ने भेज दिया तीर तोमारू मिशन की ओर
कह दिया, तीर के पीछे-पीछे जा।
चोट्टि ने भेज दिया अग्नि-मुखा तीर
कुरमी में जली होली की अगिन।
चोट्टि ने भेज दिया तीर पहान के पास

पहान तीर पकड़ चला गया ब—हुत दूर।

लगभग डेढ़ बरस बाद कुरमी गाँव में नयी प्रजा बसी। जंगल आबाद कर सबने घर बनाये। कुरमी में जो पहले-पहल सब्ज़ी और भुट्टे फले, वे जिस तरह भरे-भरे थे वैसे ही बड़े-बड़े भी थे। घरों के जलने की राख से पुष्ट थे। पहली फ़सल के फल और खेती आदिवासी लोग दिवाली के बाद वाले दिन सूर्य देवता को देते हैं। उसके बाद गाँव जैसा था, वैसा ही हो गया। बकरियाँ चरती थीं, कुत्ते भूँकते थे। घरों की छतों पर मुर्गियाँ, आँगन में नंगे बच्चों का कलरव था। जीवन में कहीं शून्य नहीं रहता।

सात

कुरमी गाँव जल गया, पहान चला गया। चोट्टि का नाम उसके साथ जुड़ गया। बहू बोली, "तुम मानो चोट्टि नदी हो। इस नदी के बिना हमारा कोई काम नहीं चलता। तुम्हारे सिवा यह लोग और कुछ सोच ही नहीं सकते।"

"समझा। वह क्या है जो लटक रहा है?"

"खरगोश। हरमू ने मारा है।"

"बड़ा शिकारी हो गया है!"

"उस दिन उन्होंने, लड़कों ने, भेड़िया मारा था न।"

"वह कहाँ है?"

"वह तो रहा।"

"हरमू!"

"यह रहा।"

"वह क्या मार रहा है?"

हरमू का छोटा भाई सोमचर हँसकर बोला, "वह खरहा है। ज्यों ही भागा कि दादा ने मार दिया। माँ राँध देगी।"

चोट्टि को हँसी आयी। फिर भी बात महत्वपूर्ण थी। वह गम्भीर होकर बोला, "हरमू, यह मादा है। तू समझता नहीं।"

"मारने के बाद देखा।"

"कभी नहीं सुनूँगा कि नहीं देखा। मादा जानवर, मादा पाखी से जीवों का संसार बढ़ता है। मादा जानवर-पाखी तुझे क्यों पहचनवाये थे?"

"अब नहीं मारूँगा।"

सोमचर माँ की ओर देखकर बोला, "माँ के पेट में बहिन है न, बाबा?"

चोट्टि और बहू दोनों ने एक-दूसरे की ओर से मुँह फेर लिया। बहू बोली, "जा, मुर्गियों को देख, सोमचर! दिन-भर सियार घूमते हैं।"

"सियार लाठी दिखाने से भाग जा ते हैं?"

"तीर चलाकर सियारों को मार दूँगा।"

चोट्टि डाँटकर बोला, "धनुक ऐसे ही नहीं दिया जाता। समय आने पर धनुक दूँगा। जा भाग। हमारी माँ हमें कुछ कहती थी तो हम भागकर काम करते थे।"

"भागें क्यों? माँ के पेट में बहन क्यों होगी? हम तब काकी के पास क्यों लेटेंगे? तब माँ हमें प्यार क्यों न करेगी?"

"बेटियाँ माँ के पास रहती हैं। बेटे बाप के पास रहते हैं। तू तब मेरे पास रहेगा। है न? अब जा! दादा को बुला दे।"

चोट्टि ने बहू से बताया, "महाराज ने चीनाबदाम लगवाकर मेरी जान निकाल ली। नीचे की जमीन खोद, मेहनत कर, जिस तरह दिकू लोगों के घर के बेटे-बेटी करते हैं।"

"फायदा जो दूना होगा?"

"वह तो है। उसे लगाने के पहले किसी को मालूम नहीं था कि ऐसी जमीन में ऐसे चीनाबदाम होंगे। अब सभी लगा रहे हैं।"

"तीरथनाथ कुछ खरीदता नहीं है?"

"नमक और किरासिन। वह भी अगर जमीन में फलता तो लगाता।"

चोट्टि और हरमू निकले। कोयेल राइ गया था। सवेरे की ट्रेन से जाता था, लौटने में रात हो जाती थी। फिर भी उस हाट में दाम अधिक मिल जाते थे। हरमू के साथ धनुक रहता था। धनुक में तरक्की पाने के बाद उसके कंधे से धनुक नहीं उतरता था। हरमू की आँखें और चेहरा बहुत अच्छे थे। सफेद धोती बहुत मैली हो जाती है। इसी से माँ उसकी धोती कुसुमी रँग में रँग देती थी। स्टेशन-मास्टर की माँ उसे देखकर कहती थीं, "बालक जैसे राम हो।" हरोया चलते-चलते बोला, "बाबा! क्या एक दाँत वाला बराह बदाम खाने आता है?"

"हाँ रे।"

"हाथी की तरह बड़ा?"

"बराह क्या हाथी-सा बड़ा होता है?"

"बताओ न।"

"बहुत बड़ा।"

"बराह आदमी को मारता है?"

"मारता नहीं! मेरे बाबा तब जवान थे, मैं दो बरस का बच्चा था। शिकार-परब के दिन एक दाँत वाले बराह ने मेरे काका का पेट फाड़ दिया।"

"उसके बाद?"

"घर लाते-लाते काका मर गये।"

"तब?"

"बाबा बोले, 'उस बराह को मारे बिना पानी नहीं पिऊँगा। उन्होंने उस बराह को बल्लम से मारा, तब पानी पिया। पर बाबा सुअर काटते हुए उधर देखते नहीं थे। शिकार में हाथ ऐसा था, मगर मुर्गी नहीं काट सकते थे। इस पर माँ हँसती थी।"

"यह बराह तुम नहीं मारोगे?"

"ना रे, दारोगा बाबू मारेगा।"

"तुम तो मार सकते हो?"

"उसका शौक है। शिकार करेगा।"

इस दाँत वाले बराह का शिकार करने जाने में दारोगा को जान का डर लगा रहता। चीनाबदाम के खेत का बाड़ा ऊँची नागफनियों से घिरा हुआ था। काँटों से लहू-लुहान और घायल होकर चोट्टि आदि ने इस एक वर्ग मील खेत में नागफनी का घेरा लगाया था। उस समय तीरथन ाथ को आलू का खेत बनाने का शौक़ था। तभी घेरा लगा था। कुछ बरसों में पेड़ बड़े हो गये थे। बरसात के पानी से धीरे-धीरे नये पत्ते भी निकले थे। टुकड़े का अगला भाग तीरथनाथ के खेत की ओर था। जमीन तीन भाग ऊँची थी, उसके बाद ढलुवाँ थी। फिर एक नाला था। भगवान जिसे देते हैं, छप्पर फाड़कर देते हैं। इसी से तीरथनाथ की 1500 एकड़ ज़मीन के बीच में एक पतली-सी नदी बहती थी जो इनकी भाषा में नाला थी। नाले में गर्मियों में भी ठंडा पानी रहता जिससे आसपास की ज़मीन उपजाऊ थी। इस जगह जहाँ कुएँ के सिवा कहीं पानी नहीं मिलता था, वहाँ यह बड़ा सहारा था। जुती ज़मीन और नीची जमीन के बीच नाले के किनारे कई आँवले के पेड़ थे। पेड़ों की ओट से उधर नज़र नहीं जाती। ऊँची ज़मीन पर बाड़ा है। दाँत वाले सुअर ने नागफनी का बड़ा घेरा तोड़ डाला। चीनाबदाम के पौधे नष्ट कर दिये। दारोगा ने उसे मारने को कहा है। कई बार ग़लत निशाने के तीर खाकर बराह आदमी देखते ही बिगड़ जाता है। उसकी घुरघुराहट सुनते ही चोट्टि के लोग भाग खड़े होते हैं। तीर लगने

पर वह मरा नहीं, यह जानकर दारोगा हँसकर बोले, "तीर का काम नहीं है। बंदूक से मारना होगा। तीर से तो चिड़ियाँ या खरगोश मारे जा सकते हैं।"

इतने दिनों तक वह मारा नहीं गया, दारोगा को वक़्त नहीं मिल रहा था। तीरथनाथ की माँ ने भी 'वे बराह अवतार हैं' कहकर ज़िद की थी। लेकिन बराहावतार के लिए हज़ारों रुपयों के चीनाबदाम तो बरबाद नहीं किये जा सकते। अब उनका कहना था, मारे जाने के बाद वे काशी जाकर प्रायश्चितस्वरूप विश्वनाथ के मंदिर में सोने के एक सौ आठ तुलसी-दल चढ़ायेंगे। शिव और विष्णु असल में एक हैं।

इतनी बात के बाद एक दिन दारोगा आये। नीचे के खेत में काम करते-करते ही सना कह रहा था, "कई दिन से दिखायी नहीं पड़ा, वह साला आयेगा। ओह, जिस राह आता है, कंद की खोज में जमीन खोद फेंकता है।"

चोट्टि बोला, "तेरी तलाश में आता है।"

"क्यों?"

"तू उसे तीर मारकर भाग खड़ा हुआ।"

"कितना बड़ा है! सोचा कि मार सकूँ तो सब खूब मांस खायेंगे।"

"इसी से कूल्हे में मारा।"

"अरे! वह घूम गया। तूने भी तो बाद में नहीं मारा।"

"दारोगा मारेगा।"

"बराह मारने के लिए ही दारोगा आये हैं।"

निचली ज़मीन में जहाँ बराह ने बेड़ा तोड़कर जगह कर ली थी, वहीं वे लोग खड़े हो गये। बाड़े से थोड़ी दूर पर एक मचान था। उस पर छाजन थी। इस मचान पर बैठकर खेती पर डाका डालने वाले हिरन और सूअरों को भगाने के लिए पहरा देना पड़ता था। मचान कई खंभों पर था। चोट्टि बोला, "हुज़ूर, उसकी ओट में खड़े हों।"

दारोगा बोले, "सूअर एक ओर देखकर चलता है। इससे पहले कि वह हमें देख पाये हम उसे गोली मार देंगे। तुम लोग चले जाओ। बिरजू, तुम रहो।"

कांस्टेबल बिरजू के हाथ में बल्लम था।

चोट्टि बोला, "हम नीचे रहते हैं, हुज़ूर, शिकार देखेंगे।"

"तुम कितने लोग हो?"

"छः जन, हुज़ूर।"

"साथ में कुछ है?"

"बलोया तो रखते ही हैं। और खुरपी है। काम कर रहे थे।"

"बिलकुल बोलना मत।"

"नहीं, हुज़ूर!" चोट्टि भी बड़े जोश में था। वे लोग नीची ज़मीन की ओर आकर ढलान का सहारा लेकर खड़े हो गये। सभी जोश में थे।

घों-घों की आवाज़ आयी। सना फुसफुसाकर बोला, "आ रहा है।"

चोट्टि ने उसका मुँह बन्द कर दिया।

दारोगा ने पहले भी शिकार किया था। इन सारी जगहों में अभी भी बहुत शिकार हैं। जाड़ों में शाम के बाद राह चलती थी। बीच-बीच में बाघ न दिखायी पड़ा हो, ऐसा नहीं होता। जंगली बराह भी मारा गया था। लेकिन उन्होंने घायल बराह पहले कभी नहीं मारा था। हाथों की पकड़ भी ठीक थी। बंदूक संभालकर खड़े हो गये। वे सोच भी नहीं सके कि सूअर ने बाड़े में घुसने के पहले ही उन्हें देख लिया था।

उनका हिसाब गड़बड़ करता सूअर बाड़ में बनायी हुई जगह से न घुसकर उनके पीछे के बाड़े से जहाँ पेड़ छितरे थे, तेज़ी से घुसा और नागफनी की खरोंच लगने से और भी बिगड़ गया। असल में बिगड़कर ही वह घुसा था। बल्लम फेंककर बिजली की तेज़ी से कांस्टेबल मचान से उछल पड़ा और दारोगा के खड़े-खड़े घूमकर गोली चलाते-न-चलाते पाँच बार गोली खाकर सूअर उनके ऊपर आ पड़ा। उनके आर्त चीत्कार से बिजली छू जाने की तरह चोट्टि जुती ज़मीन पर उछल पड़ा। वह शिकारी था। शिकारी के हथियार होते हैं—तीर-कमान, या कभी बल्लम। लेकिन शिकार करना उसके ख़ून में था। शिकार करते समय सोचने की तेज़ी जरूरी होती है। बराह दारोगा का बायाँ हाथ फाड़ रहा था। बिरजू ऊपर मचान पर था। चोट्टि तीर के वेग से भागा, बिरजू का बल्लम लिया। 'हरा-हरा-हरा'—बराह ने भी हड़कम्प गर्जना की। बराह दारोगा को छोड़ उसकी ओर घूम गया। चोट्टि बल्लम लिये भागा आ रहा था। उसने बराह के कान के नीचे से तिरछे बल्लम मारकर पूरी ताक़त से उसे दबा दिया। सूअर पहाड़-सा था। चित्त होने पर भी उसने उठने की कोशिश की, कोशिश की और उठा। सना ने पैरों के पास बलोया चला दिया। वे बलोया उठाये आ रहे थे। चोट्टि ने बलोया उठाया। दाँत से उसका पैर घायल हो गया था। वह बहुत गुस्से में था। अंधाधुंध वह बलोया चलाता रहा और उसके साथी भी मारते रहे। साहसी पशु भी बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था। लेकिन अन्त में मर गया।

दारोगा को उठाकर स्टेशन ले जाया गया। मालगाड़ी रोककर उसे डाल्टनगंज अस्पताल ले गये। तोहरी थाना से स्टाफ़ लाने का वक़्त न

था। तीरथनाथ, बिरजू और दो कुली साथ गये। गार्ड के डिब्बे में फ़र्श पर ही दारोगा को लिटा दिया गया।

स्टेशन मास्टर बोला, "चोट्टि, तू भी जा।"

"नहीं, ठीक हो जायेगा।"

चोट्टि लँगड़ाते-लँगड़ाते लौटा। पहान लता-वता बटोरकर लौट आया। घाव देखकर बोला, "हड्डी बच गयी, टूटी नहीं।"

चोट्टि के पैर में पट्टी बाँध दी गयी। चोट्टि और लोगों से बोला, "साला मरा पड़ा है। काट-कूटकर खाया जायेगा। ले आओ।"

बराह बहुत बड़ा था। बहुत-से मुंडा पसीना-पसीना हो गये। बराह का मांस गंजू-दुसाध-धोबी टोली और कुली लाइन में बाँटा गया। दोनों दाँत चोट्टि ने रख लिये। बोला, "दारोगा बच गया तो उसे दूँगा। बहू, मांस का आचार बना लेना। पके मांस का।"

चोट्टि ख़ून से तर-ब-तर था, पर आचार की बात सोच रहा था।

"अरे, बहुत मांस है, बहुत-सी मद पीने से दरद आप ही चला जायेगा।"

चोट्टि का घाव सूखने में लगभग सात दिन लग गये। दारोगा के घाव अच्छे होने में लगभग डेढ़ महीना लग गया। अस्पताल से निकलकर उसने चोट्टि को बुलवा भेजा। दोनों दाँत पाकर वह बहुत ख़ुश हुआ। चोट्टि को धन्यवाद देने में उसे बहुत संकोच हो रहा था। बोला, "तुम्हारे ही कारण उस दिन बच गया। मैंने नहीं सोचा था कि सूअर उधर से आ जायेगा।"

"घायल होने पर यह ज़्यादा बदमाश हो जाते हैं।"

"मैं तो मर ही गया था।"

चोट्टि हँसने लगा। बोला, "बहुत बड़ा बराह था।"

"चोट्टि! तुम्हें...," दारोगा ने जेब में हाथ डाला।

"ना हुज़ूर! नहीं लूँगा।"

"नहीं लोगे?"

"अगर मैं उसकी चपेट में आ जाता और आप मुझे बचाते तो क्या मैं आपको कुछ भी दे सकता था?"

दारोगा हँसकर बोला, "लेकिन देते तो मैं तो ले लेता।"

चोट्टि बोला, "यही बहुत है। आप बच गये, यही बहुत है।"

अब दारोगा ने कह दिया, "तुम तीर के खेल में फिर उतरो। रोक उठा ली। ज़रा और ठहरो। मेरी पत्नी ने तुम्हारे बेटे के लिए—माने मैं लौट आया, इसलिए पूजा हुई थी न—मिठाई दी है।"

"इतनी मिठाई, हुज़ूर?"

"इतनी क्या?"

सभी को बाँटकर चोट्टि ने भी मिठाई खायी।

इसके बाद उसके लड़की हुई। शुक्रवार को हुई थी, उसका नाम रखा गया सुखनी।

दारोगा ने उसके तीर खेलने पर लगी रोक उठा ली। इस बात की जानकारी होने से सभी बहुत ख़ुश हुए। यह घटना भी धीरे-धीरे उसका एक और कृतित्व और अलौकिकता बन गयी। हर चीज़ इस चोट्टि मुंडा के जीवन में कहानी बन जाती—क़िस्सा और गान। गान के क़िस्से में बराह बन गया चलता-फिरता पहाड़, और कथा बहुत ही काल्पनिक। गान में चोट्टि को एक नया हथियार मिला:

> तुमने घास उठा ली
> घास बन गयी बल्लम
> बराह को मार दिया
> बराह मर गया तभी
> और दरोगा?
> वह बोला, तुम हो महावीर
> जाओ, सारे खेलों में उतरो।

चोट्टि अपनी पत्नी से बोला, "घास उठाने से बल्लम बन जाता है, लेकिन तीरथ लाला का खेत जोते बिना पेट-भर भात भी नहीं जुटता।"

"हमारा जीवन ऐसे ही चलेगा। दादी-परदादी से कहानी सुनी थी, मुंडा लोगों के पास इतना था, उतना था। पर घर था—शिकार से भरा वन। किसी भी दिन उन्होंने बातचीत में यह नहीं कहा कि मुंडा की कोठा-बाड़ी थी। हम लोगों ने तो वह सब देखा नहीं। देखते आये महाजन के पास कोठा है, मुंडा लोग रहते हैं पत्तों के घरों में। महाजन के खेत जोतते हैं।" बहू ने लड़की को दूध पिलाते-पिलाते दूसरी बात शुरू कर दी। बोली, "कुरमी की धरती में कुछ है क्या?"

"क्यों?"

"कोयेल ने देखकर कहा है कि वहाँ इतनी बड़ी-बड़ी मिर्चें, इतना बड़ा कुम्हड़ा फलता है।"

"घर जलकर राख हो गये थे। उसमें पत्ते सड़कर खाद हो गये हैं।"

"तुम ज़रा सुखनी को देखो। मुंगरी बकरी ले जायेगा, उसे खाने दे दूँ। रस्सी नहीं है, पता है? रस्सी लानी होगी।"

"ले आऊँगा।"

चोट्टि के बनाये पालने में सुखनी झूल रही थी। लड़की को झोंटे देते-देते चोट्टि धीरे-से बोला, "बाप के नाम का गान कान में सुनेगी ? आँखों से देखेगी कि बाप महीने में तीन रुपया मजूरी और दाना-पानी पर लाला का खेत जोतने पर लगा है।"

लड़की सो रही थी। चोट्टि को कुरमी की याद आयी। 'कुरमी' कहते ही दुखिया का चेहरा याद आता। वही तसवीर आगे आ जाती। पहाड़ की चोटी पर आकाश में अंकित चलती हुई तसवीर की तरह पहान कई कुत्तों को लेकर चला जा रहा है। उसका रास्ता तोमारू न था। उस तरह के दुर्गम स्थान में कोई रास्ता ही न था। जंगल में उतर गया। जिस वन के चारों ओर केवल पहाड़ हैं, वहाँ से निकलने की राह नहीं है, पहान उस वन में क्यों गया ? अपने समीप सच्चा रहने के लिए धानी जेजुड़ चला गया, दुखिया गुमाश्ते का सिर लेकर थाने गया। पहान को उस वन में जाना पड़ा ! चोट्टि का निश्चित विश्वास था कि किसी दिन उस वन को चीर-चीरकर खोजने से पहान और कुत्तों के कंकाल मिलेंगे।

इसी बरस, चोट्टि के किसी मेले में तीर खेलने जाने से पहले चार मुंडा लड़के उसके पास आये। एक टोकरा उतारकर रखा। उसमें थे लाल आलू, एक कुम्हड़ा, राब और बहुत-सा सत्तू। जमीन तक प्रणाम कर बोले, "भरत मुंडा ने हमको भेजा है।"

"इतने दिनों बाद ?"

"जमींदार की बजारी से हम लोग बहुत परेशान हैं।"

"मिट गयी ?"

"वह तो उनका जीवन और हमारा जीवन रहते मिटने वाली नहीं है। जब हम पत्थर के नीचे और वह खड़िया के नीचे जायें तभी शायद मिटे।"

"भरत का क्या हाल है ?"

"उस गाँव को छोड़ने का उपाय नहीं है।"

"क्यों ?"

"बजारी के लिए हर हाट के दिन शोर होता है।"

"तुम सीखोगे ?"

"हाँ।"

"कब आओगे ?"

"जब कहो।"

"भरत ने भेजा है। मैं सिखाऊँगा भी। पर कहते हो कि बजारी को लेकर अशान्ति है। तुम लोगों के कुछ कर बैठने पर मुझे दुख होगा।"

"मैं बुधा हूँ। भरत मेरा काका लगता है। एक बात कहूँ ?"

"कहो।"

"तुम सिखाने के लिए सिखाओगे। तुमने सिखाया था इसलिए तो दुखिया ने वह काम नहीं किया। गुमास्ते ने जबरदस्ती कोंच-कोंचकर भड़काया था।"

"सो तो सच है।"

"उसमें भी थाने के लोग तुम्हारा दोष समझते हैं। पुलिस हमेशा मुंडा लोगों का दोष देखती है। मैंने इस मुगाना को गोरू भगाने के लिए लाठी दी। उसने मारकर कनू का सिर तोड़ दिया। उसमें मेरा क्या दोष ? मेरे भाग्य में साले जमींदार की चोट है। अगर कुछ हो जाये तो उसके दोष से होगा। कौन क्या कहता है, वह बात जमींदार बतायेगा।"

चोट्टि समझा कि जिस तरह दिन जा रहे हैं, उसमें मुंडा लोगों की बातचीत, सोचना-विचारना भी बदलता जा रहा है। बुधा की बातों में समझ है, और इन बातों को अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता है।

फिर भी वह बोला, "पुलिस बहुत जुलुम करती है। इसी से कह रहा हूँ।"

"गड़बड़ कौन चाहता है ? लेकिन इस तरह की वसूली तो ठीक नहीं। जो कुछ अच्छा हो, वह सब ले लिया जाये तो क्या बेचेंगे, क्या खायेंगे ?"

"जमींदार कैसा आदमी है ?"

"जैसे जमींदार होते हैं। उसके पैर में फीलपाँव हो रहा है। चल नहीं पाता। जूता खरीदता नहीं। बनवाना पड़ता है। एक पैर में बड़ा जूता और एक पैर में छोटा जूता।"

एक और लड़का था जो शान्त था। वह बोला, "जमींदार ने चौथा ब्याह किया है। तीनों को अलग कर दिया है। जमींदारनी को लेकर वह बगीचे की कोठी में रहता है। उसका साला जमींदारी देखता है। इस बहू का भाई, इसी कारन इतनी अकड़ है।"

बुधा बोला, "जमींदार ही क्या है ! अभी भी कोई मुंडा बदन पर कपड़ा नहीं पहनेगा, पैरों में जूता नहीं पहनेगा, सिर पर छाता नहीं लगायेगा, काँसे-पीतल के बर्तनों में भात नहीं खायेगा। एक आदमी का कसूर होने पर पूरा गाँव जरीमाना देगा।"

गया बोला, "और क्या, सब तो जानते हो। बेगार देते-देते कलेजा फट गया है। फिर बात-बात में जरीमाना। साले मुंडारी जानते हैं, लेकिन बात करेंगे हिन्दी में। ऐसी तेजी से बात करते हैं कि समझ में नहीं आती।"

अन्त में बुधा बोला, "डर किसका? कुरमी के लड़के राह दिखा गये हैं। वैसा समझेंगे तो चले जायेंगे मिशन में।"

"वहाँ मिशन कहाँ है?"

"वहाँ नहीं तो ढाइ में तो है! नया मिशन है। मिशन जमीन ले रहा है। लेते ही हमें बसा देगा।"

चोट्टि बोला, "आना, तुमको सिखायेंगे। लेकिन जितने कम लोगों को पता चले, उतना ही अच्छा है। बात से बात फैलती है और दारोगा सोचता है कि मैं दिकू लोगों पर बलोया उठा रहा हूँ।"

बुधा बोला, "सुखा आदि एक खराब काम कर गये हैं। वे जो कर्ज लेकर भागे हैं, उससे ये लोग बातों-बातों में कहते हैं, कर्ज लोगे? खुराकी लेकर तो तुम भाग जाओगे। कुरमी गाँव के मुंडा भाग गये।"

चोट्टि बोला, "काम तो खराब हुआ लेकिन मुंडा जात चोरी-चकारी नहीं जानती, न करती है। खून करने पर भी थाने जाकर कबूल कर लेते हैं। आज अगर चोरी करें, तो वह दिकू लोगों से सीखा होगा।"

"यह बात तो सच है।"

"दस पाई धान लेने पर दस जनम में नहीं चुकेगा।"

बुधा बोला, "हम लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते, इसलिए चोट्टापन करते हैं। मिशन में लिखना-पढ़ना भी सिखाते हैं।"

"सिखाते हैं, पर मिशन में मुंडा लोगों से तो गाँव के मुंडा लोगों की कोई भलाई नहीं होती, बुधा! हम जहाँ हैं, जैसे हैं, वैसे रहते हैं।"

"यह भी सच बात है।"

"हम अकेले ही क्यों? गाँव के दुसाध-गंजू—सबका एक ही हाल है।"

"आज हम चलें।"

बुधा की बातचीत ने चोट्टि को बेचैन कर दिया। वह सोच नहीं पा रहा था कि इस तरह कब तक चलेगा। बुधा की बातें ग़लत तो नहीं हैं। भरत से मिलना चाहिए। पहान ने सब सुन-सुनाकर कहा, "दूसरे गाँव की बात फिर सोचना। अपनी बात सोचो।"

"क्या सोचूँ?"

"मैं अब कितने दिन हूँ? नया पहान कौन बनेगा?"

"तुम जिसे बनाओगे।"

"मेरा तो कोई लड़का है नहीं।"

"तुम्हारे भाई के कोई लड़का नहीं है?"

"न। बहू सिर्फ़ बिटिया-बियानी है।"

"तुम अभी जिंदा रहोगे।"

पहान हँसा। बोला, "तेरी उमर कितनी है?"

"मेरे जनम से गौरमेन का बरस शुरू हुआ है।"

"उस दिन ही सुना था कि यह अड़तीस नंबर का साल है। तब तू अड़तीस बरस का हुआ। तेरे जनम-काल में मैं करीब दो-बीसी साल का रहा होऊँगा। नातिनों का भी ब्याह हो गया है। वह होने से कितना होता है? सना को बुला।"

सना मुंडा बोला, "और दो बरस में चार बीसी होंगे।"

पहान विजय-गर्व से बोला, "तब? फिर भी जिन्दा रहूँगा?"

"हम लोगों से क्या करने को कहते हो?"

"मुझे एक बार भुरकुंडा ले चलोगे?"

"वहाँ क्या है?"

"मेरे काका के बेटे। उनके गोत में कोई हो सकता है।"

"ले जाऊँगा, बता देता हूँ। मेरा सुखनी छोटा है। उसकी सगाई करा दो। तुमको गुड़-हल्दी-सुपारी देता हूँ। बाद में ले चलूँगा।"

"और कब तक जिन्दा रहना पड़ेगा। क्यों चोट्टि?"

सना बोला, "कम-से-कम एक दसी, एक पाँच बरस।"

पहान ने निश्चिन्त होकर बैंगन के पौधे को घेरकर बाड़ा बनाना शुरू किया। सना बोला, "अब भी हाथ चलते हैं। तुम हमारा श्मशान का पत्थर देखकर मरोगे।"

चोट्टि ने घर जाकर देखा कि भरत आया है। हरमू और सोमरा से बहुत जमकर चोट्टि और गौरमेन की दोस्ती की बात बता रहा था।

"तुम्हारी बात ही सोच रहा था, भरत!"

"मन में समझ गया था।"

"उसी से आ गये?"

"उसी से। तुम्हारे नाम का हमें ऐसा गरब है, सो इस घर में और मेरे घर में, देखता हूँ, कोई फरक नहीं। मुंडा लोगों का हर घर एक-सा ही है।"

"फरक है।"

"कहाँ?"

"वैसे ही गरीब हम हैं, मालिक का खेत जोतते हैं, मिले तो भात खाते हैं, नहीं तो भुट्टा उबालकर घाटो। पर तुम, बुद्धू लोग हम पर गान बनाते हो।"

"वह बात छोड़ दो। वह तुम्हारे समझने की नहीं है। हम समझते हैं।"

"अच्छा है।"

"इसी से तो जी रहे हैं, चोट्टि ! फिर भी तुम्हारे लिए गरब कर सकते हैं। अब हमारे लिए तो गरब करने का कुछ और नहीं है।"

"मुंडा लोगों का दुख दूर नहीं होता।"

"यह हाट-बजारी कहाँ से आ गयी, चोट्टि ?"

"दिकू लोगों की आमदनी। दिकू लेते हैं। गौरमेन मदद करती है। दिकू और गौरमेन को बाप-बेटा समझो। मुंडा लोगों के गाँव में मुंडा रहें, उराँव लोगों के गाँव में उराँव रहें, यह हमने नहीं देखा, न हमारे बच्चे देखेंगे।"

"वही देखते हैं।"

"कोई जगह है जहाँ हाट-बजारी नहीं ली जाती, बेगार नहीं है ?"

"साले बेगार देने के लिए हर समय बुलाते हैं। वह दे दी। पर खेत की फसल, आँगन की सब्जी, घर में मुर्गी-बकरियाँ, यह भी अगर बेच न सकें तो घर कैसे चले, बताओ तो ? पेट को तो कुछ चाहिए।"

"इसे वे नहीं समझते।"

"अब लड़के तेज हो गये हैं। कहते हैं, तुम अपना मुंडा जीवन लेकर रहो। कुरमी के मुंडाओं ने राह दिखा दी है। हम जाकर मिशन के मुंडा बन जायेंगे। मिशन के मुंडा लोगों को किसी जमींदार का साला भगा नहीं सकेगा।"

"समझ गया। पर क्या यह कोई राह हुई, भरत ? आज गुमास्ता, कल जमींदार का साला भगायेगा, तो जाकर मिशन में घुसेंगे ?"

"उससे क्या ?" भरत ने बड़े शान्त स्वर में कहा, "तुम सोचकर देखो। मिशन में जाने में कष्ट है, जाने पर सब सुख नहीं है। मुंडा की शकल देखकर उन्हें कोई नहीं लेता। कोई-न-कोई फायदा उठाने के लिए लेता है। राजा, जमींदार, दिकू—सब उसी लिए मुंडा लोगों को सहन करते हैं। मिशन के साहब भी किसी-न-किसी तरह फायदा उठायेंगे। लेकिन ऐसी हाट-बजारी नहीं वसूल करेंगे, बात-बात में गाली देकर मारेंगे नहीं।"

चोट्टि करुण हँसी हँसकर बोला, "क्रिस्तान बनने से ही मिशन को फायदा हो गया।"

"वहाँ पूजा किस तरह की होती है ?"

"गौरमेन के देवताओं की, यीशू की पूजा-भजन। सुना है, ठीक-ठीक पता नहीं है।"

"कौन जानता है, चोट्टि ?"

"कोई कम मुंडा, और कम उराँव तो मिशन गये नहीं हैं।"

"बहुत गये हैं।"

"वे गौरमेन के देवता को पूजते हैं ?"

"निश्चय ही।"

"हम तो हरमदेउ को पूजते हैं !"

"हाँ।"

"उसी से मन की चिन्ता उठ गयी।"

"कौन-सी चिन्ता ?"

"समझता हूँ कि हमारे हरमदेउ क्या इतनी रेल, हवागाड़ी, शहर में क्या तसवीर में चलते हैं, बातें करते हैं—यह सब देख-देखकर बूढ़ा हो गया। इसी से सन्तानों को इधर-उधर जाने देते हैं। सोचते हैं, जाओ बाप लोगो चा-बागान में जाओ, मिशन में जाओ, दूसरों का खेत जोतो, जहाँ जाने से जान बचे, वहाँ जाओ, नहीं तो ऐसा होने की तो बात नहीं थी।"

"भरत, क्या तुम भी उसी मिशन में जाओगे ?"

"सच बताऊँ भाई, अभी भी पता नहीं। कहो तो, गाँव कौन छोड़ना चाहता है ? जाना-चीन्हा देश है। बेगार कहो, हाट-बजारी कहो, सब सह कर भी रह जाता, अगर जमींदार का साला न तंग करता। साला कुत्ते लेकर शिकार करता है, मानो गौरमेन हो।"

"तब ?"

"हाँ, तब क्या करूँगा, पता नहीं। वही कहने आया था कि लड़कों को तीर चलाना सिखा दो। जब तक रहता हूँ, हर मेले में तीर खेल लें। जो जीते, मांस-मद खा-पीकर पड़ोसी मुंडा लोगों के साथ खुशी मना ले। क्या पता भाई, कल क्या हो !"

"कलेजे में जैसे कुछ दुखता है, भरत ! जितने मुंडा चले जाते हैं, कलेजे में उतने तीर बिंध जाते हैं।"

"कुरमी के पहान का कुछ पता चला ?"

"नहीं।"

"अब गुमास्ता बहुत समझदार हो गया है। कोई जुलुम नहीं करता।"

"पहले अगर ऐसा करता !"

"अरे, दिकू जब भला काम करता है, तो समझ लो कि वह डरकर वैसा कर रहा है। प्रजा चली गयी, मिशन में सब कहते थे कि बात गौर-मेन के कानों में गयी है, इसी से अच्छा गुमास्ता आया है।"

चोट्टि की पत्नी ने भरत को एक लुटिया गुड़ का शरबत दिया। पीकर भरत बोला, "मुंडानी, जान बचा ली। बहुत दूर जाना है, कोई छोटी राह थोड़े ही है ! हाँ, चोट्टि, बुधाई की बड़ी समझ है। तुमसे जिस दिन जो

सीखता है, उसे दूसरे लड़कों को सिखा देता है। अखाड़े जाकर नाच-गाना सब भूल गया है। अब तो बस तीर और धनुक है।"

चोट्टि की पत्नी तेज़ी से बोली, "वे अगर बहुत-से दुखिया बनकर कोई काम करें, उससे मेरे मरद का नाम न लगे।"

"नाम तो मुंडा नहीं लगाते हैं, दिकू लगाते हैं।"

भरत चला गया तो चोट्टि बोला, "क्यों? मरद के लिए बड़ा गरब कहाँ गया? मरद के नाम पर जब गान सुनती है, तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती है।"

"नहीं-नहीं, यह बात अच्छी नहीं है।"

"क्या बात?"

"वह जो कह गया। उसमें बुधा की कोई चाल है।"

"वह मैं भी जानता हूँ। जो हो सो हो।"

"यह क्या बात हुई?"

"वे अगर गड़बड़ करें तो अपनी अकल से करेंगे, मुझसे बात न करेंगे। अगर नहीं करेंगे, तो वह भी अपनी समझ से। बुधा का हाथ यों ही अच्छा है।"

"हाथ अच्छा है! क्या काम करता है, वह देखो।"

"मुंडा लोगों का मिजाज बदल रहा है। हमारे लड़के जब बड़े होंगे, तो पता नहीं क्या कहेंगे, क्या करेंगे!"

"देखो, तुम्हारे डर से हो, या जो हो, लाला लेकिन थोड़ा नरम पड़ गया है। अब उस तरह से तंग नहीं करता।"

"कोई भरोसा नहीं रे, कब बिगड़ जाये!"

तीरथनाथ के बिगड़ने के पहले ही एक के बाद एक कई मेले हुए। चोट्टि सब में नहीं जा सका। गाँव में बैठे-बैठे ही खबर मिली कि बुधा आदि ने कई मेलों में ईनाम जीते हैं। भरत दो मेलों में गया था। दोनों ही जगह प्रथम आया था। इसका नतीजा उसके लिए अच्छा नहीं हुआ। सना ने ख़बर दी। सिर हिलाकर बोला, "मालूम नहीं, अपनी आँखों नहीं देखा। मेरा बाप तब जवान था।"

"कब की बात कह रहा है?"

"बीरसा भगवान की लड़ाई की बात।"

"भरत की बात में वह बात?"

"बुद्धुओं की तरह मत बोलो।"

"सना, बहुत दिनों से देख रहा हूँ कि तू एक बात में दूसरी बात उलझा देता है। फल की बात कहने में जड़ की बात कहने लगता है।"

"जड़ से ही पेड़ और पेड़ से फल होते हैं।"

"तो जड़ में है या पेड़ पर चढ़ गया है?"

"जड़ में था। गाछ की बात कहता हूँ। लड़ाई में मुंडा समझते थे कि भगवान का राज आ गया है। उन लोगों ने खेती-बारी छोड़ दी थी, खेत की फसल खा डाली थी, नये कपड़े पहनकर नये ढंग से चलते-फिरते थे।"

"कह क्या रहा है! भरत आदि वही करते हैं?"

"फल की बात पर आ गया हूँ। भरत सबसे कह रहा है—कल क्या होगा, सोच सकता हूँ, बाप। मेला में तीर चलाकर जब रुपये मिलें तो खा-पी लेता हूँ। खेती करने से क्या होगा? फसल तो कर्ज चुकाने में चली जाती है। सब्जी लगाकर क्या होगा? हाट-बजारी में निकल जायेगी।"

"दिमाग खराब हो गया है।"

"इसी से जमींदार का साला दो और दो चार कर रहा है।"

"किस तरह?"

"कहता है, इन सालों की कोई चाल है। कुरमी के मुंडा लोग खूब कर्ज लेकर पेट भर खाकर भाग गये। वे साले भी शायद भागेंगे।"

"भागेंगे, यह तो एक तरह से कह गया। लेकिन मुंडा होता है बुद्धू। जो करता है खुलमखुल्ला कर डालता है। दिकू को पता चल जाता है।"

"भागेंगे कहाँ?"

साँस छोड़कर चोट्टि बोला, "कुरमी ग्राम राह दिखा गया है। हो सकता है, मिशन जाने की सोच रहे हों। उन्हें भी क्या दोष दिया जाये? दिकू लोगों के जुलुम से सब जाकर मिशन में घुसते हैं। या चाय-बागान में। या कोलियरी में। बहुतेरे मुंडा बाँग्ला मुलुक में कहीं खेतमजूरी के काम में चले गये।"

सना बोला, "जहाँ जायें दिकू लोगों का जुलुम, गौरमेन का जुलुम तो साथ-साथ गया, यही तो होता है न? देश-घर छोड़कर भी जुलुम जब साथ नहीं छोड़ता तो देश में रहना ही अच्छा है। क्या कह रहा है, चोट्टि?"

"मन तो यही कहता है। फिर यह भी सोचकर देखा है कि इतनी ठोकरें नहीं खायी जातीं रे! बीच-बीच में मन में घिन उठती है, उसी से मुंडा तैश में आकर कुछ कर बैठता है। नहीं तो सियाराम का सिर उसके कंधों पर रहता, सुखा आदि गाँव में रहते। तू सोचकर देख, मन में कितनी घिन है। असल में सुखा आदि कर्ज लेकर, टीप देकर तभी भागे। यह काम दिकू कर सकते हैं, मगर क्या मुंडा कर सकते थे?"

"बिगड़ने की बात तो मन में उठती है। लेकिन हम लोगों का गाँव तो मिला-जुला है। हम यहाँ कमजोर हैं, इससे भरोसा नहीं होता। पुलिस का डर लगता है।"

"वह भी सोचना होता है। मैंने गुस्से का काम किया। लेकिन जुलुम? किसे छोड़ता है? मेरे बाप के कारन गाँव पर जरीमाना नहीं किया?"

हर काम में जोश आता है। लाक्षागृह बनाने के बाद भी चकमक रगड़ना पड़ा था। भरत मुंडा आदि को भड़काया था ज़मींदार के साले ने। नायब पुराना और तेज़ था। वह ब्राह्मण था, इसलिए अब्राह्मण ज़मींदार उनका कुछ आदर करते थे। नायब ने खुद भी प्रचलित शोषण जारी रखा था, लेकिन अति नहीं की थी। अन्ततः उनकी बात मानी गयी और जब तक उनकी सलाह से काम चला, उतने दिनों तक मुंडा लोगों ने दल-बल सहित जाने की की बात नहीं सोची थी। उन्होंने बेगार दी, लेकिन अपनी ज़मीन जोतने का समय मिला था। हाट-बजारी के बारे में उनकी नीति और तरह की थी।

हाट-बजारी के बारे में इस अंचल के पुराने ज़मींदार और राजाओं के बीच इतने दिन तक यह नियम प्रचलित था—हाट के दिन मालिक का गुमाश्ता हाट में बैठता। आदिवासी कोई भी सामान पहले उसके आगे रखकर ही हाट में बेचने बैठते थे। कोई अगर कहे कि दो मुर्गियाँ बेचने आया हूँ, दे नहीं सकूँगा—वह भी मान लिया जाता था। इसका कारण था कि पुराने ढँग के लोग जानते थे कि आदिवासी लोग, जहाँ तक संभव था, असत् आचरण नहीं करते थे। भरत आदि जिस राजा की प्रजा थे, वहाँ पुराने क़ायदे पर चला जाता था, क्योंकि आदिवासी प्रजा ज़मींदारी में बहुसंख्यक थी और उनका तरह-तरह से शोषण करने से ही ज़मींदारी चलती थी। इस लिए उनके बड़े उत्सवों पर ज़मींदार की कचहरी से भी पहान के पास सीधा भेजा गया था—एक खसी और चावल। यहाँ बज़ारी भी उसी नियम से चलती थी। उसी तरह से होता आया है। इसीलिए प्रजा भी मान लेती थी। वे नायब ज़मींदार के प्रति आश्रित थे। यहाँ के रहने वालों को जिनको लेकर चलना पड़ता था, उनके साथ, भरत आदि के साथ उसका एक तरह की जान-पहचान का संबंध भी था। भरत आदि को जिस बात से सुविधा थी, वह यह कि नायब दंगा-फ़साद से ख़ुद डरता था। उनकी बात जितने दिन चलती, उतने दिनों ज़मींदार बीच-बीच में बस्ती में भी घूमे थे।

चौथी शादी के बाद नायब की दुर्गति का अन्त न था। बहू के साथ

ज़मींदार अलग घर में रहते थे। उन्होंने सारा अधिकार साले को दे दिया था। तीन शादियों के बाद भी निस्संतान थे। उम्र बहुत हो गयी थी। अब उन्होंने भी मान लिया था कि संतान उनके भाग्य में नहीं है। इसलिए निस्सन्देह उनका उत्तराधिकारी उनका साला होगा। एक तरह से उसके लड़के को गोद लेने का भी ज़मींदार ने निश्चय कर लिया था। पहले की तीनों पत्नियों ने नायब को पकड़ा—सरकार के पास जाकर कहा जाये कि उनके भरण-पोषण का प्रबन्ध होना चाहिए। भरत आदि ने हाट-बज़ारी के मामले में नायब को ही पहले पकड़ा। इस पर ज़मींदार के आगे नायब का अपमान हुआ। उनका साला काम-काज चला सकता था, चलाता था। नायब समझे कि कुछ गड़बड़ होने वाली है।

इसी बीच भरत आदि ने हाट के बारे में असहयोग शुरू किया।

नायब बोले, "यह क्या सुन रहा हूँ भरत, तुम क्या अब हाट में नहीं आओगे? खेत की सब्जी खाये ले रहे हो?"

"खाते नहीं तो बेचते!"

"बेचते क्यों नहीं?"

"क्या बेचें? अच्छी चीज़ लाल घोड़े पर चढ़कर साला बाबू ले लेंगे। गुमास्ते को हिस्सा देकर बैठते थे। वह हिस्सा देंगे, साला बाबू को देंगे, साला बाबू का गुमास्ता अलग हो गया है, उसे भी देंगे, तो बेचेंगे क्या?"

"हाट बन्द हो जायेगी।"

"क्या तुम लोग हाट रखना चाहते हो? हाट से हमें जो मिलता है, उससे तुम लोगों का लगान दिया जाता है। सो वही बात कितनी बार बाबू साहब ने तुमसे कही, कितनी ही बार कही। उस पर तुम बोले, 'तुम्हारा कुछ करने का अख्तियार नहीं है। हम किसके पास जायें'?"

नायब ने मन-ही-मन ज़मींदारी का सर्वनाश देखा। हालत क्या हो रही है, उसका उन्हें पता लगा। बोले, "भरत, इन लोगों का बहुत गुस्सा है।"

"इतने दिनों सब्जी बेची, पता नहीं खेत में क्या होता है। कितने दुख के मारे हम लोग खेत की चीज बेचते हैं, यह तुम नहीं समझते, बाबू!"

"साला बाबू को गुस्सा बहुत है। जुलुम करेगा। हाट जाओ।"

"कब जुलुम नहीं किया है?"

नायब समझे कि भरत आदि जब निडर हो रहे हैं तो ज़रूर ही कुछ निश्चय कर लिया है। बोले, "भरत, हमें तुम हमेशा से देखते आये हो, मैं तुम्हें जानता हूँ।"

"हाँ बाबू!"

"सच बताओ बाप, तुम लोग क्या मिशन में भाग जाओगे ?"

"पता नहीं, बाबू। लेकिन यह मालूम है कि हम लोगों ने बार-बार अरज की, कचहरी जाते-जाते पाँव घिस गये, पर गरीब की किसी ने न सुनी।"

भरत के बात करने के ढँग से ही नायब को अपनी बात का जवाब मिल गया। भरत फिर बोला, "रहने का घर, जमीन का टुकड़ा—सभी बेगार में बंधक हैं। दस पुरखों के बाद भी किसी मुंडा का अपना कहने को कुछ नहीं है।"

"कर्ज चुकाने पर सब तुम्हारा हो जायेगा, बाप।"

"बाबू, तुमको कितना मान देते हैं। तुम यह क्या कह रहे हो ?" भरत दुख और निराशा में हाहाकार कर बोला, "तुम्हारी तरह कौन जानता है कि मुंडा का कर्ज अदा नहीं होता ? धान-गेहूँ-मक्का, यह हम पाँच-दस-पन्द्रह पाई नहीं लेते, सोना-सा लेते हैं। नहीं तो कर्ज चुकता क्यों नहीं ? सब मुंडा लोगों ने जितना धान-मक्का लिया है, उसका कितना दाम होता है ?"

भरत चला गया। नायब अब ज़मींदार का नायब बन गया। टट्टू पर चढ़कर ज़मींदार के पास गया, आठ मील दूर। ज़मींदार से बोला, "बहुत बातें हैं, वह बातें आपको सुननी ही पड़ेंगी।"

"क्या बातें हैं ? क्यों, लालमोहन से कहिये !"

"बाघ का काम गीदड़ से नहीं होता। आपके बाप-दादा की ज़मींदारी की मुसीबत है, उसका कुछ नहीं है। मैं क्या यों ही आपको तकलीफ़ दे रहा हूँ।"

"क्या हुआ है ?"

नायब ने सब साफ़-साफ़ बताया। बोले, "उनके चले जाने से हम लोगों का—सबका सत्यानाश हो जायेगा। हमारा ही नुक़सान है। वे तो चले ही जायेंगे।"

राजा मज़ाक में हँसे, "प्रजा चली जायेगी तो नयी प्रजा आ जायेगी।"

"हुजूर, प्रजा अगर बदमाश होती, दंगा करने वाली होती, तो मैजिस्ट्रेट साहब से कहने को मुँह खोलते। भरत आदि ने तो किसी दिन कोई उपद्रव नहीं किया है। हाकिम पूछेगा तो क्या कहेंगे, हुज़ूर ? हाकिम को तो पता चलेगा।"

"वैसा है !"

"हाकिम जमींदार पर खुश नहीं हैं, हुज़ूर।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

"साला बाबू को समझाइये। उनके जुल्मों से अगर हाट बन्द हो जाती है, तो आस-पास आपकी बदनामी होगी। यों ही बहुत बातें होती रहती हैं।"

"क्या बातें ?"

"उन सब बातों को सुनकर क्या होगा, हुज़ूर ?"

"मुझसे क्या करने को कहते हैं ?"

"एक बार सदर चलें। उनकी बातें सुनकर राय बतायें।"

"जाऊँगा।"

लेकिन नायब के बाद ही आया साला—लालमोहन चौधरी। उसने ज़मींदार को समझा दिया। नायब की बातों में कोई सचाई नहीं है। प्रतिष्ठा खोने से ईर्ष्यावश नायब मुंडा लोगों को भड़का रहा है। ज़मींदार के जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। लालमोहन चौधरी कल ख़ुद जायेगा और सब बदमाशों को ठीक कर देगा।

"वही करो। लेकिन मारपीट मत करो। वैसा होने से हाकिम ज़मींदारी ले लेगा, दूसरा बंदोबस्त कर देगा।"

"बनगाँव में गीदड़ ही राजा है।" साला बोला, "इतना डर किस बात का है ? सालों को बंदूक दिखा डराकर हाट ले जाऊँगा।"

"गोली मत चलाना।"

"न-न।"

लेकिन इंसान हर वक़्त बंदूक नहीं चलाता है। बेवकूफ़-बदज़ात-मन-चला होने से बंदूक ही उसे उकसाकर मज़ा लेती है। ऐसे लोगों के हाथों में बंदूक पड़ने से काम गड़बड़ हो जाता है। उसकी प्रतिक्रिया भी ख़राब होती है।

भरत आदि आना नहीं चाहते थे। नायब ने उन्हें समझा-बुझाकर राज़ी किया। हुज़ूर सरकार के सीधे-सीधे सब जान लेने से कुछ समाधान होगा ही—ज़मींदार ने कहा है। कचहरी के सामने मुंडा जमा हुए। नायब भी थे। इंतज़ार होता रहा। अचानक लालमोहन चौधरी मौक़े पर आ पहुँचा और उसके सिपाही मुंडा लोगों को लाठी से पीटने लगे। बुधा के अचानक खींचने से कुछ सिपाही गिर पड़े। लालमोहन के घोड़े ने मुंडा लोगों की चीख़-पुकार से डरकर उसे गिरा दिया। नायब चिल्लाता रहा, "ठहरो, ठहरो, मारो मत" लेकिन लालमोहन और भी डर गया और उसने बंदूक चला दी। गोली नायब के बदन में लगी। "सत्यानाश हो गया", "बरामन की हत्या हो गयी" कहकर सिपाही लोग भागे। लालमोहन भी भागा। मुस्टंडे नायब का शरीर तगड़ा था। उसने

भरत से कहा, "मुझे थाने ले चलो। बंदूक भी ले चलो। तुम लोगों के लिए ही जान दी।" जो बात कही, उस पर खुद भी विश्वास करता और समझता था कि छोटी जात के हाथों अगर मरना हो तो जहाँ तक हो सके उसको सबक सिखाकर मरना ही ब्राह्मण का कर्तव्य है।

भरत आदि ने 'जो हुक्म' काम किया। थाने जाकर भी नायब को लगता रहा कि वह मर रहा है। मुंडा लोग और सालाबाबू के बीच तोल कर सालाबाबू को ही सज़ा देने की इच्छा हुई और सालाबाबू को फँसाने वाला बयान दिया। ब्रह्मशाप का डर दिखाकर दारोगा से जो ठीक हो, वही करने को कहा। इसके बाद दारोगा ने खुद ट्रेन पर ले जाकर उसे सदर शहर के अस्पताल पहुँचाया। वहाँ भी नायब ने, और भी बड़ी पुलिस से, एक ही बात कही। वह अपने को बहुत धार्मिक समझ रहा था। बोला, "युधिष्ठिर कुत्ते को छोड़कर स्वर्ग नहीं गये। मैं मुंडा लोगों को फँसाकर चैन नहीं पा सकूँगा। सारी बातें बता दीं। अँग्रेज़ सरकार का तो धर्म का राज है। अब फ़ैसला हो।"

ब्राह्मण पर इस अत्याचार से पुलिस वाले भी परेशान हुए। श्राद्ध बहुत दूर तक पहुँचा, क्योंकि सालाबाबू गिरफ़्तार हुए। ज़मींदार ने पुलिस की जाँच के डर से भागने की कोशिश की और फीलपाँव के कारण तुरन्त भाग न सके। मुंडा लोगों से काफ़ी जिरह हुई। जाँच करने वाली पुलिस ज़मींदार के ख़र्चे पर बढ़िया भोजन करती थी। मौक़ा समझकर तीनों रानियों ने नायब के बेटे के माध्यम से पुलिस अफ़सर से जो कुछ कहा, उससे यह सच ही प्रगट हुआ कि नायब बहुत ही सज्जन था। ज़मींदार एक राक्षसी के पल्ले पड़े हैं। सालाबाबू के हाथों में ज़मींदारी जाने के दूसरे दिन से ही रानियों का खाना-पीना भी बन्द होने लगा था। मुंडा लोगों पर सालाबाबू बहुत अत्याचार कर रहे थे। नायब ज़मींदार का हितैषी था। इसी से लालमोहन की इच्छा उसका ख़ून करने की थी।

क़ानून का पहिया चलता रहा। सालाबाबू को जेल होने-होने को हो रही थी। ज़मींदार का निकम्मापन प्रमाणित होने जा रहा था कि तभी नायब ने मुक़दमे को मोड़ दिया। ऑपरेशन के बाद वह जी उठा। धीरे-धीरे उसे अपना होश आया। खुद ज़मींदार उसके पास आकर रो पड़ा और चौथी ज़मींदारिन ने गिन्नी की माला उतारकर भाई की जान बचाने को कहा। गवाही के वक़्त नायब ने अब भरत के सिर दोष थोपकर सालाबाबू को बेक़सूर साबित करने की कोशिश की। सरकारी वकील ने धमकाया, "आपने घूस खायी है।"

नायब ने डर से घबराकर यह मान लिया और अपने को बड़ी

उलझन में डाल दिया। फ़ैसला हुआ। सालाबाबू को जेल हुई। ज़मींदार को चेतावनी मिली। भरत के कानों में ख़बर इस तरह से आयी कि नायब ने उन लोगों को बहुत ज़बरदस्त ढँग से फँसा दिया था। कहा था, उन लोगों ने ही दंगा शुरू किया था। पुलिस आकर उनको पकड़ेगी।

लाचार होकर भरत वग़ैरह ने सुखा आदि के मार्ग का अनुसरण किया। जाते समय सुखा ने कहा, "खिसक जाओ, मैं बाद में आऊँगा।"

तभी भागते समय सब ढाइ मिशन की राह चले गये। रास्ते की हाटों में गाय-बैल-बकरी-भेड़ को बेच-बेचकर खाया। बुधा, गया और दूसरे दो लोग मुंडा टोली में आग लगा गये। वे लोग जलते हुए फूस के पूले कचहरी की छत पर और नायब के घर पर फेंक कर गये। भरत आदि दो दिन की राह तय कर चुके थे। गया, बुधा आदि छिपे रहे। इसलिए सबको लगा कि मुंडा लोगों के चले जाने के दो दिन बाद अचानक ऐसी आग किसने लगायी? घटना के अलौकिक होने की चर्चा हुई। घर लौटे हुए नायब को भी लगा कि यह दैवी घटना या तंत्र-मंत्र वालों का काम होगा। सरकार का जो विचार था, उसमें मुंडा लोगों के भागने की बात नहीं थी।

थाने के दारोगा ने राख का बड़ा-सा ढेर देखा। बोले, "बराँभन का रक्तपात हुआ, धरती से सहा नहीं गया। आग लग गयी।"

बात सुनने में अच्छी थी। लेकिन वैसा होता तो नायब का घर कैसे जलता? नायबनी बोली, "तुम अदालत में उनके विरुद्ध कहने गये थे, उसी गुस्से में उन्होंने तीर चलाकर घर जला दिया।"

"तीर चलाते किसने देखा?"

"वह तीर नहीं। वे चले गये। टोली सुनसान है। सहसा आग जल उठी। यही तीर चलाना हुआ। क्यों न होगा? मैंने सुना है कि भरत का भतीजा चोट्टि मुंडा के पास तीर चलाना सीखने जाता था। चोट्टि बड़ा गुणी—मंत्रों का जानने वाला है।"

नायब ने काम से इस्तीफ़ा दे दिया और रुपये-पैसे रामगढ़ हटा दिये—उनके ही सहारे फिर वहाँ से चले गये।

सरकारी रिपोर्ट थी: "मुंडा लोग मौरूसी ज़मीन छोड़कर चले जा रहे हैं। वे मुख्यत: मिशन में जा रहे हैं। इसके लिए ज़िम्मेदार निकम्मा ज़मींदार, घोर लालची महाजन और दूसरे तत्व हैं। कहा जाता है, यह लोग आसानी से बिगड़ उठते हैं, लेकिन मिशन में इनका व्यवहार अत्यंत शान्त और सहयोगिता का रहता है। खेती-बाड़ी करते दिखायी पड़ते हैं। बहुत जल्दी अच्छे-अच्छे ईसाई मुंडाओं के गाँव बन जायेंगे और उन्हें देख

कर दूसरे मुंडा आकर्षित होंगे। अवश्य ही ये गाँव बसाना उतने दिनों ही चलेगा जितने दिनों तक दूसरे मुंडा लोगों को आकर्षित किया जाये। नहीं तो गाँव बसाते चलना मिशन का उद्देश्य नहीं हो सकता। इसके बारे में सरकार की राय है...।"

'करम' उत्सव के मेले में झुझार गाँव के मुंडा पहान ने चोट्टि से कहा, "गाँव छोड़ने वाले भरत मुंडा लोगों ने बाण मारकर, गाँव और कचहरी जलाकर, दिकू लोगों को थोड़ा परेशान कर, चोट्टि के मुंडा समाज के मन में कुछ बल उत्पन्न कर दिया है। झूठ बोलने वाला नायब चला गया, सालाबाबू जेल काट रहा है, यह भी थोड़ा-सा फायदा है।"

चोट्टि मुंडा के जीवन में सब-कुछ क़िस्सा बन जाता था। झुझार के पहान के मुँह से बातें सुनकर चोट्टि ने चौंक कर गिलास में थोड़ी-सी मद ली और हाथ में मिर्च और प्याज़ उठा लिये। उसके बाद उकड़ूँ बैठकर मद पीते-पीते सोचा, यह मामला क्या है? मुंडा जहाँ भी अच्छा काम करते हैं, वहाँ सब चीज़ों की कारगुजारी उन पर क्यों आ पड़ती है? वह कैसा मुंडा है? मुंडाओं की आशाएँ पूरी करना चाहिए? कैसे? वह तो उनकी तरह साहसी नहीं है। धानी, दुखिया, सुखा आदि, पहान, भरत आदि— सभी ने अपने निकट सच्चे रहने के लिए किसी भी समय कुछ हिम्मत का काम किया। चोट्टि ने कुछ भी नहीं किया। फिर भी यह श्रद्धा किसलिए? उसे लगा, इसके पीछे एक अधिकार है। चोट्टि इस तरह का कुछ करे जिससे सारे मुंडाओं के मृत जीवन में नये रक्त का संचार हो। लेकिन वह काम क्या है? वह काम क्या एक दिन में होता है? फिर मुंडा लोग भी बदलते जा रहे हैं। सुखा आदि मिशन चले गये। भरत भी। लेकिन बुधा के आग लगाने में दुश्मन को पहचनवा देने का मामला साफ़ है।

चोट्टि को पता न था कि कुछ बरसों में ही उसे किसी महत्त्वपूर्ण घटना का नेतृत्व करना होगा।

आठ

चोट्टि नदी के कलेजे से जिस तरह अनायास पानी बहता है, उसी तरह कई बरस कट गये। अगस्त के आन्दोलन ने चोट्टि आदि को स्पर्श तक नहीं किया। स्वाधीनता के लिए मानो वह दिकू लोगों की लड़ाई हो। दिकू लोगों ने कभी आदिवासियों को भारतवासी नहीं माना। लड़ाई

और स्वतंत्रता में चोट्टि के लोगों का जीवन अपरिचित रह गया। चोट्टि वाले दूर खड़े सब देखते रहे। हरमू और सोमचर बड़े हुए। हरमू ने गाँव की लड़की कोयेली से ब्याह किया। पहान मर गया था। मरने के पहले अपनी जाति-बिरादरी के आगे उसे पहान बना गया। नये पहान को विशेष सुविधा हुई कि ईसाई मुंडा लोगों द्वारा गाँव के आस-पास घर बनाने के कारण हिन्दी लिखना-पढ़ना सीख लिया था। एक व्यक्ति ने आढ़तिया के पास काम करते हुए हिसाब रखना भी सीख लिया।

कोयेली इस गाँव के डोनका मुंडा की बेटी थी। डोनका के कुछ नहीं था। वह बोला, "लड़के-लड़की का मन मिल गया। इसी से सगाई कर रहा हूँ। नहीं तो मेरा कौन-सा पुण्य है कि चोट्टि मुंडा का समधी बनूँ? फिर मैं बेगार करने वाला ठहरा। पास में कुछ भी नहीं। जात वालों को भोज कैसे दूँगा?"

चोट्टि बोला, "इंसान भोज कैसे देता है?"

"तुम मदद करो तो कर सकता हूँ।"

"हमें भी भोज देना होगा न?"

हरमू की माँ बोली, "अब दिन वैसे नहीं रह गये। शहर की हवा है। वह लड़की बाल खोले घूमती-फिरती है। उसे बहू नहीं बनाऊँगी!"

"तेरी-मेरी बात नहीं चलेगी, बहू!"

"क्यों?"

"आँगन का लंबा पेड़ देख। मैं जब उस पेड़ की डाल में बँधा झूला झूलता था, तब वह जवान था। अब पेड़ बूढ़ा हो रहा है। पहान कहता है कि मेरी उमर दो बीसी है। तेरे और मेरे बालों में सफ़ेदी आ गयी है। हमारे जीवन के पच्छिम में अब बेटा-बहू हैं। हरमू की नयी जिन्दगी है।"

"मेलों में दनादन तीर छोड़ता है, दनादन जीतता है, इससे उसमें जोश आता है। तुम बच्चों से कुछ मत कहो।"

"कहने से कोई फायदा भी नहीं।"

"वह लड़की अच्छी नहीं है।"

"हरमू समझेगा।"

"घर भी कहाँ है?"

"लाला से जंगल के किनारे जमीन माँग लूँगा।"

"देगा?"

"बेकार तो है।"

"हरमू को देगा?"

"वे दो भाई हैं, वह और कोयेल का एतोया। उन्हें जमीन से जो

मिलेगा करें। हरमू को घर बनाना पड़ेगा।"

"यह क्या बात है? भाइयों ने छोड़ा नहीं, लड़के...।"

"कोयेल की बहू तेरी उमर की थी। यह नयी उमर की है, इन लोगों की समझ अलग है। अपनी बातें खुद समझें।"

सब सुन-सुनाकर हरमू बोला, "अपने पास से अलग कर दोगे? क्यों? फिर साथ रहे बिना मैं जिन्दा रहूँगा? तुम्हारा साथ ही मेरा सहारा है।"

उनके घर के पीछे ही हरमू ने मकान बनाया। कोयेल ने कहा, "यह अच्छा हुआ। हमारा एतोया, तुम्हारा सोमचर, यह दोनों जायें। हरमू बड़ा हुआ। उसे हमारे पास नहीं रहना चाहिए।"

सुनकर मुँगरी ने ठंडी साँस ली। हरमू को वह भी प्यार करती थी। हरमू की माँ उसके बेटे को प्यार करती थी। लेकिन पति की बात उसे ठीक न लगी।

तीरथनाथ बोला, "ज़मीन लेगा, ले।"

"क्या शर्त होगी?"

"तू बता।"

"तीन साल लगान नहीं दूँगा।"

"उसके बाद?"

"दूँगा।"

"लगान क्यों? आधी फ़सल देना।"

"लिखा-पढ़ी कर लो।"

"तूने क्या लिखना भी सीख लिया है?"

"पहान है न?"

"लिखा-पढ़ी करने से क्या होगा? ज़बानी बात है।"

"ठहरो। पहान से पूछकर बताता हूँ।"

तीरथनाथ मीठी हँसी हँसा। बोला, "हमेशा के जाने-पहचाने आदमी से कारबार करूँगा। वह पहान कौन है? वह बाहरी आदमी है। लिखा-पढ़ी तेरे साथ है। तू बेगार देगा, कि अँगूठा निशानी लूँ?"

"न, बेगार न दूँगा। बताओ, तुम्हें क्या कहना है? बेगारी जनम-जनम देने से भी उधार नहीं चुकता।"

"चोट्टि! जान-पहचान के आदमी की सच्ची बात भी कलेजे को लगती है। हाँ, मैं बेगार लेता हूँ लेकिन तुम पर कभी ज़बरदस्ती नहीं की। बेगार देखी। फिर अकाल में, सूखे में भुट्टा-धान-गेहूँ नहीं देता हूँ?"

"यों ही देते हो? हम अँगूठा-निशानी नहीं देते?"

"यह बात कहना तुझे ठीक लगता है? तुम तो छाप नहीं देते हो, बाप।"

बात यहीं तक रही। तीन बरस बिना लगान ज़मीन का मामला ज़रूर बहुत दूर तक गया। उसके पहले बेगार के मामले में तिल का ताड़ बन गया। वह स्वतंत्रता के बाद।

1950 में सूखा पड़ा। सूखा इस अंचल का प्राचीन और जाना-पहचाना अभिशाप है। किसी सूखे में जो नहीं होता, इस बार वही हुआ। चोट्टि का पानी भी अदृश्य होने लगा। पानी के लिए हाहाकार मचा। लोग स्टेशन के किनारे रहे। इंजन का पानी लेते थे। उसे ठंडा कर काम में ले आयेंगे। गाँव के पाँचों कुएँ सूख गये। स्टेशन के कुएँ और तीरथनाथ के कुएँ के पास भीड़ लगी रहती। पानी चाहिए।

अन्त में चोट्टि बोला, "क्या सूखे में मरेंगे? बाप-दादे इसका उपाय सिखा गये हैं।"

"चलो, उपाय करें।"

"क्या उपाय करेंगे?" हरमू बोला।

"चलो, दिखाते हैं।"

सना बोला, "वही तो, यह बात पहले नहीं सूझी।"

चोट्टि नदी के बहाव के विपरीत वे लोग चले। जहाँ नदी दोनों ऊँचे किनारों के बीच से बहती है वहाँ किनारे की जंगल-झाड़ियाँ झुकी पड़ी थीं, इसलिए पानी छाया से ढँका था। बड़े-बड़े पत्थर नदी में पड़े थे। पत्थरों में पानी रुका था।

"यहाँ साहब के साथ बत्तखें मारी थीं," चोट्टि बोला।

सना बोला, "यहाँ हमारी बेटियाँ सूखे के दिनों में नहाने आती थीं। जब कहीं पानी न हो, यहाँ रहता है। थोड़ा जल रहता ही है।"

"कैसे रहता है, यह भूले जा रहे हो!"

"क्या भूल रहा हूँ, चोट्टि?"

"मुंडा लोग अपनों को हमेशा भूल जाते हैं।" चोट्टि ने ठंडी साँस ली और बोला, "पहान की बात याद नहीं है? सूखे के दिनों में यहाँ आकर नदी के कलेजे में गहरा गड्ढा खोदने को हमसे कहा था। बालू से गड्ढा भर जायेगा, इसलिए गड्ढे पर हरे साल की शाखें काटकर रोक लगायी थी। मेरे जीवन में इस तरह के गड्ढे तीन बार खोदे गये। देखो, उनमें अभी भी पानी जमा है।"

"तब?"

"वैसे ही गड्ढे खोदेंगे।"

मोतिया धोबिन अब थकी-बूढ़ी हो गयी थी। वह तमाशा देखने आयी थी। अब मोतिया बोली, "हम कहाँ जायेंगे ?"

"नदी क्या हमारी है ? मोतिया, दुसाध-धोबियों को बुला।"

छगन और पारस भी आये थे। वे बोले, "हम यहाँ हैं।"

"इस तरह का छाया हुआ किनारा आधे मील तक गया है। तुम लोग भी गड्ढा खोदो। एक बात कहूँ। तुम लोग सुनो।"

"कहो, चोट्टि !"

चोट्टि पत्थर का सहारा लेकर खड़ा हो गया। बोला, "बहुत पहले की बात है, याद है ? अकाल को दारोगा अकाल नहीं कह रहा था, गौरमेन के पास मैं गया था ?"

"याद है। तेरे बेटे को, हमारे बेटों को क्या पता कि बाप लोगों ने गाँव की मुसीबत में कितना काम किया !"

"खैरात लेकर गौरमेन नहीं आयी थी।"

"न साहबों और हिन्दुओं के मिशन आये थे।"

"यहाँ कौन देखने आयेगा कि हम लोगों को क्या कष्ट है ? लेकिन हम आदमी हैं। प्यास से तुम लोगों को जो तकलीफ है, वही हमें भी है।"

"हममें-तुममें फरक नहीं है।"

"इसी से कहता हूँ, गाँव बड़ा हो गया है। रेलें भी बहुत चलती हैं। बाजार के लोग भी आते हैं। पंजाबी आते हैं। ईंटों का भट्टा बनाते हैं। कलकत्ता के मारवाड़ी आते हैं। देखेंगे कि कोयला मिलता है या नहीं। इन बातों को कुछ समझते हो ?"

"क्या समझें ?"

"हो सकता है, रोजी के रास्ते खुलें।"

"हो सकता है ?"

"अगर बाहर के मजदूर न लायें तो ?"

"अगर न लायें ?"

"लेकिन हमें याद रखना होगा, अपनों के बिना अपनों का कोई नहीं है। और यह भी याद रखना होगा कि अपना दुख खुद ही देखना होगा।"

"अभी तीरथनाथ पानी दे रहा है।"

"उसे पहचानता हूँ। सूखा बढ़ने पर कहेगा, बाप सकल, कुआँ में गंगा नहीं बँधी हैं। पानी सूखा जा रहा है। सबको न दे सकूँगा। जो बेगार करेंगे वे पानी लेंगे। वह बेगार को पहचानता है।"

"हाँ, यही तो कहता है।"

"इस बरस अब बोलने न दूँगा। नदी के नीचे जल है। गड्ढा खोदकर

हम लेंगे। सब लोगों के खन्ती चलाने से बहुत-से गड्ढे होंगे। फिर पानी की तकलीफ नहीं रहेगी। अभी तो जेठ मास है। बन की घास खींचकर देखा था कि जड़ की मिट्टी गीली है। आषाढ़ में पानी बरसेगा। जरूर बरसेगा। जब नहीं बरसता, तब घास की जड़ में धूल रहती है।

"कब आयें ?"

"अभी चाँद का पाख है। ठीक साँझ को बाघ-बराह पानी पीते हैं। साँझ बीतने पर आयेंगे। तब गर्मी का कष्ट नहीं रहता।"

मोतिया बोली, "लड़कियाँ भी आयेंगी। तुम बालू खोदोगे। हम दूर-दूर तक फेंकेंगे। पानी वे भी पियेंगी, पर तुम्हारी मेहनत का क्यों पियेंगी ?"

हरमू बोला, "लेकिन लाला के सात कुएँ हैं। पानी भी रहता है।"

"हम लोगों के कुएँ में, गाँव में पानी क्यों नहीं रहता ?"

"जमीन के नीचे जो नदी बहती है, उसका पानी खिंच रहा है, इसलिए।"

"लाला के कुएँ में तो पानी रहता है ?"

"उसकी जमीन में से होकर नदी जाती है न ! उसमें पानी है।"

मोतिया बोली, "लाला धरम-धरम किया करता है। तो हमको कुआँ खुदवाकर पानी देने से धरम होता है। नहीं होता ? पर देगा नहीं।"

"दे तो समझो कि उसका मतलब कुछ और है।। बाघ आकर कब प्यार करता है ? वह तो बस गरदन तोड़ना चाहता है।"

छगन बोला, "इस बाघ ने तो कभी की गरदन तोड़ दी है।"

"और मिले तो और तोड़ेगा।" चोट्टि ने गहरी साँस ली। बोला, "तू है अपनी पंचायत का प्रधान।"

"नाम ही का हूँ। हालत नहीं देखते ? गौरमेन ने पंचायत को लँगड़ा कर दिया है। अपने बाप-दादा के अमल में हम घने जंगल में रहते थे, क्या करते थे, क्या नहीं करते थे, उसे देखने गौरमेन नहीं आती थी। चोरी होने पर, घर के पड़ोसी से झगड़ा होने पर भी पंचायत की राय सब मान लेते थे। घना गाँव था ! थाने से पंद्रह मील दूर था। उसमें कुआँ खोदने पर सब मेहनत करते थे, सड़क बनाने में सब मेहनत करते थे। कोई भी कुछ आपत्ति नहीं करता था। धीरे-धीरे गाँव घना नहीं रह गया। धीरे-धीरे गौरमेन ने पंचायत की ताकत ले ली। हाँ चोट्टि, पंचायत हमारी है, मैं उसका प्रधान भी हूँ। किन्तु !"

"किन्तु क्या ?"

"किन्तु अब हमारी सामर्थ्य वही बियाह-जनम-मरण की बातों को सुलझाने में है। पड़ोसियों के झगड़े मिटाने में है। फिर भी हम यहाँ अच्छे

हैं। जहाँ अदालत है, वहाँ पड़ोसियों के झगड़ों में भी लोग मुकदमा करते हैं।"

मोतिया पोपली हँसी हँसकर बोली, "अमरूद किसने खाये, इस पर भी मुकदमा होता है। हाँ, मुझे मालूम है।"

चोट्टि बोला, "क्यों न करें? वकील मुकदमा करना चाहते हैं। मुकदमा होने से उनकी रोजी चलती है।"

छगन बोला, "क्या कह रहे थे?"

"हाँ, काम की बात। सो छगन! तुम लोगों का जो हाल है, वही हमारा भी है। पुराने जमाने का मुंडारी गाँव सचमुच नहीं रहा। पहान की भी सारी सामर्थ्य चली गयी है। पहान भी हमारे समाज के रीति-रिवाज में राह दिखाता है, पड़ोसियों का झगड़ा मिटाता है। पर एक फरक है। तुम लोगों में भी जात-पाँत का फरक है। बराँभन और लाला लोगों से तुम छोटी जात के हो। तुम्हारे लिए मोतिया छोटी जात है। हम लोगों में जात का विचार नहीं है। लेकिन यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि गाँव अब मिला-जुला है। अकाल में—सूखे में, बेगार में हम-तुम साथ मरते हैं। लाला फरक डालना चाहता है। सो मौका आने पर हम-तुम एक साथ रहेंगे, यह बात कह रहा हूँ।"

"एक साथ ही चलेंगे, चोट्टि!"

"ना छगन, मेरे बाप के कारन ही खेत जोतने मुंडा नहीं जाते हैं। अकाल की दुहाई देने के समय? हाँ, तब सब एक हो जाते हैं।"

"समझ गया, चोट्टि! लेकिन यह भी समझ लो कि हम लोग तुम्हें मान देते हैं। कोई ऐसा तीर का खेल नहीं होता जिसमें तेरे जीतने पर हम खुश न होते हों।"

"अच्छा है। अब यह बता रहा हूँ, कि सूखे से डर लगता है, या जाने किधर से तीरथनाथ झगड़ा खड़ा कर दे!"

हरमू बोला, "आबा!"

"क्या?"

"आज से ही गड्ढा खोदेंगे?"

"हाँ रे!"

गड्ढा खोदने का काम मुंडा और छगन के आदमियों का मानो सामूहिक उत्सव हो। मर्दों ने बालू खोदी, गड्ढों पर एक-दूसरे में फ़ासला न रखकर लकड़ी बैठायी। औरतों ने दूरी पर बालू फेंकी, किनारे पर। एक के बाद एक कर दस गड्ढे बन गये। उनमें पानी निकला। उनको यहीं पानी मिल गया। चोट्टि बोला, "कोई भी यह पानी कपड़े धोकर या नहाकर

मैला नहीं करेगा। बड़ी मेहनत का जल है।"

तीरथनाथ बोला, "क्या हुआ? तुम लोग पानी नहीं ले रहे हो?"

किसी ने भी गड्ढे खोदने की बात नहीं बतायी। बोले, "अभी भी नदी से जल मिल रहा है। इसी से नहीं आते।"

"इतने दिनों तक क्यों आये थे?"

"क्या पता था कि वहाँ जाने से पानी मिलेगा?"

"सो तो अच्छा ही है। जो लोग बेगार करते हैं वे भी जाते हैं?"

"हाँ महाराज!"

तीरथनाथ को भी सब मालूमात रखना पड़ती थीं। वह हँसकर बोला, "महाराज तो चोट्टि है। उसके कहने पर तुम लोगों ने नदी की छाती फोड़ी।"

सना बोला, "आप चाहे जो भी कहें।"

"अच्छा ही करते हो। देख बाप, नदी का जल सूखने पर मेरे कुँओं पर आकर हमला न बोलना।"

मोतिया शरारती हँसी हँसकर बोली, "जरूर आयेंगे। पानी चुरायेंगे। तुम्हारा बाबा क्या कहता था? जल चुराने में दोष नहीं होता है।"

"अरे, अरे मोतिया! कुआँ छूकर जल का नास मत करना। जल दे दूँगा। मेरे आदमी पानी भरकर दे देंगे।"

तीरथनाथ के कुएँ से पानी लेने पर हो सकता है कि झगड़ा होता। चोट्टि और छगन आदि जब पानी लेते थे तो उन लोगों पर तीरथनाथ का एक अधिकार बनता था। जंगलों के अंचल में बहुत दिनों तक एकाधिपत्य रखने से स्वभाव में तरह-तरह की बातें आ जाती हैं। पानी के लिए उनको धूप में खड़ा करके कुएँ के किनारे नौकर लोग जानवरों को नहलाते रहते। तीरथनाथ को यह देखना अच्छा लगता था। चोट्टि आदि ने उसे उस सुख से वंचित कर दिया। मन में जैसे खोंचा लग रहा था। आषाढ़ में बादल आये। तेज़ वर्षा हुई। सात दिनों में कुओं में जल हो गया, नदी-नाले उफन पड़े, लाल धरती में हरी घास, पेड़-पौधों का स्वरूप लौट आया।

अब किसान और मजूर खेतों में उतर पड़े। धान के बीज बोने में थोड़ी देर हो गयी, तो हो। धान लगाने का काम बड़ा दिलचस्प होता है। चोट्टि और छगन आदि को यह काम मतवाला बनाये रहता। 'यह धान महाजन के कोठे में जायेगा'—यह जानकारी मानो सबके मन से हट गयी, रोपाई में जैसे शरारती बच्चों के साथ पानी में छप-छप करती भाग गयी।

चोट्टि और छगन तीरथनाथ के पास गये। तीरथनाथ ने उन लोगों के गड्ढों की खुदाई को अच्छी नज़रों से नहीं देखा था। बहुत दिनों से यह झगड़ा न था। उस अकाल के वक़्त ही उन लोगों ने एकता की थी। यह बहुत ही अस्वाभाविक काम था। उसके बाद बहुत-से बरस उपद्रव के बिना बीत गये। चोट्टि और छगन आदि के एकजुट होकर काम करने पर वह उपद्रव क्या फिर होता! पर तीरथनाथ को तो वह उपद्रव ही लगा। उनमें फूट डालने की ज़रूरत थी। मौक़ा मिल गया, क्योंकि चोट्टि और छगन ने खुराकी कर्ज़ माँगा। चोट्टि जिस तरह बेगारी न देता, उसी तरह एक सेर मक्का लेने पर उनके हक़ में से उधार वसूलते समय दो सेर काटा जाता। यह क़ायदा बहुत दिनों से चला आ रहा था। छगन के अधिकांश धान और मक्का का मूल्य कर्ज के हिसाब में चला जाता अर्थात मिलता धान या ज्वार या मक्का, खाते में खाद्य और खेती का मूल्य लिखा जाता। उन रुपयों का मूल्य नियमपूर्वक बढ़ता रहता। बेगार देने वाले जिस तरह बेगार देते, उसी तरह उन्हें खान-पान के लिए और पैसे बीच-बीच में मिलते रहते। वह भी बहुत गड़बड़ करने पर। हर एक का हिसाब बहुत ही उलझा हुआ था। पर तीरथनाथ कहता रहता, अपार दया के कारण वह उन लोगों को घर-द्वार और खेती के लिए ली हुई सामान्य ज़मीन नहीं लेता। चाहते ही ले सकता है। क़ानून के मुताबिक़। ले लेने पर कोई कुछ कर नहीं सकता था।

खुराकी के संबंध में तीरथनाथ बोला, "वह तो मिलेगी ही। कल सबेरे आना। तब दूँगा।"

दूसरे दिन चोट्टि एक काम में फँस गया। उसकी गाय ने झाड़ी के किनारे बच्चा दिया था। वह गाय और बछड़े को उठाने गया। हरमू को मुंडा लोगों के साथ खुराकी और कर्ज़ लेने भेज दिया।

लगभग एक घंटे के बाद सोमचर और एतोया आये।

"तुम चलो।"

"क्यों?"

"गड़बड़ हो गयी है।"

"कैसी?"

"चलो, चलते-चलते बताता हूँ।"

राह में सोमचर बोला, "दादा और दूसरे मुंडा लोग गुट बाँधकर कचहरी में बैठे हैं।"

"क्या हुआ, बता तो?"

"उस कुरमी गाँव के मुंडा खुराकी और कर्ज लेकर भागे थे। उस

बात को लाला भूला नहीं था, आबा। बोला, क्यों, हरमू! तुम लोगों के साथ हिसाब अलग है। तुम लोगों को दूँगा। छगन आदि को दूँगा। दादा ने पूछा, और दूसरे मुंडा लोगों को? तब लाला बोला, हिसाब देख लूँ तब दूँगा। दादा ने कहा, क्यों? तब लाला बोला, कुरमी के मुंडा लोगों की तरह तुम भी खचड़ापन कर सकते हो।"

"कहा? 'खचड़ापन' कहा?"

"कहा। तब दादा बोले, इतने दिनों से करज दे रहे हो। कभी किसी मुंडा ने तुम्हारे साथ खचड़ापन किया? तब लाला बोला, किया नहीं तो करने में क्या देर है? दादा बहुत ही चिढ़ गये। उस पर लाला बोला, तुमको तो देता हूँ। दादा ने कहा, क्या हमारा अकेले का पेट है, और किसी का नहीं है? इस पर लाला बोला, तेरे साथ कोई बात नहीं होगी, अपने बाप को बुला। तुम लोग इस जमाने के लड़के हो। हमारी बात नहीं समझते।"

चोट्टि को लगा कि उसके बाप और तीरथनाथ के बाप के बीच दुश्मनी थी। उसी का नतीजा था कि बिसरा ने आत्महत्या की थी।

चोट्टि बोला, "चल, चलकर देखें। छगन आदि क्या कर रहे हैं?"

"बैठे हैं। कह रहे हैं कि चोट्टि और हम एक साथ हैं।"

चोट्टि ने देखा कि सभी कचहरी के आगे आँगन में बैठे हुए हैं। उसे देखते ही छगन बोला, "फैसला कर चोट्टि, करज के बिना भूखे मर जायेंगे।"

चोट्टि आगे बढ़ा। हरमू उसके पीछे-पीछे आया।

"चोट्टि, तेरे बेटे ने हमें आँखें दिखा कर तेज़ बातें कहीं। इसी से कहा, तुझे बुलाये। तुम्हारे पहान, उनके प्रधान—सब तेरी बात मानते हैं। तेरे कहने से बात समझ में आती है।"

चोट्टि कुछ देर चुप रहा। उसके बाद बोला, "मैं क्या कहूँ? महाराज, तुम्हारे बाप और मेरे बाप में तकरार हुई थी।

"उस बात से अब क्या मतलब है?"

चोट्टि कुछ ज्यादा ही ज़ोर से बोला, "उससे मेरे बाप ने फाँसी लगा ली। जिसे फाँसी होती है उसकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती। वह हवा में बाल खोले घूमती है। अपने बाप की आत्मा को शान्ति देने के लिए मैं रुपये देता हूँ, कपड़े देता हूँ, फिर बाप का समाज का काज भी हुआ है।"

"अगर पुरानी बात उठायी है तो मेरे बाप के लिए भी बहुत प्रायश्चित और यज्ञ-पूजा करना होगा। उन बातों से क्या फ़ायदा?"

"महाराज, इतने दिनों के बाद वे सारी बातें लौट आयी हैं ! कुरमी के मुंडा लोग जो काम कर गये हैं, उससे हम शरम के मारे मर रहे हैं। पर कितने दुख से मुंडा लोगों ने यह काम किया है, यह सोचकर तुमने देखा है ?"

"क्या तुम लोगों को देना नहीं चाहता ?"

सब आगे आ गये। बहुत,बहुत दिनों बाद चोट्टि फिर सामने आ गया। ज़ोर से बातें कर रहा था।

चोट्टि पीछे हटे बग़ैर बोला, "सब सुन लो। उसी दिन समझ गया था महाराज, तुम हम लोगों के साथ छगन आदि की फूट डालोगे। अब देखता हूँ कि मुंडा मुंडा में फूट डालते हो।"

"क्या फूट डाली ?"

चोट्टि पीड़ा से भरी हँसी हँसकर बोला, "मैं चोट्टि मुंडा हूँ, महाराज ! कभी गलत काम नहीं किया। आज मुसीबत के दिनों में मैं करज लूँगा, और ये मुंडा भूखों मरेंगे ? न।"

"तू मुझे डर दिखा रहा है ?"

"नहीं महाराज ! इतनी जमीन, इतने रुपये तुम्हारे पास हैं, दारोगा तुमको इतना मानता है, मैं तुमको डर दिखाऊँगा ?"

"क्या कह रहा है ?"

चोट्टि बड़े ग़ुस्से से बोला, "वह 'खचड़ापन' वाली बात वापस लेनी होगी। कोई खचड़ापन किये बिना यह बदनामी का करज नहीं लूँगा। छगन !"

"कहो, चोट्टि !"

"तुम चाहते हो तो करज ले लो।"

"चोट्टि, यह कैसे हो सकता है ?"

"नहीं छगन, लेना हो तो ले लो। लेकिन मैं भी कह रहा हूँ महाराज, बात वापस लिये बिना तुम्हारे खेत में किसी को पैर नहीं रखने दूँगा। मुंडा खचड़ापन करता है ?" चोट्टि चीख़कर बोला, "मुंडा खचड़ापन नहीं करते। फायदा नहीं उठाते। बराह मारकर दारोगा की जान बचायी, क्या रुपये नहीं ले सकता था ? वह बात तुम वापस लो। जान लड़ा कर तुम्हारी जायदाद की रखवाली करता हूँ। डाकू-चोर तुम्हारा एक दाना गेहूँ नहीं ले सकते। खचड़ापन वाली बात लौटाये बिना जान चली जायेगी, तब भी किसी को खेत में पैर नहीं रखने दूँगा। धनुक लेकर अकेले लड़ूँगा। लाओ पुलुस, मरवा दो मुझे, लेकिन आख़िरी बात कह दी।"

"तू, तू बलोया उठायेगा ?"

"इसे अगर बलोया उठाना कहो, तो बलोया उठाऊँगा। जाओ, फूट डालो। छगन आदि ले लेंगे करज, मैं नहीं लूँगा।"

"यह तेरी बात है ?"

"यही बात है। बुला पुलुस। खचड़ाई किसे कहते हैं, यह तब दिखाऊँगा। पुलुस आने के पहले सब-कुछ अगनमुखा तीर से जला दूँगा।"

चोट्टि चुप हो गया। छगन बोला, "हम तेरे साथ हैं, चोट्टि ! महाराज ! यह आपने क्या कहा ? आदिवासी लोग एक बार निश्चय करते हैं, हुज़ूर ! भूखे रहेंगे, काम करेंगे, लेकिन बुरी बात नहीं सुनेंगे।"

तीरथनाथ समझ गया कि सब-कुछ बहुत मुश्किल होता जा रहा है। बोला, "कल जवाब दूँगा। आज और कोई बात नहीं।"

चोट्टि हँसा। बोला, "यह बात लौटाओगे या नहीं, अभी बताओ महाराज ! मैं घर नहीं जाऊँगा। लड़का धनुक ला देगा। अभी से तुम्हारा खेत रोक दूँगा। मेरे लड़के हैं, सना आदि हैं। मुंडा लोगों को मार डालो। उसके बाद सच्चे आदमियों को लेकर कामकाज करो।"

चोट्टि की बात में भीषण प्रतिज्ञा थी, अटल ज़िद। तीरथनाथ धीरे-धीरे अटक-अटककर बोला, "मुँह से बात निकल गयी। वह बात मैंने कहनी नहीं चाही थी। कल कर्ज़ दूँगा। लेकिन हिसाब देखकर दूँगा।"

चोट्टि समझा, सर्वनाश होते-होते बच गया। अब उसकी जीत हुई। वह क्षीण, दुर्बोध्य हँसी हँसकर बोला, "हिसाब हमारी ओर से पहान देखेगा। छगन भी देखेगा। हिसाब अच्छी चीज है। हमारे और छगन के लिए भी यह जान लेना अच्छा है कि किसने कितना लिया है।"

"जानोगे।"

तीरथनाथ ज़ोर से कुर्सी ठेलकर उठ खड़ा हुआ। "कह दिया कि मैं फिर भी कर्ज़ दूँगा। और कोई न देता।"

"तुम ही तो दोगे। हम और किसके लिए मेहनत करते हैं ?"

दूसरे दिन कर्ज़ मिला। पहान और छगन हिसाब समझने गये तो कुछ समझ में न आया। मौक़ा मिलते ही तीरथनाथ पहले दारोगा के पास गया।

सब सुन-सुनाकर दारोगा बोले, "आदिवासियों के बारे में सावधान होकर चलियेगा। अब उनके लिए मंत्री बन गये हैं, दफ़्तर बन गया है। चोट्टि मुंडा ने बताया नहीं ? कोई अपराध करेगा तो सूचना दे देगा।"

तीरथनाथ के मन में पुराना डर दिखायी पड़ा। वह उदास चेहरे से बोला, "न-न, चोट्टि कोई अपराध करने वाला आदमी नहीं है।"

"दूसरे कर्ज़दारों को तो आप क़ाबू में रख सकते हैं।"

"सब मिलकर एक हो गये हैं।"
"यह क्या कह रहे हैं?"
"जाने दीजिये। भूल जाइये कि क्या कहा था।"
"डर रहे हैं क्या?"
तीरथनाथ गहरी साँस लेकर बोला, "दारोगाजी, आज़ादी के बाद भी यह जगह जंगली है। यहाँ बहुत कुछ होता है, जिसको दूर करना किसी थाने के बस में नहीं है। मान लीजिये आप खाने बैठे हैं। जितनी बार खाने को हाथ लगाते हैं, दिखायी पड़ता है कि खाना खून बना जा रहा है। ऐसा होने पर आप किसे अपराधी ठहरायेंगे?"
"कह क्या रहे हैं?"
"बताया तो।"
"चोट्टि यह सब कर सकता है?"
"किसे पता? मेरे पिता ने उसके पिता से झगड़ा किया। उसके बाबा ने फाँसी लगा ली। उसके बाद मालूम है, क्या हुआ? हमने देखा कि चोट्टि यहाँ है। लेकिन उसके तीर से काशीधाम में मेरे बाबा नाव से गंगाजी में गिर गये। अपघात मृत्यु हो गयी। सब समझ गया, पर कुछ कर न सका।"
दारोगा बोले, "ऐसा नहीं होता।"
"कुछ दिन देखिये, खुद ही कहेंगे कि ऐसा होता है।"
"तो आपकी ही बात रही। फ़िकर मत कीजिये। अभी कुछ नहीं किया, लेकिन मैंने आँखें खोल रखी हैं। मौक़ा आने पर देख लूँगा।"
"आप जो भी समझें। लेकिन कुछ अद्भुत हो जाने पर सोचेंगे कि तीरथनाथ यह बात कह गया था।"
"मेरे बहुत पहले अँग्रेज़ों के ज़माने में एक दारोगा की जान उसी चोट्टि मुंडा ने बचायी, यही न।"
"हाँ, इस तरह के बहुत-से काम उसने किये थे।"
चोट्टि मुंडा की जिन्दगी में सारी बातें किस्सा बन जाती हैं। उनके जीवन में निरंतर दुख और वंचना है। इसीलिए चोट्टि के गाने गाकर वे क्षण-भर के लिए सब भूल जाते हैं। उन्होंने गाया:

तीरथनाथ बोला, सारे मुंडा खचड़ा।
चोट्टि बोला, बात लौटाओ हे
नहीं तो बाण मार जला दूँगा खेत तुम्हारा
तुम्हारे कोठे में जलाऊँगा होली की अगिन।
लाला बोला, लौटा ली बात

ले लो करज, ले लो धान
करज में लो मक्का
मेरे मुँह से नहीं निकलेगी फिर ऐसी बात
सबने सुना तब चोट्टि ने लौटाये अपने तीर
बाण नाच उठे थे, छूट गये थे प्राण।

चोट्टि गाना सुनकर बोला, "अच्छा, किन्तु मैंने कह दिया हरमू, किसी दिन लाला इस अपमान का बदला लेगा।"
हरमू बोला, "ले लेता। थाने गया था।"

नौ

चोट्टि देख रहा था कि मुंडाओं का सब-कुछ जैसे बदला जा रहा है। जीवन बदला जा रहा है। चोट्टि स्टेशन और अधिक बड़ा हुआ। वहाँ अब रात में दिन की-सी चमकीली रोशनी होती थी। चोट्टि आदि जानते थे कि यहाँ की ज़मीन पर उन्हें नये काम करने को कुछ नहीं है। चोट्टि की ज़मीन उन्हें हाड़तोड़ मेहनत के बाद सिर्फ़ फ़सल ही देगी। उन्हें तीरथनाथ के हिसाब से फ़सल का चौथा या आठवाँ हिस्सा मिलेगा। अपने खेतों में जो फ़सल है, वह धरती देगी। लेकिन धरती ने कभी चोट्टि या छगन आदि को धनी नहीं बनाया।
"सब दिकू लोगों के लिए बचाकर रखती थी।" चोट्टि पहान से बोला।
हरमदेउ के थान और पहान के घर के चारों ओर वे लोग घेरा बना रहे हैं—नागफनी का घेरा। इस काम में जिससे जितना हो सके वैसी मेहनत दें।
"क्या बचाकर रखती थी?" पहान ने पूछा।
"सब-कुछ।"
"कौन?"
"यह धरती।"
"क्या कह रहे हो?"
"आँखें नहीं हैं? देखते नहीं?"
"तुझ-सी आँखें कहाँ पाऊँगा?"
"तुम भी उस पहान की तरह बात करते हो।"

"देखो, सुन्दर घेरा बन गया।"

"अब पहानी से कहो, घर पोतें, चित्र बनायें।"

"कब करेगी ? वह बकरी लेकर लगी रहती है। मैं ही करूँगा।"

"तुम ?"

"देखना। क्या कह रहा था ?"

"चलो बैठें।"

बैठकर चोट्टि ने बीड़ी सुलगायी और बोला, "इस धरती को देखो। इसकी सेवा में हम जनम का जनम बिता देते हैं। किन्तु कभी किसी मुंडा को धनी होते नहीं देखा। बहुत जमीन जोती, बहुत लोगों ने खेतों पर मेहनत की।"

पहान हँसकर बोला, "लगता है देवताओं ने मुंडा लोगों को फकीर बनाकर भेजा है। तू क्या देखेगा ? किसी ने नहीं देखा।"

"लेकिन किसी दिन ऐसा आदिम ग्राम था।"

"आदिम ग्राम—खूटकाट्टि ग्राम—के बारे में तुझसे किसने बताया ?"

"सुना है।"

पहान कुछ कहने जा रहा था, पर बोला नहीं। उसने कहा, "बता, क्या कह रहा था ?"

"अब देखो, उस धरती को दिकू छीने ले रहे हैं। परताप चड्ढा आ रहा है। ईंटों का भट्ठा बनाया है। कहाँ कलकत्ता, वहाँ से आकर चिरंजीराम मारवाड़ी यहाँ कोयला खोदेगा। और फलों का बगीचा एक नया रोजगार है। अशरफ शेख यहाँ छः बीघा जमीन मोल ले रहा है। बगीचा बनायेगा। सो इतनी ईंटें, इतना कोयला ! धरती सब बचाकर रखे थी, इन दिकू लोगों के लिए !"

"लाला भी बगीचा बनायेगा। जमीन में क्या फल होता है ? बहुत-से पपीता, सरीफा, अमरूद, आम ! देख न, हम जंगल से महुआ के फल तोड़ते हैं। वह भी बता तो कितना होता है ?"

"हमें कुछ नहीं देती।"

"न।"

"बताओ तो, क्यों नहीं देती ?"

"हमारे भाग्य में नहीं है।"

"न।" चोट्टि गंभीर हो गया। बोला, "जो लेना जानता है उसे देती है। हम लिखे-पढ़े नहीं हैं। बाप-दादों ने भी नये काम नहीं किये। हमें कुछ नहीं आता।"

"सुना है, इस बार गौरमेन हम लोगों का इसकूल खोल देगी।"

"कहाँ ?"

"पता नहीं।"

"ऐसा नहीं सिखायेंगे कि हम अपना हक समझ सकें। फिर सीखने से लाभ ही क्या ? अपना कहने को मुंडा लोगों के पास कुछ भी तो नहीं है।"

"तू फिर भी तीर खेलकर पैसे पाता है।"

"रुपये भी।"

"सबको देता है।"

"देना होता है।"

"वापस मिलता है ? छगन आदि से ?"

"दे देते हैं।"

कुछ सोचते-सोचते चोट्टि बोला, "एक बात है।"

"क्या ?"

"तुम भी चलो, छगन भी चले।"

"हाँ, चलेंगे ?"

"चलो, उस परताप के पास चलें। कहेंगे, हमें मिट्टी खोदने के काम में लगा लो। उससे हमारी भी जान बचेगी और परजा न होने पर भी तीरथनाथ जो हमें परजा बनाये हुए है सो उसके हाथ से थोड़ा बचेंगे।"

"अच्छी बात कह रहा है।"

"एक बात और है।"

"क्या ?"

"कोयला तो यहाँ जमीन के ऊपर है। कोयला खोदने के काम में भी चलना होगा। देखो, पहले नहीं सोचा था कि ऐसी बात कहूँगा।"

"तूने यह क्या कहा ? यह तो समय ने तुझसे कहलाया।"

चड्ढा ने उन लोगों की बातें ध्यान से सुनीं। बोला, "तुम कितने लोग हो ? मुझे तो बहुतेरे लोगों की जरूरत होगी।"

"पचासों मुंडा हैं। औरतें और लड़कियाँ भी हैं। छगन आदि तो सौ के करीब होंगे।"

"ठीक। तो जिम्मेदार कौन होगा ?"

"हमारा पहान। यह छगन।"

"दिन का बारह आना दूँगा। पन-पियाई नहीं दूँगा।"

"पन-पियाई की छुट्टी देंगे ?"

"एक घंटा। बरसात में काम न होगा।"

"हम खबर ले जायेंगे।"

"अच्छा।"

"कब से काम होगा ?"
"बता दूँगा। लेकिन एक बात।"
"कहिये, महाराज !"
"तीरथनाथ के पास जो काम कर रहे हो, उसमें रुकावट न पड़े। यहाँ हम दो लोग हैं। आपस में झगड़ा नहीं चाहते।"
"झगड़ा नहीं होगा, महाराज !"
बाहर निकलकर छगन बोला, "चोट्टि !"
"कहो।"
"काम तो सुनने में अच्छा है। पैसा भी मिलेगा।"
"पता है, तुम लोग बेगार करते हो, लाला क्या करेगा ?"
"यही सोच रहा हूँ। हमारा कैसा भाग्य है कि लाला के यहाँ मेहनत करेंगे, यहाँ मेहनत करेंगे, मन में भरोसा नहीं होता। तुमने जो हम लोगों की बात सोची, इससे हमें गरब हो रहा है।"
चोट्टि फीकी हँसी हँसकर बोला, "देख क्यों न ले ? बैठकर मजा देखो। जो सब जगह हो रहा है, वही यहाँ भी होगा।"
"क्या होगा ?"
"कोई आयेगा जंगल साफ़ कर पत्थर तोड़ने वाला ठेकेदार बनकर, कोई आयेगा जंगलों के पेड़ों को काटने का ठेकेदार बनकर। वे लोग भी कुली लेकर आयेंगे, हम भी जायेंगे। सब जगह ऐसा हो रहा है, कितनी ट्रेन चल रही हैं, देख नहीं रहा है ? नया टीसन बन रहा है। यहाँ भी आदमी बढ़ेंगे, बस्ती बढ़ेगी। मुंडा लोग भी आयेंगे। तुम लोगों का समाज बड़ा होगा।"
"ओह, सोचकर कैसा बुरा लगता है। तब झगड़े-झंझट-मुकदमे, बहुत हंगामा हो जायेगा।"
"लेकिन वह दिन आ रहा है।"
घर लौटकर चोट्टि के मन के बादल छँटे नहीं। वह दिन आ रहा है। मुंडा लोग अपनापन लेकर नहीं रह सकेंगे। छगन की तरह जो लोग अलग-थलग देश की उन्नति में लगे हैं, उनके साथ मिलकर खेत की मजूरी, ठेकेदार और दूसरे रोज़गार वालों के साथ कुली का काम करना होगा। तब बदन पर होगा कुर्ता, हो सकता है पैरों में जूता भी आ जाये। तब 'मुंडा'-परिचय केवल उत्सवों में, सामाजिक व्यवहार में ही रहेगा।
उस तरह के दिन आ रहे हैं। अभी अपना कहने को जो कुछ है, उसे पकड़कर रखना पड़ेगा, जैसे मेले में तीर चलाना। मुंडा युवक कहाँ आ रहे हैं ? कहाँ कह रहे हैं, तीर चलाना सिखाओ ?

चोट्टि जो कहता है वही होता है। अब नरसिंगगढ़ के राजा नहीं हैं। 'राजा' नाम पोंछकर अब वे जंगलों के राजा बन गये हैं। चीता, बाघ इत्यादि की खालों के निर्यात के रोज़गार में लग गये हैं। जंगल का क़ानून उन पर लागू नहीं होता। वे किसी भी क़ानून के अन्तर्गत नहीं आते। कंपनी के राजपूत हवलदार का यह राजवंश है। 'राजा' ख़िताब मिलने का कारण गलत ढँग से ब्रिटिश राज की भक्ति है। कई पीढ़ी पहले तत्कालीन राजा ने गोली चलाकर तीस प्रजाजनों को मार डाला और घोषणा की थी कि हम सूर्यवंशी हैं। हम किसी क़ानून के अन्तर्गत नहीं आते।
सचमुच उनको कोई सज़ा न हुई। तभी से जो गद्दी पर बैठते हैं, उनके मन में यह रहता है कि वे सूर्यवंशी हैं। यह राजा भी वही समझता है। इस जानकारी के बल पर वे पानी के कुंड को ज़हरीला बनाकर बाघ मारने लगे हैं। दूसरे जीव-जन्तु भी मरते रहते हैं। राजा ऐसे ही कामों में व्यस्त रहते हैं। उनकी ख़ास जागीर में हैं मुंडा-उराँव-कुरमी-दुसाध इत्यादि प्रजागण। राजा के पास समय नहीं है। इसलिए नायब तहसीलदार सिंह स्वभावतः प्रजा पर शासन करता है। हथियार एक ही है—कर्ज़-चक्रवृद्धि ब्याज-बेगार। आजकल तहसीलदार किसी प्रजा पर ख़फ़ा हो जाये तो हाथी से उसका घर उजड़वा देता है। इसका परिणाम है कि नरसिंगगढ़ की हवा में क्षोभ फैला हुआ है। दारोगा या थाना सूर्यवंशियों के बहुत ही आज्ञाकारी हैं। और तो और, ट्रेन तक, शेर का चाम लादने के दिन, न रुकने वाले स्टेशन पर भी रुक जाती है। अभी, इसी समय, नरसिंगगढ़ से पुराण मुंडा आया। पुराण की उम्र बहुत कम नहीं है, छियालीस बरस है। चोट्टि के पैरों के पास उसने अपना धनुष रख दिया। बोला, "मुझे सिखाओ।"
"तुमको ? हर बरस जीतते आ रहे हो।"
"तुम चलो।"
"तुम तो लड़कों के साथ आते थे।"
"तुम चलो न।"
यथास्थान आकर पुराण बोला, "हाथ ठीक नहीं है। सोचा, तुम्हारे पास अभ्यास करने से अगर हाथ लौट आये।"
सचमुच पुराण था हाथ काँपता था।
"यह क्या, पुराण ?"
पुराण विरक्त आवाज़ में बोला, "मेरा घर हाथी से रौंदवाकर तोड़ डाला है। सो मुंडा में कितनी अकल होती है ? झपट पड़ा। लड़के ने घसीट लिया, इससे हाथी के नीचे नहीं पड़ा। लेकिन हाथ किवाड़ों के

नीचे दब गया। तब से हाथ बस में नहीं है।"

चोट्टि हाथों में धनुष लिये ऐसे खड़ा रहा मानो पत्थर हो गया हो। जैसे वह हज़ारों बरस पुराना देवी-देवता बन गया हो, जिसके पास बहुत दिनों से आकर मुंडा कहते जाते हों—

घर पर हाथी चढ़ा दिया
बेगारी करने ले गया
उसके घर में था परब, सो लगान लिया
करज लिया था, उसमें सारी फसल ले गया।

मुंडा लोग कहे जा रहे थे, कहे ही जा रहे थे। कोई प्रतिकार नहीं हो सकेगा—यह जानकर आदमियों से नहीं, अशक्त देवी-देवताओं से कह रहे थे। दूर पर पहाड़ था, सूखा सपाट मैदान, वन के आँचल में आँवलों का बन हवा से काँपता था, पत्थरों के बीच घास के गुच्छे थे। कहीं जानवरों के गले में घंटी बज रही थी, तीतर बोल रहे थे।

चोट्टि पत्थर का देवी-देवता नहीं था। हाड़-मांस का आदमी था। वह बोला, "सो बाद में तीर चलाने में जीतना चाहते हो, इसलिए मेरे पास आये हो?"

"आया हूँ।"

"क्यों आये पुराण, क्यों?"

"मैं अकेला हूँ। मेरे पास कोई नहीं है"

"लड़का? मुंडानी?"

"सबको भाई के पास भेज दिया, लातेहार में।"

"तू कहाँ रहता है?"

"तहसीलदार को पता है कि मैं भी लातेहार में हूँ।"

"है कहाँ?"

"लाइन के पार एक पुराना रेल का कमरा है। उसके चारों ओर जंगल हो गया है। लोहे की कोठरी है। यह घर शायद हाथी भी नहीं तोड़ सकता।"

"वहीं है?"

"हाँ रे, सिखा।"

चोट्टि बोला, "तो देख। नजदीक आ।"

कुछ क्षण बीते। चोट्टि बोला, "तहसीलदार को पता है कि तू लातेहार गया है? सच बता, पुराण। चालाकी मत करना।"

पुराण थोड़ी विस्मित और पूरी तौर पर निर्लिप्त आवाज़ में बोला, "हाँ रे! वह कहा था न, बेरा ग्राम से। उसके बाद जाकर दासू मुंडा के

घर रहा। बहुत डर गया था। दूसरे दिन लातेहार चला गया। कई दिन बीत गये। उसके बाद बहू ने कहा, शायद उनका गुस्सा ठंडा हो गया हो। जाकर देख आओ न? सो आकर जो देखा तो ताज्जुब की बात थी।"

"क्या देखा?"

"घर, गोठ, मचान—कुछ नहीं रहा। जैसे कि जुती हुई जमीन हो। कहीं लौट न आऊँ, इसलिए घर-आँगन सब हाथी से रौंदवा डाला। दूसरे मुंडाओं को कोड़े मारकर कहा, उस जमीन में काँटे लगा दो।"

"उन्होंने लगा दिये?"

"लगा दिये।"

पुराण अपनी कहानी के उपसंहार में बोला, "बहुत मोटा कोड़ा। चमड़ा मढ़ा हुआ। एक बार मुझे मारा था। पैर टूट गया था, चोट्टि! हाड़-तोड़ लता लगायी, तभी पैर ठीक हुआ। सो हमारे मुंडा तो खराब नहीं हैं, फिर भी क्यों उन लोगों ने मेरी जमीन में काँटे बोये, यह सोच रहा हूँ। उस पर दासू बोला, पुराण! तुझे जहाँ रहने न देंगे उस पर और किसी को क्यों बसायें? इसी से काँटे लगाकर जमीन बेकार कर दी। लेकिन वे यह नहीं समझे कि वह जमीन मेरी है। राजा का दिया पट्टा भी है। एक बार जब गौरमेन के साथ मुकदमा हुआ, तब दिया था। सो मुंडा लोग यह नहीं समझ पाये कि जमीन मेरी है। लड़कों को पपीते अच्छे लगते हैं। इस बार पेड़ लगाता।"

"तो जाना मत।"

"न जाऊँ?"

"न।"

"अगर जमीन वापस मिले तो?"

"मिलेगी भी, पता नहीं। फिर भी कहता हूँ। पता लगाकर मैं तुझे बताऊँगा। देख, मैंने सुना नहीं है, लेकिन दासु उराँव ने सुना है। सदर में समझा जाता है कि हमारे, आदिवासियों के, भले-बुरे को देखने के लिए गौरमेन बैठ रही है। वहाँ बताना होगा।"

"कौन बतायेगा? तू? सदर तो बहुत दूर है।"

'मुंडा लोगों के लिए सदर दूर ही रहता है, पुराण! पास नहीं रहता। अपनी जरूरत पर कोशिश करके देखना पड़ता है, कुछ पास जा सकते हैं या नहीं। चाहने से सब होता है, जैसे तू मेरे पास आया।"

"तू जो भी कह, चोट्टि। हमारे लिए तू बहुत अपना आदमी है। तेरे पास आने में लगता है कि रास्ता छन-भर में कट जाता है।"

"तेरे हाथ में ताकत नहीं है।"

"हाथ काँपता है।"

"बाघ की चर्बी की मालिश कर।"

"घर में थी। पता है, चोट्टि...?"

"चल, मैं दूँगा।"

लेकिन पुराण किसी मेले में तीर चलाने नहीं आया। नरसिंगगढ़ के मुंडाओं ने कहा, "वह लातेहार चला गया।"

चोट्टि की बड़ी इच्छा थी कि उस परित्यक्त रेल के वैगन को देख आये। फिर याद आया कि पुराण ने तो छिपे ठिकाने का पता देना नहीं चाहा था। वह बात कहना ठीक न होगा। वह अगर देखने जाता है तो उससे भी जानकारी हो जायेगी।

गाँव लौटकर चोट्टि परताप चड्ढा के हिसाब रखने वाले ऊधमसिंह के पास गया। छोकरा-सा वह आदमी भला था। शिकार के कारण चोट्टि के साथ एक तरह से उसकी दोस्ती हो गयी थी। सदर में उसका हमेशा आना-जाना रहता था। चोट्टि ने उससे एक दिन सारी बातें खोलकर बतायीं। बोला, "महाराज, जब तुम सदर जाओगे तो एक बात का पता लगा आना।" चोट्टि ने उससे सारी बातें बतायीं, सिर्फ़ पुराण का नाम और नरसिंगगढ़ का नाम नहीं बताया।

लेकिन पचास का दशक पुराण मुंडा का दशक था।

उन दिनों पचास का दशक साठ के दशक की ओर बढ़ रहा था। एक बार दोपहर में पता चला कि राजा को शिकार खेलने में मदद देकर तहसीलदारसिंह लौट रहा था। वह घोड़े पर सवार था। उसी समय उसकी पीठ में एक तीर लगा। तीर की नोक में विष था। तहसीलदार गिर पड़ा। घोड़ा उसे फेंककर आराम से घास चर रहा था। सारी घटना का पता लगने में शाम हो गयी। इसी बीच तहसीलदार के मुँह से झाग निकलता रहा। रात में ही वह मर गया। इस घटना में सारी प्रजा को लपेटने में सूर्यवंशी खुश होते। पर बड़े दुख की बात थी कि घटना-स्थल के आस-पास आदमी न थे। दोपहर में सब अपने-अपने काम में लगे थे। किसी पर संदेह नहीं किया जा सकता था। सतयुग तो था नहीं कि घोड़ा बात बताकर साक्षी देता। तहसीलदार की मौत का रहस्य बना रहा। तहसीलदार का भतीजा चाचा की रखैल को लेकर नौ-दो ग्यारह हुआ। रखैल कचहरी के दरबान की विधवा और पोढ़ी और खेली खायी थी। चाचा-भतीजा दोनों ही उसे लेकर एक-दूसरे से दुश्मनी रखते थे। इसका नतीजा हुआ कि यह मामला पारिवारिक किस्से के उपसंहार के रूप में लिया गया। किसी भी तरह पुराण मुंडा पर सन्देह नहीं गया। चोट्टि के

मन में बड़ी घबराहट दिखायी देती थी और एक चाँदनी रात में, जब स्टेशन सो रहा था, तब वह उस वैगन के पास गया। वैगन सूना था। उसमें कोई न था। चैन की साँस लेकर वह लौट आया। सदर से ऊधमसिंह जो खबर लाया वह काम की नहीं थी। आदिवासी कल्याण और उन्नति के अधिकारी उखड़े हुए मुंडाओं को कुटीर उद्योग में मदद दे सकते हैं, छीनी हुई ज़मीन फिर नहीं दिला सकते। छिना राज्य, राजाओं की ख़ास ज़मीन का मामला बहुत गड़बड़ का होता है। उनके दफ़्तर का अधिकार नहीं कि पुराण की ज़मीन दिला दें। उसके सिवा, चार-चार कर मुंडा-उराँव-दुसाध-कुरमी-गंजू-धोबी के मिलकर रहने से वह इलाक़ा उनके अख़्तियार में नहीं आता था। असली आदिवासी अंचल होने से वे उनको कुटीर-उद्योग की उपयोगिता समझा सकते हैं।

दो महीने बीत गये। उसके बाद एक दिन अचानक एक चौंकाने वाला समाचार सुनायी पड़ा। मुंडा जाति के विलुप्त अस्तित्व वाले लोग ही इस तरह ख़बर दे सकते हैं।

पुराण पकड़ा गया है। पकड़वा दिया है।

बहुत ही प्रतीकात्मक रूप से वह तीन पपीतों के तीन पौधे लेकर अपने गाँव में अपने ठिकाने गया था। पौधों को रोपने जाने पर उसने अपने ठिकाने पर नया घर देखा। उस घर में एक और मुंडा परिवार था।

उस परिवार के लोगों ने समझा कि पुराण उनके साथ झगड़ा कर अपनी ज़मीन पर कब्ज़ा करने आया है। पुराण उनसे बोला, "मेरा पट्टा था।"

"अब उस पट्टे का अधिकार नहीं रहा।"

"अधिकार नहीं रहा?"

"कचहरी ने बताया है।"

"तो ये पौधे?"

"बुरा न मानो तो यहाँ लगा दो। और मेरे घर पर रहो, खाओ। हमने कोई बुराई नहीं की। फिर भी बुरे बन गये। पर बड़े दुख में आये थे।"

पुराण ने पौधे लगाये। इसके बाद बोला, "दासू! उपा! तुम लोग मेरे साथ थाने चलो।"

"क्यों?"

"जब पट्टे का ही जोर नहीं रहा, तो मैंने तहसीलदार को मारा क्यों? वह तो ठीक नहीं किया।"

"तूने मारा था?"

"हाँ, जाकर दारोगा से बता दूँ।"

"क्यों बतायेगा ?"

"क्या करूँ ?"

"तू भाग जा।"

"क्यों ?"

"उसे मारा। तुझे फाँसी होगी।"

"घर और ज़मीन मिलेगी नहीं, छाती फटी जा रही है, तो जिन्दगी का क्या करूँगा ? किसलिए नहीं कहूँ ? फिर आदमी बहुत ही बुरा था। उसे मारने पर फाँसी क्यों होगी ?"

मुंडाओं का सारा मामला धीरे-धीरे उलझा हुआ लगने लगा। इसके बाद वे थाने ही गये। पुराण ने सब साफ़-साफ़ बता दिया।

दारोगा ने उसे थाने पर रोक लिया। बहुत देर तक उसे समझाया कि केस खतम हो गया है, उसे लेकर झंझट करने से कोई फ़ायदा नहीं। फिर यह सीधा झंझट है ? फिर फ़ाइल खोलो, केस बनाओ, सबूत-गवाह जमा करो। लेकिन पुराण को कुछ भी न समझा सके।

अन्त में पुराण बोला, "तो क्या होगा ?"

दारोगा का धैर्य चुक गया। बोला, "केस बन्द हो गया है। अब तुम कह रहे हो, तुमने खून किया है। इस आधार पर भी केस हो सकता है। लेकिन क़ानून का रास्ता अलग ढँग से चलता है। तुमने ख़ून किया है वह देने से ही खून नहीं हो जायेगा। साक्षी-सबूत चाहिए। प्रमाण चाहिए। कारण चाहिए।"

"मेरा घर तोड़ दिया।"

"कब ? वह तो घटना के पाँच महीने पहले की बात है। तहसीलदार का ख़ून होने के दो महीना पहले से तुम्हारी ज़मीन पर दूसरे लोग रहने लगे थे। तुम्हारी बात मुझे मालूम है। तहसीलदार पर किसका गुस्सा हो सकता है, यह जाँच करने में तुम्हारी भी तलाश की थी।" अब दारोगा 'तू' पर उतर आया। गुस्से से बोला, "गधा ! उजबक ! तुझे तो मैं बचाने की कोशिश कर रहा हूँ। तुझे खूनी साबित करने में मुझे बड़ी मेहनत करना पड़ेगी। अभी मुझे बहुत काम हैं।"

काम थे सूर्यवंशी के एजेंट के साथ। बाघ की सात खालों के दाम आये थे इक्कीस हज़ार रुपये। दारोगा को कम-से-कम हज़ार रुपये मिलेंगे। इस समय इस रद्दी केस में फँसने की उसकी इच्छा नहीं थी। सदर में और गृह कार्यालय में दारोगा के काफ़ी खूँटे थे। खूँटों के बल पर ही वे यह बात कह सकते थे।

"कौन गवाही देगा ? घोड़ा था। और हाथी ?"

"हाथी कहाँ मिला ?"

"हाथी उसके साथ फिरता था। मेरा घर तोड़ दिया।"

"समझा। तुम्हारा दिमाग़ ख़राब है।"

"बाबू ! मैं तुम्हारी दिकू बात नहीं समझता।"

"किसने समझने को कहा ?"

"बाबू ! चोट्टि ग्राम का चोट्टि मुंडा सब जानता है।"

"चोट्टि मुंडा ! वह तुम्हारे साथ था ?"

"हाँ हुजूर ! उसने मुझे सहारा दिया था।"

अब केस मज़ेदार बना और सिनेमा में देखे फूलों की तरह सैंकड़ों आयामों में विकसित हो गया। थाने में पुराण को बैठाकर दारोगा, राजा के एजेंट के साथ ज़रूरी काम निबटाने के लिए गया। दूसरे दिन कांस्टेबल से चोट्टि को बुलाने को कहा। पुराण की बात सुन-सुनाकर कांस्टेबल आदर के साथ बोला, "हुजूर ! यह कैसे हुआ ? जिस दिन तहसीलदार का खून हुआ, उस दिन चोट्टि को मैंने हाट में देखा था। हाट में था और हमने बातें भी कीं। उनके थाने का सिपाही भी था।"

दारोगा ने पुराण ने पूछा, "अच्छा ! चोट्टि तेरे साथ था ?"

"नहीं, नहीं, हाट गया हुआ था, जाकर भी वह मेरी छाती में बैठा रहता है।"

दारोगा ने उसे बहुत डाँटा। बोले, "हाथी था, चोट्टि मुंडा था। जा, घर जा। नहीं तो मैं तुझे मारकर ख़तम कर दूँगा।"

बहुत ही परेशान दिमाग से पुराण बोला, "तब क्या घर के लिए फिकर करते-करते मेरा दिमाग बिगड़ गया है ?"

"निकल जाओ यहाँ से।"

"हाथी भी देखा, चोट्टि भी साथ था।"

चोट्टि आदि ने सोचा था कि पुराण का इतनी देर में चालान हो गया होगा। लेकिन पुराण को आते देखकर वे लोग चौंक गये। पुराण ने उससे सारी बातें कहीं। उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है, इसलिए दारोगा ने उसे छोड़ दिया है, यह जानकर चोट्टि बोला, "आ, बैठ। सारी बात बता। पहले कुछ खा ले।"

मक्का का सत्तू पानी में घोल नमक-मिर्च के साथ खाकर पुराण बोला, "दारोगा को विश्वास नहीं हुआ कि मैंने तहसीलदार को मारा है।"

"वह कैसे हुआ ?"

"समझ में नहीं आता।"

पुराण पूरी बात बता गया। हाथी देखा, तू मेरे कलेजे में रहता था। स---ब झूठ ?

"पुराण, तू आज जैसे जी रहा है वैसे कोई मुंडा किसी दिन जिन्दा नहीं रहता। तू अभी समझ नहीं पा रहा है कि कैसे जिन्दा है।"

पहान बोला, "उसे घर में रखो। उसके बाद उसके कौन कहाँ है, ले जाकर उनसे जिम्मे कर दो।"

चोट्टि ने उसे अपने घर रखा। दूसरे दिन पुराण को लेकर वह और पहान ट्रेन से लातेहार गये। ट्रेन पर बैठकर चोट्टि बोला, "तूने हम लोगों को रेल पर भी बैठा दिया। कभी सोचा भी नहीं था रि रेल पर बैठेंगे।"

"रेल अच्छी है। मैं तो उसके कमरे में रहता था।"

"अब चुप हो जा। वह बात भूल जा।"

"हाँ चोट्टि, कलेजा भी खाली है, हाथी भी नहीं दिखायी देता। तब रेल के कमरे में सोता था, सदा हाथी देखा करता था।"

"हाथी बत्तख बनकर उड़ गया, जा।"

तीनों ही खूब हँसे। हँसते-हँसते उनके दिल का बोझ हलका हो गया। तीनों मुंडा हँसते हुए लातेहार उतरे। कुलियों से अपने-आप बोले, "पहले-पहल रेल पर चढ़े हैं जी, इसी से हँसी आ रही है।"

पुराण बोला, "चलो चोट्टि, मद ख़रीद लें।"

"पहले घर चल।"

घर जाकर पहान और चोट्टि ने पुराण के लड़कों को सारी घटना का महत्व समझाया। बोला, "कहीं जाने मत देना।"

"यहाँ कितने दिन रहूँगा ?"

"कहाँ जायेगा ?"

"ठेकेदार ने पेड़ काटने के काम को बुलाया है।"

"कहाँ ?"

"कहाँ ? पता है, गौरमेन के जंगल में।"

"तो जा। लेकिन उसे छोड़ना मत।"

पुराण बोला, "मद नहीं पियोगे ?"

"बाद में आकर पी जाऊँगा।"

वे लोग पैदल लौटे। देर रात को लौटे। पहान बोला, "चोट्टि, वह क्या है ? हाथी ? मैं क्या पुराण हो गया ?"

"न-न। वह मादा हाथी है। टाहाड़ के ठाकुर के मन्दिर का हाथी है। महावत उसे लेकर घूम रहा है।"

"ऐसा कहो। पुराण के दिमाग़ को क्या हो गया है, पता है। अभी भी समझ नहीं पा रहा है, किस परेशानी से बचा।"

"मेरी तो अभी भी समझ में नहीं आ रहा है।"

"ऐसा क्यों हुआ ?"

"दारोगा को ही पता होगा।"

सारे किस्से-कहानी चोट्टि के जीवन में थे। सभी ने कहा, "तूने उसे हिम्मत दी।"

"पुराण का दिमाग ठीक नहीं।"

पुराण आदि परिवार सहित ठेकेदार के साथ चले गये। घूमते-घूमते वे रामगढ़ के राजा की कोलियरी में पहुँचे। वहाँ वे एक दूसरी जिन्दगी में मिल गये। उस जीवन में सुख नहीं था। पर तहसीलदार और 'हाथी' भी नहीं थे। चोट्टि गाँव की मोतिया धोबिन का लड़का बस के रास्ते पर छोले-भाजा बेचा करता था। उससे मिलकर पुराण ने चोट्टि को बुलवा भेजा, यहाँ उसके लिए सब अजनबी हैं। अच्छा नहीं लगता। लेकिन यूनियन होने से सबको काम मिल गया है। ठेकेदार ने उन लोगों को पेशगी दिये हैं, तमाम लोगों ने वह रुपये ले लिये हैं।

चोट्टि बोला, "लें। जिन्दगी रहे।"

पुराण का मामला दूर हो गया। पुराण को जेल नहीं जाना पड़ा। पर अपने बेटे हरमू के मौके पर चोट्टि उसे जेल जाने से न बचा सका।

दस

समय आगे बढ़ गया था। किसी भी साल चोट्टि ने चोट्टि गाँव के मेले में तीर के मुक़ाबले में जाना न छोड़ा और किसी को विजेता न होने दिया। उससे जिन्होंने सीखा था, वे ही सब लड़के हर मेले में जीतते थे। परताप चड्ढा एक और ईंटों का भट्टा खोलने बोकारो की ओर चला गया था। यहाँ हरबंस चड्ढा ईंटों के भट्टे की देखभाल करता था। वह मोटी ईंटें बनवाता था। बहुत सस्ती मजदूरी पर गाँव के लोगों को ही लगाना वह पसन्द करता था। तीरथनाथ का काम छोड़कर चोट्टि और छगन आदि वहीं काम करते थे। स्टेशन के काम-काज में लोगों को कुली का काम नहीं मिलता। ठेकेदार कुली लाता था। दूसरी ओर ग़ैरक़ानूनी तरीक़े से पेड़ों को गिरा पहाड़ों को वृक्षरहित करने, पत्थर तोड़ने, लाल बजरी

बनाने का काम लोगों को मिलता। परताप की कही हुई बारह आना प्रति-दिन की मजूरी सब देते रहे। छगन बोला, "अब हम बारह आना के सिपाही हैं। जहाँ जो काम हो उसी में लड़ने जाते हैं। काम कैसा भी हो, बारह आने से रुपया न होगा। हाँ चोट्टि, एक बार जाकर सबके कहने से न होगा?"

"क्या कहोगे?"

"एक रुपया दो।"

"नहीं देगा।"

"क्यों नहीं देगा?"

"तू पढ़ा-लिखा आदमी है, समझता नहीं?"

"तू बता। तेरा दिमाग अच्छा है।"

"क्यों दे, यही बता।"

"तू बता न।"

चोट्टि धीरे से हँसकर बोला, "काम के लिए तमाम आदमी हैं। काम कम है। हम न करेंगे तो आसपास के लोग आ जायेंगे। सूखे और अकाल का देश है। हमसे तो सब काम हल नहीं होता। इसलिए हरवंश अब अकाल के जमाने में चार आना और गौरमेन के रिलीफ के माइलो अनाज से काम करा रहा है।"

"यह कहो। इसी से बाहर के मजदूरों के साथ हमारी बात नहीं होने देता। इसी से वे भी हमारे साथ मिलते-जुलते नहीं।"

"हाँ। देखो जगह बड़ी हो रही है, तरह-तरह के लोग हैं। बहुत तरह के काम भी हो रहे हैं। लेकिन हम जहाँ थे, वहीं हैं, पर एक अच्छी बात है। पहले तीरथनाथ के करज न देने से खाने को नहीं मिलता था। अब पत्थर तोड़ें या मिट्टी खोदें, करज कम होता है। फिर देखो, हाल बदल रहे हैं। हरमू के बदन पर भी कपड़ा है। मुंडा लड़कियाँ भी जामा पहनती हैं। हम लोगों की चाल-ढाल अब नहीं रही।"

"न। अब टिकेगी? अब तो हर हाट में सस्ते जूते-चप्पल, हर तरह के कपड़े-फीते-चूड़ी-बिन्दी—बहुत कुछ हैं। खून-पानी करके कमाये पैसे उसमें चले जाते हैं।"

"तुम्हारे लड़के इस्कूल क्यों नहीं जाते?"

"इस्कूल? पहले तो रिवाज नहीं है, भेजने में बहुत मारना पड़ता है। उस पर मास्टर कहता है, तू पढ़कर क्या करेगा! जा, जानवर चरा।"

"मुंडाओं के लड़कों को तो देखते ही भगा देते हैं।"

"पढ़ाई-लिखाई हम लोगों के लिए नहीं है।"

"कानून में तो सबके लिए है, लेकिन अमल में नहीं।"

"पढ़ेंगे ब्राह्मण, लाला और कायस्थों के बेटे।"

चोट्टि हँसकर बोला, "मुझे दुख नहीं है। सना की बहन का लड़का देख आया है, राँची में मुंडा-उराँव लड़कियों को मिशन में पढ़ाई करके भी कोई काम नहीं मिलता। छोटा-मोटा काम करती हैं, कोयला खोदने जाती हैं।"

"उसमें भी पैसे मिलते हैं।"

"वहाँ पैसे हैं। यहाँ नहीं।"

चोट्टि पहान के पास गया। हरमू की मौसी की लड़की सोमचर की बहू बनेगी। सोमचर की पहली पत्नी मर गयी थी। सगाई के दिन देखना होता है।

पहान बोला, "तूने ठीक कहा था।"

"कौन-सी बात? तुम लोग तो मेरी सारी बातों को 'ठीक' मानते हो।"

"वही जो मेले में कह गया था। भोज के समय।"

"क्या कहा था?"

"कहा था, मुंडा लोगों का अपना मत अब न रहेगा। जिन्दा रहे तो छगन आदि के साथ एक होकर छोटा-मोटा काम करना पड़ेगा। तीर-धनुक का खेल भी खतम हुआ। शिकार के खेल में जंगल छानने पर साही तक नहीं मिलती। अब तीज-त्योहार पर ही मुंडा मुंडा होंगे, ब्याह-शादी के-से समाज के काम में। तीर-धनुक तो मेले में जीतने का खेल रह गया। जो कभी हथियार था, वह अब खिलौना है।"

चोट्टि गहरी साँस लेकर बोला, "खिलौना ही सही। भाग्य से पुरानी चीज तो बच गयी। नहीं तो उन्होंने नरसिंगगढ़ में सारे आदिवासियों के घर हाथी से ढहा दिये। देखो, जहाँ कहीं मुंडाओं पर जुलुम होता है, मुंडा लोग देश-घर छोड़कर चले जाते हैं।"

"अब मिशन में नहीं जाते।"

"मिशन! मुंडाओं के साथ-साथ मिशन का सुख खतम हो गया। मिशन अब मुंडा-उराँव से जमीन पर खेती-बारी नहीं कराता। गंज टाउन जाओ, वहाँ देखोगे कि मिशन के मुंडा भी हमारी तरह पेट के धंधे में अपने-अपने काम की खोज में फिर रहे हैं। पहले गौरमेन-मिशन ससुर-दामाद थे। अब आजाद गौरमेन मिशन को अच्छी नजरों से नहीं देखती है।"

"फिर मुंडा अपने धरम में लौट क्यों नहीं आते?"

"पेट की फिकर में सब भूले हुए हैं।"

"फिर भी धरम नाम की बात है।"

"हम धरम में हैं, वही रहेंगे। लेकिन पेट की भूख, बेगार की परेशानी, करज का कोड़ा—इनसे तो छुट्टी नहीं मिलती ?"

"तेरी तो फिर भी अपनी जमीन है।"

"वह हरमू, सोमचर, एतोया की है। मेरी और कोयेल की कहने-भर को बाप के जमाने की ऊँची जमीन-भर है।"

"हरमू की जमीन अच्छी है।"

"मैंने तो कहा है कि उस जमीन की फसल बेचकर और जमीन मोल ले लो। नहीं तो सबकी गृहस्थी बढ़ रही है, खाओगे क्या ?"

हरमू की उसी ज़मीन को लेकर इतने समय बाद अप्रत्याशित गड़बड़ हुई। यह 1961 में हुआ था। इसी बरस एक और उल्लेख्य घटना हुई। चोट्टि-मेला में चोट्टि के समधी डोनका मुंडा का आचरण। मेले के अन्त में तीर के मुक़ाबले में वह कह बैठा, "चोट्टि का तीर चलाना अब ठीक नहीं है। उसका तीर मंतर-पढ़ा होता है। इसी से तीर निशाने पर लगता है। यह ठीक नहीं है।"

चोट्टि बोला, "तू नहीं कर सकता। इसी से गुस्सा होकर कह रहा है। तू तो मुझसे छोटा है। मेरी उमर तीन बीसी और एक हुई। ठीक है। मैं तीर नहीं खेलता। अपना तीर दे। सबके तीर दे।"

सारे क़िस्से-कहानी चोट्टि के जीवन में थे। सबके तीरों से उसने निशाना लगाया। निशाने की आँख तीरों से छिद गयी। उसके बाद चोट्टि बोला, "दो बीसी पाँच बरस तक जीतता रहा, बहुत हो गया, अब नहीं खेलूँगा।"

दारोगा बोला, "तुम्हारे खेलने से मेले में जोश रहता है।"

पहान बोला, "तो मैं एक बात कहता हूँ। तू जब कहता है, तो जानता हूँ कि बात वापस नहीं लेगा।" फिर भी दारोगा, तीरथनाथ और हरबंस से पहान ने कहा, "तो यह निर्णायक क्यों न बने ? मैं पहान होने से निर्णायक बनता हूँ। लेकिन धनुक उसके बस में है। वह निर्णायक बने।"

"हमें क्या आपत्ति है ? लेकिन चोट्टि मेला में चोट्टि ग्राम के पहान ही निर्णायक होते हैं, वही नियम बन गया है।"

चोट्टि ग्राम के पहान ने अपने-आप जगह छोड़ दी। फिर चोट्टि के मुंडा लोगों को भी हुकुम दिया।

चोट्टि हँसा। बोला, "जो कहो।"

सना बोला, "यह डोनका ने क्या किया ?"

चोट्टि बोला, "ठीक किया। बूढ़ा हो गया, फिर भी तुम लोगों को

दिखाना पड़ा कि चोट्टि का मंतर हाथ में है, तीर में नहीं। हाँ, एक तीर है। उसे बहुत दिनों से कलेजे से लगाये रखा है। मेले में ले आता हूँ, ले जाता हूँ। वह तीर निशाना जिताने वाला तीर नहीं है। पास रखने वाला है। हाँ, बूढ़ा हो गया। तीर का खेल मेरी गद्दी नहीं कि पकड़े रहूँ। जवान लोग देखें। तुम लोगों को भी खेलने देना होगा, है न ? मुझे कोई दुख नहीं है।"

"कौन कर सकेगा, बताओ ?"

चोट्टि हँस कर बोला, "अभ्यास करने पर मेरा सोमचर। तेरे भाई का पूत जिता। यह लोग कर सकेंगे। लेकिन पहले उनके हाथ बहुत थिर थे। जब छोटे थे तो हरे पत्तों की ओट लेकर तमाम हरे हारियल मारते थे। अब जमीन उनकी जान बन गयी है। उनकी माँ कहती है, लड़का होकर वह जमीन को चाहता है। जमीन जान बन गयी।"

"जमीन मेरी जान है।" अगहन में फसल भरे खेत को देखकर कई दिन बाद हरमू ने कहा था, "यह मेरी जान है।"

तीरथनाथ के गुमाश्ते ने शान्त भाव से सब सुनकर कहा, "लाला की ज़मीन है। तुम लोगों ने बहुत दिनों तक जोती। बहुत फसल ली।"

"बहुत फसल ली। लाला को आधी देते नहीं हैं ?"

"छीः छीः छीः ! ऐसी बात तो उसने कही नहीं।"

"फसल काटते वक्त उनके लोग तैनात रहते हैं। उनके सामने तौल होती है। पुआल कहो, भूसा कहो, सब आधा देते हैं।"

"ज़रूर देता है।"

"फिर उस जमीन को क्यों चाहता है ?"

"उनकी ज़मीन, वह ले सकता है।"

"बाबा के साथ उसकी बात हो चुकी है।"

"यह देखो।"

"क्या देखूँ ? बात क्या हमेशा की नहीं है ?"

"तू जाकर उससे कह। मैं कौन हूँ ? हुकुम का चाकर। हुकुम हुआ, कह गया। अब जो करना हो, कर। फसल तो लेकर जायेगा। तब उसके साथ बात कर लेना। मैं जा रहा हूँ।"

हरमू ने बाप को दोषी ठहराया। "क्यों लाला के साथ लिखा-पढ़ी नहीं की, आबा ? अब जमीन चली जा रही है ?"

"यह क्या बात है ?"

"तुम जाकर बात कर लो।" हरमू की आवाज़ में बड़ी तेज़ी थी, "पता लगाओ, लाला जमीन क्यों चाहता है ? यह तुम समझते हो ?"

"तू क्या समझता है ?"

"एक टुकड़ा बेकार जमीन पड़ी हुई थी। हम तीन भाइयों की मेहनत से अब वह उपजाऊ जमीन हो गयी है। फसल के वक्त मानो वह उपज से हँसने लगती है। धान-गाछ जब जवान होते हैं, तो मुझसे बातें करते हैं। वे फसल देते हैं, ऐसे बड़े-बड़े भुट्टा के दाने, ऐसे मोटे-मोटे धान। उन्हें देख कर उसे जलन होती है।"

बहुत परेशान होकर चोट्टि भागा-भागा गया। साथ में हरमू और दूसरे मुंडा थे। लाला बोला, "मारोगे क्या ?"

"पहले यह बताओ महाराज, तुम जमीन वापस चाहते हो ?"

"हाँ, चोट्टि!"

"जमीन तो मेरी है।"

"अगर तेरी है तो तू आधी फसल क्यों देता है मुझे ? यह तो बता। मैं जिस ज़मीन पर मिल्कियत रखता हूँ, उसकी उपज किसी को देता हूँ ? जब फसल देते हो तो यह सबूत है कि तुम लोग आधा हिस्सा देते हो।"

"जमीन का लगान नहीं लेते हो ?"

"लेता हूँ।"

"किसके नाम पर जमा करते हो ?"

"अपने नाम। जिसकी मिल्कियत है, वह लगान देगा।"

"किन्तु महाराज ! मनीराम खत्री की बात लो। वह तुम्हारी जमीन जोतता है, आधी फसल देता है। अपनी जमीन का लगान तुम्हें देता है, तुम अपने ही नाम जमा करते हो। लेकिन उसकी जमीन तो नहीं लेते। आधी उपज, आधा हक तो उसकी बारी मान लेते हो ?"

"वह हिन्दू है, अपने धर्म का आदमी है।"

"तो लिखा-पढ़ी क्यों नहीं करने दी ? क्यों झूठ बात कही ? कहा था, मुँह की बात ही सब-कुछ है।"

"जब कहा था...।"

हरमू बोला, "तब नहीं सोचा था कि वह ऊसर जमीन उपजाऊ होगी। वही सोचा था, महाराज !"

"तेरे साथ मेरी बात नहीं हो रही है, हरमू।"

चोट्टि बोला, "मेरे साथ करो।"

"और क्या कहूँ ? कहा तो।"

"सिर्फ हिन्दू क्यों ? आदिवासियों को नहीं देते ? भिकन उराँव आदि को देते हो, बूढ़ा मुंडा को दी थी। किसके नाम जमीन रिकाड है ? और महाराज, आधी उपज इतने दिनों तक लेते रहे। उससे तो यह बात भी

साथ-साथ प्रमाणित हो जाती है कि यह बन्दोबस्त तुमने मान लिया है। नहीं तो जमीन लेते, या कोई बन्दोबस्त करते। मेहनत करने वाले का भी हक है।"

"चोट्टि, बात बढ़ाने से क्या फ़ायदा ? ज़मीन लगान पर नहीं उठी है। पसन्द न होने पर भी अधिकार किये ले रहा हूँ।"

"तुमने तब बन्दोबस्ती लिखकर क्यों नहीं दी थी ?"

"चोट्टि, सच बताऊँ, पहले नहीं पता था कि ज़मीन उपजाऊ है।"

"जमीन उपजाऊ नहीं थी। तीनों भाईयों ने काँवर लेकर जंगल के सड़े पत्ते ढोये, बड़ी मेहनत से जमीन का गुस्सा ठंडा कर जमीन को हँसाया। तब जमीन उपजाऊ बनी। फिर यह बात कहते हो, यह तुम्हारे मन में था, नहीं ? बताओ तो।"

"तू समझा नहीं, चोट्टि !"

चोट्टि उम्मीद टूटने पर, अपमान से, दुख से, और कलेजा टूटने के आवेग से बोला, "तुमसे महाराज, कभी न सुना कि समझ गया। तब महाराज, समझा दो। एक बार देखूँ तो कि मुंडा दिकू की बात समझता है। बताओ, मुझे बताओ। लिखा-पढ़ी रहती नहीं, लगान देना चलता है, फिर भी आदिवासी लोगों को कहो, छगन आदि को कहो, आधा हक उपजाऊ जमीन पर मिलता है। कितनी ही बार वह लिखा रहता है, कितनी ही बार नहीं भी रहता। बहुत-से कामों में मुँह की बात पर हर काम होता है। तुम कहते हो इतना करज लिया था, वह जबानी बात है। समझा दो कि जो मुंडा पढ़ना नहीं जानता वह कैसे समझे कि यह जुबानी बात सच्ची नहीं रहेगी ?"

तीरथनाथ समझ रहा था कि वह ठीक काम नहीं कर रहा। यह बात सच है कि वह या उसकी तरह के मालिक कभी अच्छी ज़मीन इन लोगों को नहीं देते थे। पथरीली ज़मीन, सूखी ज़मीन, बहुत दूर पड़ी अलग-थलग ज़मीन, जंगलों के किनारे की ज़मीन—यही बटाई पर देते। आधी फ़सल के आधे पर देते थे, क्योंकि मुंडा-उराँव लोग उस तरह की ज़मीन को ही सोना उपजाने वाली ज़मीन समझकर कलेजे के खून से प्यार करते। उस ज़मीन में उगता आया था चोरकाँटा और चीनाघास। उसी ज़मीन में वे फ़सल पैदा करते। निचले स्तर की फ़सल। मालिक को वह भी फ़ायदा मिलता। वे भी समझते कि इसके मतलब यही नहीं। इस आधार पर पक्के ढँग पर, हिस्से की ज़मीन पर आधी फ़सल के आधे हक़ का कोई पुराना हिसाब बन जायेगा। जो ज़मीन लेता, उसके मर जाने पर यह अधिकार चला नहीं जाता था। सब मालिक की मर्जी रहती। लेकिन पुरानी बात होने के

कारण मालिक भी उपजाऊ ज़मीन के खेत में अधिकार मान लेता।

उपजाऊ ज़मीन इस तरह कभी उपजाऊ न होती। ऐसा कोई उदाहरण नहीं था। नहीं होने से ही तीरथनाथ उदाहरण क़ायम करते चले थे। यह मालिकों के हक़ में फ़ायदे की चीज़ थी। इसलिए इस नज़ीर से ही रिवाज बन जायेगा। मरियल अपुष्ट मक्का और धान देखकर तीरथनाथ इस तरह की ज़मीन न लेना चाहता। तीरथनाथ ने यह भी समझा कि प्रचलित परिपाटी की उपेक्षा कर संभवतः विश्स्त और भले चोट्टि के प्रति वह अन्याय कर रहा है। लेकिन चोट्टि के प्रति अन्याय हो रहा है या नहीं, यह देखे तो तीरथनाथ का काम क्या चल सकता है?

"सुनो, चोट्टि!"

"कहो, कहो।"

"झगड़ा करने से क्या फ़ायदा? यह ज़मीन मैं ले रहा हूँ। तुझे मैं कुरमी की ओर ज़मीन दूँगा। उपजाऊ ज़मीन है।"

"हाँ महाराज, उस जमीन को दोगे। और जब उसे कलेजे के खून से सींचकर उपजाऊ बनाऊँगा, तब उसे ले लोगे। उसके बाद चोट्टि को कहाँ जमीन दोगे, महाराज? धरती पर जितनी उपजाऊ जमीन हैं, क्या तुम सब खरीदे ले रहे हो?"

तीरथनाथ समझ रहा था कि वह चोट्टि मुंडा से बातें कर रहा है। चोट्टि को उस अंचल के मुंडा देवता समझते थे। चोट्टि से, चोट्टि की तरह के आदिवासियों से उसे बहुत मिलता था। चोट्टि का तीर मंत्र-पढ़ा है। उस तीर की बड़ी सामर्थ्य है। फिर भी तीरथनाथ अपने इरादे को वापस नहीं कर पा रहा था। वह मालिक-महाजन था। जो बात कह दी वह न करने के अपराध से, गलत उदाहरण क़ायम करने के अपराध से, वह अभिशप्त होगा। अब भारत स्वतंत्र है। राजा-ज़मींदार का फ़ालतू झंझट छँट गया था। वह मझोला ज़मींदार नहीं था। लेकिन उसकी तरह के ज़मींदार और उससे बड़े और उससे छोटे ज़मींदार-मालिक-महाजन लोग इस गौरमेन के बहुत बड़े बल और भरोसा थे। पिछली बार चुनाव में तो उसने प्रति व्यक्ति दो रुपये के हिसाब से पैसे दिये थे। तभी उसके कहने से यह लोग वोट दे आये। बहुत अफ़सोस है कि तीरथनाथ जंगली इलाके का मालिक-महाजन है जो शिक्षित और संगठित भी नहीं था। इस बार अगले बरस चुनाव है। धनी होने के कारण तीरथनाथ का ट्रक चुनाव में व्यस्त होता है। चोट्टि और छगन आदि को नक़द रुपये मिलते। उसके बाद तीरथनाथ के अपने आदमी ट्रक पर चढ़कर वोट दे आते। किन्तु चोट्टि के साथ उसका यह बर्ताव क्या ठीक था? चोट्टि के कारण ही कितनी कम उम्र

में तीरथनाथ को अँग्रेज गौरमेन से 'रायसाहब' का खिताब मिला था। वह और चोट्टि क़रीब-क़रीब एक ही उम्र के थे। चोट्टि के साथ उसका ऐसा करना जरा भी उचित न था। लेकिन एक बार कुछ कहकर पलटना ठीक भी न था। डरने को क्या है? गौरमेन के दल का ऑफ़िस तो तीन स्टेशनों के बाद ही है। वहाँ जाने से ही मदद मिलेगी। तीरथनाथ बोला, "वही बात।"

"बस महाराज! हो गया?" चोट्टि की आवाज़ में सूखा हाहाकार था। क्या हो गया? कोई बड़ी भारी घटना हो गयी? तीरथनाथ को बेचैनी क्यों होने लगी? उसने क्या किया है? कमरे में इतने आदमी क्यों हैं? चोट्टि आदि मुंडा थे, मगर ये लोग कब आये, छगन आदि? सब रहस्य-भरी नज़रों से चुपचाप उसकी ओर क्यों देख रहे हैं? तीरथनाथ ने क्या किया है? कभी किसी मुंडा से कहा था कि आधी उपज और आधे अधिकार पर उपजाऊ ज़मीन तुझे दी, लिखा-पढ़ी की जरूरत नहीं। आज कह रहा है वह ज़मीन ले ली। इसमें ग़लत क्या है? तीरथनाथ का अपना मन ही कह रहा है कि ग़लती हो गयी। समझा कि उसे लेकर गंज में लोग जो जंगली महाजन कहते हैं—वह सच है। जीवन-भर के परिचय के मामले में ठोकर मारने के लिए बहुत सख्त कलेजे की ज़रूरत है। तीरथनाथ उस तरह का सख्त और हिम्मत वाला नहीं है। डरपोक जब ग़लत काम करता है, तो बर्बर बन जाता है। उस तरह की बर्बरता में तीरथनाथ बोला, "वही बात।"

"वही बात!"

"हाँ। और सुनो—इस बार फ़सल नहीं देनी होगी।"

"इस बार क्या हमें पूरी फसल लेने की छूट है? ना महाराज, मुंडा तुम्हारा नियम नहीं समझते। फसल दूँगा।"

तीरथनाथ चीख़ पड़ा, "मेरी सारी बातों में तू अन्याय देखता है। मैं बुरा हूँ। पता है, बुरा आदमी किसे कहते हैं? पता लगाने पर देखेगा कि और कोई भी मालिक-महाजन मुंडा-उराँव लोगों को काँछ लगाकर धोती नहीं पहनने देते, काँसे की थाली में खाने नहीं देते, जूता नहीं पहनने देते।"

अभी तक हरमू टकटकी लगाये तीरथनाथ को देख रहा था। अब वह बोला, "तुम न कहने पर भी वही हो।"

"किस तरह? अरे हरमू, किस तरह?"

"धोती खरीदने को पैसा नहीं। मोटी धोती में काँछा लगाकर लँगोटी बनाकर पहनते हैं, पैसे नहीं हैं कि वे काँसे की थाली में खायें, पाँव में जूते

पहनकर घूमें। इन सबसे तुम नहीं समझते, हम कैसे जीते हैं!"
"जाओ, तुम लोग जाओ।"
घर लौटकर चोट्टि बोला, "कल उसकी उपज दे देंगे।"
"उसके बाद ?"
"हरमू ! अपने पास सचाई रहने से अकसर बहुत-से काम करने होते हैं। उन्हें हमेशा बताने की जरूरत नहीं।"
"क्या कह रहे हो, आबा ?"
"बता रहा हूँ।"
"क्या, बताओ ?"
"मेरे साथ बात हुई थी, लेकिन जमीन तेरी है।"
"जमीन तो मेरी जान है।"
"लाला को जो कहना था वह उसने कह दिया है। हम लोगों को जो करना है वह करेंगे। उनके साथ हमारा झगड़ा होगा। यह पता है कि वह पहले से थाने में बताये रहता है, उसका थोड़ा जोर है। कल जाऊँगा।"
"क्या कहोगे ?"
"तुझसे बताकर क्या होगा ? ओह, कलेजा जला जा रहा है। कितने दुख से मुंडा घर छोड़ता है बाप, कितने दुख से दूसरे देश जाता है !"
हरमू बोला, "उठो, हाथ-मुँह धोलो, खाओ कुछ।"
"आज नहीं, कल खाऊँगा।"
"खा लो।"
"लाला एक काम अच्छा कर रहा है।"
"क्या ? हँस क्यों रहे हो, आबा ! हँसते क्यों हो ?"
"लाला बहुत अच्छा कर रहा है। समझता नहीं ? सारे मुंडाओं की-सी हमारी भी हालत है। वह जमीन थी, इसलिए कुछ खा रहे हैं। यह भूले जा रहे थे कि मुंडा होकर हमें किसी सुख का अधिकार नहीं है। जमीन जा रही है, उससे फिर सबके साथ मिल जायेंगे। यह अच्छा हो रहा है।"
"जमीन जा रही है, क्यों कह रहे हो ?"
"हरमू ! तू उन दिनों छोटा था। तू भी बाप बनेगा। किन्तु मेरी आँखें तुझे कहाँ मिलेंगी ?"
उँगली उठा अंधकार दिखाकर चोट्टि बोला, "जमीन ऐसे ही नहीं दे दूँगा। ऐसा अपमान ! यों ही नहीं दूँगा। जान चली जाये तो जाये। किन्तु हरमू ! उसके बाद थाना-पुलुस-कानून-अदालत है। सब चक्कर लगाकर मैं मुंडा रहूँगा, फिर मरूँगा। मुंडाओं को क्या सिर्फ मालिक-

महाजन मारते हैं ? कानून मारता है, अदालत मारती है। सभी मारते हैं। जमीन चली गयी हरमू, मैं आँखों से देखता रहा। आदिवासी को देखने से छूत लगती है, यह भी कहते हैं, घर में बैठकर चटाई बुन, टोकरी बुन, मदद देंगे। जमीन-जायदाद की बात करने से कुछ न कर सकेंगे। कानून-अदालत करो। कानून-अदालत ! किसी दिन विश्वास नहीं होता। वकील कहाँ से मिलेगा ? वकील रुपया लेगा। वह जो कुछ कहेगा, मुंडा समझेंगे नहीं। मुंडा क्या कहता है, वे नहीं समझेंगे। मुंडा के याँग कहने से वकील को व्याँग—माने मेंढक—समझ में आता है और हाकिम की समझ में भी उल्टी बात ही आती है। हाकिम उल्टा फैसला करता है। लेकिन...।"
"लेकिन क्या, आबा ?"
"लेकिन जमीन के लिए हंगामा होने पर—जैसे भैंसागाड़ी का भागता पहिया लुढ़ककर गड्ढे में जा गिरता है—उसी तरह हंगामा होने पर हम अदालत के गड्ढे में गिरेंगे। तब क्या जमीन रह जायेगी ? कचहरी किसी दिन मुंडा को नहीं देख सकती, देखेगी भी नहीं।"
"देखेगी भी नहीं !"
"नहीं हरमू ! सब गौरमेन का है। गौरमेन मुंडाओं का हक—उनका अधिकार—देखती तो क्या सारे मुंडा इस तरह कंगाल हो जाते ? दिकू लोगों के लिए देश छोड़ देते ? देखेगा नहीं हरमू ! हरमू ! मेरे बाप ! वह बैठी है ! जा, कुछ खाकर सो जा। मैं जरा बैठ लूँ। अँधेरा बहुत हो रहा है रे। अँधेरा माँ जैसा है, इससे कोई लाज नहीं लगती।"
"आबा ! हर समय तो तुम छगन से बात करते हो ?"
"इस बात में छगन से क्या कहूँ ? यह तो एक मुंडा से एक लाला का हिसाब है। इसमें वे क्यों आयें ?"
"नहीं आयेंगे ?"
"ना ! उन लोगों के साथ, दूसरे आदिवासियों के साथ तो लाला ने कोई हंगामा नहीं खड़ा किया है। पुलुस-थाना-अदालत में उनको बुलाना भी ठीक नहीं है, हरमू !"
"उन पर भी तो चोट हो सकती है।"
"खूब हो सकती है। लेकिन हरमू, मालिक के साथ हंगामा उठेगा। उसे हम पहले से जानते थे। हम जानते थे कि दूसरा रास्ता नहीं है। इस तरह चलने से कानून-अदालत होगी, वहाँ भी ठोकर खायेंगे, यह जानकर भी बढ़ रहे हैं। जब सब लहू की गर्मी समझेंगे, जब आगे बढ़ेंगे, तब एक हो सकते हैं। कह सकते हैं कि तुम लोग चलो। वैसा होने पर कौन

आगे आयेगा ?"

"वे लोग डरपोक हैं !"

"नहीं बाप ! भूखे बीमार लोग हैं, ठोकर खाये लोगों को कभी दोस मत दो ! पीठ पर कोई नहीं है, अकल देने को कोई नहीं है, किसी के पास रुपये नहीं हैं, किसे-किसे दोस दें ! जाओ, जाओ।"

"तुम ?"

"कहा न, अँधेरे में बैठा हूँ।"

हरमू चला गया। चोट्टि की पत्नी आकर चोट्टि के पास बैठी। बोली, "खिड़की खोल दूँ, लेटे-लेटे अँधेरा देखो। अभी खाओ, सोओ। कल थाने जाना।"

"तू सब सुनती थी ?"

"सुन रही थी। चलो।"

चोट्टि उठा, घर में गया। हरमू की माँ ने उसके आगे थाली बढ़ा दी। दाल और फेना भात। आजकल जंगल में शिकार नहीं मिलते। वही दाल और फेना भात, इमली की पत्तियों का झोल, बीच-बीच में बाजार से ख़रीदा सूअर का मांस। यही सब खाते थे। मिशन के लोग सूखे-अकाल में ख़ैरात बाँटने आते हैं, इसलिए इतने कम पौष्टिक आहार में ज़िन्दा रहने का अभ्यास है। इसी कारण आदिवासी कम मरते हैं।

खाने के बाद चोट्टि बोला, "घूम आऊँ।"

"कहाँ जाओगे ?"

"बलोया तो दे।"

"किसे काटने जा रहे हो ?"

"किसी को नहीं, ऐसे ही ले रहा हूँ। आदमी का डर तो नहीं है, और वे सुख के दिन अब नहीं हैं कि बाघ आकर झपटे।"

चोट्टि हाथ में बलोया लेकर निकला। टीले को पार कर मैदान में पहुँचा। अपनी जमीन के कोने-कोने पर गया। अब पके धानों की गंध से हिरन नहीं आते थे न। जिसकी तबीयत होती, जैसी तबीयत होती, शिकार कर-करके सब समाप्त कर डाले थे। अगर कुछ जानवर थे, तो वे आदमी के डर से घने जंगल में चले गये थे। ज़मीन के आगे पहुँच कर चोट्टि थोड़ी देर तक खड़ा रहा। नागफनी से घिरा खेत था। धान देखकर चिड़ियाँ छायी जा रही थीं। कोयेल का बेटा एतोया और सोमचर दिन-भर चिड़ियाँ उड़ाते रहते थे।

धान के पौधे झुके पड़ रहे थे। ज़मीन का छोटा-सा टुकड़ा था। कल ही धान कटेंगे। लाला की कचहरी ले जाये जायेंगे। माप कर आधा

देना होगा।

"कौन ?" चोट्टि ने पैरों की आवाज़ सुनी।

"दादा, मैं हूँ।"

"कोयेल ? तू आ गया ?"

"राइ से लौटकर सब सुना।"

"मैं यहाँ हूँ, यह कैसे पता चला ?"

"अपने मन से समझ गया था।"

"कल घर पर रहना। मैं थाने जाऊँगा।"

"जाकर क्या होगा, दादा ?"

"पता नहीं। पर देखता हूँ कि कुछ होने पर दिकू लोग पहले जाकर थाने पर बता आते हैं। बाद में कुछ होने पर वह काम आता है।"

"तुम्हारी बात सुनेंगे ?"

"पता नहीं। यों तो दारोगा अच्छी बातें करता है। उस दिन भी कह गया था कि सना को कुछ हो जाये तो तुम थाने पर बताना। ख़ुद दंगा मत करना। सना बोला, हमारे कहने से तुम सुनोगे ? दारोगा बोला, जरूर। गौरमेन की नजरों में सब प्रजा समान है।"

"चल, घर चल।"

"चल।"

दूसरे दिन चोट्टि थाने गया। पहान, कोयेल, सना—सबको धान का हिस्सा देने के समय हरमू के साथ जाने को कहा। हरमू से कह गया, "कोई गड़बड़ मत करना।"

"तुम कुछ चिन्ता मत करो, आबा !"

चोट्टि के जीवन में सब बातें किस्सा बन जातीं। दारोगा के साथ एक आदमी और बातें कर रहे थे। चोट्टि को देख उससे बोला—"यह देखिये ! जिसकी बात कह रहा था, वह आ गया। यह मेरे ससुर की जान-पहचान के आदमी हैं। आदिवासियों की भलाई करने वाले अफ़सर है। सदर में रहते हैं। हमारे यहाँ घूमने आये हैं और आदिवासियों का हाल भी ले रहे हैं। मैंने ही कहा, यहाँ एक आदिवासी है, हम लोगों का गर्व, तीर का जादूगर, आस-पास के मुंडा समाज की सारी बातें जानता है, वह है चोट्टि मुंडा। यह बात बताकर अभी चाय पी ही थी कि तुम आ गये।"

आदिवासी अफ़सर बोले, "तुम्हारी ही बात हो रही थी।"

"महाराज ! मुझे आपकी जरूरत थी, आपने भी मुझे याद किया, इसी से मुलाकात हो गयी।"

"क्या बात है, बताओ ?"

आदिवासी अफ़सर ने देखा कि आदमी की उम्र का अंदाज नहीं हो रहा है। दुबला-पतला शरीर, दमकती हुई खाल। दोनों आँखें बहुत ही बूढ़ी और बोझिल थीं। उसके बात करने का ढँग, थोड़ा अकड़ कर बैठना, इन सब में अभिजात्य था। देखते ही समझ में आता था कि वह सम्मान का अभ्यस्त था। कुतूहल उत्पन्न होता था।

चोट्टि ने धीरे-धीरे, रुक-रुक कर सारी बातें बतायीं।

दारोगा बोला, "लेकिन चोट्टि, ज़मीन तो लाला की है।"

"महाराज, उपजाऊ जमीन पर तो आदिवासियों का आधी फसल और आधे हक का रिवाज है।"

"है।" आदिवासी अफ़सर भी बोले। फिर बोले, "समान्यतः इस रिवाज़ को जमीन का मालिक तोड़ता नहीं, क्योंकि वैसी ही ज़मीन वे लोग देते हैं जिसमें बीघे पर दो मन से ज़्यादा धान न हों। वह भी मोटा धान।"

"मैंने तो कभी नहीं सुना।"

"आपने नहीं सुना लालाजी, क्योंकि आदिवासी और दूसरी जात वाले मिले-जुले गाँव में रहते हैं।"

"यह रीति क्या सिर्फ़ आदिवासियों के लिए है ?"

"न-न, कभी-कभी दूसरी नीची जातियों के लिए भी होती है। पर साधारणतः वे लोग बिलकुल बंजर जमीन को लेने की हिम्मत नहीं करते।"

"चोट्टि, तुम क्या कहना चाहते हो ?"

"मैं तो समझता हूँ महाराज, कि यह एक हक का मामला है। यह यह बात सच है कि ऐसी जमीन अधिक आदिवासियों की नहीं है। शायद आदिवासी और दूसरी जात वाले मिलाकर दसेक लोग आपके थाने में होंगे। लेकिन इसके बाद किसका क्या भरोसा रहेगा, महाराज ? कहा कि लिख दो। उस पर लाला बोला, जबानी बात होगी।"

"ज़मीन क्या बहुत उपजाऊ है ?"

"महाराज ! जमीन थी पथरीली। मिट्टी खोदने पर पत्थर निकलते थे। बंजर जमीन थी। कभी किसी ने हल नहीं चलाया था। उन्हीं पत्थरों को दो भाइयों और तीन लड़कों ने मिलकर हटाया। धान से भूसा अलग करने का काँड़ा नहीं था, महाराज। पहान का काँड़ा माँगकर काम करते थे। किसी बरस डेढ़ मन धान होता। आधा मन पक्का, इससे अधिक नहीं मिला। जमीन खिलती नहीं थी। तब लड़के बहँगी पर लादकर

जंगल से सड़ी पत्तियाँ लाये और कुंडी से जल। लगातार हमने कड़ी मेहनत की, तब कहीं ज़मीन हँसी। तीन बरस से पाँच मन धान होते हैं। लाला जो लेगा महाराज, तो वह भी क्या इतनी मेहनत करेगा ? इस बार जमीन बंजर हो जायेगी।"

दारोगा बोला, "मैं कल ही जाऊँगा। कुछ काम भी है। मैं बात करूँगा। समझाकर कहूँगा। कुछ समझौता कर लेना होगा, चोट्टि। तुम कह रहे हो, इसलिए इतना कर रहा हूँ। मैं भूला नहीं हूँ कि सिपाहियों के साथ कुँजड़े लोगों की मारपीट में तुम न बचाते तो सिपाहियों के सिर फूट जाते।"

अफ़सर बोले, "कुँजड़े कौन हैं ?"

"फलों के खुदरा बेचने वाले। अमरूद, शरीफा ख़रीदने आते हैं और सब फल पानी के दामों खरीदते हैं। हाट में किसी को घर का फल बेचते देखकर मारेंगे। आते हैं राँची और गोमो से। सब दूसरे ज़िलों के लोग हैं। औरतों पर हाथ छोड़ते हैं। हम तो बहुत बदनाम हैं, क्योंकि ग़रीबों का भला चाहते हैं। इसलिए हमें इस रद्दी थाने पर भेज दिया।"

"आप जायेंगे, महाराज ?"

"हाँ चोट्टि, और देखो, सबके हक़ों की फ़िकर तुमको नहीं करनी है। वैसी बातें करने से लगता है कि बलोया करने वाले हो। तीरथनाथ और तुम्हारे सम्बन्ध पुराने हैं।"

"महाराज, जान लगाकर उसके लिए धान-गेहूँ-मक्का उपजाते हैं। हम न होते तो उसकी कचहरी में भी डाका पड़ता। आप जानते हैं, कितने लोगों की कचहरी में डाके पड़े ?"

"मैं जाऊँगा।"

"महाराज, आपका भला हो। मारपीट कौन चाहता है, महाराज ? मैंने कभी नहीं की।"

चोट्टि चला गया। आदिवासी-अफ़सर बोले, "सरकार तो आदिवासियों की भलाई ही चाहती है, नहीं तो दफ़्तर नहीं खोलती। लेकिन मालिक-महाजन में अधिकतर अशिक्षित हैं। पुरानी आदत नहीं छोड़ेंगे। महाजन के पास जिसके हाथ-पैर बँधे हैं, उनकी भलाई करने के लिए हमें उनकी क्षमता बढ़ानी होगी। कुटीर उद्योग कब करेंगे ? बेगार देंगे, महाजन के खेत में मेहनत-मजूरी करेंगे। खेती किसानी करने वाली जाति को तुरत हाथ का काम सिखाना क्या संभव है ?"

"अरे मुझे क्या मालूम नहीं है ? लेकिन...।"

"क्या ?"

"कल ही जाना है। तीरथनाथ जैसे महाजन हमारे अभिशाप हैं। यह देखिये न ! उसकी कितनी ज़मीन है ! ज़मीन की सीलिंग की यह लोग कोई परवाह नहीं करते। तीरथनाथ के घर पर बहुत-से देवता हैं, सबके नाम पर ज़मीनों का देवार्पण है। बेकार ज़मीन उपजाऊ हो गयी—यह देखकर वह जो बिगड़ उठा है, इसका नतीजा क्या होगा ? आदिवासी लोग बिगड़ जायेंगे। बिगड़ने पर वे यह नहीं सोचेंगे कि इस तरह की ज़मीन चली जाने से कितने लोगों की जानें जायेंगी। 'हक' की बात कही न चोट्टि ने ? तीरथनाथ को क्या पता नहीं है कि चोट्टि मुंडा लोगों में ही क्या, छोटे हिन्दू लोगों में भी सम्मान पाता है ? गड़बड़ होने पर पुलिस जायेगी ही। तब वह अदालती अपराध—कॉग्निज़ेबल आफ़ेंस—होगा। वह काम करने पर सरकार दबाव डालेगी कि आदिवासियों को तंग क्यों करते हो। आदिवासी वोटों का महत्व है, 1962 से उनके वोट हैं। कार्रवाई न करने से हमारा डिपाट कहेगा कि सब जगह हम बलोया उठाने वाले लोगों की मदद देते हैं। वैसा होने पर हमारा ही सस्पेंशन होगा।"

"क्या करेंगे ?"

"तीरथनाथ को समझायेंगे। कहेंगे, चोट्टि की ज़मीन मत लो। मैं सरकार से कह दूँगा, आप बड़े अच्छे आदमी हैं। बहुत अच्छे काम करते हैं। अँगरेजों के राज्य में 'रायसाहब' बने हैं। इस राज में देखूँगा 'पद्मश्री' मिलती है या नहीं।"

"कहने से मान जायेगा ?"

"मानना पड़ेगा। चोट्टि न होकर अगर कोई और होता तो 'दंगा कर रहा है' कहकर पकड़ लेता। उसकी बातों पर मुंडा समाज उठता-बैठता है। वैसा करने पर मेरी डबल मुसीबत है। 'आदिवासी समाचार' अखबार का आनन्द महतो बहुत खचड़ा आदमी है, और उसका काफ़ी खूँटों का ज़ोर है। एक बार ख़बर होने से नमक के बोरे में गुड़ घुस जायेगा।"

"तीरथनाथ मानेगा ?"

"मानना पड़ेगा। उसकी एक टुकड़ा ज़मीन के लिए क्या मैं मुसीबत में पड़ूँगा ? क्या कहूँगा ! मेरी नौकरी पर असर पड़ेगा। चोट्टि से भी कहता हूँ कि ज़मीन का मालिक ज़मीन लेगा, सो क्यों नहीं देगा ?"

"यह बात कैसे मानूँ, लालाजी ? आदिवासी कितने ग़रीब होते हैं, आपको पता नहीं। यह उनका हक़ है।"

"देखूँ, क्या कर सकता हूँ।"

दारोगा की तबीयत थी कि दूसरे दिन जाये, लेकिन कुल्ला करने के

मौक़े पर चहबच्चा फट जाने से ख़फ़ा बिच्छू की बात उसे नहीं मालूम थी। ठंडक पड़ने पर बिच्छू निकलता नहीं, बुझा हुआ भी रहता है। इसलिए नियम के अनुसार वह दो दिन बिच्छू के ज़हर में तड़फड़ाया नहीं। एक दिन बहुत तकलीफ़ हुई।

भड़कने के लिए एक दिन ही काफ़ी था। दारोगा जिस दिन से बिच्छू के काटने पर पड़ा है, चोट्टि ग्राम में चोट्टि मुंडा तब से एक दूसरी ही जलन में जल रहा था। दारोगा ने उसकी बात नहीं मानी। आया नहीं। हरमू दिन-भर घर में लेटा रहा। पिता भी उसे दुश्मन का आदमी लगा। ज़मीन उसकी जान थी। तीरथनाथ इसी दिन की प्रतीक्षा में था।

दूसरे दिन चोट्टि फिर थाने गया। उस समय भोर था। वह बैठा रहा। नौ बजे दारोगा आया। रूखा-सा बोला, "चल, मैं चल रहा हूँ।" आदिवासी-अफ़सर से बोला, "आप भी चलिये।"

"कैसे जाऊँगा ?"

"दस बजे ट्रेन जाती है।"

"कितनी दूर है ?"

"चार मील।"

जाने के लिए वे तैयार होने लगे। सना और पहान आ पहुँचे। हाँफते-हाँफते उन्होंने जो कुछ कहा उसका मतलब था कि हरमू सवेरे ही ज़मीन पर गया था। ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने गये हुए तीरथनाथ के लोगों और उधर हरमू, सोमचर, एतोया, जिता और बुधना मुंडा में दंगा हो गया। दंगा हो रहा है और तीरथनाथ की कचहरी का दरबान मथुरासिंह बंदूक लेने गया है। महाराज के जाने की ख़ास ज़रूरत थी।

थाने के सिपाही और कांस्टेबलों को लेकर दारोगा चला। आदिवासी-अफ़सर साथ चले। चोट्टि आदि भी ट्रेन पर बैठे।

ट्रेन पहुँची। मौक़े पर पहुँचकर दारोगा ने देखा कि बहुत मारपीट चल रही है। दरवान के हाथ में बंदूक थी। सिपाही और कांस्टेबल लोग शान्ति-रक्षा के लिए लाठी लेकर पिल पड़े। चोट्टि चिल्लाया, "हरमू, निकल आ।" लेकिन बंदूक की आवाज़ हुई। कांस्टेबल के हाथ में गोली लगी। बड़ी चीख़-पुकार थी। उसके बाद सब शांत हो गया। देखा गया कि हरमू ने तीर चलाकर तीरथनाथ के तीन आदमियों को ज़खमी कर दिया। दारोगा बिगड़ उठा। पुलिस को ज़ख्मी किया है ! तीरथनाथ भी परिस्थिति की गंभीरता समझ-कर भागा-भागा आया। कांस्टेबल के हाथ में तीर नहीं लगा था। लगी थी गोली। बहुत अफ़सोस की बात है। आदिवासी-अफ़सर के गवाह रहने से घटना को दबाना संभव न हुआ। तीरथनाथ, दारोगा और

घायल कांस्टेबल दोनों के साथ दो-तीन का खेल खेलने को तैयार था। लेकिन जेब का रुपया जेब में ही रह गया। हरमू, सोमचर, मथुरासिंह और तीरथनाथ के आदमी—सभी का चालान हुआ। सरकारी अफ़सर की मौजूदगी ही इस उल्टी बात का कारण बनी। आदिवासी-अफ़सर साक्षी था, कौतूहली स्टेशन-मास्टर भी गवाह था। दूसरों के हाथों में ट्रेन पास करने की ज़िम्मेदारी देकर वह तमाशा देखने आया था। कुँजड़ों के मामले में वह दारोगा से चिढ़ा हुआ था। कुँजड़ों से रोज़ाना घूस लेना उसका उचित हक़ था। दारोगा ने कुँजड़ों को ख़फ़ा कर दिया था। वह बड़े चिंतित स्वर में बोला, "सबका चालान कर दीजिये।" तीरथनाथ के रुपयों का दारोगा की जेब में जाने का रास्ता बंद कर उसे बहुत आनन्द आया।

केस सदर अदालत में चला। सबूत के अभाव में सोमचर आदि छूट गये। हरमू को मारपीट के अपराध में दो बरस की क़ैद बामशक्क़त मिली। मथुरासिंह को पाँच बरस की। बिना लाइसेंस की बन्दूक ज़ब्त हो गयी और तीरथनाथ की वह बात फिर कभी न उठी। चोट्टि लाचार होकर सदर आता-आता था। आदिवासी-अफ़सर उसके साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव करते थे। घर पर टिकने देते, वकील ठीक करना चाहते थे। चोट्टि से बोले, "कहो तो वकील देखूँ। लेकिन वकील की भूख क्या तुम मिटा सकोगे?"

"कितना ख़र्चा होगा?"

"कम-से-कम हज़ार रुपये।"

"हजार रुपये। मेरे पास तो सौ रुपये भी नहीं हैं।"

"तो सरकार वकील देगी। कोशिश करूँगा कि अच्छा वकील मिल जाये।" तक़दीर से अच्छा वकील मिल गया। छोकरा वकील था। अच्छी तरह से केस करने पर उसे खड़े होने में सुविधा होगी। लेकिन आदिवासी को कठघरे में खड़ा करने पर वह सिखायी हुई बातें नहीं कहता, सच बात कहेगा। यह सब मान कर ही उसने हरमू आदि का केस किया। तीरथ-नाथ ने मथुरा को बचाने के लिए वैसी कोशिश न की। सारा मामला उसके सामने अब दुःस्वप्न होकर खड़ा था। चोट्टि जब समझ गया कि लड़के को जेल होगी तो वह आदिवासी-अफ़सर के घर उसके बाद न रहा। हरमू के मुकदमे में फ़ैसला होने तक अदालत के सामने पेड़ के नीचे टिक गया। सदर शहर की उद्धत उन्नति का स्वरूप उसकी नज़र में नहीं पड़ा, हरमू का चेहरा दिमाग़ में छाया रहता। फ़ैसला मालूम होने पर हरमू ने उसकी ओर देखा। चोट्टि बोला, "दो बरस बीत जायेंगे, बाप।"

हरमू ने सिर हिलाया।

वकील बोले, "सुनने में दो बरस बहुत लगते हैं, पर कट जायेंगे।"

चोट्टि ने सिर हिलाया। उसके बाद जाकर बस पर बैठ गया। बस तीसरे पहर चलती थी, चोट्टि रात को आठ बजे पहुँचा। सफ़र में वह सारा समय बस में चुप रहा। बस हरबंस चड्ढा की थी। सप्ताह-भर इसी रूट पर बस चलती है। कंडक्टर चोट्टि को अच्छी तरह पहचानता था और चोट्टि को ताज्जुब में डालकर वह बेहुत पहुँचने पर चोट्टि के लिए खाना ख़रीद लाया। बीड़ी देकर बोला, "तीरथनाथ के भाग्य में बहुत मुसीबतें हैं।" चोट्टि पर उतर कर उसने देखा कि बहुत-से लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। पहान उत्सुक चेहरे से देख रहा था।

"दो बरस की जेल।"

किसी के पूछे बिना ही चोट्टि बोला और सब मानों गूँगे बन गये हों।

छगन बोला, "तब तेरे साथ गया और आया था। अब जाता तो ठीक था।"

"न, कोई कष्ट नहीं हुआ।"

"अकेले आये?"

"वह आदिवासी-अफसर भला आदमी है। गवाही भी उसने अच्छी दी। उसी से दारोगा कोई उल्टी बात न कह सका। पहली बार देखा कि दिकू होकर मुंडा की बात को सच्ची बात कही।"

"मथुरासिंह?"

"पाँच बरस। मथुरा ने मुझे बुलाया, जिससे उसे तीर न मारूँ। बोला, 'हुकुम से दंगा किया था।' मेरे मन में वैसा कुछ नहीं है, पर वह डरता है।"

"डरेगा ही।"

"किस बात का डर? वकील मुंडारी जानता है, जो कुछ समझा वह बोला। पुलिस को मारा, इसलिए सजा हुई। हरमू उसकी गोली से मर जाता तो भी सजा न होती। हरमू चेत गया नहीं तो...।"

"क्या कहता है, सना! हरमू मेरा मान रख रहा है। वह न उठाता तो मुझे धनुक उठाना पड़ता, और मैं कइयों को गिरा देता।"

"सोमचर उस दिन आया?"

"उन लोगों का तो उस तरह का केस नहीं हुआ। रहते कैसे?"

पहान बोला, "एक बात है।"

"क्या बात? घर चलूँ। वे लोग सोच रहे होंगे।"

"बात यह है कि हरमू के जेल से निकलने पर उसकी पूजा नहीं करनी होगी। यह कोई पाप नहीं है।"

छगन बोला, "देख, लाला क्या कहता है। हमारी छाती में भी बल आया है, चोट्टि, क्योंकि लाला बहुत डर गया है।"

"उसकी बात रहने दो।"

"तुझे वह जमीन दे देगा।"

"अब जमीन कौन लेगा ? हरमू जेल में है।"

पहान बोला, "तू घर चल। बहुत दिनों तक आना और जाना करता रहा। इस बार तो बहुत दिन सदर में रहा।"

"चल।"

घर की राह चलते-चलते चोट्टि बोला, "सदर में रहा, लेकिन दिखायी कुछ न पड़ा। हरमू की बात सोचता रहता था। सो यह बात सच है कि हरमू था, इसलिए दो बरस की जेल हुई। मैं होता तो फाँसी चढ़ता, क्योंकि कइयों को मारता, मथुरा को मारता।"

छगन ने झूठ नहीं कहा। "लाला बहुत परेशान है। दारोगा कहता है, तुम्हारी वजह से आदिवासी खफा हो गये हैं। मेरे अमल में तुमने फसाद खड़ा किया। मेरे कांस्टेबल का दाहिना हाथ काटा गया। वह बेकार हो गया। चुनाव के पहले तुमने यह बुरा काम किया।"

"लाला ने क्या कहा ?"

"तूने सुना ? उसके बाद गौरमेन के दल के झंडा बाबू लोग आ गये। लाला ने उनसे बैठने को कहा। वे बैठे नहीं। बोले, तुम्हारी बुरी हरकतों से अगर चुनाव बिगड़ा तो तुम्हारी गरदन तोड़कर वसूल कर लेंगे। अगले साल चुनाव है। तुम हमें पचास हजार रुपये दोगे। लाला ने कहा, तुम मुझे माफ कर दो। तुमसे झगड़ा नहीं कर सकता। वे बोले, हमारे आदमी ढाई-तीन हजार वोटों से जीतते हैं। वोट का दाम बहुत है। तुम्हारी वजह से चार हजार मुंडाओं के वोट बेकार हो जायेंगे। जमीन-उमीन हम नहीं समझते। झगड़ा मिटाओ। नहीं तो इस केस की वजह से दूसरे दल के लोग जीत जायेंगे। पानी में रहकर तुम नाव में छेद करते हो ! यही बात हो रही है। उसी से छगन बोला कि लाला तुमको जमीन देगा। तुम्हारे जमीन लेने पर झंडा बाबू लोगों से वह पार पा जायेगा। झंडा वाले बाबुओं के साथ झगड़ा करने पर ठिकाना नहीं मिलेगा। नहीं तो उसके पचास हजार रुपये चले जायेंगे।"

"तमाशा बन गया है।"

"क्या कहते हो ?"

"तमाशा नहीं ? आधी उपजाऊ जमीन हमें मिलेगी। उनकी जमीन उठी हुई है। मेरा हक मान लेने पर कोई हंगामा नहीं होता। अब वह

जमीन देगा ! क्यों ? जमीन झगड़े की है। मुंडा टोली से होकर उनके आदमी भी उस जमीन पर जाने की हिम्मत नहीं कर सकेंगे। झंडा बाबू लोग वोट की बात उठा रहे हैं, रुपये देने को कह रहे हैं। यह भी कारण है। दारोगा भी खफा हो गया है। अब हमारे जमीन लेने पर वह बच जायेगा। झंडा बाबू पास बैठायेंगे, दारोगा भी खुश होगा।"

"तू जमीन मत लेना।"

"अभी सोचा नहीं है।"

"ले, घर आ पहुँचे। मेरा मन बहुत दुखी था। पल-भर में यह क्या हो गया।"

"तुम जाओ।"

घर में घूसकर चोट्टि बोला, "बहू, सबको बुला।"

सब आये।

चोट्टि बोला. "कोई रोना मत। हरमू को जेहल हो गयी। दो बरस जेहल काटेगा। उसके बाद छूटेगा।"

बहू बोली, "रोयें नहीं ?"

"न।"

"क्यों नहीं रोयें ?"

चोट्टि बोला, "अदालत में मुंडा ! उसे दस बरस की जेहल भी हो सकती थी। वकील अच्छा था, आदिवासी-अफसर सच्चा आदमी था। उसी से बच गया। नहीं तो पता नहीं क्या होता।"

"वकील किया था ?"

"गौरमेन ने दिया था। अफसर ने सब किया। मुझे क्या पता, कहाँ क्या करना होता है, क्या देना होता है।"

"रुपया नहीं लगा ?"

"खाने में कुछ लगा। हरमू को खिलाया था।"

"दो बरस !"

"हरमू ने मेरा मान रखा। मैं धनुक-बान उठाता तो जान से मार देता, फाँसी भी होती। कोयेली कहाँ है ?"

हरमू की बहू रुलाई रोकते-रोकते सामने आयी। चोट्टि बोला, "अब तुम दोनों मेरे बेटा-बेटी हो। तुझे देखकर, उसका दुख भूलूँगा। रोना मत, दो बरस का समय बहुत नहीं होता है।"

"जेहल में मारेंगे ?"

"वकील कह रहा था कि आदिवासी जेहल में जाने पर अच्छा काम करते हैं। उससे पहले भी छूट सकता है। मारेंगे नहीं।"

"पैरों में बेड़ी लगायेंगे ?"

"न, न, सब पता लगा आया हूँ।"

"खाने को नहीं देंगे ?"

"दो बार तो देंगे। घर से अच्छा ही खायेगा।"

कोयेली गरदन हिलाकर बोली, "अच्छा।"

कोयेल बोला, "हरमू बहुत दुख में है।"

"न-न, मरद लड़का है। चलें अब खाना खा लें। आज नींद आ रही है, कई दिन से सोया नहीं।"

चोट्टि के घर के लोग बहुत दिनों से परेशान, खोये-खोये-से थे। चोट्टि पहले कोयेल को लेकर सदर आता-जाता। उसके बाद जिस दिन देखा कि घर पर सभी उनके इंतज़ार में बिना खाये-पिये बैठे रहते हैं उस दिन से उसने गाँव के लोगों को या कोयेल को फिर जाने नहीं दिया। अकेला ही गया। इस बार तो सदर में टिका नहीं। चोट्टि को इतना चुपचाप देखकर सबको घबराहट हुई। कोयेल ने तेज़ नज़र से देखा। कभी-कभी दादा, उसके जितने पहचाने उतने ही अजनबी हो सकते हैं। इस समय दादा का चेहरा बहुत ही अजनबी लग रहा था। लड़के के जेल जाने के बाद जैसे सिर और ऊँचा हो गया हो।

"दादा!"

"क्या?"

"लाला तो वह जमीन देना चाहता है।"

"सब सुन चुका हूँ, कोयेल!"

"क्या?"

"बेड़ा झुक गया है, तेरा ओसारे में दिमाग लगा रहता है। घर पर तू था, इतने लोग थे, क्या करता था? कल ही हाथ लगाना। काम डाल-कर नहीं रखा जाता। फटा कपड़ा न सीने से छेद बड़ा हो जाता है, घर का भी यही हाल है। इस सब में कल ही हाथ लगाना। लड़के कहाँ हैं?"

सोमचर और एतोया सिर झुकाये आकर खड़े हो गये। चोट्टि बोला, "कल मैं बेड़े की मरम्मत देखूँगा, घर का छप्पर ठीक करना है, सब कामों को देखना है। तुम लोगों ने हल छोड़ दिया? खिलाने को कोई और आदमी बैठा है?"

कोयेल की पत्नी चोट्टि की पत्नी से बोली, "घर अब फिर से घर लग रहा है। इतने दिन तक कोई हाल नहीं था।"

चोट्टि की पत्नी कोयेली से बोली, "कल तू बालों में तेल डालेगी, कपड़े साफ करेगी, इस तरह रहने से हरमू की बदनामी होती है।"

हरमू की गोद की लड़की की उम्र चार बरस की थी। वह दीदी से बोली, "हरमू क्यों कहती है? ऐं?"

"क्या कहूँ?"

"आबा कह।"

"न कहूँ तो?"

"तुझे मारूँगी।"

सब लोग हँसने लगे। घर का वातावरण हलका हुआ। लेटने के बाद बहू बोली, "कहाँ थे?"

"पहले अफसर के घर। उसके बाद जब समझा कि उसे जेहल होगी ही, तो अदालत के सामने रहता था, पेड़ के नीचे। वहाँ रहने से उन लोगों को अदालत लाते समय देख लेता था। पुलिस 'ना' नहीं करती, उसे थोड़ा खाने को देता। फिर दिन-भर तो अदालत में रहता।"

"हर चीज का दाम बहुत था?"

"बहुत।"

"बहुत अकेला लगता था?"

"अरे सदर में चलते-फिरते मुंडा मिल जाते थे। वे आकर बातें करते। मैं इतने दुख में भी अच्छा था। उन लोगों को कोई सुख नहीं है।"

"सदर घूमकर नहीं देखा?"

चोट्टि समझा कि बहू जान-बूझकर लड़के की बात नहीं कर रही है। बड़े लड़के पर बहू का झुकाव बहुत अधिक था।

वह बोला, "पेड़ के नीचे बैठा-बैठा सदर देखा करता था। घूम-फिर कर देखने की बात मन में उठी ही नहीं। उसके बाद चलता।"

"सदर?"

"हाँ रे! चलते-चलते, घूमते-फिरते जब थक जाता तो लौटता। तब आँखों में नींद भर जाती। उस तरह घूम-फिर कर...।"

"क्या?"

"एक दिन उस पागल को देखा। पुराण मंडा को। वह मुझसे चिपट गया। रामगढ़ से सदर के पास। वह वहाँ आता-जाता रहता है। उसने मुझे दो दिन घुमाया।"

"क्या देखा?"

"कुछ नहीं। देखता तो सब-कुछ था, लेकिन आँखों के आगे पुलुस और हरमू थे। और कोई तसवीर मानो अंदर घुसती ही नहीं थी। सागर की तरह एक कुंडी देखी रे, पानी बहुत था। मैं तो मन की ज्वाला से जलता रहता। वह पागल भी दो दिन साथ-साथ चला। उससे एक दिन...।"

"क्या हुआ ?"

"तब रात हो रही थी। सदर अंधकार नहीं जानता। सब-कुछ जैसे रोशनी में चमकता रहता। सो एक जगह देखा, लगा कि तामे से या लोहे से ढाल कर आदमी बना हो। बहुत ऊँचा था। आदमी के नीचे मैं बैठा था। उसके बाद देखा कि एक भिखारी आकर बोला, 'मैं यहाँ सोता हूँ। तुम जगह छोड़ दो।' मैंने जगह छोड़ दी। पूछा, 'तुम क्या यहाँ के आदमी हो ?' वह बोला, 'हाँ।' मैंने कहा, 'यह आदमी कौन है ? देखने में बड़ा अच्छा लगता है और लगता है कि यह मुंडा है।' उस पर भिखारी बोला, 'वह मुंडा ही था, बीरसा मुंडा। बहुत-से लोग बीरसा भगवान भी कहते हैं।' सुनकर मेरा मन कैसा हो गया, पता है बहू ? देख ! वह मुंडा था, किन्तु लोहा से, तामा से ढाल कर सदर में उसकी मूरती बनायी। दिन में सदर दिकू लोगों का रहता है। रात में लगता है, सदर उनका हो जाता है। सदर ने ही उसे जेहल में रखा था। पता है बहू, हरमू भी सदर में है...।"

चोट्टि समझा कि बहू सो गयी है। बहुत दिनों का उद्वेग, रतजगा, कलेजे में दुख दबाये थी। चोट्टि को लगा कि उसे भी नींद आ रही है। हरमू की माँ के बदन पर हाथ रखे बिना जैसे नींद न आ रही हो। फिर लगा कि हरमू ने उसका मान रख लिया। चोट्टि सो गया।

ग्यारह

हरमू के जेल जाने का मामला अंचल के लिए बहुत तरह के परिणामों का कारण हुआ। सारे मामले में तीरथनाथ का चेहरा तो थोड़ा उतरा, पर चोट्टि को कोई सांसारिक लाभ नहीं हुआ।

चोट्टि के मतलब ही सब किस्से-कहानी थे।

हरबंस चड्ढा परोक्ष में, अनजाने ही, चोट्टि का सहायक हो गया। चोट्टि से बोला, "मेरा ममेरा भाई जंगल का ठेकेदार हुआ है। छह महीनों तक पेड़ों की कटाई होगी। बरसात आने पर बंद हो जायेगी। पेड़ों पर निशान लगाने का काम चल रहा है। तुमको तो वहाँ जाने का उपाय है नहीं ?"

"क्यों, महाराज ?"

चोट्टि हमेशा सम्मान प्रदर्शित कर बात करता, किन्तु उसमें दीनों की-सी भीरुता नहीं थी। यह हरबंस को बहुत अच्छा लगता था। तीरथ-

नाथ का खेती-सूद का कारबार था। हरबंस थोड़ा आधुनिक था। उसका कारबार ईंटों का भट्टा था। बड़ी-बड़ी ईंटें। बोकारो, चास, पत्रातू—इन सब जगहों में तरक्की होगी, ऐसा उसने सुना था, और उस उन्नति में वह भाग पड़ना चाहता था। तीरथनाथ के साथ वह अच्छा संबंध बनाये हुए था। फिर तीरथनाथ और उसका क़र्ज़ देने का काम उसे मध्ययुग का लगता था। वह मोटर नहीं ख़रीदता था, रेडियो नहीं बजाता था, सदर में सिनेमा और होटल-बार घूमने नहीं जाता था। वह नीची धोती, मैला कुरता और मोची का बनाया चमरौंधा जूता पहने घूमता था। उसके लिए मनोरंजन की धारणा 'रामलीला' सुनना था—हरबंस की नज़रों में वह गँवार और असभ्य था। सूद का कारबार छोटे लोगों का काम है, यह हरबंस की राय थी। बेगार लेना और ग़रीबों से कम मज़दूरी पर काम कराना भी उसके लिए छोटे लोगों का काम है। हरबंस को अपने में कोई दोष ढूँढ़े नहीं मिलता था, यद्यपि चोट्टि को वह बारह आना से अधिक मजदूरी नहीं देता था और अकाल के मौक़े पर दुर्भिक्ष-पीड़ित लोगों से चार आना मज़दूरी पर मिट्टी खुदवाता था।

हरबंस बोला, "वह ठेकेदार है। रुपया-रुपया मजूरी देगा। लकड़ी जायेगी तोहरी। वहाँ उसके कारखाने में चीरी और काटी जायेगी। मजूरी के सिवा जलपान के लिए चार आने देगा। तुम लोग मिल जाते तो अच्छा ही था। तीस-बत्तीस लोगों की ज़रूरत है। लेकिन तुम लोगों को लालाजी के खेत में बेगार देनी पड़ती है। यह रिवाज भी तो ख़राब है। मेरे पंजाब में खेती बहुत अच्छी है। लेकिन ऐसा बुरा रिवाज उधर नहीं है।"

"महाराज, एक बात कहूँ ?"

"कहो।"

"जो हो गया वह तो आप जानते ही हैं।"

"जानता तो हूँ। बहुत अफ़सोस की बात है। अरे, लालाजी की अकल तो मेरी समझ में नहीं आती। उस एक टुकड़ा बेकार जमीन के लिए इतना गुस्सा ! अरे उसकी पिछले ज़माने की अकल है। इतने झंझट की क्या बात थी ? खेती भी मॉडर्न होनी चाहिए। ट्रैक्टर चलाओ, तिगुनी फ़सल लो।"

ट्रैक्टर चलाने से ग़रीब लोग बेकार हो जायेंगे, यही चोट्टि का ख़याल था। इसलिए वह उस बात पर न बोला। बोला, "हम बेगार नहीं करते। हमारे गाँव में ऐसे और भी लोग हैं जो बेगार नहीं करते। आप तीस-बत्तीस लोगों को ही लगायेंगे ? यह क्यों ? पचासों आदमियों की बात कीजिये।"

"कोई गड़बड़ तो नहीं होगी ?"

"मुंडा लोगों की ओर से मैं जिम्मा लेता हूँ। छगन भी जिम्मा लेगा, मैं जानता हूँ। आपका भला हो, महाराज !"

हरबंस बोला, "परसों तुम्हें बताऊँगा।"

चोट्टि गाँव लौट आया। छगन से बोला, "अपने पहान के पास जरा जा। जरूरी बात है।"

घर आकर बहू से बोला, "जब लगता है कि किसी ओर कोई राह नहीं है तो राह निकल आती है। सिर्फ सोच रहा था, लाला का काम अब नहीं करूँगा। कैसे पेट भरेगा ? सो एक राह निकल सकती है।"

"कौन-सी राह ?"

"देखता हूँ। छगन आदि से आने को कहता हूँ।"

"उन लोगों के साथ एक क्यों हो रहे हो ?"

"आज और कोई राह नहीं है। एक मालिक के पास एक काम करेंगे। और जो काम है वह सब साथ करेंगे। हम लोग कम हैं, वे जादा हैं। हम जात के नाम पर ठोकर नहीं जानते, वे ठोकर खाते हैं। समझती नहीं कि मुंडा कितने कम हो गये हैं ? एक साथ होकर मिट्टी काटने पर ही शायद टिक सकें, नहीं तो सब छोड़कर सड़क पर निकलना पड़ेगा।"

पहान के आगे बैठकर चोट्टि ने सारी बातें खोलकर कहीं। बोला, "मेरे मन में यह आ रहा है, क्योंकि ठेकेदार ने छह महीने का काम दिया है। काम दिखा सकें तो वह जहाँ जायेगा हमको ले जायेगा। यह भी जानता हूँ कि जब ठेकेदारी करता है, तो देखता है कि कितनी कम मजदूरी में आदमी मिलते हैं। उसके लिए सवा रुपया पैरों की धूल है। पेड़ काटना मेहनत का काम है किन्तु हमारे लिए वही अच्छा है।"

छगन बोला, "बेगार कैसे संभालेंगे ?"

"जिनको बेगार करना नहीं होता है, ऐसे आदमी कितने हैं ? तीस-बत्तीस होंगे ? मेरी राय सुनो। तुम्हारे घर में दस आदमी हैं। आठ लोग जाते हैं बेगार देने। चार गये तो चार रहे। हमारे यहाँ भी घर-घर बेगार होती है। इसी तरह बाँट लेंगे। देख, हमारी औरतें भी जायेंगी। अपनी औरतों से भी चलने को कहो। जो बेगार करते हैं, वे करते हैं। नये सिरे से कोई टीप-छाप देकर नहीं जियेंगे। हम लोगों को जिन्दा रहने की राह लगभग नहीं है। जो राह निकलती है, उसी को पकड़कर जियेंगे। बुरी बात कही ?"

"सवा रुपया देगा ?"

"हाँ, रुपया-रुपया मजूरी, चार-चार आना जलपान का।"

"मैं सबसे कहता हूँ। समझो, सब तैयार ही होंगे।"

पहान बोला, "लाला करने देगा ?"

"उसका काम हो जाने से करने देगा। हाँ, यह भी देखना होगा कि उसका काम ठीक तरह से हो। उससे वह कोई बात नहीं कह सकेगा।"

"बात तो वह उठायेगा।"

"तब मैं देख लूँगा। मेरे हरमू को जेहल भिजवाया। मेरा गुस्सा उस पर से नहीं जायेगा। पर सब तरफ उसका जोर है, इसी से होशियारी से चलना पड़ेगा। वन में जिस तरह बाघ रहता है, उसी तरह खरगोश और साही भी रहते हैं। क्यों ? चालाकी से जिन्दा रहते हैं। उसी तरह जिन्दा रहेंगे। तुम लोगों से चालाकी की बात कह रहा हूँ, मुंडा लोगों से। मुझे अब कुछ अच्छा नहीं लगता।"

"चलूँ, सबसे कहूँ। पता था, तेरे आने से कुछ बल मिलेगा। जब तक तू सदर गया था, तो मैं जैसे मर गया था।"

पहान बोला, "हरमू से मिलने नहीं जायेगा ?"

"जाऊँगा। पहले यह काम निपटा लूँ।"

इस तरह चोट्टि ने गाँव के मुंडा और निम्न अनुसूचित जाति के लोगों को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे में प्रवेश कराया। इस ढाँचे में सरकार ने उनके लिए कोई जगह नहीं रखी थी। स्वतंत्र भारत की जन-संख्या का अधिकांश निम्न वर्ण के लोगों का है। उनमें एक महत्त्वपूर्ण अंश आदिवासी हैं। इसीलिए राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे से वे निष्कासित हैं। लेकिन जिन्दा तो निष्कासितों को भी रहना होगा। इसी प्रेरणा से चोट्टि और छगन ने किसी दल या संस्था की मदद के बिना लाला की पकड़ को थोड़ा कमजोर करने की कोशिश की और उसमें समर्थ हुए। परिणामस्वरूप और अधिक उलझनें दिखायी पड़ीं और वे बढ़ती रहीं।

चोट्टि ठेकेदार के आदेश पर पेड़ काटने गया। तीरथनाथ की रबी की फ़सल की देखभाल करने जो लोग गये, उनकी ओर देखकर तीरथनाथ बोला, "लगता है, चोट्टि नहीं आया ? कोयेल या सोमचर को भी नहीं देख रहा हूँ।"

छगन का लड़का परसाद बोला, "कहीं गये हैं।"

तीरथनाथ ने सोचा कि चोट्टि नहीं आयेगा, और चोट्टि को न देख-कर वह निराश भी हुआ। उसने सोचा था कि चोट्टि के साथ ऐसा कुछ करना होगा जिससे संबंध न टूटे। चोट्टि को उसने फिर ज़मीन देनी चाही, पर चोट्टि तो नहीं आया। तो क्या वह चोट्टि के पास जाये ? कांग्रेसी लड़कों की बातों में बड़ी धमकी थी। चोट्टि अगर ज़मीन ले ले,

तो आदिवासियों के मन पर उसका प्रभाव पड़ेगा। चुनाव का काम आने वाला है। आदिवासियों के वोट कम हो जायेंगे, बँट जायेंगे। लड़के उसका कारण तीरथनाथ को बतायेंगे। पचास हज़ार रुपये भी ढीले होंगे। जंगली जगह अगर जंगली ही रह जाती, तब तीरथनाथ छगन का घर जलाता, चोट्टि को उखाड़ फेंकता। यह जगह अब उस तरह 'दूर' नहीं है। 'आदिवासी समाचार' अख़बार के आनन्द महतो हरमू की ज़मीन की लड़ाई का मामला लिख बैठे हैं। उसमें तीरथनाथ को आधारहीन 'आदिवासियों का शत्रु', 'ख़ून चूसने वाला महाजन', 'आदिवासियों को उखाड़ने का कारण' इत्यादि बताया गया था। इस समय चोट्टि में मिली-जुली बस्ती थी। दौलतवालों में हरबंस चड्ढा तीरथ को गँवार समझता था। तीरथ अनवर को 'गोभक्षक म्लेच्छ' समझता। हालत जब ऐसी थी, तो तीरथ को ही मान खोकर चोट्टि के पास जाना पड़ेगा। उसके खेत के काम के लिए ही कम आदमी क्यों आये ?

मोतिया धोबिन गुस्से से काँपती हुई बोली, "तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है। पचास-पचपन से ज़्यादा आदमी एक साथ कभी तुम्हारे खेत में काम करते थे ? ठीक पचास आदमी आये हैं, वे काम कर रहे हैं।"

"सो तो है। लेकिन और लोग कहाँ हैं ?"

"कहीं गये होंगे।"

"बेगार के काम में औरतों को देख रहा हूँ ?"

"उनसे काम नहीं चलता ?"

"चलता तो है, पर...।"

"हमारा मुह देखना ऐसा अच्छा लगता है तो किसी दिन भोज दे दो।" मोतिया हँसकर बोली। इस प्रस्ताव में ताना था। तीरथनाथ ने बहुत दिनों चुपचाप रहकर कुछ दिनों पहले अपनी रखैल धोबिन के गर्भ से एक पुत्र को जन्म दिया था। सारी घटना को लेकर होली पर वे लोग गीत गायेंगे।

तीरथनाथ ताने को पी गया। इस समय उसकी अपनी ग़रज थी। पूछा, "पता है, चोट्टि कहाँ है ? उससे काम है।"

"कहीं गया है।"

"अरी मोतिया, तू क्या कर रही है ?"

"क्या किया ?"

"मुंडाओं के साथ रहती है, उनके पहान के पास जाती है।"

"एक गाँव में रहना है, इसी से साथ जाती हूँ। पहान का आँगन साफ़-सुथरा रहता है। बैठकर बातें करना अच्छा लगता है, इसी से जाती हूँ।"

"वे गयी-गुज़री जात के हैं। तू हिन्दू है।"

"मुझसे तो किसी तरह का गया-गुज़रापन करते नहीं।"

शाम को टहलते-टहलते तीरथनाथ बनिये की दूकान पर गया। वहीं गद्दी पर बैठ गया। शाम को गाँव के लोग सौदा लेते थे। चोट्टि आया। एक सौ ग्राम तेल लिया, दो सेर चावल ख़रीदे।

"चोट्टि, अच्छा है ?" तीरथ ने पूछा।

"महाराज, जैसा रख रहे हैं।"

"मैं जैसा रख रहा हूँ !"

चोट्टि निर्मल हँसी हँसकर बोला, "बुढ़ापे की उमर में सहारे की लाठी मेरा हरमू जेहल गया। इसी से कह रहा हूँ कि तुम जैसा रख रहे हो, वैसा ही हूँ।"

"बुझी आग से मानों घर जल गया। नहीं तो इतनी बड़ी घटना ! चोट्टि, एक बात कहूँ।"

"कहो।"

"उधर चल।"

एक अलग-थलग जगह में आकर तीरथनाथ बोला, "वह जमीन तू ले ले। इस बार बात जबानी नहीं, लिखकर दूँगा।"

"ना महाराज !"

"गुस्से से बात मत कर, सोचकर देख ले।"

चोट्टि उसी तरह निर्मल हँसी हँसकर बोला, "गुस्सा नहीं कर रहा हूँ। सोचकर देखता हूँ। अब जमीन नहीं, लिखा-पढ़ी नहीं, कुछ नहीं महाराज !"

"ज़मीन से कुछ तकलीफ दूर होती।"

"जब मुंडा घर में जनम लिया है, तब तकलीफ पर तो मेरा हक है। हक नहीं छोड़ूँगा।"

चोट्टि चला गया। तीरथनाथ अपनी लाठी लेने के लिए दूकान लौटकर आया। दुकानदार बोला, "चोट्टि आपके पास नहीं जाता ?"

"न। आजकल क्या कर रहा है ?"

"जंगल में पेड़ काटता है। गाँव के बहुत-से लोग जाते हैं।"

"किसने काम दिया ?"

"चड्ढा का भाई ठेकेदार है। चड्ढा ने दिया।"

दूसरे दिन तीरथनाथ रूमाल में बाँधकर कुछ काजू-पिस्ता-मुनक्का लेकर हरबंस के पास गया। ईंटों के भट्टे की बड़ी तारीफ़ की और उसके बाद बोला, "यह क्या ठीक बात है, हरबंसजी, कि तुम हमारे गाँव के

मजूरों को तोड़ रहे हो ?"

"कैसे ?"

"तुम्हारे ममेरे भाई के पास वे लोग काम कर रहे हैं और उन्हें सवा रुपया मिल रहा है। भैया, इस जंगली देश में हम-तुम एक-दूसरे का भला देखेंगे। बारह आना देने से ही ठीक रहता, आठ आना मजूरी और चार आना पनपियाई। उसी पर काम करते। रेट बढ़ाना अच्छा नहीं। इसका नतीजा आखिर हम-तुम ही भोगेंगे।"

"इससे रेट बढ़ेगा क्यों ? वह जो दे रहा है दे, मैं तो बारह आने के ऊपर नहीं जाऊँगा। इसे वे जानते हैं। उसे लेकर कोई गड़बड़ न होगी, क्योंकि उन्हें मालूम है कि यहाँ मज़दूर अनगिनत हैं, काम नहीं है। वे लोग गड़बड़ क्यों करेंगे ?"

"भैया, उनको क्यों तोड़ा ?"

हरबंस बिगड़ उठा। बोला, "यह क्या बात है ? आपकी खेती में पचपन आदमी काम करते थे, वही कर रहे हैं। सबको अन्न कौन देगा ? मैं या आप ?"

"भैया, तुम नहीं समझोगे।"

"समझना चाहता भी नहीं।"

"लेकिन समझना पड़ेगा।" तीरथनाथ ने लाठी ठोंकते हुए तेज़ आवाज़ में कहा, "सभी काम नहीं करते। जो नहीं करते वे खड़े-खड़े देखते हैं। वे जानते हैं कि मेरे सिवा उनके लिए और सहारा नहीं है। उससे दूर रहते हैं। उनको काबू में रखे बिना मैं यहाँ टिकूँगा कैसे ?"

हरबंस की आँखें लाल हो आयीं, लेकिन वह छोटा उद्योगपति था। उसकी मानसिकता आधुनिक थी, तीरथ की-सी नहीं थी। आगामी पंचवर्षीय योजना में वह इस अंचल का मझोले दर्जे का उद्योगपति बनना चाहता था। तीरथनाथ की ज़मीन को केंद्र में रखकर बनायी मानसिकता उसके निकट बहुत घृणित थी। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह तीरथनाथ से अधिक क्षमता वाला हो जाये। गर्म होकर बोला, "राजाओं का ज़माना चला गया, लालाजी ! आप उनके कोतवाल बनकर रहना चाहते हैं, लेकिन वह मुमकिन नहीं।"

"तुम्हारे मदद देने से वह संभव होगा, हरबंस !"

"अरे, आप क्या सपना देख रहे हैं ? आप काम देंगे नहीं, वे भी काम करेंगे नहीं ? आप इस बात पर अगर बहुत अड़ेंगे तो लाचार होकर मैं कांग्रेसियों को बता दूँगा कि आप ज़बरदस्ती आदिवासी लोगों और अछूतों के साथ झगड़ा खड़ा करते हैं। इसमें चुनाव में कांग्रेस को मुश्किल होगी।

चोट्टि के साथ आपने ग़लत झगड़ा किया। दस-दस मील, बीस-बीस मील दूर पर गाँव हैं, यहाँ दूसरे लोगों को लाकर वोट दिलाना मुश्किल है। इनसे बैलों की जोड़ी को किस तरह वोट दिलायेंगे ? वोट में गड़बड़ होने से कांग्रेस आपको छोड़ देगी ?"

तीरथनाथ निराश होकर उठ खड़ा हुआ। बोला, "रबी उठाने के वक़्त सिर्फ़ बेगार और बाहरी मजूरों को लूँगा। उन लोगों को दिखा दूँगा।"

"जो मन में आये करें। आप अपना अन्त ख़ुद नहीं समझते।"

"कांग्रेस क्या चाहती है कि मैं उनके पैरों के नीचे रहूँ ?"

"बिलकुल नहीं। कांग्रेस के क़ानून जो भी हों, काम के वक़्त ठेंगा। आप सीलिंग में धोखा देते हैं, बेगार करवाते हैं। क़र्ज़ से उन्हें पीसे डाल रहे हैं—मदद मिलेगी। एक बात है, वोट ठीक रखना पड़ेगा। रुपये देकर वोट दिलायेंगे। सो इस बार कांग्रेस के ख़िलाफ़ अनुसूचित उम्मीदवार है। उसको मदद दे रहे हैं आनन्द महतो, शुद्धानन्दजी—यह सब लोग। अनुसूचित वोट बँट जायेंगे। रह गये आदिवासी। आनन्द अनुसूचित और आदिवासी वोट एक कर वोटों का प्रचार करेगा। अब हमारी और आपकी ज़िद्दा-ज़िद्दी के लिए वोट बेकार होने पर कांग्रेसी क़ब्ज़ा निकल जायेगा। तब क्या आपको अनुसूचित प्रार्थी की मदद मिलेगी ?"

तीरथनाथ ठंडी साँस लेकर बोला, "यह बहुत गड़बड़ लग रहा है।"

"राज्य में कांग्रेस के जीतने पर भी अंचल में ग़ैरकांग्रेसी के जीतने पर अंचल को मदद नहीं मिलेगी। तब कुछ फ़ायदा होगा ? आप चाहते हैं बैलगाड़ी, मैं चाहता हूँ हवाई जहाज़। यहाँ राह वह चाहिए जो जोड़े। हफ़्ते में सात दिन बस चलाना चाहता हूँ। चारों ओर औद्योगिक नगर बसने लगा है, यही तो मौक़ा है।"

'लेकिन मैं नहीं चाहता। जमीन और बेगार और करज—यह मेरा चलता रहेगा। उद्योग तो आज की बात है। जमीन हमेशा की है।"

"तो ट्रैक्टर से खेती क्यों नहीं करते ?"

"क्यों करूँ ? उससे उनका लेबर सस्ता है।"

"हम-आप एक-दूसरे को नही समझ सकेंगे।"

ज़माना तीरथनाथ के पक्ष में नहीं रहा। वोटों के अभियान में आनन्द महतो ने चोट्टि से मुंडा और अछूतों को लेकर मीटिंग की। उसने समझाया, सवर्ण हिन्दू महाजन के अत्याचार में आदिवासी और अछूत एक-से जकड़े हुए हैं। झूठ-मूठ की बातें करते हैं कि उनका उम्मीदवार आदिवासी और अछूतों की भलाई देखेगा। सभा खूब जमी और इसमें चोट्टि ने दल के सहित

साथ दिया। चुनाव और रबी की कटाई साथ-साथ पड़े। अनुसूचित उम्मीदवार अच्छे अन्तर से जीता। कांग्रेस को पचास हज़ार रुपये देने पर भी चुनाव के मामले में तीरथनाथ को झाड़ पड़ी। बदला लेने के लिए वह बाहरी मज़दूर ठीक करने गया। लेकिन जिसके माध्यम से ठीक करने गया, उस गोविन्द करण से चोट्टि ने कहा, "चाहो तो तुम मजूरों को ले जाओ, लेकिन तुम्हारी जान नहीं बचेगी। मैं तुमको जरूर खतम कर दूँगा।"

"मुझे मारेगा?"

चोट्टि को मज़ा आया और वह बोला, "थाने में बैठा रहूँगा। हाथ में कुछ न रहेगा। लेकिन मेरा तीर तुमको ढूँढकर छेद देगा। मजूर तुम लाओगे नहीं, और लाला को इस बात का पता चलेगा तो मुझे पता लग ही जायेगा। फिर देखो। लाला का बाप काशी भागकर भी जिन्दा नहीं रहा। अग्नि-मुख तीर से कुरमी ग्राम जल गया था।"

गोविन्द, तीरथ से बिना कुछ बताये लेबर लाने के ख़र्च में एक सौ रुपये उधार लेकर खिसक गया। तीरथनाथ ने उसे रुपये दिये। उसके बाद चोट्टि के बारे में किस्सा गढ़कर चले आये डाकू। इस ज़माने में डकैतियों का मौसम भी था। तीरथ की गद्दी पर दुस्साहसी डकैती पड़ी। डाकू सिनेमा के डकैतों की तरह मालगाड़ी रोककर उस पर बैठ उत्तर की ओर चले गये।

तीरथ ने समझा कि चोट्टि से बिगाड़ करके उसकी यह बुरी हालत हुई। दारोगा कोई सहायता नहीं कर सके। रबी की कटाई का वक़्त होने पर पहचान की शक्लें चली आयीं। तीरथनाथ ने उनकी मदद से ही रबी उठायी और पहली बार गंज टाऊन में खाता खोला, हरबंस ताना मारते हुए बोला, "बैंक में अकाउंट?"

"समय का तकाज़ा यही है।"

"तो रास्ते पर आ गये?"

"जो भी कहो।"

मुंडा लोगों को चोट्टि की यह व्यक्तिगत सफलता लगी और घटनाओं ने गान के माध्यम से चोट्टि के माहात्म्य की घोषणा की। बहुत समय बाद आदिवासी और छगन आदि के सोहराइ उत्सव में गाना सुनायी दिया। गाना सुनते-सुनते चोट्टि ने कोयेल से कहा, "सुन रही है, गान क्या कह रहा है?"

"उहँ, सुनने दें तभी न।"

आधी फसल आधे हक की जमीन छीन ली

हरमू, आहा सोने का लड़का, उसे पठा दिया जेहले
घर जाकर तीर की बात कहता है कौन?
चोट्टि मुंडा कहता है—
तीर बतास में मिलकर चला जाये।
अब सब जैसे गुस्से से बावले हो गये हैं
नहीं तो बिदुर महतो क्यों जीते चुनाव में?
गोबिन्द करण क्यों भाग गया?
क्यों डाका पड़ा तुम्हारी गद्दी पर?
आः आः आः तुम्हारा क्या हुआ!

चोट्टि ने यह सुनकर कहा, "ओः! वे एक चोट्टि मुंडा को पहचानते हैं। उसमें ऐसी ताकत है कि लड़के को जेहल भेजकर घर में सोता है।"

"आः सुनने देंगे न?"

"इसी तरह क़िस्से-कहानी फिर बन जायेंगे। गान, सारे किस्से-कहानी इस चोट्टि मुंडा के जीवन में हो रहे हैं।"

चोट्टि ने ठंडी साँस लेकर कहा, "यह लोग बहुत जरूरत पड़ने पर ही गान बनाते हैं। सब लोग ही पानी की तरह हाथों को अलग-अलग कर भाग रहे थे। गान बाँधकर यह लोग सहारा ढूँढते हैं।"

"कल हरमू से मिलने कौन जायेगा?"

"कोई नहीं। सवा रुपया कमाई करने में बदन टूट जाता है, फिर भी हर दिन का काम करना ही है। हरमू से सारी बातें कह दूँगा।"

"वह अफसर क्या कहता है?"

"कहता है, आने की क्या जरूरत है? खरच बहुत पड़ता है।"

"कमाई तो कर रहे हैं।"

"एक पैसा भी बेकार नहीं करना, कोयेल। वह जमीन ले लेंगे। लिखत-पढ़त करेंगे। हरमू के आने पर उसे जमीन मिलेगी। जमीन का दुख छाती पर लादे वह जेहल गया है। आकर देखेगा कि जमीन है।"

"बनिये की जमीन है दादा, उपजाऊ। पास में जंगल भी नहीं है। मुंडा को उपजाऊ जमीन कौन देगा?"

'पैसा सब देगा।"

"हाँ, क्या करोगे?"

ज़मीन सूखी और पथरीली है। बनिये को सस्ते में मिली थी। पाँच बीघा ज़मीन। अपनी छोटी-सी दूकान चलाकर उसे उपजाऊ बनाने लायक पैसा नहीं मिलता था। निकल सकता है, अब निकलेगा, यही सोचते-सोचते

ग्यारह बरस बीत गये। तीरथनाथ ने अपने दो संबंधियों को पिछले साल दो दुकानें खुलवा दी थीं। अब बनिये का चोट्टि से फ़ैसला करने का वक़्त आ गया है। मुंडा और अछूतों के सिवा उसका कोई गाहक नहीं है। स्टेशन के पीछे लंबे दालान में क़तार-की-क़तार कोठरियाँ बनाकर तीरथनाथ ने दो दूकानें और आटा पीसने की चक्की लगा ली है। तीरथ से मुक़ाबला करना असंभव है। मुंडा और अछूतों की ख़रीदने की शक्ति सामान्य है। तेल-नोन-मिर्च-गुड़-सोडा-साबुन और दियासलाई है। वह भी बहुत कम ख़रीदते हैं। इन लोगों के सहारे दूकान चलाना संभव नहीं है। बनिया तोहरी जायेगा। वहाँ भाग्य की परीक्षा करेगा। उसकी ज़मीन बहुत ही रूखी और सूखी है। वह किसी को ज़मीन के लिए राज़ी न कर सका। पाँच बीघा ज़मीन पाँच सौ रुपये में भी कोई ख़रीदना नहीं चाहता। चोट्टि नदी से बहुत दूर पथरीली जगह में है। अब चोट्टि से पैसा लेने पर भी वह फ़ायदे में रहेगा। उसने चोट्टि से कहा था, "तुम सब ले लो।"

"नहीं, नहीं ले सकूँगा।"

"तब तुम ही किसी और को देखो।"

बनिया निरीह और डरपोक है। उसने कहा, "मैं तुम्हारी बात पर ज़मीन दिये देता हूँ। आदिवासी कभी धोखेबाज़ी नहीं करते।"

"देखता हूँ अगर कोई ले।"

छगन बोला, "मैं कहाँ से लूँगा? लाला का उधार चुकाने में सारी कमाई निकल जाती है। नहीं तो क्या ज़मीन न लेता?"

चोटि को बड़े ताज्जुब में डालते हुए सना उसके घर आया। बोला, "मैं लूँगा। तुम मुझे जमीन दिला दो।"

"तू लेगा?"

"अपने नाम से नहीं लूँगा। मैं बेगार करने वाला हूँ न! मेरे भाई के बेटे जिता के नाम करा दे।"

"रुपये लगेंगे उसमें।"

"सुन लिया। साल में एक बीघे पर पंद्रह रुपये। सो आधा तुम ले लेना आधा मैं, उसमें हो नहीं जायेगा?"

"तेरे पास रुपये हैं?"

"चोट्टि, मैं आटा मोल लेता हूँ, गरम जल में सानकर खाता हूँ। उससे पेड़ काटने की मजूरी जमा हुई है। तू देख!"

बाँस के चोंगे से सना ने पैसे निकाले। बोला, "बाइस रुपये जमा किये हैं। इनमें नहीं होगा? तू बता?"

चोट्टि बोला, "देखूँ।"

बनिया चोट्टि की बात पर राज़ी हो गया। चोट्टि हरबंस का हिसाब रखने वाले ऊधमसिंह के पास गया। तोहरी से एक रुपये का अदालती काग़ज़ ख़रीदा गया। उस कागज़ पर ऊधमसिंह ने लिखा, "मैं, श्री पूरणचंद बनिया,—मौजा,—तहसील,—नं० की ज़मीन चोट्टि मुंडा और जिता मुंडा को लिखे दे रहा हूँ। ज़मीन का मालिकाना हक मेरा रहेगा। चोट्टि और जिता मुंडा मुझे सालाना सैंतीस रुपये देने के हकदार रहेंगे। रुपया न दे पाने पर मैं ज़मीन का नया बंदोबस्त करने का हकदार हूँ।"

ऐसे दस्तावेज़ की बात किसी ने नहीं सुनी थी। फिर भी चोट्टि आदि को लगा कि यह एक काम की बात हुई। तीरथनाथ ने बनिये से कहा, "पानी के भाव छोड़ दी।"

बनिया बोला, "चिरचिटा घास के सिवा उसमें कुछ नहीं होना, महाराज।"

"मुझे बताते तो मैं ले लेता।"

"बंजर ज़मीन में भी सबसे रूखी-सूखी ज़मीन है, महाराज।"

हरबंस चड्ढा ने बनिये से कहा, "तुमने बड़ा अच्छा किया। वह ज़मीन कोई न लेता। चोट्टि ज़मीन की लालसा में मरा जाता था। नहीं तो नहीं लेता।"

चोट्टि से बोला, "कोई ऐसी ज़मीन लेता है?"

चोट्टि बोला, "क्या करें, महाराज!"

हरबंस को वह कैसे समझाता? बंजर हो, पथरीली हो, एक टुकड़ा ज़मीन होने का मतलब धार में बहते अपने अस्तित्व को लंगर से बाँधना जैसा है। क़ानून-कचहरी करने की ताक़त चोट्टि में नहीं है। उस कागज़ के बल पर बनिया हर साल आकर रुपये लेगा और ऊधमसिंह के सामने रसीद लिख देगा।

तीरथनाथ की तरह हरबंस को भी यह काम अच्छा न लगा और वह बोला, "इसके बाद बाहर का काम कर सकोगे?"

"जरूर, जमीन तो लड़कों की है, महाराज!"

"तुम्हारे दोनों लड़कों की?"

"कोयल के लड़के की भी।"

"लिखत-पढ़त कहाँ हुई?"

"हमें पढ़ना-लिखना नहीं आता, महाराज।"

"चोट्टि, तुम पागल हो।"

"नहीं महाराज, ठीक कहा।"

"वह क्या है?"

"पपीते के बीज हैं, महाराज। आपने उस दिन बताया था न? सो इस, पपीते में दाना नहीं होता, गूदा बहुत मीठा और फल बहुत मीठे होते हैं। साँप तो हर बरस बहुत मारते हैं। वह इनकी जड़ों में गाड़ देंगे। देखियेगा, उसकी खाद से पेड़ कैसे स्वस्थ होंगे। ऐसी खाद दूसरी नहीं होती।"

तीरथनाथ और हरबंस—दोनों ही चोट्टि के ज़मीन लेने के मामले में असंतुष्ट रहे। चोट्टि का पथरीली ज़मीन का मालिक होना भी अच्छा नहीं लगा। इससे उनके दिमाग़ की—एक-से दिमाग़ की—बनावट बदली जा सकती है। वैसा नहीं होना चाहिए। उन लोगों को हमेशा बेसहारा, बेभरोसा प्रेतों की तरह शरणार्थी रखना ठीक है, ज़मीन-जलवायु सब-कुछ जिन्हें बाहर रखे। वे दोनों एक-दूसरे के अनजाने में अपने-अपने स्वार्थ के कारण चोट्टि की ज़मीन का मामला देखते रहे। बहुत गहरी उत्सुकता में थे। अपनी लँगोटी के सिवा जिनका कुछ नहीं, वे पथरीली और भुतही ज़मीन लेकर क्या करते हैं, यही देख रहे थे।

चोट्टि की प्रखर बुद्धि और उसके तिनक उठने का उन्होंने ख़याल नहीं रखा। दिकू लोगों के प्रति गहरे अविश्वास से उसका मन भरा हुआ था। उसने सना से कहा, "चड्ढा कहो, लाला कहो, कोई साला हमारे जमीन लेने को अच्छी नजरों से नहीं देखता। उन लोगों ने धरती खरीदी तो वह धरम है। हम अढ़ाई बीघा पत्थर ले रहे हैं तो वह अधरम है। अभी उनका जो कुछ काम करें, ठीक तरह से करना होगा।"

सना के लिए स्थिति के विषय में कुछ भी सोचना उसके स्वभाव के विपरीत था। उसके और बहुतों के मामले में बात इस तरह थी—सोचे-बिचारे चोट्टि। वह बेसहारों का नेता है। वे तो हुकुम मानते चलेंगे।

सना बोला, "वह तो जरूर करेंगे, लेकिन यह हुआ क्या, चोट्टि? हम जमीन के मालिक हो गये?"

"बात सम्हाल कर बोल। तू नहीं, जमीन जिता ले रहा है। वह मालिक भी नहीं हुआ, पट्टा ले रहा है। जिता ले रहा है।"

"तो जो जिता है, वह मैं हूँ।"

"न, गलती मत करना। तेरा नाम आने से लाला हाथ फैलायेगा। तुम लोगों को क्या बताऊँ! लाला के चंगुल से थोड़ा निकल रहा हूँ, जंगल में काम ले रहा हूँ, चड्ढा के यहाँ भी। कोई कसूर नहीं कर रहा हूँ, फिर भी संभलकर चल रहा हूँ। एक लाला के कौर में था, दाँतों के नीचे से हटा, तो वह कैसा चिढ़ा हुआ है! अब तू गड़बड़ बात कह रहा है। मेरी जमीन! हाँ सना, करज के नीचे तू बेगार बना हुआ है। तेरा अपना कहने को कुछ नहीं हो सकता है। इसी से जिता का नाम डाला है। यह बात और

कितनों से कहेगा? लाला के कान में अगर बात पड़ी तो तुझे पटना दिखा देगा।"

"किसी से नहीं कहूँगा।"

"मत कहना। बूढ़ा हो रहा है, समझ के चल। तुम लोगों को संभाल-कर चलते-चलते मुझे हरमू के लिए रोने का मौका ही नहीं मिलता।"

"रोओगे क्यों? वह तुम्हारा मान रख रहा है न?"

"अपनी बात भी कुछ नहीं। वह तो मेरी बात है।"

"लो, बताओ क्या कहना है?"

चोट्टि ने बीड़ी सुलगायी। उसके बाद पद की उचित गंभीरता से बोला, "पथरीली हो या जैसी हो, जमीन तो हुई।"

"यह देखकर सब मुंडा होश में आयेंगे।"

"हाँ, और सब पत्थर पट्टे पर लेंगे। मुंडा लोगों के लिए कुछ असाध्य नहीं है। मैं ले रहा हूँ, बस, उसी से जाग सकते हैं।"

"ले, अब कहो।"

"जमीन ले रहा हूँ, किन्तु बहुत काम हैं।"

चोट्टि और जिता के ज़मीन लेने से मानों सारे मुंडा लोगों ने बाज़ी जीती हो। छगन भी कह गया, "बहुत अच्छा कर रहे हो। कुदाल मारकर पत्थर निकालने पड़ेंगे। चाँद का पक्ष आने पर हम भी चुपचाप मेहनत दे देंगे। तेरी जमीन की बात है। इससे हम लोगों को भी सहारा मिला है।"

"क्या सहारा?"

"हम भी जमीन ले सकते हैं, यह समझ गये।"

"बाघ एक ही है—तीरथनाथ। वह क्या किसी और को जमीन लेने देगा? अभी मौके पर नजर रखकर ऊसर जमीन लेता रहेगा। तुम्हारे-हमारे हाथ बंजर जमीन उपजाऊ बन जाती है सो वह नहीं देगा। पता है, कैसे?"

"कैसे?"

"वे लोग—तीरथ आदि चाहते हैं कि कम जमीन उपजाऊ हो, और वह उनके कब्जे में रहे। जितनी जमीन ऊसर रहेगी, उतना ही उनके लिए अच्छा है। उससे हम उनकी दया के सहारे रहते हैं, बँधे रहते हैं। अभी समझता है कि हमारे हाथों में पड़ने से पथरीली जमीन पर धन पैदा होता है। इसी से दखल में रखने के लिए जमीन पर कब्जा करेगा।"

"खेती करायेगा?"

"धत्, उससे तो बहुत लोगों को रोजी मिलती है।"

"फिर क्या करेगा?"

"परती रखेगा। धरती जितनी बाँझ रहेगी, हम-तुम उनसे करज लेंगे, बेगार करेंगे, ठोकरें खायेंगे।"

"तुम कितनी बातें समझते हो, हम नहीं समझते।"

"समझकर ही क्या कर सकते हैं?"

"मेरी तो आँख तू है, जबान तू है, हाथ भी तू ही है।"

"धत्तेरे दिकू की।"

"धत्तेरे मुंडा की।"

दोनों ही हँसने लगे और छगन बोला, "मेहनत देंगे।"

मुंडा लोगों के लिए यह घटना विशेष महत्व की हुई। चोट्टि की भविष्यवाणी सच कर तीरथ सारी बंजर ज़मीन लेता रहा। पिछली दुश्मनी के कारण फलवाले अनवर ने अपनी ज़मीन का टुकड़ा रख छोड़ा और चोट्टि से चुपके से कहा, "अपनी तीस बीघा ज़मीन वह बाँट देगा, बाद में।"

पहान ने चोट्टि और जिता की ज़मीन डोरी से नापकर नागफनी का घेरा बना दिया। दोनों की ज़मीन के चारों ओर नागफनी का घेरा लग गया। उसके बाद ज़मीन की पूजा में मुर्गी की बलि देकर उसके खून को छिड़ककर ज़मीन का मंगल किया गया। कई महीनों तक शुक्ल-पक्ष में ज़मीन के कंकड़-पत्थर हटाने का काम चला। वर्षा का पानी पड़ने पर ही धान की बुआई होगी। चोट्टि ने मचान बाँध लिया और चूंकि दोनों ही ज़मीनों के लिए उसका अपनापन था, इसलिए दोनों ही ज़मीनों पर तीखी नज़रों से पहरा देता रहता। साथ में जिता रहता और अब चोट्टि के मन में धानी के साथ जागी हुई रातों की यादें उभरकर आतीं। जिता से उसने धानी के चाव से कहा, "तीर चलाना सीखना चाहता है तो आँखों पर धार दे। देख, हिरन।"

"जा, हिरन तो सब मार डाले।"

"तू देख तो।"

धान की गंध से एक चीतल आ गया था। जिता बोला, "मारूँ? ओह, ज़माने से हिरन का मांस नहीं खाया है!"

"धत्, वह मादा है। मारने की मेरी भी तबीयत हो रही है, लेकिन हमारी तरह उनको भी तो दिकू उखाड़ फेंक रहे हैं। उस जंगल में कहीं थोड़े-से रह गये हैं। अब निकल रहे हैं। मादा रहने से वंश बढ़ेगा।"

चोट्टि ने ताली बजायी और पल-भर में जानवर भाग गया। चोट्टि बोला, "तू सो जा। मेरी आँखों में तो नींद नहीं है।"

"सोओगे नहीं?"

"न।"

जिता सो रहा। यह सूनापन का, ज़मीन का फैलाव और रात की ठंडक चोट्टि को बड़े अच्छे लग रहे थे। उसके बाद वह मचान से उतरा। पूरे खेत को घूम-घूमकर देखा। धान निकल आये थे। वैसे लहलहे नहीं थे, पर थे धान। सहसा उसके मन में कुछ आया। अपने-आप ही बोला, 'हाँ, सीधी ज़मीन चली गयी है, इससे छाया नहीं है। इन पानी के दिनों में सिधा पेड़ों की पौध लाकर चारों ओर लगा दूंगा। थोड़ी छाया रहेगी।"

अगहन के क़रीब सना का दिमाग़ ख़राब हुआ। "अहा, हा, धान पक रहे हैं," कहकर वह मचान पर आकर बैठ गया। वह जो बैठा, तो उसे फिर उतारा नहीं जा सका। चोट्टि से बोला, "अब बेगार देने नहीं जाऊँगा। यहीं रहूँगा।"

चोट्टि ने उसे डरा-धमकाकर काम पर भेजा। धानों की कटाई होने पर वे खूबलाल कोयलेवाले के पास गये। धान तुलवाये। धर्मकाँटा। अढ़ाई बीघा ज़मीन में अढ़ाई मन धान हुआ था।

चोट्टि वज़न देखकर भौंचक्का रह गया। डेढ़ मन चावल मिलेंगे। और भूसा। उसने ठंडी साँस छोड़कर खूबलाल से एक बोरा ख़रीदा। पुआल भर देने से हरमू के लड़के लेटेंगे। खूबलाल का ज़मीन का कारोबार था। वह बोला, "रेल कंपाउंड में जो तालाब है, जानता है?"

"बड़ा दह?"

"वही। अबकी स्टेशन-बाबू उसे खुदवायेगा। उसकी कीचड़-भिट्टी निकालकर फेंकी जायेगी। यह धान तो रोगहा-रोगी-सा है। ज़मीन में ताक़त नहीं है। तू बिलकुल पागल है, पथरीली ज़मीन ली है।"

"वाह, खूब कहा।"

चोट्टि तभी स्टेशन-मास्टर के पास गया। वे बोले, "उसे तो मैं खुदवाऊँगा ही। पिछली बार स्टेशन में आग लग गयी थी, तो कुओं का पानी खींच-खींचकर आग बुझायी गयी थी।"

"दह पहले अच्छा था।"

"उसकी कीचड़ लेगा, ले। तुम ही उसे क्यों नहीं खोद देते? वही बारह आना मजूरी दूँगा।"

"सो तो खोद दूँगा। लेकिन समय देखें, महाराज! लालाजी की खेती के काम का नुक़सान न हो। यह तो दस मरद और दस औरतों से काम होगा। एक काम करना होगा।"

"क्या?"

"अभी करा सकते हैं। खेतों में रबी डाल दी गयी है। अभी वैसा कोई काम नहीं है। पर बारह आने का रुपया नहीं होगा?"

"ना चोट्टि, वह नहीं होगा।"

"तो वैसा ही सही। अच्छा, गाँव में आग लगने पर पानी मिलेगा ?"

"सो क्यों नहीं मिलेगा ? सरकार की संपत्ति है या मेरी ? पर आग लगने पर ही। हमेशा काम में नहीं लाने दूँगा।"

यह बात हो गयी। सब-कुछ सुनकर खूबलाल बोला, "टीसन बाबू ने बेनामी ख़ुद ही इस काम का टेंडर दिया था। दस हज़ार रुपयों का टेंडर है।"

"टेंडर क्या ?"

"रेल का काम तो ऐसे नहीं होता। पहले टीसनबाबू ने कम्पनी को सुझाया कि यह तलैया खोदनी होगी। कम्पनी ने टेंडर माँगे। कौन कितने ख़र्चे में काम कर देगा ? टीसन बाबू ने कल में तेल दिया। उसे कम्पनी दस हज़ार रुपये देने को राज़ी हो गयी। अगर तुम अब दो महीने में भी काम करो तो उसका हज़ार रुपयों से अधिक नुक़सान न होगा। नौ हज़ार रुपयों का फ़ायदा है। उसके बाद पानी में मछली छोड़ेगा, बेचेगा। पानी की बात से याद आया। उस दिन घूमने गया था, देखा तेरे गड्ढों को। बड़ा साफ़ पानी है। यह अच्छा किया। नदी की रेत में हर बरस गड्ढे बना दिया कर। पानी मिलेगा। छगन आदि भी जाते हैं। नहीं तो पानी लेने के लिए अछूतों की धक्का-मुक्की से कुएँ का पानी पीने में घिन होती है।"

"तुम भी क्या ऊँची जात हो ?"

"ज़रूर। मैं कुरमी हूँ। दुसाध या गंजू या धोबी नहीं। अच्छा चोट्टि, तुम लोगों में जात क्यों नहीं है ?"

"पता नहीं।"

चोट्टि की बात सुनकर सुगन बोला, "तू कर क्या रहा है ? यह काम भी ले लिया। किसे पता था कि चोट्टि में इतना काम होगा ?"

"काम तो होगा ही। दिन बदल रहे हैं। अब देखना होगा कि तीरथ के काम को संभालकर यहाँ जो भी काम हो वह सब हम लोगों को मिले।"

"बारह आना से बेसी नहीं देगा ? क्यों ?"

"समझना होगा।"

"क्या समझोगे ?"

चोट्टि थकी हँसी हँसकर बोला, "तुम बताओ, क्यों दे ? चड्ढा दे रहा है बारह आना, वह भी वही देगा। नहीं तो रेट उन लोगों के हिसाब में बढ़ जायेंगे।"

"सो तो है।"

"सोचने से कोई फ़ायदा नहीं। सोचने से दिमाग परेशान होता है। दुनिया में कितना रुपया है। चड्ढा ये बड़ी ईटें बेचकर इतना रुपया बना

[illegible] है। तीन-चार कोयला खानें मोल लेगा। यहाँ तो कोयला जमीन के [illegible] ही है। हमें बारह आना दे रहा है। लाला खेती से इतना रुपया कमा [illegible] है, करज का सूद ले रहा है। डाका पड़ा, कांग्रेस को पचास हजार [illegible] दिये, कोई फरक नहीं आया। तुमको पैरों के जूते की धूल झाड़कर [illegible] है। टीसन-मास्टर इस तालाब को खुदाने के ले रहा है दस हजार [illegible]। हमें देगा बारह आना। सो देखो, उन पचास हजार में दस हजार [illegible] हमारा हक नहीं देंगे। जो मिलता है वही ले लें।"

"जो मिले, ठीक ही कहा।"

"वही लेंगे। फिर भी कुछ खाकर जियेंगे तो।"

"यह तो है।"

"सो तुम मुझे देउता कहते हो, अबकी पूजा लूँगा।"

"क्या लेगा ?"

"दह काटने पर कीचड़, जितनी जिससे हो जमीन तक ले जायेगा। जमीन रोगी है। बच्चों की तरह खाना माँगती रोती रहती है।"

"दो देंगे।"

इस तरह ही सब बातें हो जातीं और चोट्टि और छगन बहुत अधिक लगन के साथ मेहनती चींटियों की तरह राष्ट्रीय अर्थनीति से कण-कण कर लेते रहे। उससे राष्ट्रीय आर्थिक नीति गड़बड़ न होती और यह जैसे-तैसे भोजन जुटाकर ज़िन्दा रह लेते। चोट्टि के ग्राम-जीवन में एक बात सबने मान ली। मेहनत के कामों में स्थानीय लोग ही काम आते हैं। यह बात भी मान ली गयी कि काम की बात चोट्टि के साथ करना ही अच्छा है। वह बुज़ुर्ग है, होशियार है, सबकी जान-पहचान का और आदरणीय व्यक्ति है। उसके कह देने पर कहे अनुसार काम होगा। छगन आदि भी उस बात का मान रखेंगे।

दह खोदने का काम तय होने पर हरबंस चड्ढा हँसकर बोला, "चोट्टि, अब लेबर लगाने की ठेकेदारी कर ले।"

"कैसे ?"

"सबको काम दे रहा है, बट्टा लो।"

"ना महाराज।"

"लेकिन ले सकते हो। सभी लेते हैं।"

"ना महाराज।"

समय से ताल की खुदाई हो गयी और चोट्टि की ज़मीन पर कीचड़ डाल दी गयी। पहान इस ज़माने का आदमी था। उसने मिट्टी देखकर आँखें मीचीं और चोट्टि से बोला, "ढाल पर उतरकर नदी किनारे पर

चढ़ती है, इतना चलकर अगर कीचड़ लायी जाती है, तो इसी तरह चलकर जंगल से सड़ी पत्तियाँ भी लायी जा सकती हैं।"

"यह तो है।"

"तेरी तो बहुत जान-पहचान है। गौरमेन खाद देती है। तोहरी चला जा। बी० डी० बाबू से माँग ले।"

चोट्टि बोला, "क्या वह दे देगा? बड़ी बातें होंगी।"

तभी चोट्टि के जीवन में तीन अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाएँ घटीं। प्रत्येक घटना गान में, क़िस्से-कहानी में रखने लायक महत्व की थी। पहली के पीछे उपलक्ष्य था, चोट्टि की ज़मीन और पहली घटना का जवाब न था।

तीरथनाथ इस जगह का बाशिन्दा था और यह स्थान उसके रक्त में था। विद्वेष, क्रोध, प्रेम के सिवा चोट्टि के बारे में, या सारे मुंडाओं तथा सारे परिगणित व्यक्तियों के बारे में, उसके मन में कहीं एक अधिकारबोध था। वह क़र्ज़दार के प्रति महाजन का अधिकारबोध नहीं था। वह पुराने संबंधों के बंधनों का अधिकारबोध था। तीरथनाथ बेगार तो ज़रूर लेता था, लेकिन वह चाहता था कि वे लोग पहले की ही तरह निस्संकोच कहा करें, 'क्या महाराज, इतना पपीता क्या अकेले खाइयेगा? हमनी के भी दो-एक खिलाइये।' या 'महाराज, तुम्हारे गाय-बैल बिगड़ गये हैं। नथुनी को बुलाइये, गोठ की पूजा कर दे।'

तीरथनाथ और चोट्टि। चोट्टि के बाप को वह 'चाचा' कहा करता था। छगन की माँ ने कोई दवा पीसकर खिलायी जिससे तीरथ की माँ के स्राव की तकलीफ़ दूर हो गयी। अब डॉक्टरी इलाज प्रचलित हुआ है, लेकिन छगन की माँ का-सा चिकित्सक तीरथ ने कभी नहीं देखा। छगन की माँ जिन्दा होती तो चोट्टि गाँव में बच्चों और औरतों की हारी-बीमारी में किसी को कोई फ़िकर न थी।

सब जैसे अजीब-सा आड़ा-तिरछा हो गया। तीरथनाथ ने हरबंस से कहा था, "तुम मेरा लेबर तोड़ रहे हो।" उसकी बात में 'मेरा' पर विशेष ज़ोर था। वह 'मेरे'—तीरथ के—थे। तीरथ उन्हें मारे तो मारेगा, बचाये तो बचायेगा। मारेगा नहीं। तीरथ अगर वैसा मारने वाला होता तो चोट्टि गाँव से मुंडा और अछूत लोग भागते न? तीरथ क्या और सारे महाजनों की तरह है? जापूसिंह तो गौरमेन के पाँचसाला तमाशे के साथ ताल मिलाकर ठीक चुनाव के बाद किसी-न-किसी बहाने से अछूतों के खेत-ओसारे जला देता। कहता, "वैसा न करने पर यह हरामी लोग बराँमन-क्षत्री की तरह होना चाहेंगे।"

तीरथ ने तो कभी छगन वगैरह के घर और ओसारे नहीं जलाये।

क्यों नहीं जलाये? आदिवासी, अछूत इत्यादि की मिली-जुली बस्ती होने न? नहीं, नहीं! तीरथ हरबंस की तुलना में पुरातन-पंथी हो सकता है, लेकिन जापू के मुक़ाबले में वह आधुनिक है। जापू का व्यापार बहुत उलझा या आसान है, कौन जाने क्या है! अछूतों की बस्ती वह जलवा ही देता है। पुलिस के आने में भी रुकावट नहीं डालता और कहता, "हाँ-हाँ, तुम लोग अपनी ड्यूटी करो न, भैया! इसके लिए तो गौरमेन तुम लोगों की पालपोस करती है न? बताइये न!"

पुलिस को वह घूस न देता और पुलिस के साथ घूमता। अत्याचार-पीड़ित व्यक्ति—जिनके घर नष्ट हो गये—जापू के सामने मुँह न खोलते। जापू को इससे बड़ी खुशी होती और पुलिस से कहता, "यह लोग मुझसे बाप की ही तरह डरते और भक्ति करते हैं।" उसके बाद, बड़े ताज्जुब की बात है कि जापू गौरमेन की मदद पर तुरुप लगाकर खुद घर बनाने का खरच देता, खुराकी देता। देता माने दान करता, क़र्ज़ नहीं देता। जापू कहता, "तीरथ लाला तो है लाला। हम जापूसिंह हैं। राजपूत। मेरे पुरखे राजा थे। राजा क्या करता है? जान लेता है, जान देता है। मेरा दिमाग तीरथ को कहाँ से मिलेगा?" यह बात भी सच थी। इस तरह के पागलपन से जापूसिंह पर लोगों की एक तरह की भक्ति भी थी। आंचलिक मालिक-महाजन के बीच जापूसिंह अपवाद था। पुराने ज़माने के राजे-ज़मींदारों की तुगलकी परंपरा को चलाने वाले आज के मालिक-महाजन थे। तीरथ ने एक बार कहा था, "एक बात आपने कभी सोचकर देखी है, बूझकर देखी है?"

"क्या बात?"

"आदमी की देह। आपकी उमर भी सत्तर हुई। कभी अगर ऐसा हो कि घर जला दिया और खैरात देने के पहले ही मर गये?"

"हो-हो-हो, यह नहीं हो सकता।"

"अगर कहीं पुलिस आपको पकड़ ले!"

"हो-हो-हो, कैसी मजे की बात है!" हँसकर खाँसते हुए जापूसिंह ने तीरथ के पेट में खोंचा मारते हुए कहा, "योग व्यायाम करता हूँ, लोहे की उँगलियाँ हैं, देखिये न। पट से मर जाऊँगा और गौरमेन भी नहीं पकड़ेगी।"

तीरथ जापूसिंह की तरह घर न जलाता। रामसरन माथुर की तरह बारहो महीने यज्ञ-पूजा कर क़र्ज़दारों से वसूली नहीं करता। क्या ग़लत काम करता था? क़र्ज़ देकर ब्याज लेता था। बेगार लेता था। उसमें क्या ग़लत बात है? जो प्रथा चली आ रही है उसमें अन्याय नहीं हो सकता।

चोट्टि के लोगों के मन में जो आड़ा-तिरछा विचार आ गया है, वह क्या उस बेगार या क़र्ज़ के कारण ? नहीं, नहीं। फिर उस बेगार और क़र्ज़ के कारण हरबंस, नया बड़ा आदमी, उससे घृणा करता है। घृणा करना क्या अच्छा है ?

न, न। चोट्टि के लोगों के आड़े-तिरछे विचारों के पीछे और बात है। पहले केवल वे थे और तीरथ था। अब रोज़ी के लिए वे हर किसी के पास जाते हैं। तीरथ यह नहीं चाहता। तीरथ तो मारपीट भी नहीं चाहता। सच कहने में क्या है, तीरथ ने उस ज़मीन के दंगे के वक़्त मथुरासिंह से बार-बार कहा था, "गोली मत चलाना। डर दिखाना।" लेकिन वह उजबक था, दनादन गोली चला बैठा। पुलिस पर जो दरोगा, टीसन बाबू और आदिवासी अफ़सर—तीनों गौरमेन के सामने गोली चलाये, उससे बड़ा मूर्ख और कौन हो सकता है ? असल में तीरथ ने बहुत सोचकर देखा है कि चोट्टि से झगड़ा रहने से ही सब गड़बड़ा गया। तीरथ पर क्या भूत आ गया था ? नहीं तो उस ज़मीन को लेने का ऐसा हठ क्यों उठ खड़ा हुआ ? हरमू जेल गया। चोट्टि तो अब उसे तरह-तरह से बाण मार रहा है। नहीं तो गद्दी पर डाका क्यों पड़ता, कांग्रेसी लोग पचास हज़ार रुपये माँग बैठते, चुनाव में परिगणित उम्मीदवार क्यों जीत जाता, और जो बात किसी से नहीं कही जा सकती, प्रेमिका धोबिन उस पर क्यों ख़फ़ा हो जाती ? तीरथ चोट्टि से सुलह करना चाहता था। इसीलिए तो चोट्टि से उसने ज़मीन लेने को कहा था। चोट्टि ने नहीं ली। उस बात को सुनकर तीरथ की पत्नी बोली, "क्यों लेता ? मंतर से तुम्हारा बुरा कर रहा है, तुम्हारी ज़मीन लेकर बाण नहीं चलेगा।" सब बहुत गड़बड़ हो गया। तोहरी जाकर तीरथनाथ ने जिस साधु की शरण ली, तो तीरथ के गाँव लौटते-न-लौटते पुलिस ने उस साधु को दाग़ी आसामी कहकर पकड़ लिया। इसको कहते हैं बुरा वक़्त !

यही सब सोचते-सोचते तीरथनाथ रेल लाइन के किनारे की पतली पट्टी पकड़कर रोज़ चलता था। रोज़ ही माँ कहा करती, "उस बुखार के बाद से कान से सुनायी नहीं देता। कान से सुनने का यंत्र भी नहीं खरीदता, किसी दिन गाड़ी से धक्का खा जायेगा या उसके नीचे दब जायेगा।"

"अरे, मैं क्या रेल के टाइम पर जाता हूँ ?"

लेकिन स्वतंत्र भारत में ट्रेनें भी धीरे-धीरे स्वतंत्र होती जा रही हैं। एक मालगाड़ी चोट्टि से छूटती है और आगे बढ़ती है। ट्रेन की सीटी तीरथ के कान में नहीं पड़ी। चोट्टि गायें लेकर लौट रहा था। उसने यह हाल देखा और भागा, भागकर किनारे आया और तीरथ का पैर पकड़कर

ज़ोर से खींचा। तीरथ पत्थर पर गिर पड़ा। "मारना मत, चोट्टि !" वह चीख़ने लगा और सिर उठाकर देखा कि मालगाड़ी रुक गयी है। चोट्टि ने ड्राइवर को मुंडारी भाषा में धाराप्रवाह मोटी-मोटी गालियाँ दीं और हिन्दी में कहा, "महाराज तो बहेड़ा हैं, कान से सुनते नहीं। जब देखा कि लाइन से हट नहीं रहे हैं, तो गाड़ी को रोक लेते न ?"

गाड़ी चली गयी। चोट्टि बोला, "उठो महाराज, जोर की सीटी नहीं सुनी ?"

"वह जो तीन महीना पहले बुखार आया था...।"

"उठो।"

तीरथनाथ उठा और भयानक विपत्ति से बचने के इतने बड़े आघात से उसकी आँखों से पानी बहने लगा।

"चलो, घर जाओ।"

"कपड़े ख़राब हो गये।"

तीरथ का शरीर कट-फट गया था। सिर की टोपी गिर गयी थी। चोट्टि ने देखा कि तीरथ को जैसे आगा-पीछा नहीं सूझ रहा था, वह भौंचक्का हो रहा था। चोट्टि ने ठंडी साँस लेकर कहा, "कपड़े उतारो। नदी में सब धोकर सफा हो जाओ।"

"पहनूँगा क्या ?"

"कपड़े झाड़ी पर फैला दो, सूख जायेंगे।"

"तू ज़रा रुक ना।"

"ठहरो, गायों को ले आऊँ।"

चोट्टि गायों को लाया। कठिन काम हुआ। नदी के पानी से कपड़े धो, कपड़ों को झाड़ियों पर फैला तीरथनाथ नंगा खड़ा रहा। वह बड़ी मुसीबत में पड़ गया था। चोट्टि ने एक तरफ़ बैठकर बीड़ी सुलगायी।

"चोट्टि !"

"कहो।"

"तू माफ़ कर दे।"

"क्यों ?"

"सोचा था कि तू मुझे मारेगा।"

चोट्टि हमेशा स्वतंत्र स्वभाव का था। तीरथ का काम छोड़कर वह अन्दर से ख़ुद को और भी स्वतंत्र महसूस कर रहा था। वह बोला, "महाराज ! तुम्हारा दिमाग जिस तरह की चिन्ताओं में चक्कर खाता रहता है, मेरा दिमाग वैसा नहीं है। तुम होते तो मुझे मारते, है न ?"

"मैं ?"

"मैंने तुम्हें बचाया।"
"तेरे वाण से मेरी ऐसी दुर्गति हुई है।"
"कैसे ?"
"अभी डाका पड़ा, कांग्रेस ने पचास हजार रुपये लिये, हरमू के जेहल जाने से तुम लोग साथ न रहे, और छगन भी हमें नहीं मानता।"
"महाराज, तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें तीर मार रहा हूँ, तो यह बुरी बात अपने दिमाग से हटा न सकूँगा। और अगर तीर मारूँगा तो सीधे तीर मारूँगा और सीधे थाने में कबूल कर फाँसी ले लूँगा। हाँ महाराज ! मेरा नाम चोट्टि है। तुम जो कुछ कह रहे हो वह पागलपन है। और बाकी बातों का जवाब दूँगा।"
"अब छगन भी जूता पहनता है। छाता लगाता है। बता, इससे मेरा मान रहता है या नहीं, बता ?"
"अगर कोई हाट की डेढ़ रुपये की फटफटिया चट्टी पहने, बरसात के दिनों में सिर पर बाँस का छाता लगाये, उसमें तुम्हारे मान का क्या ?"
"यह नहीं है चोट्टि ! यह जो तुमने जमीन ली है...।"
"उससे ?"
"यह धरम नहीं है। ज़मीन रहती है मालिक-महाजन की। मुंडा-दुसाध ज़मीन के मालिक हों, यह परमात्मा की इच्छा नहीं है। इच्छा होती तो उनको ज़मीनें मिलतीं।"
"तुम ही तो परमात्मा बन गये हो। सब जमीन ले रहे हो, बिना खेती की परती छोड़ दोगे, फिर भी हमें नहीं मिलेगी।"
"मैंने तुम लोगों को इतने दिन नहीं जिलाया ? कहाँ थे चड्ढा ? कहाँ था उसका भाई ? कहाँ था टीशनबाबू ?"
"बहुत जिलाया।"
"तेरे रहते मेरी गद्दी पर डाका पड़ता ?"
"यह तो किसी दिन मुझे सूझा नहीं, महाराज !"
"तू अब नहीं आयेगा ?"
"ना। तुम होते तो जाते ?"
"राम-राम।"
"लो, कपड़े सूख गये, पहनो। और क्या कहूँ ? तुम्हारा धरम का हिसाब एक तरह का है, हम लोगों का दूसरी तरह था। जिस तरह रेल के दो लोहे पास-पास रहते हैं, दोनों मिलते नहीं, मिलने से गाड़ी उलट जायेगी। सो यह भी देवी-देवता की इच्छा होगी कि तुम और हम एक-दूसरे को न समझें। समझने पर...," चोट्टि हँसा, उसे आनंद आया, "समझने पर इतना झगड़ा-फसाद, इतना दुख-दर्द नहीं रहता, लेकिन तुम्हारा भगवान गाड़ी उलटने से डरता है। जाओ, घर जाओ।"
"तो मेरे ऊपर तेरा शाप नहीं है ?"
"शाप भी नहीं, कोई बात भी नहीं। लड़का जेहल गया है, इस दुख को क्या मैं भूल सकता हूँ ? नहीं. झूठ नहीं बोलूँगा, नहीं भूला। लगता है महाराज, तुम होते तो वही करते। जब लाइन पकड़ कर चल रहे थे, तो क्या मैं तुम्हें तीर मार न देता ?"
"आः, तुम्हारे मन में यह आता है ?"
चोट्टि बिगड़ उठा। बोला, "यह कैसा तुम्हारा बचपना है ! मेरी जमीन पर धान होने से तुम्हें लगता है कि जमीन छीन लूँ। फिर जमीन लेने पर मन में आता है कि सारी परती जमीन ख़रीद लूँ, नहीं तो नंगे-कंगालों को जमीन का स्वाद मिल जायेगा। सो मेरे बेटे को जेहल भेजने पर मेरे मन में यह नहीं उठेगा कि झुटपुटे में लाला अकेले घूमने जा रहा है, उसे मार दूँ ? मन में उठा, लेकिन मारा नहीं। उस तरह के खून में जनम नहीं लिया है।"
"अरे बाप रे !" कहकर तीरथ रो पड़ा। बोला, "मैं जा रहा हूँ। मारना मत चोट्टि ! तेरी दुहाई है।"
तीरथ भागा। चोट्टि ने चिल्लाकर कहा, "मारने की इच्छा होने पर जान बचाता ?" इस बात को तीरथ ने नहीं सुना।
सब-कुछ सुनकर बहुत तेज़ गुस्से से उसकी पत्नी बोली, "मेरे बेटे को जेहल भेजा, उसकी जान बचा दी ?"
"वह न होता, मथुरा होता तो भी बचाता। वह कौन है, यह नहीं सोचता। एक जान न चली जाये, वह बात मन में उठी।"
"पत्थर से सिर क्यों नहीं तोड़ दिया ?"
"यह बात मत बोल।" चोट्टि गरज उठा, "मन-ही-मन उसका सिर दिन में बहुत बार फोड़ता हूँ, दस बार झुटपुटे में उसके वदन पर तीर मारकर कलेजा बेध देता हूँ।"
"करते क्यों नहीं ?"
"हरमू वाले मामले के वक्त गोरमैन का अफसर गवाह था, इसी से दारोगा ने हम लोगों को कुत्तों से नहीं नुचवाया। मेरे उसके मारने पर पुलुस आकर मुंडा टोली जला देगी। तब ? मेरे कारन से मुंडा डूब जायेंगे। मैं उसका कारन बनूँगा ? तू बता, यही मेरा धरम है ?"
"समझी। लो, गुड़ और पानी लो। नाती को देखो। उसकी माँ लकड़ी काटने उस जंगल में गयी है।"

"उठाकर कैसे लायेगी ?"

"उसे सब आता है। रस्सी से बाँधकर खींच लायेगी।"

"दे।"

हरमू के बेटे को गोद में लेकर चोट्टि बोला, "ओः, हरमू आकर देखेगा कि उसका बेटा कितनी बातें करता है। जड़ छोड़ गया है।"

"कब आयेगा ?"

"अब आयेगा।"

तीरथनाथ में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। अब वह उस रास्ते घूमने न जाता। गाँव में सब लोगों को वह संभावित रूप से आक्रामक लगा। छगन आदि के साथ वह अब किचकिच न करता और रेल से कटने के संकट से बचने पर घर पर जो नारायण भगवान की पूजा हुई, उसका प्रसाद छगन की टोली में भेजा।

यह पहली आश्चर्यजनक घटना थी। छगन बोला, "महाराज, मरनेवाला नहीं है रे चोट्टि, नहीं तो चंगा कैसे हो गया ?"

"भूत के डर से।"

"किसका भूत ?"

चोट्टि ज़मीन पर थूककर बोला "उसे हमेशा भूत दिखायी देते हैं। मैं उसे मार रहा हूँ, इसी डर का भूत उसे दीखता रहता है।"

"जो भी हो, लड्डू और सत्तू बहुत-सा दिया है।"

"खा ले।"

दूसरी आश्चर्य की बात पानी को लेकर हुई।

सबको बड़ा ताज्जुब हुआ कि फिर चुनाव आने के पहले परिगणित जाति के विधान-सभा सदस्य चोट्टि में आये और उन्होंने घोषणा की कि चोट्टि की जल्दी-जल्दी बढ़ती जनसंख्या की बात सोचकर यहाँ एक स्वास्थ्य-केंद्र खोला जायेगा। जल्दी ही। सबको उस स्वास्थ्य-केंद्र का लाभ मिलेगा। उसके बाद बताया कि इस जगह पानी की तकलीफ़ है। इसलिए छगन के टोले और चोट्टि के टोले के बीच में एक बड़ा सरकारी कुआँ बनेगा। वे ज़ोरदार भाषा में बोले, "पता है, उच्चवर्ग के लोग इस तरह संकीर्ण विचार वाले हैं, छुआछूत में ऐसा विश्वास रखने वाले हैं कि सरकारी कुएँ से भी आदिवासी और परिगणित जाति वालों को पानी नहीं लेने देंगे।" वह इस बात को भी बता गये कि ये उच्च वर्ग के लोग असीम प्रतिक्रियावादी हैं और जवाहरलाल के नेतृत्व में भारतवर्ष की उन्नति के मार्ग में रोड़े हैं। किन्तु आदिवासी और परिगणित लोगों को याद रखना चाहिए कि उसे चुनकर उन्होंने अपनी सुबुद्धि का परिचय दिया है। इसीलिए

स्वास्थ्य केंद्र और कुआँ बन रहे हैं। फिर भी चुनाव में जीतने पर वे चोट्टि तक कच्ची सड़क को पक्की करवाकर चोट्टि को गतिमय जीवन से जोड़ देंगे। यह सब कहकर छगन की बहन के नाती को गोद में लेकर और प्यार करके वे ट्रेन पर चढ़ गये।

और भी आश्चर्य की बात हुई कि स्वास्थ्य केंद्र भी बना और कुआँ भी खुदा। कुआँ देखने से ही पता चलता था कि गर्मियों में पानी सूख जायेगा। फिर भी वह उनका अपना कुआँ था। छगन और चोट्टि आदि बहुत ही खुश हुए और छगन आदि नये कुएँ की जगत पर बैठ 'रामा हो रामा हो' जातीय गान गाते और खुशी मनाते रहे।

तीरथ ने हरबंस से कहा, "छोटी जात के लोग छोटी जात की ही भलाई देखेंगे। इसी से कुआँ खुदवाया।"

"अरे, वह चुनाव में जीता तो अपने लिए। बंजर ज़मीन का दखल लेकर कैसा हंगामा किया ! अब तो ज़मीन पर चिरचिटा घास उग रही है। एक टुकड़ा बंजर ज़मीन के लिए कांग्रेस को नुकसान पहुँचाया।"

"फिर अगली बार भी तो चुनाव आयेगा।"

"तब और कोई गड़बड़ खड़ी करेंगे ? बस तब आप प्रतिपक्ष बन जायेंगे। कह सकेंगे, अंचल से कांग्रेस को हटा दिया।" हरबंस खुश हो रहा था और कह रहा था, "फिर आप बन जायेंगे कमनिस। जो कांग्रेसी नहीं है वह कमनिस है। आपको जेहल में ठूँस देंगे।"

"यह सब तुम क्या कह रहे हो ? प्रतिपक्ष क्या होता है ? यह सारी बातें तो मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं सुनीं।"

"यह क्या, आप अख़बार नहीं पढ़ते ?"

"अख़बार ? क्यों, अख़बार क्यों पढ़ूँ ?"

"देश-विदेश की ख़बरें जानेंगे।"

"न-न, वह सब फैशन मैं नहीं करता।"

"तब ट्रांज़िस्टर क्यों चलाते हैं ?"

"गाने सुनता हूँ।"

"ख़बरें नहीं सुनते ?"

"ख़बरें क्यों सुनूँ ? उन सबकी तुमको ज़रूरत है। मुझे जिस ख़बर की ज़रूरत है, वह मुझे घर बैठे मिल जाती है।"

"एल० एल० ए० ठीक ही कह रहा था। आप जैसे लोगों की ही वजह से इंडिया पिछड़ा हुआ है।"

"क्या कहा ? मैं समझा नहीं।"

इसके बाद की घटना बड़ी आश्चर्यजनक थी। एक शाम को हरमू,

चड्ढा की बस से उतरा। चोट्टि ने देखा कि गाँव के सारे औरत-मर्द, लड़के-बच्चे इकट्ठा होकर उसके घर की ओर आ रहे हैं। उसने समझ लिया कि कुछ मुसीबत आयी है। लेकिन भीड़ के घर के पास आते ही एक आदमी भागता हुआ आगे बढ़ रहा है। सामने आते ही चोट्टि चिल्ला उठा, "हरमू !"

बहुत शोरगुल शुरू हो गया। माँ, बहू, पिता—सबकी बात समाप्त होने पर हरमू बोला, "अच्छी तरह रहता था, काम करता था, इससे चार महीने पहले छोड़ दिया। उस अफसर ने काम किया, अर्जी दी, नहीं तो न होता। तमाम लोग, बहुतेरे मुंडा जेहल में हैं, तो पड़े हैं। क्यों हैं, यह भी भूल गये हैं। उनकी ओर से बात करने वाला कोई नहीं है।"

"कैसे आया ? बस का भाड़ा ?"

"जेहल में काम कराते थे। आने के समय मजूरी का पैसा न देते ? उसी से भाड़ा दिया।"

छगन चिल्लाकर बोला, "हम बस से उतरने पर उसे लेकर आ रहे हैं, अब हरमू घर में घुस गया है, हमें पहचानता ही नहीं। बाहर निकल, हम नाचेंगे, गान गायेंगे।"

"चोट्टि कहाँ है ?"

चोट्टि बाहर आकर हँसते हुए बोला, "कल सब होगा। आज वह राह का थका हुआ है। आज तुम छोड़ दो।"

"ना, मद पिये बिना नहीं जायेंगे।"

"धत् पगले, इतना मद कहाँ है ?"

" 'हाँ' कहो, मद आ जायेगी।"

" 'हाँ' कहा।"

"कहा न ?"

"कहा।"

"यह देखो।"

छगन, पारस, सना, डोनका—सभी ने बोतलें निकालीं।

"जिसके घर में जो था, वह लेकर निकला था ?"

"बिलकुल।"

हरमू की माँ मुरमुरे और मिर्चें ले आयी। हरमू की बहू ने पल-भर में सिर में तेल डाल बाल काढ़कर जूड़ा बाँध लिया था। वह प्याज ले आयी। कोयेल दुकान चला गया। बोला, "मिर्चों की बुकनी मिलाकर अरबी की तरकारी झूरी बेचता है। ले आऊँ।"

खुशी और शोर-शराबे में चोट्टि का आँगन लोगों से भर गया।

दूसरे दिन काम पर जाते हुए तीरथनाथ ने छगन के लड़के से कहा, "बिछुआ, चोट्टि का लड़का घर आया। उससे मुंडा लोगों के साथ तुमने भी खुशियाँ मनायीं।"

"बहुत नहीं महाराज, थोड़ा मजा किया।"

"अपना जात-धरम पानी में डाल रहे हो !"

"नहीं महाराज !"

"जैसा समझो ! अच्छी बात नहीं मानते, इसी से तुम लोगों का अभाव दूर नहीं होता।"

"रस्सी दीजिये, महाराज ! घेरा बाँध दूँ।"

हरमू को लेकर चोट्टि दूसरे दिन सवेरे ही जमीन दिखाने गया।

"यह जमीन हम लोगों की है।"

"तीनों भाइयों की ?"

हरमू पिता के पैर छूकर जमीन पर औंधा होकर लेट गया। थोड़ी देर बाद चोट्टि बोला, "रो क्यों रहा है ? तू लड़का है न ? पैर छोड़। काम पर चलेंगे।"

"चलो, मैं भी चलूँ।"

"अभी जमीन से जो हो सके, कर। अब मुझसे नहीं होता। अब मन थोड़ी शान्ति चाहता है। अब झंझट अच्छा नहीं लगता।"

"अब मैं आ गया। तुम थोड़ा आराम करो न।"

"तेरी कमाई खाऊँगा ?"

"कोई खाता नहीं है ?"

"अभी मेहनत कर सकता हूँ, मेहनत करूँगा। तीर के खेल का अभी जुलूस उठा। जीत में रुपया मिलने पर और ले सकोगे।"

"जमीन तो बहुत है।"

"नहीं। बहुत जमीन कहाँ है ?"

"कहते क्या हो, बंजर जमीन की कमी है ?"

"मेरे जमीन लेते ही लाला को डर हुआ। लगा कि हमें जमीन का चस्का लग गया है। उसे लगा कि चोट्टि और भी कोई जमीन ले रहा है। बस तभी से जितनी बंजर जमीन है, लिये ले रहा है। बस उस फल के व्यापारी अनवर को जमीनें नहीं मिलीं।"

"खेती के लिए दे रहा है ?"

"कभी देता है ?"

"तब जमीन ली क्यों ?"

"कम जमीन पर फसल होगी, जादा लोग भूखे रहेंगे। उससे वह

करज दे सकेगा, और जो छुट्टा हैं, उनके रिश्तेदारों को बेगार में लेगा।"

"जेहल में बहुतों से बहुत बातें सुनीं। लिखत-पढ़त होने से क्या नहीं होता? कागज अदालत में जाकर पक्का करना पड़ता है।"

"नहीं तो?"

"नहीं तो वह कागज कच्चा रहता है।"

"अगर अदालत करने जायेंगे तो वकील धोखा देगा।"

"छगन या पहान को साथ लेने पर?"

"देखूँ। पर मैं कहता हूँ कि कुछ बरस देख लूँ। जमीन तो कमजोर बीमार बच्चा देने वाली औरत है, बीमार धान बियाती है। तेरी मेहनत से उसकी ताकत बढ़ने पर, अच्छी फसल होने पर ही इस जमीन का कागज पक्का किया जायेगा। नहीं तो अनवर की जमीन लेने की कोशिश करूँगा और कागज भी पक्का करूँगा।"

"देखें। मैं तो आ गया हूँ।"

"हरमू! मैं बड़ी उमर का हो गया। अब मन शान्ति चाहता है।"

"और मुंडा लोग, छगन आदि भी घर आते-आते कह रहे थे कि उनके मन में भी आशा हो रही है कि अनवर की जमीन लेने की कोशिश करेंगे।"

"विचार तो बहुत अच्छा है। लेकिन होगा भी?"

बाद में सब सुन-सुना कर पहान बोला, "पता नहीं। पर यह देखता हूँ कि तू जो करता है, सब वही करते हैं।"

"क्या देखते हो?"

"मुंडा मद में मरते हैं, और रंगीन चीजें मोल लेते हैं। पहले मुंडा लोग इतनी मद नहीं पीते थे। तीज-त्योहार पर बनाते थे, पीते थे। अब सरकार का ताड़ीखाना है, खरीदकर भी पीते हैं। बीरसा भगवान का नाम मालूम है?"

"मालूम है।"

"वह हरमदेउ पहान नहीं मानता था। किन्तु एक अच्छी बात कही थी, मुंडा लोग मद नहीं पियेंगे।"

"बीरसाइत नहीं पीते!"

"अच्छा करते हैं। ब-हो-त अच्छा करते हैं। तू पीता है, मैं पीता हूँ। अल्लम-गल्लम पियेंगे। यह क्या है? शरीर पानी-सा पैसा उड़ा देता है?"

"क्या कह रहा था?"

"यही कि तू जमीन लेने के बाद एक-एक कर आकर मुझे बताना, तब मैं भी ले सकता हूँ। कागज लिखा कर। मैं यह मौका देख रहा हूँ। सो हर एक से कह रहा हूँ। हाँ, ले सकता है। फिर भरसक मेहनत करो। सना की

तरह आटा उबाल कर बाँस के खोल, टीन के डिब्बे में रुपये जमा करो। आकर मुझे हिसाब देंगे, किसने कितना जमा किया। मैं लिखूँगा। उससे देखूँगा कि थोड़ी अच्छी अकल आ रही है। तेरा ससुर, वह डोनका तो बज्रमूर्ख है। उसने भी यह बात सुनीं।"

"पहान!"

"कहो।"

"एक बात मन में आ गयी है। तुम तो कुछ हिन्दी लिखना-पढ़ना जानते हो, गिनती भी आती है। दिन-भर काम-काज में कटता है। लेकिन शाम को तो मुंडा लड़कों को थोड़ा सिखाया करो!"

"सीखेंगे? सरकारी इसकूल में नहीं जाते?"

"सरकारी इसकूल में ये मुंडा जायेंगे? तब दिकू लड़के नहीं पढ़ेंगे, और छगन आदि के लड़कों के जाने पर भी मास्टर भगा देगा। कहेगा छोटी जात, छोटा काम करो, पढ़कर क्या करोगे? सो मुझे लग रहा है कि दिन बदल रहे हैं। पढ़ाई-लिखाई मुंडा नहीं करेंगे। सदर में मिशन से पढ़ना सीखकर लड़कियाँ मजदूरी का काम करती हैं। अब तो मजदूरी के काम में भी जादा पैसा है।"

"वह सदर में है। यहाँ उनके क्रिश्न-महादेव-कालि बलि देते हैं। बारह आने से ऊपर नहीं जाते।"

"सदर का हिसाब सदर में। किन्तु अकेला मुंडा लड़का थोड़ा सीख-कर हिसाब समझे। लिख भी सकता है?"

"लड़के आयेंगे?"

"यह उनके माँ-बाप देखेंगे।"

"हो सकता है। छगन भी जानता है।"

"वह अपने लड़कों को सिखाये। छगन के पास हमारे लड़के गये, या तुम्हारे पास उनके लड़के आये, चड्ढा, लाला—सब बातें करेंगे कि ये लोग और वे लोग एक होकर बलोया आन्दोल शुरू कर रहे हैं।"

"तू देख। तेरे कहने से सुन सकते हैं।"

"एक बात और है।"

"चावल दे रहा है?"

"हरमू के खेत के धान-चावल। कोई खाता नहीं। उसके आने पर धान कूटे गये। पहले तुम्हें दिये।"

पहानी बोली, "अब तो चिड़िया, खरगोश नहीं लाता?"

"मिलते कहाँ हैं? सब मार दिये गये हैं।"

अनवर की ज़मीन नहीं मिली। अनवर अन्त तक चोट्टि आदि से ज़मीन

खुदवाता और पपीते के पेड़, अमरूद के पेड़ लगाता। लेकिन मुंडा लोगों में जमा करने की आदत पड़ गयी। पहान की बहुत अधिक मेहनत से हरमू के बड़े लड़के सहित तीन लड़कों ने वर्णमाला पहचान ली। आसान जोड़ना-घटाना सीखकर आँवले के बीज गिनते थे। चोट्टि के लिए यही बड़ी बात थी। छगन भी विद्यादान के प्रति उत्साहित हुआ, लेकिन बहुत अधिक मार-पीट के कारण उसके छात्र भागते रहे। चोट्टि के बारे में नयी-नयी किंवदन्तियाँ फैलीं। अन्त में अकाल के साल श्रमदान के बदले खैरात मिलने की व्यवस्था होने पर खुद तीरथनाथ और हरबंस ने अफ़सर से कहा, "चोट्टि मुंडा को बुलवा लीजिये। वह भार लेकर काम कर लेगा। राह निकल आयेगी। कच्चे रास्ते की मरम्मत वे कर सकेंगे।"

"सिर्फ़ मुंडा ही क्यों?"

"और लोग भी चोट्टि की बात मानेंगे।"

चोट्टि के बारे में यह बात कहने के मानी थे कि वह यहाँ मुंडा और छोटी जाति वाले हिन्दुओं के निकट एक-सा महत्त्वपूर्ण है—यह मान लिया गया है।

अफ़सर ने पूछा, "लीडर है क्या?"

हरबंस ने कहा, "राजनीतिक लीडर नहीं है। लेकिन होशियार आदमी है। लालाजी की बात का तो पता नहीं, मैं तो उसे आगे रखकर काम करना पसन्द करता हूँ। पानी हो, गर्मी हो, ठंडक पड़ रही हो, चोट्टि सबको लेकर काम पूरा कर देगा।"

तीरथनाथ ने लम्बी साँस छोड़कर कहा, "हाँ।"

दिन-पर-दिन चोट्टि की उमर बढ़ती चली गयी। सोमचर की दूसरी शादी हुई, एतोया का ब्याह हुआ। चोट्टि की उमर उस दिन याद आयी जब कोयेल ने कहा, "दादा! मेरा सिर बहुत दरद कर रहा है, बदन मानो जला जा रहा है। अन्दर सब खिंच रहा है, और सब ओर अँधेरा लग रहा है।"

बारह

उस समय संध्या थी। चारों ओर अँधेरा उतर रहा था। वर्षा का समय था। चोट्टि नदी में धार गरज के साथ बह रही थी। 1970 का साल था। चोट्टि ने कोयेल को चारपाई पर लिटाने और सिर धोने को कहा।

कोयेल दोनों ओर सिर हिला रहा था और कह रहा था, "दादा, एतोया के कुछ अकल नहीं है, उसे देखो।"

"चुप हो जा, कोयेल! सिर पर पानी डाल रहा हूँ।"

"सिर दुख क्यों रहा है?"

"बुखार उतरने पर आराम हो जायेगा।"

"सब जैसे अँधेरा है।"

"पानी पी।"

पानी की उल्टी हो गयी और कोयेल सहसा 'दादा रे' कहकर चिल्लाया और बेहोश हो गया। अब चोट्टि को लगा कि वह बहुत असहाय है और उसकी उम्र तीन कोड़ी और दस हो चुकी है।

हरमू बोला, "अस्पताल ले चलें?"

"वही करना होगा। लेकिन अभी सिर पर पानी डाल।"

सिर पर पानी डालने से कमरे की जमीन भीगकर कीचड़ हो गयी। कोयेल को होश नहीं आया। चोट्टि ने अब शरीर से अपनी उम्र झाड़ फेंकी। बोला, "मचान काटो। छगन की ठंडी पड़ गयी बुढ़िया माँ अस्पताल से अच्छी हो कर आ गयी।"

"डाक्टर पैसा लेगा, आबा!"

"मैं जा रहा हूँ। बहुत होगा तो पैसा दूँगा।"

मुंगरी रुलाई रोककर बोली, "बुखार सवेरे हुआ था। जबरदस्ती हाट गया था। बहुत रोका, पर नहीं माना।"

बेहोश कोयेल के पास मुँह ले जाकर चोट्टि बहुत परेशानी में बोला, "कोयेल, तुझे अस्पताल लिये जा रहा हूँ। तुझे अच्छा कराकर ले आऊँगा।"

मचान काटा गया। कोयेल को लिटाकर चोट्टि ने कथरी उढ़ा दी। कहा, "पानी उतर सकता है। उसे एक हाथ से दबाये रखना। अचानक होश आने पर चौंक पड़ सकता है, गिर जायेगा।"

मचान लेकर वे लोग निकले और संभल-संभल कर चले। चोट्टि के मुँह में बोली नहीं थी। स्वास्थ्य-केन्द्र उनके घर से डेढ़ मील दूर था। हरमू का लड़का हाथ में लालटेन लिये साथ में गया। चोट्टि की पत्नी ने पुकार कर कहा, "मैं चलूँ?"

चोट्टि बोला, "नहीं, नहीं, घर पर रह।"

डॉक्टर को उसके घर से बुलाना पड़ा। कोयेल की गरदन अकड़ गयी है, यह देखकर डॉक्टर का चेहरा उतर गया। वे बोले, "चोट्टि, कोयेल को बड़े अस्पताल में ले जाना होगा। मेरे पास कोई दवा, कोई इंजेक्शन नहीं है।"

"उसे क्या हो गया है ?"

"लगता है मेनिन्जाइटिस—गरदन-तोड़ बुखार—है।"

"उसमें आदमी बच जाता है ?"

"बड़े अस्पताल ले जाओ।"

लड़के चोट्टि की ओर देखने लगे। इस समय उनकी मानसिक घबराहट के प्रतीकस्वरूप बरसात होने लगी। चोट्टि ने पल-भर सोचा और कहा, "तोहरी के अस्पताल तो ले जाऊँगा, पर गाड़ी तो सवेरे है।"

"यह तो है।"

चोट्टि को मानो अचानक बिजली छू गयी हो। वह बोला, "तुम लोग उसे लेकर आओ। मैं जा रहा हूँ। देखो, झटका न लगे।"

"कहाँ जा रहे हो, बड़े आबा ?" एतोया बोला।

"मालगाड़ी रोक रहा हूँ। अस्पताल तक जिस तरह जिन्दा रहे वैसी सुई-दवाई नहीं दे सकते, तो डाक्टर कैसे हो ?"

डॉक्टर जवान था और अभी तक लोगों के दुख-दर्द को समझता था। बोला, "दे रहा हूँ। तुम जाओ। मैं भी उसके साथ आ रहा हूँ। अस्पताल के लिए चिट्ठी भी दूँगा।"

चोट्टि स्टेशन की ओर भागा और उसने स्टेशन-मास्टर को पकड़ा। अन्त में असम्भव सम्भव हुआ। कोयेल मुंडा को लेने के लिए मालगाड़ी रुकी। गार्ड के कमरे में कोयेल को लिटाया गया। स्टेशन-मास्टर बोले, "तुम्हारे कहने पर यह काम किया, और कोई होता तो न करता।"

"हाँ महाराज !"

गाड़ी में बैठकर चोट्टि बोला, "हर घड़ी मालगाड़ी रुककर लाला को पहुँचाती है, अब कह रहा है कि तुम्हारे लिए रोकी है।"

गार्ड बोला, "तुम्हारे लिए भी तो रोकी।"

"जरूर, मैं यह नहीं भूलूँगा।"

"आदमी अच्छा है।"

"हाँ महाराज !"

तोहरी उतरकर वे अस्पताल गये। डॉक्टर को कागज दिखाकर कोयेल को भरती किया गया। देखते ही डॉक्टर बोले, "एक और महामारी का केस।" उसका चेहरा देखते ही चोट्टि का चेहरा उतर गया।

"बच जायेगा, महाराज ?"

"जाओ-जाओ, हमको काम करने दो।"

चोट्टि आदि बाहर बैठ गये और चोट्टि बोला, "हरमू, सुन।"

"क्या, आबा ?"

"[illegible] और एतोया चले जाओ।"

"अभी ?"

"जाना तो होगा ही बाप ! समझते नहीं, अब कोयेल नहीं उठेगा। डॉक्टर का चेहरा देखकर मैं समझ गया।"

"देखें, क्या करता है।"

"दादा बिना कुछ सूझ नहीं पड़ता।"

बरसात होने लगी। राह देखते-देखते रात दुस्सह हो गयी। सवेरे चोट्टि को वार्ड के बेयरा से बहुत-सी बातों का पता चला। यह बीमारी बहुत हो रही है। अस्पताल में सात केस आये थे, कोई ज़िन्दा नहीं लौटा। अब चोट्टि का भाग्य है। बीमार कैसा है ? ज़िन्दा है। बेहोश। डॉक्टर कोशिश कर रहा है।

दोपहर को कोयेल मर गया। दादा के सिवा वह और कुछ नहीं जानता था। माँ कह गयी थीं कि दोनों भाई एक साथ रहोगे। चोट्टि के मेले में जीतने पर वह भी नाचा था। डोनका की खुशामद कर एक कुर्ता हाट में खरीदा था। दादा क्या कहेंगे, इसलिए उसे कभी पहना नहीं। घर चलाने में हरमू की माँ का दाहिना हाथ बनकर मेहनत करता था। हरमू के जेल जाने पर दो दिन तक कुछ खाया नहीं। मुसीबत के दिनों में दोनों भाई एक ही कपड़ा फाड़कर पहनते थे। सदा ही मुसीबत के दिन थे। अपने खेत के धान निकलते देखकर बोला था, "दुख के दिन बीत गये हैं न, दादा ?" वह दादा के सिवा किसी को नहीं जानता था।

हरमू और सोमचर गाँव चले गये। मुंडा लोगों को लेकर लौटते-लौटते शाम हो गयी। रोते-रोते एतोया सो गया। चोट्टि जागता रहा। [illegible] से क्या कहेगा ? कोयेल के लिए रोने पर अगर कहे, वह तो मर गया। तो उसे अस्पताल क्यों ले गये ?—तब क्या कहेगा ? चोट्टि को नींद नहीं आ रही थी। याद भी नहीं रहा कि कल तड़के जागे थे, आज अभी तक आँखें एक बार भी नहीं झपकीं। कलेजे में बड़ी बेचैनी थी। चोट्टि को पता था कि कोयेल को समाधि दिये बिना उसकी आँखों में नींद नहीं आयेगी। उसके सामने अब बहुतेरे काम थे। सना आदि आ गये। डोनका बोला, "तू टरेन से चला जा। एतोया भी जाये। हम ले आयेंगे।"

"ना, पैदल ही जाऊँगा।"

"बहुत समय लगेगा।"

"अब क्या जल्दी है ? अब समय बचाकर क्या होगा ?"

चोट्टि को बहुत शान्त देखकर सना बोला, "कलेजे पर पत्थर रख दिया गया है।" यह बात सुनकर चोट्टि मुसकराया और चटाई मोल लाकर

घर की छत की तरह किसी तरह छत बनायी। उसे कोयेल के उपर छा दिया। बोला, "मेह बरसने पर पानी बहकर निकल जायेगा नहीं तो भीगने से और भी भारी हो जायेगा।"

राह में पानी बरसने लगा। राह अँधेरी, पर जानी हुई थी। जानी हुई राह आज ख़तम ही नहीं हो रही थी। बिजली के प्रकाश में राह देख-देख भोर के लगभग वे गाँव पहुँचे। क्लान्त एकरस रुदन ने उनका स्वागत किया। घर में घुस कोयेल को उतारकर चोट्टि बोला, "बास आ रही है। दवाई की बास के ऊपर बास आ रही है। पहान को बुलाओ।"

नहलाकर और नये कपड़े पहनकर कोयेल मुंडा को नये खटोले पर लिटाकर मुंडा लोगों के श्मशान ले जाया गया। उसकी मृत देह के लिए चावल, पैसे, नया गमछा साथ में रखकर पहान की सहायता से उसे समाधिस्थ किया गया। घर आकर चोट्टि बोला, "तुम जाओ, अब मैं कोयेल के लिए रोऊँगा,। मुंगरी, तू बुरा मत मानना। अब तू मेरी बेटी है। लेकिन मेरी देह से मानो जान निकल रही है। बिना रोये मैं मर जाऊँगा।"

सब रो रहे थे। हरमू की माँ बोली, "मेरी ही उमर का रहा होगा, पर कभी भूल से भी कड़ी बात नहीं कही। किसी दिन घर के बाहर सोया नहीं, मेरे पकाये बिना खाता नहीं था। ऐसी बदरी में तो सियार भी नहीं निकलता, वह कैसे श्मशान में लेटा है?"

रोते-रोते वे सो गये। चोट्टि को नींद आने में अब भी विलम्ब हो रहा था। लगता था कि अब उससे कुछ न हो सकेगा, कोई भी काम नहीं। बहुत उमर हो गयी थी। अब याद आया, बाप ने मरते समय कोयेल से कहा था, अनाथ तो नहीं हुआ? दादा है न? अस्फुट स्वर में बोला, "बड़ा भरोसा किया था। दादा, तुझे बचा न सका।" उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। बाहर बारिश की आवाज़ थी। समाज के आगे श्मशान में पत्थर लगायेगा, इस आशय की बात चोट्टि ने अस्फुट स्वर में कही। कोयेल अब उसके बहुत समीप था। वर्षा के समान ही घन और सिक्त, और चराचरव्यापी। "तू सोच मत कर। एतोया, मुंगरी—सबको कलेजे से लगाकर रखूँगा," चोट्टि ने कोयेल से कहा। "जमीन जितनी हरमू और सोमचर की है, उतना ही एतोया का उस पर हक है," चोट्टि ने फिर कहा। अब सहसा सुनायी पड़ा किसी का ऊँ-ऊँ-ऊँ मौन रोना, किसी का ज़ोरों से रोना। समझ में आया, बड़ी आशा के साथ चोट्टि ने दरवाज़ा खोला, कोयेल आया है?—बुड्ढा कुत्ता घर में घुस आया। बरसात में भीग गया था। चोट्टि ने कुत्ते को प्यार किया और सहसा बच्चों की तरह

रो गया। दूसरे दिन सवेरे धरती पर उजली धूप फैली थी। समय पर नींद खुलने पर बाहर खड़े होकर पेड़ों के नहाये पत्ते, उजली धूप देख कर चोट्टि का कलेजा फट गया। घर के छप्पर के बाँस को दोनों हाथों से पकड़ कर वह हो-हो कर सान्त्वनातीत शोक में रोने लगा। कोयेल नहीं है—सारा खालीपन चोट्टि के परिवार में था, दुनिया-भर में कहीं भी ख़ालीपन न था। बाक़ी सब जैसा का तैसा रहा!

बाद में पहान ने कहा था, "सीधे अस्पताल ले गया चोट्टि। लगता है हवा लग गयी। मुझे तो एक बार भी नहीं दिखाया।"

सना को चोट्टि ने बताया कि अस्पताल में बहुत लोग मर गये। उसके बाद बोला, "अब तो अस्पताल में जादू-मंतर दिखायी दिया। चेचक नहीं होती, हैजे में मरा आदमी जी जाता है। पहान से मत कहना। वह मानता नहीं, इसलिए। तब लगता था कि अब देरी नहीं करना चाहिए।"

जादू की हवा की धारणा बेकार हो गयी, क्योंकि गरदन-तोड़ बुखार की महामारी में तीरथनाथ के गुमाश्ते का लड़का, स्टेशन-मास्टर की लड़की, खूबलाल की पत्नी मर गये। सना समझदार की तरह बोला, "बीमारी अच्छी नहीं है।"

कोयेल की समाधि पर उपयुक्त अनुष्ठान के बाद पत्थर स्थापित हुआ। चोट्टि बोला, "मेरे मरने पर वहाँ मेरा समाज हरमू देगा। कोयेल के ही पास।"

समाधि की जगह सुन्दर थी। पियाल के पेड़ों से घिरी, छायादार।

अब चोट्टि मुंडा के जीवन की कहानियाँ पारलौकिक होती जा रही थीं। मुंडा स्त्री-पुरुष सारे अंचल के गाँव-गाँव में बच्चों को लोरियाँ सुनाया करती थीं कि एक चोट्टि मुंडा है। तीर मार कर उसने लाला को काबू में कर रखा है, उसके डर से गौरमेन ने कागज बनाकर उसे जमीन दी है। भाई को जब बीमारी हुई, तीर चलाकर चोट्टि ने रेलगाड़ी रोक दी। वह सब कर सकता है।

कोयेल की मृत्यु के बाद बहुत दिनों तक चोट्टि मानो सब से ज़्यादा उदासीन रहा। मुंगरी ने एक दिन रूखे बालों में तेल लगाया, धोने के कपड़े सोडे में उबाल कर नदी पर धोने गयी। हरमू की माँ आँगन में मिर्च-बैंगन-कुम्हड़ा देखने में लगी थी। हरमू, सोमचर और एतोया ज़मीन पर गये थे। हरमू की लड़की एतोया के लड़के को देख रही थी। एतोया की बहू रसोई बना रही थी। हरमू और सोमचर दोनों की बहुएँ बकरी चराने गयी थीं।

हरमू का बेटा गाय-बैल लेकर गया था। चोट्टि के यहाँ बहुत काम था। धूप, बरसात में काम, सिर के लिए छाते बिनने होंगे, लालटेन रँगवा कर लाना होगी, हल के दो मुट्ठे तैयार करना होंगे। वर्षा तो बीत गयी। फिर काम पर निकलना होगा। लेकिन सब मानो हमेशा सूना-सूना लगता। वह यह सब करता।

गृहस्थी का काम बेरोक-टोक चलता। चोट्टि की पत्नी ने रात में कहा, "मुंगरी के मन में अब अधिकारबोध हो रहा है। अपनी बात सोचती है।"

"कैसे ?"

"कहती है मैं मुर्गी पालूँगी, अंडे बेचूँगी, पैसे जमा करूँगी। अब से अपनी बात खुद सोचना पड़ेगी। वह नहीं। लड़का तो बुद्धू है।"

"जो चाहे करे।"

"उसे समझा कौन रहा है ? एतोया की बहू।"

"क्या समझा रही है ?"

"उसके बाप की जमीन है। वह बाप की छोटी बेटी है। भाई नहीं है, दोनों बहनों का हक है। इसलिए वहाँ जाकर रहना है।"

"तू या मैं उससे जाने को नहीं कहेंगे। खुद जाना चाहे तो जाये।"

"घर टूट जायेगा ?"

"टूटे तो टूटे।"

"तुम कुछ न कहोगे ?"

"न, कुछ नहीं कहूँगा। इतने दिनों तक सुख-दुख काटने के बाद अगर उसके मन में आये तो उसकी ससुराल है। हमसे जादा वह अपनी बात सोचती है।"

"दो महीने नहीं हुए।"

"तेरा मन दुखी होता है ?"

"बहुत। सत्तू का सरबत नहीं पी सकती, वह अच्छा लगता था।"

"अब सो जा।"

चोट्टि को लगा, कोयेल न जाता, वही चला जाता तो अच्छा होता। मुंगरी की बातें सुनकर उसे अच्छा नहीं लगा। कहने से मुंगरी रुक जायेगी, इसका उसे विश्वास था क्योंकि हरमू की माँ झूठ बात नहीं कहती, भले ही बीच-बीच में जो कहे। मुंगरी के कामों में कोई दूसरा भाव नहीं दिखायी पड़ता था। मुर्गी पालने का काम बहुत दिनों से अपने ऊपर ही लिया था। अंडे बेचकर पैसे वह रखती थी या नहीं, यह चोट्टि ने पूछा भी नहीं। किन्तु एक दिन उसे ताज्जुब में डालते हुए एतोया ने पैसों से भरा एक टीन का

डिब्बा लाकर दिया। कहा, "माँ ने और जमीन लेने को कहा है। इसमें माँ ने ग्यारह रुपये दस आने जमा किये हैं।"

"माँ ने जमीन लेने को कहा है ?"

मुंगरी आकर खड़ी हो गयी। वह घास की रस्सी बट रही थी। मटके पर उस रस्सी को लपेटकर पानी छिड़कने से मटके का पानी ठंडा रहता। घास का छप्पर बनाने में डोरी लगती, कलसी की गेंडुली भी बनती है। घास बटते-बटते ही शान्त और सहिष्णु, थोड़ी वेदना से भरी आँखें उठाकर चोट्टि की बहू से बोली, "घर में तीन लड़के हैं। वे कह रहे थे और भी जमीन लेंगे।"

"कोयेल कह रहा था ?"

"हाँ।" मुंगरी ने लदे पशु की तरह सिर हिलाया और चोट्टि ने अब देखा, मुंगरी की सफ़ेद आँखों में आश्चर्यजनक रूप से गहरी वेदना थी। मुंगरी बोली, हरमू की माँ की ओर देखकर ही बोली, क्योंकि वह बहुत जरूरत के बिना चोट्टि से सीधे-सीधे बात नहीं करती थी। मुंगरी ने कहा, "कहते थे, मैं और दादा जब नहीं रहेंगे, कौन इस तरह प्यार के साथ रहेगा, यह किसे पता ? हो सकता है कि अभाव के मारे घर छोड़ जायें। इसीलिए हर एक की जमीन रहने से फिकर नहीं रहेगी।"

"जो जमीन है उससे भी फिकर नहीं रहेगी।" चोट्टि बोला।

"सोमनि, एतोया की बहू बाप की जमीन की बात कर रही थी।"

"मैं एतोया से बातें करूँगा।"

अब मुंगरी ने बहुत साफ़-साफ़ कहा, "एतोया को अकल नहीं है।"

"मैं कहूँगा।"

"उसने दादा को पकड़ रखने को कहा था।"

चोट्टि धीरे-धीरे बोला, "जमीन की तलाश करूँगा। अभी तो जमीन दिखायी नहीं पड़ती। अभी पैसा रहने दे। मुर्गी से पैसे जमा होंगे। जरूरत पड़ने पर ले लूँगा।"

हरमू की माँ ने डिब्बा अपने हाथों में ले लिया और मुंगरी का हाथ पकड़कर दूसरी ओर ले गयी। चोट्टि समझता था कि मुंगरी के मन में अभी भी बहुत शोक है। ज़ोर से बोला, "मेरे रहते एतोया जो कहे वह न होगा। मैं उसके ससुर से बात करूँगा।"

सब कुछ सुन-सुनाकर पहान बोला, "बात बुरी क्या है ? उसके ससुर परमा की चार बीघा जमीन एतोया न लेगा तो उसके भाई के लड़के ले लेंगे। तेरे 'ना' करने से एतोया नहीं लेगा। फिर बाद में उसके मन में दुख उठ सकता है कि जमीन उसकी हो सकती थी, कि मैं खेतिहर हो सकता

था, बाप के बड़े भाई ने बनने न दिया।"

चोट्टि के मन में बात बैठ गयी। वही बात उसने मुंगरी को बतायी, पर मुंगरी ने अटल ज़िद में सिर हिलाया और कहा, "वैसा नहीं होने दूँगी।"

प्रश्न जैसा का तैसा रह गया। इसी तरह जीवन चलता रहा। सोमचर, एतोया, जिता और दुखन ने फिर मेलों में जाना शुरू किया। कभी जीतते भी थे। जिता कहता था, "यह काम नहीं छोड़ूँगा। चोट्टि गाँव का नाम चोट्टि मुंडा ने ऊँचा किया। सो कोई नहीं जीतेगा तो नाम डूब जायेगा।"

इसी तरह दिन चलते रहे। पेड़ों के काटने का काम अब दूर-दूर के जंगलों में चलता था। उन जंगलों में लकड़ी काटने जाने पर चोट्टि नरसिंगगढ़ के मुंडाओं से मिला। वह बहुत ताज्जुब में पड़ा। बोला, "तुम लोग यहाँ ?"

मुंडा लोगों के नामों में विविधता बहुत कम थी, लेकिन प्रथम विश्व-युद्ध में समय में उत्पन्न अखबार पढ़ने वाले मास्टर के नाम देने से एक का नाम पड़ा जर्मन मुंडा। उसने जर्मन नाम ही रहने दिया, और वार का नाम बुधना छोड़ दिया। उस जर्मन मुंडा ने कहा, "क्यों ?"

"पेड़ काट रहा है ?"

"तुम्हारी अक्ल से हम जिन्दा रह गये।"

"कैसे ?"

"तुमने राह दिखायी। पहले हिम्मत नहीं होती थी।"

"कैसे, बता तो ?"

"पहले सोचा भी नहीं था कि मालिक का काम करते हुए दूसरा काम भी कर सकते हैं। तुम्हें आगे रखकर चोट्टि गाँव ने राह दिखायी। अब सारे गाँवों में सब मुंडा बेगार भी देते हैं, मालिक की खेती भी देखते हैं—सब देखभाल करते हैं। उसके बाद पेड़ काटने के काम में भी लग गये। सवा रुपया रोज कमाई भी होती है।"

"खाली मुंडा हैं ?"

"वे लोग भी कर रहे हैं।"

"अच्छा है।"

"हमारे कुछ लड़के ठेकेदार की लकड़ी चीरने के कारखाने में गये हैं। वे और अधिक कमाते हैं—दो रुपया रोज। ठेकेदार भी खुश है, क्योंकि आदिवासी कामचोरी नहीं जानते। हम भी खुश हैं।"

इससे चोट्टि को बहुत खुशी हुई और कोयेल के लिए जो बहुत अधिक दुख था वह कुछ कम हुआ। जर्मन मुंडा बोला, "तुमने और भी राह

दिखायी। हमारे भागत मुंडा और नागु मुंडा ने बंजर जमीन ली है। कागज भी हो गया। हम भी उसी के सहारे आशा में हैं। जंगल के भीतर जमीन है।"

"देगा ?"

"कहता था कि पाँच बरस के लिए दे सकता है।"

"उसके बाद ?"

"हमें ही देगा। पर नये सिरे से जमा लेना होगा, और बेसी रुपयों में भी। जो भी हो जमीन उपजाऊ होगी।"

"ऐसा है ?"

"अभी मालिक थोड़ा नरम है।"

"विश्वास नहीं है। फिर भी ले लो।"

"देखा जाये। तुमने हम लोगों के लिए बहुत किया।"

"मैंने क्या किया ?"

"तुमने ही किया। तुम्हारे नाम पर भागत ने बहुत गाने बनाये हैं। किसी दिन ले जाऊँगा, सुनवाऊँगा।"

"सुनूँगा।"

कुछ महीने बाद भागत और नागु कुछ मक्का लाकर चोट्टि को दे गये। कहा, "हमारे खेत की फसल है।"

"तुम पागल हो। मुझे क्यों दे रहे हो ?"

"तुम्हारे खाने से हमें अच्छा लगेगा।"

इसी तरह चोट्टि की उम्र तीन कोड़ी और बारह हो गयी। एतोया का ससुर मर गया, इसलिए चोट्टि उस गाँव में गया। मुंगरी को समझा-बुझाकर अब उसने एतोया को वहाँ भेजा। कहा, "अब उसे जाना होगा। उसकी बहू क्यों बाप की जमीन से वंचित हो ? जब जैसी हालत हो तब वहाँ वैसा काम करना चाहिए। नहीं तो आदमी बुद्धू बन जाता है।"

एतोया बहुत कातर हो गया और चोट्टि से बोला, "मुझे दूर हटाये दे रहे हो, बड़े आबा ? मेरा बेटा तुम्हारी छाँह में बड़ा नहीं होगा ?"

चोट्टि प्यार से बोला, "पागल हो गया है, बेटा ? तू मेरे कोयेल का बेटा है, तुझे मैं दूर हटा सकता हूँ ? तू जहाँ रहेगा, वह मेरा घर होगा। चोट्टि गाँव के सिवा और कहीं भी जाने का ठौर नहीं था, अब जाने को एक जगह और हो गयी। तुम आओगे, मैं जाऊँगा। तेरे ससुर के भैंस भी है। वहाँ जाकर दही खाऊँगा।"

मुंगरी किसी तरह जाना नहीं चाहती थी। अन्त में चोट्टि बोला, "तुम दोनों सासें जाओ। जाकर गृहस्थी ठीक कर आओ। घर में बहुएँ हैं, राँध

देंगी, खाने को दे देंगी।"

"रहेंगे नहीं।"

मुंगरी बोली, "रहेंगे नहीं।" लेकिन काम के समय वह और हरमू की माँ तीन रात रह आयीं। चोट्टि मुंडा की पत्नी और भौजाई होने के कारण उनकी ख़ूब ख़ातिर हुई। एतोया की सास बोली, "इस दामाद को लाने के लिए मेरा मन बड़ा दुखी था। इसके आने से इसके ताऊ आयेंगे। मुझे कितना पुण्य होगा। वह अब सबके सहारे हैं। तुम यहाँ परब पर आकर देखोगे कि उनके नाम पर कितने गान होते हैं।"

मुंगरी से उन्होंने रुक जाने को कहा, पर मुंगरी बोली, "घर छोड़कर नहीं रह सकती। वे एतोया की बड़ी माँ के राँधे बिना खा नहीं सकते, एतोया का बाप कह गया है कि घर कभी न छोड़ना। तुम जिसकी बात कहती हो, उसके दिन में एक बार देखने पर भी शरीर में जान रहती है। एतोया के बाप ने मरते वक़्त कहा था, 'मुंगरी ! तू मेरी बेटी हुई।' सो राँड़ औरत बाप-माँ छोड़कर रहती है ?"

"लड़का यहाँ है।"

"रहे। आयेंगे, जायेंगे, देखेंगे।"

माँ और ताई के लौटने के समय एतोया रोने लगा।

शुरू-शुरू में आना-जाना ख़ूब रहा। उसके बाद धीरे-धीरे एतोया के मन में नयी जगह बस गयी। जब खेती का काम नहीं रहता था, तब वह भी जंगल के काम के लिए आता था। लेकिन गाँव में जल्दी-जल्दी आना न होता। मुंगरी बीच-बीच में जाती लेकिन दूसरे ही दिन लौट आती। कहती, "वहाँ ऐसे नदी-पहाड़ में घर नहीं हैं, ऐसी हवा नहीं चलती, मेरी साँस फूलने लगती है, आँखों में नींद नहीं रहती।"

पर हरमू का छोटा लड़का जल्दी-जल्दी जाता। अपने चाचा से अधिक एतोया की ओर उसका खिंचाव हमेशा ज्यादा रहा था। एतोया का लड़का भी उसे बहुत प्यारा था। चोट्टि एक दिन एतोया का घर-द्वार देख आया। आकर घर पर कहा, "मुंडा जिस तरह सुख में रहने की बात सोच सकता है, उस तरह के सुख में एतोया है। जमीन उपजाऊ है, भैंस भी दूध देती है। उसकी सास बड़ी बेटी की जमीन पर है। उनके बीच कोई झगड़ा नहीं है। दही बेचने का पैसा भी एतोया को दे देती है।"

"मुंडा औरत दही बेचती है ?" पत्नी ने पूछा।

"ग्वालों से सीख रही है। मुझे अच्छा लगा। जब जो काम करने चले, तब वह काम करना ही होगा।"

"एतोया बहुत कोमल स्वभाव का था। उस पर कोई खफा तो नहीं

होता ?"

"न-न, मेरे नाम पर बड़ा आदर मिलता है। परब में, पूजा में उसे ही आगे रखकर सब लोग सारे काम करते हैं।"

"बहू यहाँ हमारी छाया में थी।"

"काम तो करती थी। सब करती थी। पीठ पर बच्चे को बाँधकर एतोया को घाटो ले जाती थी। हाट जाती थी। दिकू लोगों से शायद सीखा होगा, मेरे पाँवों पर जल छोड़कर धुला दिया था।

"अच्छा अच्छा ही होता है। पर घर सूना हो गया है। वह बाप की तरह टुइला बजाकर खूब गाता था। हरमू का बेटा भी वैसा नहीं है।"

"हरमू की माँ ! मुंडा लड़का अखाड़े में नाचे, टुइला बजाकर गाना गाये, अब क्या वैसे दिन रह गये ? मुंडा जीवन में जो रीति-रिवाज थे, अब सब परब-पूजा तक रह गये हैं। तू मेले में कैसी नाचती थी।"

"खूब ! बूढ़ा मानुस करे तमासा।"

"मैं तो तुझे बूढ़ी नहीं समझता।"

"धत्, मेरी कमर का दर्द नहीं जाता।"

"बाघ की चर्बी तो रखी है।"

"थोड़ी-सी है। तुम जिस तरह सबको बुला-बुलाकर दिया करते थे, अपनी जरूरत के बखत यही होना था।"

"तब क्या पता था कि कहाँ युद्ध होगा। और यह आजादी मिलेगी। जीप पर शिकार करके बाघ निरबंस कर दिये।"

"हाँ, मांस खाने का सुख गया। बराह, हिरन नहीं रहे।"

"कुछ नहीं रहा।"

"इसी से दुख होता है। हमारे नाती ऐसे समय में जवान होंगे, जब उन्हें कुछ नहीं दिखा सकेंगे, यह हम भी देख रहे हैं।"

"यह नदी, पहाड़, जंगल देखेंगे।"

"जंगल ! तुम लोग पेड़ काट रहे हो न !"

"आजकल लकड़ी की बहुत जरूरत है।"

"किसलिए ?"

"आजकल गोमो से डाल्टनगंज के बीच तमाम जगह कितनी बड़ी बन रही है। तमाम घर बन रहे हैं, बहुत-से दरवाज़े-खिड़कियाँ-खाट और बहुत-सी चीजें बन रही हैं।"

"लोगों के पास पैसे बहुत हैं।"

"जिसके पास पैसे हैं उसके पास हैं। हम तो लँगोटी पहनेंगे, घाटो खायेंगे, दूर से देखेंगे, चले आयेंगे। हम लोगों का कुछ नहीं होगा।"

"छोड़, जिन्दा तो हैं।"

"जिन्दा तो रहना होगा। सारे मुंडाओं के मर जाने पर दिकू लोगों को कोई दुख नहीं होगा। वे तो खुश होंगे। हम इतना सब झेलकर भी मरते नहीं, इस बात पर उन्हें ताज्जुब होता है। सोचते हैं कि हम पत्थर के बने हैं। दे, थोड़ा-सा सत्तू सान दे। सना की माँ उस वक्त बच गयी थी, अब लगता है मरेगी। बुखार है, हाथ-पाँव खूब फूल रहे हैं। जरा जाऊँ।"

सना की माँ कुछ दिन बाद मर गयी। उसे समाज देना हुआ। इस समय चोट्टि अंचल में बिजली-सी कौंध गयी। ट्रेन से स्पेशल पुलिस आयी, चोट्टि में उतर पड़ी। किसी की खोज में वे सारे अंचल में फैल गये और स्टेशन-मास्टर को जरूरी निर्देश देकर स्टेशन पर पुलिस के दो आदमियों को नियुक्त कर चले गये। चोट्टि में कोई भी खबर छिपी न रहती। सब कानोंकान बातें करते। स्टेशन-मास्टर ने चोट्टि और छगन को बुलवाया। "दो बाबू लड़के दुर्गापुर से इस ओर भाग आये हैं। पुलिस सोचती है कि वे दोनों या एक भागकर इस ओर आये है। उस तरह का कोई दिखायी पड़ने पर पकड़ा देंगे।"

"उन्होंने क्या किया है, महाराज?"

"अरे, वे नक्सल लड़के हैं।"

"क्या नाम बताया, महाराज?"

"नक्सल।"

छगन बोला, "मालूम है, मालूम है। वे मालिक-जमीदारों को मार डालते हैं, बंदूक छीन लेते हैं, पुलिस से लड़ाई करते हैं। उस दिन बैंगन बेचने थाने पर गया था। उन लोगों की बात सुन आया हूँ। किन्तु महाराज, वे तो यहाँ हैं नहीं। वह सब गड़बड़ तो दूसरी जगह हुई थी।"

"न-न, जो छिप सकता है वह पहाड़ों-जंगलों में छिप जाता है। पकड़वाने पर थाने से रुपये भी मिलेंगे। समझे?"

"उनको पकड़ने के लिए पुलुस खड़ी है। बाप रे, बंदूक! गोली चलाते ही आदमी मर जाता है।"

"पकड़ें या मारें, उससे तुम्हें क्या? तुम दोनों अपने समाज के ऊपर हो। इसी से कहा। जंगल में भी तो जाते हो?"

निकलकर चोट्टि बोला, "वे मालिक-जमींदारों को काटते हैं? मारा है? तुझे पता?"

"थाने के सिपाही ने तो बताया है, बहुतों को मारा है।"

"कहाँ?"

"मुझे क्या पता है?"

"पकड़ने पर उन्हें मार डालेंगे?"

"मुझे क्या पता?"

चोट्टि बोला, "देस कितना बड़ा है, कुछ पता नहीं। तो सब जगह ही मालिक-महाजन हैं।"

"उन्होंने आकर हमारे लाला को क्यों नहीं मारा?" यह अजीब-सी बात कहकर छगन घर चला गया। चोट्टि ने रास्ते में अपने नाती को देखकर कहा, "घर जा, मैं जरा शमशान में बैठकर आ रहा हूँ।"

वह बीच-बीच में कोयेल की समाधि के पास जाकर बैठता था। आज भी गया। समाधि-क्षेत्र निर्जन छाया से आच्छादित था। वहाँ केवल बड़े-बड़े पत्थर खड़े थे। यहाँ आकर बैठने से चोट्टि को जैसे कोयेल मिल जाता हो। कलेजे के भीतर जैसे सब शान्त हो जाता हो। चोट्टि को अच्छा लगता।

वहीं उसने एक लड़के को देखा। नीचे कौन गड़ा हुआ है, इस विषय में कुछ न सोचकर लड़का डोनका मुंडा के पिता के पत्थर पर पीठ टेके, माँ के पत्थर पर पैर फैलाये बैठा था। देखने में सूखा-सा, आँखों पर चश्मा लगाये था। खाली पैर, शरीर पर पैंट और कुरता था। देखने पर लगता भी न था कि इसके लिए किसी मालिक-महाजन का सिर काटना संभव भी था। यह ठीक था कि पुराण को देखकर भी कौन कहता कि इसने नायब को मारा होगा। लड़का उसे देख चौंककर उठा और पल-भर में सावधान और मुस्तैद हो गया।

चोट्टि ने कहा, "वहाँ से उतरो।"

"क्यों?"

"वह हम लोगों के शमशान का पत्थर है।"

लड़का उतर गया।

"दूसरा कहाँ है?"

लड़का कुछ नहीं बोला। चोट्टि को देखता रहा।

"कहाँ से आ रहे हो?"

"कल रात से यहाँ हूँ। यह कौन-सी जगह है?"

"चोट्टि।"

"यहाँ से राँची कितनी दूर है?"

"बहुत दूर।"

"एक बार पहुँच पाता...।"

"स्टेशन पर पुलुस है।"

"पुलिस!"

"हाँ। जो देखेगा उसे पकड़ाने पर रुपये।"

"समझा। तुम ?"

"मैं चोट्टि हूँ। चोट्टि मुंडा। तुमको पकड़ाऊँगा नहीं। किन्तु क्या करूँ ! यहाँ आये क्यों ?"

"मालगाड़ी से कूद पड़ा।"

"वह दूसरा आदमी कहाँ है ? दो थे ?"

"वह यहाँ नहीं उतरा।"

"यहाँ क्यों आये ? यहाँ कोई भी बाहरी आदमी नजरों में आ जाता है। क्यों आये ?"

"पुलिस मुझे देखते ही गोली मार देगी।"

चोट्टि को केवल यह लगा कि उसकी उमर बड़ी हो गयी है। एक आदमी को पकड़कर गोली खाने के लिए पुलिस के हाथों थमा दे, ऐसा संभव नहीं, उसी तरह उसको निरापद कहीं पहुँचाना भी संभव नहीं था। क्या करे ? चोट्टि मन-ही-मन सोच रहा था, और अन्त में मन में निश्चय करके बोला, "अँधेरा होने दो। तुम बैठो।"

"क्या करोगे ?"

"अपने घर ले जाकर रखूँगा।"

"उसके बाद ?"

"थोड़ा आगे बढ़ा दूँगा।"

"कहाँ ?"

"तोहरी होते हुए सदर के रास्ते पर। छिपाकर रखूँगा। लकड़ी की लारी जाती है, रोककर उस पर चढ़ेंगे।"

"राँची ?"

"हाँ।"

"तुम कहाँ जाओगे ?"

"काम है।"

चोट्टि ने कोयेल की समाधि पर हाथ फेरा। मुंडारी में बोला, "फिर किसी दिन पास बैठूँगा, कोयेल ! आज काम है।"

"तुम्हारे घर में और भी लोग हैं ?"

"हाँ।"

"वे अगर बता दें तो ?"

"कोई नहीं बतायेगा।"

शाम हुई। अँधेरा हुआ। चोट्टि ने लड़के को लाकर घर के पास बैठा दिया। घर जाकर हरमू को बुला लाया। हरमू बोला, "तुम क्यों जाओगे ? मैं उसे आगे भेज दूँगा।"

लड़के से चोट्टि ने कहा, "लारी पैसा लेगी। है ?"

"थोड़ा है।"

"कितना ?"

"दो-एक रुपया।"

चोट्टि बोला, "तुम मालिक-महाजन को मारते हो, जब भागना था तो उनका रुपया तो कुछ लेते !"

लड़का हँसने लगा। चोट्टि बोला, "हरमू, तेरे जाने पर तेरे बहू-बेटा बात पूछेंगे। तेरी माँ न पूछेगी। कभी नहीं पूछती। पुराण को बचाने के लिए उस दिन मैं रात को न गया ? किसी को पता है ?"

"वह बात तो ठीक है।"

"चल, घर चल।" लड़के से चोट्टि बोला, "सबके सो जाने पर मैं तुमको ले जाऊँगा। यहाँ तुम पत्थर पर सो जाओ।"

"कोई आयेगा तो नहीं ?"

"नहीं।"

"किन्तु...?"

"मैं कह रहा हूँ न।"

"तुम क्या गाँव के प्रधान हो ?"

हरमू बोला, "इलाके के सारे मुंडाओं के सरदार।"

चोट्टि बोला, "बहुत समझा, चलो। पुलुस के डर से पागल होकर भागे-भागे घूम रहे हो। उनसे यह सब कहने से फायदा ?"

लड़का बोला, "कोई नुकसान भी नहीं है।"

"तुम हिन्दी बोलते हो ?"

"बोलते-बोलते सीख गया हूँ। थोड़ा पानी पिला सकते हो ?"

"अभी नदी से पियो।"

वे चले आये। कुछ देर में सब सो गये। चोट्टि सोते हुए लड़के को बुला लाया। पत्नी ने बिना कुछ कहे-पूछे उसे बहुत मूल्यवान भात, बैंगन का भर्ता और अचार दिया। उसने चोट्टि से सब सुन लिया था। बोली, "घर पर माँ नहीं है ?" उसके बाद कपड़े में बँधा बेस्वाद मक्का का सत्तू और गुड़ लाकर दिया। बोली, "राह में खाना।"

वे लोग फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। लड़के से चोट्टि बोला, "तुम थोड़ा सो लो। उस तारे के बीच आकाश में आने पर बुला लूँगा।"

लड़का सो गया। गले की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। चेहरा मैला था। चोट्टि की समझ में नहीं आ रहा था कि यह लड़का सदर कैसे जायेगा ? पुलिस क्या तोहरी में ही है ? उसे पत्नी ने अकल दी। बोली, "पुल पार

कर मालगाड़ी बहुत धीमे चलती है। ऊँचे पर चढ़ती है। हरमू आदि ने तो कोयेल की बीमारी के मौके पर सना को उस पर चढ़ा दिया था।"

चोट्टि बोला, "वे तो भागे नहीं थे। अगर पकड़े जायें तो ?"

वृश्चिक बीच आकाश में आ गया। चोट्टि ने लड़के को बुलाया। उसके बाद दोनों निकले। लालटेन लेने का काम नहीं था। वे दोनों अँधेरे में ही चले। चोट्टि बोला, "तुम लोग मालिकों का सर क्यों काटते हो ? तुम पर जुलुम करते हैं ?"

"न, तुम तो आदिवासी हो। आदिवासी और किसानों पर जुलुम करते हैं, यह तो जानते हो ?"

"खूब जानते हैं। किन्तु 'तुम' क्यों ?"

"यह हमारी लड़ाई है।"

"काहे के लिए ?"

"जमींदार और महाजन को खतम करेंगे। जमीन तुम लोगों के पास रहेगी। सब नये सिरे से नया होगा। कोई किसी पर जुलुम नहीं करेगा।"

"बात तो अच्छी है।"

"तुम इसे मानते हो ?"

"मानता हूँ। लेकिन जहाँ मालिक को मारते हो वहाँ मुंडा-अछूत जमीन पा रहे हैं ? अब वे जमीन के मालिक हैं ?"

"नहीं।"

"वहाँ क्या हो रहा है ?"

"पुलिस गाँव में घुस रही है।"

"तुम लोग भी बहुत मर रहे हो ?"

"बहुत।"

चोट्टि ने कहा, "यही तो बात है। जमीन की लड़ाई में मेरा लड़का हरमू जेहल गया। फिर भी तीर नहीं चलाया, क्योंकि वैसा करने पर पुलुस आकर मुंडा टोली जला देती। लाला के मरने पर दूसरा लाला आ जायेगा। यही सोचकर तीर नहीं उठाया।"

"पुलिस से लड़ना होगा।"

"यह सीधी बात है ? तुम्हारे कहने से मैं लड़ूँगा ? मैं जब समझूँगा कि यह लड़ाई हमारी भी है, तब लड़ेंगे। तुम तो दिकू हो। अपनी भलाई के लिए हमारा बीरसा भगवान गौरमेन के साथ लड़ा था। और देखो। पुलुस के साथ लड़कर जमीन कितने दिनों रख सकेंगे ? गौरमेन के पुलुस रहती है, कचहरी रहती है, जेहल है, हमें जमीन नहीं मिलती।"

"सीधे-सीधे कोई न देगा।"

"लड़ाई की बात करते हो, सो पुलुस तुमको भी पकड़ रही है। तुम भी भाग रहे हो, यहाँ जो मालिक को मारता है, उसे भी भागते देखता हूँ।"

"हमारी शायद वैसी ताकत नहीं थी।"

"वैसा न होने पर लड़ाई ! उससे खाली पुलुस आ जाती है। टोली जला देती है, मारती है, जेहल ले जाती है।"

"सबको लड़ाई में शामिल होना पड़ेगा।"

"वह लड़ाई क्या होगी ?"

"सबको समझाना होगा।"

"तुम अगर मर जाओगे, तो कौन समझायेगा ?"

"और 'हम' आयेंगे।"

"जाते क्यों हो ? रहो, घर में छिपा लेंगे, मुंडा बन जाओ।"

"मैं साँउतालों को पहचानता हूँ।"

"उन्होंने हूल उठाया था।"

"तुमको मालूम है ?"

"चोट्टि मुंडा को सब पता है।"

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो।"

"सब यही कहते हैं। किन्तु अच्छे होते तो लँगोटी क्यों पहनते, क्यों दोनों बखत भात नहीं मिलता, क्यों इतनी तकलीफ है, बताओ तो ?"

"हर जगह ऐसी ही बात है।"

"दिकू लोग हमारा दुख नहीं समझते।"

"हमने समझा है।"

"इसी से भागे-भागे घूम रहे हो ?"

"इसी से।"

"जो आदमी हमारा दुख समझता है, उसे पुलुस सताती है। हमने तो जनम-भर यही देखा है।"

लड़का सुन्दर मुसकराहट से बोला, "पुलिस का काम ही यही है।"

"अब और बातें नहीं। यहाँ गाँव है।"

वे चुपचाप चलने लगे। लड़का चोट्टि के पीछे-पीछे था और चोट्टि बताता चल रहा था, यहाँ ऊँचा है, यहाँ गड्ढा है, यहाँ समतल ज़मीन है—लड़का उसी के अनुसार चल रहा था। तोहरी के बाद धीरे-धीरे बस की राह पर आ गये। चोट्टि ने कहा, "यहाँ छिप जाओ। उधर से लारी आयेगी। हाथ दिखाकर चढ़ जाना।" फिर चोट्टि ने कमर से एक थैली निकाली। बोला, "इसे रख लो, दो रुपयों की रेजगारी है।"

लड़के ने बड़े ताज्जुब के साथ वह ले ली और रुपये निकालकर थैली

चोट्टि को देकर बोला, "यह नहीं लूँगा। अगर पकड़ा गया, पकड़ा तो शायद जाऊँगा ही, तो यह देखकर क्या सोचें, पता नहीं।"

"कौन जाने पुलुस ने सारी लारियों को होशियार कर दिया है या नहीं। पर ऐसे समय लालसिंह, जमादारसिंह लारी चलाते हैं। नशे में धुत रहते हैं। दो-चार रुपये देने पर वे आदमी को चढ़ा लेते हैं, मुझे पता है।"

"जा रहे हो ?"

"हाँ, अब जाना होगा। बहू जागती रहेगी।"

लड़का वय के अनुरूप आवेग से बोला, "तुमने मुझे बचाया क्यों ?"

"बचाया या नहीं—यह अभी भी पता नहीं। सदर पहुँचने पर कहना।"

"क्यों ?"

"यों ही, पुलुस कुत्तों की तरह पीछा कर मार देगी। माँ के बच्चे !"

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो। मुझे पकड़वाने पर...।"

"ऐसे रुपयों पर थूकता हूँ। उससे मैं लाला बन जाऊँगा ?"

"तुम्हारे बारे में कुछ भी मालूम नहीं हुआ।"

'क्या जानना चाहते हो ?"

"शायद लड़ने वाले हो।"

"तुमने जिस लड़ाई की बात कही, वह अच्छी है लेकिन होने वाली नहीं। पुलुस के बराबर हों तभी तो लड़ेंगे। नहीं तो, अन्त में तो पुलुस ही जीतेगी। मैं तो यही देखता हूँ।"

"जो काम ठीक लगता है, उसके लिए लड़ना ही होता है।"

"हाँ, यह बात भी ठीक है। अपने लिए सच्चा रहने के लिए तो ठीक ही है।"

"सो तुम समझो। समझते हो न ?"

"खूब। उस तरह के लोगों की बात जानता हूँ। धानी मुंडा चाईबासा जाकर मर गया। न जाते तो जिन्दा रहता। दुखिया ने नायब को काट डाला।"

"कुछ पता न चला। फिर आऊँगा।"

"मैं चलूँ।"

चोट्टि चला आया। मन में बड़ी फ़िकर लगी रही। आश्चर्य था। दिकू क्यों आदिवासियों की भलाई के लिए पुलिस की मुसीबतें उठा रहा है ! बस, लड़के का चेहरा याद आता है। बीच-बीच में मुँह उठाकर वह तारे देखता था। जानी हुई राह पर चलता रहा। आज का दिन बहुत

[illegible] है। चोट्टि दुखी होकर विस्मय में डूब गया। जब घर पहुँचा तो [illegible] और नीचे उतर गया था। पत्नी ने दरवाजा खोल दिया। उसके चेहरे पर और उसकी आँखों में घबराहट थी। बोली, "चला गया ? लारी पर चढ़ा दिया ?"

"ना, मैं चढ़ाता तो लोगों की नजर में आ जाता।"

"तब ?"

"चले जाने को कह दिया।"

"राँची जाये तो बाँची—तभी बचे।"

"पानी है ?"

"उधर है।"

हाथ-पाँव धोकर चोट्टि लेट गया। बोला, "आदिवासियों की भलाई करने आया हुआ दिकू पुलुस के पीछा करने पर भागे, ऐसा नहीं मालूम था।"

"कहाँ का लड़का था ?"

"किसी और देस का होगा।"

"वे लोग पकड़कर क्या करेंगे ?"

"शायद मार डालें।"

"सोच नहीं सकते।"

"सो जाओ।"

"तुम्हारा तो कुछ न होगा ?"

"ना-ना, अब तू सो जा। किसी को पता तो नहीं है ?"

"ना, हरमू मुझसे पूछ रहा था। उसे भी बहुत देर हुई।"

अन्त में चोट्टि को नींद आ गयी। बहू भी सो रही। सबेरा हुआ।

दूसरे दिन वे तोहरी छोड़ चाई के जंगल में लकड़ी काटने गये। लकड़ी की कटाई चल रही थी, सहसा उन्होंने एक अपरिचित स्वर सुना, 'हाल्ट !'

जो जहाँ था, खड़ा रहा। इस शब्द से सब परिचित थे। पुलिस किसी घटनास्थल पर आकर एकत्रित लोगों से कहती—हाल्ट।

वे पत्थर-से खड़े रहे। उसके बाद एक अद्भुत और अविश्वसनीय दृश्य दिखायी पड़ा। तीन पुलिस वाले एक लड़के को घसीटकर लिये जा रहे थे। लड़के का चेहरा कुचला हुआ और बदन लड़खड़ा रहा था। कल आँखों पर चश्मा था, आज नहीं था। चोट्टि ने अपना मुँह दबा लिया। लग रहा था कि कोई कलेजे पर हथौड़े चला रहा हो। उसे लिये जा रही थी, पुलिस लिये जा रही थी। सहसा, धक्का देती पुलिस ले ही जा रही थी

कि वह चोट्टि की आँखों की ओट हो गया। गोली की आवाज़ सुनायी पड़ी।

होश आने पर अब सभी दौड़ने लगे। चोट्टि हिल नहीं पा रहा था, आँखें टकटकी लगाये हुए थीं। उसके बाद पुलिस वाले लौटकर आये। लड़के के पैरों में रस्सी बाँधकर घसीटे ला रहे थे। घसीटकर ले जा रहे थे। चोट्टि के कलेजे में चोट-सी लगी, चोट लगी, सदा के लिए घाव हो गया। तो वह लड़का भाग न सका।

चोट्टि लौटकर उन्होंने सरकारी विवरण सुना। स्टेशन-मास्टर बोले, "एक आदमी सदर जाने के रास्ते के किनारे झाड़ी में छिपा था। उसके पास बम और पिस्तौल थे। वह लेकर पुलिस को मारने चला। पुलिस ने बाक़ायदा लड़ाई कर उसे मारा था। उसका दूसरा नक्सल कहाँ गया, पता नहीं।"

सना बोला, "ना-ना, उसने तो पुलुस को नहीं मारा था।"

"किसने कहा?"

"हम लोगों ने देखा था।"

"जो देखा था वह भूल जा बापू! यह सब तू जंगली बुद्धि से नहीं बूझेगा। पुलिस जो कहती है, वही कह। अगर भला चाहता है तो।"

ठेकेदार ने चोट्टि आदि को ज़ोरों से डाँटा। कहा, "इसकी कोई बात मत करना।"

चोट्टि की पत्नी ख़बर सुनकर रो पड़ी। चोट्टि ने हरमू से कहा, "बहू या लड़के पूछें तो कह देना कि कोयेल का दुख हो रहा है।"

उस दिन चोट्टि खा न सका। लड़के की बात सोचते-सोचते उसका कलेजा फट पड़ना चाहता था, जानकारी हृदयविदारक थी। किसी से बात करने पर जी हलका भी नहीं हो सकता है। हरमू भी बहुत गुमसुम बना रहा। बाप से बोला, "किया कुछ, कहते हैं कुछ और। ऐसी पुलुस को लड़का मारता था तो अच्छा ही करता था। कैसा बम और कैसी बंदूक! कुछ तो नहीं था।"

"चुप हो जा, हरमू! अभी और होगा।"

भागे हुए लड़के की तलाश में पुलिस भागदौड़ करती रही। उसका पता नहीं चला। दारोगा चोट्टि से कह गये कि अजनबी लड़का देखते ही थाने पर खबर दो। एक सौ रुपये बख़्शीश मिलेंगे।

तीरथनाथ बोला, "देखना तो पकड़ा देना, बापू! यह लोग 'हाँ' कहने का वक्त नहीं देते। महाजन देखते ही मार डालते हैं। कहाँ छिपा है, पता नहीं।"

"हम उसे कहाँ देखें?"

"ओह, देखने पर पकड़ा देना। नक्सल लड़का है। विष की पुड़िया।"

सना सहसा भोला बन गया और बोला, "महाराज! यह क्या सुना कि तुम्हें साँप ने काटा था और काट कर मर गया!"

"बिना जहर का साँप था रे! जूते से दबाकर मार दिया।"

"हमने सुना कि गेहुँअन साँप था और तुम्हें काटकर खुद मर गया। यह बड़ा गप्प है। जाने दो, तुम्हें तो कुछ नहीं हुआ?"

"ना, ना, होता क्या?"

बाद में तीरथ को लगा कि सना शायद मज़ाक बना गया। गुमाश्ता ने कहा, "हरबंस ने उन लोगों को सिर चढ़ा लिया है। कहता था, मुझे गेहुँअन साँप ने काटा और खुद मर गया। मेरे खून में क्या ज़हर है?"

कुछ दिन बाद ही पुलिस ने फिर तलाश शुरू की। और भागने वाले ट्रेन से ग़ायब हो गये। पुलिस बख़्शीश की घोषणा का कागज़ स्टेशन में पेड़ पर चिपका गयी और शरारत से बूढ़ी मोतिया ने उस कागज़ पर पान का पीक थूक कर स्टेशन-मास्टर से डाँट खायी। कोई भी पकड़ा नहीं गया। लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि अंचल में एक दबा हुआ तनाव आ गया। पुलिस की गोली से मारे जाने और आमने-सामने के संघर्ष के सरकारी वक्तव्य को लेकर अब सब लोग बहुत बातें करते थे। बार-बार पुलिस ने देखा कि उनके मन में उस बीती घटना ने अब जैसे और अधिक दिलचस्पी जगा दी है। लेकिन ऊपर से वे निर्लिप्त बने रहते। इसे देखकर स्टेशन-मास्टर भी बोले, "यह लोग बड़े धोखेबाज़ हैं।"

तेरह

इस समय चोट्टि के तीन बीसी और बारह बरस के जीवन में फिर चुनाव आया। लड़के की हत्या और पुलिस द्वारा जंगल की खोज-बीन ने जिस तरह चोट्टि जैसे स्थान में बाहरी दुनिया की अशान्ति ला दी, उसी तरह बाहर के दूसरे ढँगों ने चोट्टि अंचल पर आक्रमण किया। इस सारी बरबादी में चोट्टि अंचल के मनोजगत के भूस्तर का स्वरूप भी बदलता गया। बाहरी दुनिया के ढँग गड्डमड्ड तरीक़े के थे। जैसे कि दूर पर सोन नदी के मार्ग पर बॉक्साइट की प्रस्तावित खान चालू हो गयी और तोहरी से सोलह मील दूर चामा में एक अलमोनियम का कारखाना शुरू हुआ। खान और

कारखाने की बात से सहसा हरबंस, तीरथनाथ—सभी चेते। स्टेशन की चाय की दुकान पर उनकी ऊँचे स्तर की कान्फ्रेंस हुई। बात शुरू हुई। इतनी बड़ी चीज शुरू होने से लेबर पर खिंचाव पड़ेगा। ज़्यादा रुपयों के लिए सब फटाफट चले जायेंगे। तीरथ बोला, "तुम तो बहुत कहते थे कि बेगार बुरी चीज़ है। अब क्या हुआ? देखो, पुरानी चीज सबसे अच्छी निकली। चोट्टि के आस-पास ही क्यों, चोट्टि में ही अगर कोई कारखाना बने, जिसमें दस रुपये मजूरी दें, वे भी हमारे बेगार न ले सकेंगे। नजर डाल कर देखें कि फिर हमें बेगार देंगे। यही जमीन रखने में मजा है।"

"मैं तो उल्टी बात सोच रहा हूँ।"

"क्या?"

हरबंस ने खुमारी भरी आँखों से कहा, "फैक्ट्री होने से एक के बाद एक मकान बनेंगे। खोसी ईंटें अब लाखों लगेंगी।"

"उसमें उल्टी बात क्या है?"

"चारों ओर अगर एक के बाद एक फ़ैक्ट्रियाँ बनती जायें, तो बाहरी हवा यहाँ भी घुस आयेगी और ये सारे लोग भागेंगे। भाग गये तो आप कुछ कर सकेंगे?"

"वह कैसे होगा?"

"क्यों नहीं होगा? मेरे लिए चोट्टि मुंडा है। वह अगर कहे कि यह काम करेंगे महाराज, तो काम ज़रूर होगा। चोट्टि तो उस हरमू केस के बाद से आपका काम नहीं करता।"

"लेबर भाग जाने से तुम्हें मुश्किल न होगी?"

"लालाजी, हरबंस चड्ढा पंजाब का लड़का है। पंजाब का आदमी वक्त के साथ चलना जानता है। मेरे बाबा खेती करते थे, इसके लिए बाप ने पलामू आकर खेती की ज़मीन नहीं तलाश की। तलाश कर सकते थे। उन्होंने ईंटों का भट्ठा लगाया।"

"उससे क्या हुआ?"

"अरे मैं उनकी मजूरी बढ़ा दूँगा।"

"अरे, अरे, हरबंस! ऐसा काम न करयो, भैया। तोमरा आदत बिगाड़ देहौ। जो बेगार नहीं हैं, ऐसे लोग भी हैं। वे भी बढ़ती मजूरी माँगेंगे ऐसन काम जिन किह्यो।"

"जिन किह्यो। न करने से वे नहीं भागेंगे। टाइम अब बदल रहा है, लालाजी! अब कलकत्ता से बहुत-से लोग आ रहे हैं। पंद्रह-बीस हज़ार रुपयों में सरफ़ेस कोलियरी—ऊपरी सतह की कोयला खान खरीद रहे हैं। लेबर कम पड़ेगा, समझते हैं?"

"ना, ना, यहाँ आदमी कीड़ों की तरह अनगिनती हैं।"

"आप अपने आनन्द में रहें।"

"भैया, तुम फल के बगीचे क्यों नहीं मोल लेते? बहुत नफ़ा है।"

"अनवर की तरह अमरूद-शरीफा का बगीचा करूँगा और कुंजड़ों को फल बेचूँगा? खरीदना होगा तो बाद में खरीदूँगा। तब सड़क बनेगी तब फल सीधे बोकारो-राँची-धनबाद भेजे जायेंगे। तब कारखाने में फलों को डिब्बाबंद कर सकूँगा। तब फलों के बगीचे से कोई छोटी-मोटी इंडस्ट्री बन सकेगी।"

"तुम्हारे फलों का बगीचा खरीदने से मुसलमान को हटाया जाता।"

"लालाजी, मुसलमान से मुझे कोई प्यार नहीं है। लेकिन आपकी तरह छुआछूत मैं पसन्द नहीं करता।"

हरबंस क्या करता है, यह देखने के लिए तीरथनाथ बैठा रहा। हरबंस ने मजूरी बढ़ाकर एक रुपया कर दी। लाचार तीरथनाथ ने भी गैर-बेगार को एक रुपया दिया। बेगारों को ताज्जुब में डाल चौअन्नी-चौअन्नी पनपियाई के देकर उन्हें ताज्जुब में डाल दिया।

यह एक घटना हुई।

दूसरी घटना और भी अद्भुत थी।

एक थे अनाथबंधु पाल, चलता-फिरता सिनेमा लेकर चोट्टि में उतर पड़े। स्टेशन के मैदान में खुली जगह में उन्होंने 'श्री हनुमान की पाताल-विजय' फ़िल्म दिखायी। बायस्कोप के बारे में चोट्टि और छगन अनभिज्ञ थे। उन्हें देखकर बड़ा आनन्द आया। तीरथनाथ ने फ़िल्म देखकर बार-बार नमस्कार किया और बोला, "मैं रुपये दूँगा, कल भी तमाशा होगा।"

सिनेमा देखकर सबको फिर बहुत आनन्द आया। अनाथबंधु पाल इसके बाद अपना सिनेमा लेकर ट्रेन पकड़ कर चला गया। उसके बाद पूरे चोट्टि में शोर मच गया। तीरथनाथ के गुमाश्ते का लड़का दो हज़ार रुपये चोरी कर भाग गया। चिट्ठी लिखकर बता गया कि गृहस्थी और भावी गुमाश्तागीरी उसके लिए जहर की तरह है, इसलिए वह संन्यासी बनने जा रहा है। तीरथनाथ बहुत बिगड़ा और थाने की ओर चला। कोई नतीजा नहीं निकला। दारोगा ने खोज-खबर लेकर बताया कि वह राँची जाकर अनाथबंधु का पार्टनर बन गया है।

तीसरी घटना बिलकुल दूसरी तरह की थी। 1962 और 1967 में पहले बताया हुआ आदिवासी और परिगणितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला प्रार्थी ही जीता था। इस बार सहसा युवलीग दल ने चोट्टि में आसन

जमाया और बिगड़ कर सदस्य को धमकाया। चोट्टि में आकर उन्होंने मीटिंग बुलायी और धमकाया कि उसे वोट देने पर गाँव जल जायेगा। उनकी धौंस के पीछे हेंकड़ी थी। उसके बाद बोले, "चोट्टि मुंडा कौन है ?"

"मैं।"

"सुना है कि तुम्हारी बात आदिवासी और यहाँ के परिगणित लोग मानते हैं। तुम सबसे कह देना कि हमारे उम्मीदवार को वोट दें।"

चोट्टि का जवाब सुनने के लिए वे नहीं रुके। बाद में चोट्टि और छगन आदि मिले। छगन बोला, "क्या किया जाये ?"

"उसने तो हमें कुआँ दिया है। यह अस्पताल दिया है। सड़क भी पक्की कराने में लगा है।"

तीरथनाथ ने उन्हें बता दिया, इस बार नये उम्मीदवार को वोट देना अच्छा है, नहीं तो गड़बड़ होगी।

वे लोग समझ नहीं सके कि क्या गड़बड़ होगी। लेकिन ढाइ में मीटिंग करने में प्रौढ़ सदस्य महोदय अचानक बम की चोट से घायल हुए और मारे गये। आततायी जीप में चढ़कर निकल गये। दारोगा को कहीं से क्या निर्देश मिल गया, इसका किसे पता ? वे आततायियों को बिलकुल पकड़ न पाये। चोट्टि की ओर से इस घटना की प्रत्यक्ष संवाददाता थी मोतिया धोबिन। उस समय मोतिया अपनी बहन के घर पर ढाइ में थी। चुनाव की मीटिंग के कार्यकर्ता लोगों के लिए वह कुछ नहीं था। लेकिन मोतिया के जीवन में वह एक रहस्य था। मोतिया ने चोट्टि आकर बढ़ा-बढ़ा कर सबसे घटना का बखान किया। सभी उससे सुनना चाहते थे और उन्हें सुनने को मिल गया। सदस्य लोकप्रिय थे और उन्होंने अच्छा काम भी किया था। उनकी मृत्यु की बात ने बड़ा कुतूहल पैदा कर दिया।

इसके बाद दारोगा चोट्टि आये। ट्रेन से उतर कर वे चरमर करते हुए छगन की टोली में गये और बोले, "अब पता चला है कि सदस्य को उनकी पार्टी वालों ने ही मारा है। छोटा आदमी रुपये लूटने के लिए विधान सभा का सदस्य बना था। इन्होंने रुपये चुराये थे, हिस्सा-बाँट में गड़बड़ होने से दल के लोग बिगड़ गये। हटाओ, सुना है कि मोतिया धोबिन बहुत गप्पें उड़ा रही है। उससे कह दो कि कोई आलतू-फ़ालतू गप्प न उड़ाये। गप्प करने से हंगामा होगा। उस हंगामे को रोक सकने की ताक़त मुझमें नहीं है।"

मोतिया बोली, "पुलुस यह क्या कह गयी ?"

छगन बोला, "जमाना बहुत खराब है, मोतिया ! जो देखा वह सचाई नहीं है। जो कह गया वही सच है।"

सब सुन-सुनाकर चोट्टि और भी गुमसुम हो गया। बोला, "यह तो नयी बात नहीं है। तब लड़के को मारा और कह दिया, लड़के ने पुलिस को बम मारा। यह आदमी भलाई कर रहा था, उसे मार दिया। अब कुछ बात मत करना मोतिया, हवा चक्कर लगा रही है।"

"किन्तु चोट्टि, दारोगा तो वहाँ था नहीं।"

"मोतिया, अगर ऐसी किसी बात का विचार करेगा तो कोई-न-कोई दिक करेगा, तब किसकी बात पर विश्वास किया जायेगा ?"

"दारोगा की बात पर।"

"यह समझती है। घर जा।"

इसके बाद रंगमंच पर चुनाव की एक और मीटिंग हुई। शासक लोगों की ज़रूरत पर इस राज में सब-कुछ संभव है, इसलिए उम्मीदवार और उसके समर्थकों को लेकर शाम की ट्रेन आयी और आध घंटा खड़ी रही। स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर प्रार्थी ने भाषण दिया और पिछले सदस्य को 'नक्सल', गुंडा इत्यादि विशेषणों से विभूषित कर ट्रेन पर बैठ गया। चोट्टि उस मीटिंग में नहीं गया। लेकिन मोतिया उसके घर ही आ गयी। वह धप् से बैठ गयी और बोली, "हाय राम !"

"क्या हुआ ?"

"डर गयी।"

"क्यों ?"

"मिटिन में नहीं गया ?"

"नहीं।"

"क्या देखा, चोट्टि !"

"क्या देखा ?"

"आज जो आदमी आया, वह वोट लेगा ?"

"उसका क्या है ?"

"उसी ने तो हाथ उठाकर उस दिन दिखा दिया था। एक आदमी साथ में आया था। उनमें से उसी नाटे आदमी ने बम मारा था। इन लोगों ने ही उसे मार दिया। यह क्या देखा, चोट्टि !"

चोट्टि बोला, "बस, अब कुछ मत कहना।"

"लाला क्या कहता फिरता है, पता है ?"

"क्या ?"

"इस बार रुपया नहीं देगा, चुनाव में जाने नहीं देगा। फिर भी वोट पड़ेंगे, क्योंकि छोटे लोगों के वोट यह लोग नहीं चाहते।"

"समझा। तू घर चल, पहुँचाये देता हूँ।"

मोतिया को घर पहुँचा कर चोट्टि परमिट का तेल लेने दूकान गया। वहाँ तीरथनाथ से भेंट हुई। तीरथनाथ बोला, "चोट्टि, लगता है तू मीटिंग में नहीं आया?"

"ना।"

"तुम लोग वोट किसे दोगे?"

"देखें।"

तीरथनाथ मानो किसी अदृश्य शक्ति की मदद पाकर हँसा और बोला, "एक और तपसीली-परिगणित प्रार्थी है। वह साला डर के मारे इधर आ नहीं रहा है।"

चोट्टि कुछ न बोला। ताकता रहा।

"इस बार देखना, यह जगह अच्छी हो जायेगी।"

चोट्टि ने जवाब नहीं दिया। घूम कर चला गया।

दो दिन के बाद तीरथनाथ फिर उतना नहीं हँसा। उसने हरबंस से कहा, "फिर पचास हज़ार रुपये ले गये।"

"मैंने भी दस हज़ार दिये।"

"दिये?"

"ज़रूर। फिर फ़ैक्ट्री हाउसिंग में ईंटें देने की बात भी पक्की हो गयी। बस। यही पार्टी रहेगी और मेरा भला होगा।"

"मेरा क्या होगा?"

"भला होगा। देखना।"

"कैसे?"

"यह साला भी आपकी तरह छुआछूती है न? इसीलिए वह आपकी भलाई करेगा। ब—होत शानदार आदमी है। किस दल का है, मालूम है?"

"नहीं।"

"अर्जुन मोदी के।"

"उससे क्या हुआ?"

"आपका भी जवाब नहीं।"

"बताओ न।"

"बताना नहीं पड़ेगा। समझ जायेंगे। पाँच बरस में पचास हज़ार के पाँच लाख बनकर लौटेंगे।"

"आयेंगे?"

"ज़रूर। भारत के भाग में नया सूरज जो उगा है, है न!"

"वह गुंडा छोकरा?"

बिजया मोदी था।"

चोट्टि आदि ने वोट देने के लिए जाकर देखा कि उनके नाम पर पहले ही नाम पड़ गये हैं। वोट देने वालों को रोकने में बूथ पर मारपीट हो गयी। समस्त गुंडे लाठी लेकर वोट देने वालों को रोक रहे थे। नतीजा निकलने पर देखा गया कि बहुसंख्यक वोटों से युवलीग का छोकरा जीत गया है। बिजया के निर्देश से तीरथनाथ ने आकिशबाज़ी जलाकर विजयोत्सव मनाया और युवलीग में गुंडा लोगों ने हरबंस के घर पर अपनी दावत की। हरबंस को काफ़ी शराब मँगानी पड़ी। बकरा कटाना पड़ा।

खाना-पीना समाप्त कर उठने के समय माननीय सदस्य ने हरबंस से कहा, "टेंडर कल नहीं होगा। तमाम अँगरेज़ी क़ायदे हैं। अब भारतीय ढंग से काम होगा। केवल पोली ईंटें ही क्यों, सीमेंट का ठेका भी दे दूँगा।"

"आपकी दया है।"

"लेकिन बट्टा देंगे।"

"ज़रूर।"

"बारह आना, चार आना। बारह आना मेरा। फिकर मत कीजिये। वह दर मिलेगी कि उससे भी आपको मोटा नफ़ा होगा।"

हरबंस मन-ही-मन बोला, 'हरामी' और ऊपर से बोला, "ज़रूर।"

"यहाँ अछूतों और आदिवासियों का बड़ा ज़ोर है।"

"नहीं-नहीं।"

"पता है, पता है। सब ठीक कर दूँगा।"

"वे लोग कुछ नहीं करते।"

"अरे, छिपाइए मत। अपने इन सब लड़कों को एक-एक इलाक़ा बाँट दिया है। बड़े अच्छे लड़के हैं सब। मेरे लिए जान लड़ाकर काम किया है। उस अछूत को इन लोगों ने ही घायल किया था।"

हरबंस चौंक पड़ा और सदस्य ने अपने शागिर्द से इशारा पा हँसकर कहा, "मज़ाक कर रहा था।"

"यस।"

सदस्य और शागिर्दों का झुंड चला गया। हरबंस बहुत घबराया लग रहा था। वह ठेकेदारी चाहता था, रुपये बनाना चाहता था, मुनाफ़ा लूटना चाहता था। उसी के साथ चाहता था छोटा और मझोला उद्योग खड़ा करना। अब बोकारो, चास—सब जगह भीड़भाड़ थी। यही मौक़ा था। लेकिन हरबंस कोई गड़बड़ी नहीं चाहता था। उसने या उसके पिता ने अभी तक किसी कुली-मजूर के शरीर पर हाथ नहीं उठाया था। इन लोगों की सुख-दुख, मुसीबत-उसीबत में माँगने पर पिता ने मदद की थी,

हरबंस भी करता था। बहुत दिनों तक इनके बीच में हरबंस का रहना-सहना रहा। चोट्टि आदि में उत्तरदायित्व लेकर भलमनसाहत से काम करने की जो आदत है, मेहनत-मजूरी से हरबंस उस पर विश्वास ही करता था। हरबंस अपना स्वार्थ सोलह आना सुरक्षित रखता था। इनके साथ मोटे तौर पर अच्छा बर्ताव ही करता था। उस बार सदर में पोली ईंटें चालान देकर हरबंस ने बेजा मुनाफ़ा कमाया था और कुली और लेबर को दिये थे मोटे जनता मार्का कंबल। चोट्टि का कंबल औरों की तुलना में थोड़ा अच्छा था। यह लोग हत्या कर राजनीति में घुसे हैं, अब कहते हैं कि आदिवासी और अछूतों को दबायेंगे। क्या करेंगे, इसका पता नहीं। अगर आग भड़क उठे तो? हरबंस के कारण आग भड़कने से जहर-बुझे तीर से हरबंस को घायल करके मुंडा लोग अगर अपनी हँडिया-उँडिया उठाकर अनजान जगह चले जायें? ऐसी घटना तो हुई थी। नरसिंगगढ़ का नायब तीर से मारा गया था। कुरमी के दुखिया ने तो नायब का सिर काट लिया था। हरबंस बहुत चिन्ता में पड़ गया और निश्चय किया कि मजदूरी बारह आने से बढ़ाकर एक रुपया कर दी जाये। बाद में सवा रुपया भी कर देगा। सद्भाव बनायेगा। उसका नतीजा होगा कि हरबंस पर किसी का गुस्सा न होगा। इन सब बातों को मन-ही-मन सोचने के बाद हरबंस ने महसूस किया कि उस सदस्य और उसके चेलों के शक्ति प्राप्त करने में छोटा हिटलर देखकर डर गया है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे!

उसने तीरथनाथ से कुछ न कहा। किन्तु तीरथनाथ ने उसके आचरण को लक्ष्य किया, संभवतः वह भी घबरा रहा था। फ़सल पर उसने भी बेगार मजूरों को सवा रुपया मजूरी और छः आना पनपियाई दिया। कहा, "ऐसन मालिक न मिली, छगन।"

"महाराज की किरपा है।"

छगन ने दुखी और उदास चेहरे से वह बात कही। कहा, "आप लोग जो करें वही अच्छा। आजकल चारों ओर बहुत काम है। कुली-लेबर में ढाई रुपया है। इसी से कुरमी और नरसिंगगढ़ में खेत-मजूरों को भी दो रुपये मिल रहे हैं। बेगारवालों को पनपियाई एक रुपया मिल रहा है। अब सदर से चोट्टि में एन० सी० डी० सी० आयेगा। कोयला खुदवायेगा। वह तो सरकारी रेट देते हैं—आठ-नौ रुपये।

"तो मैं भी खेती का काम उठा दूंगा।"

पहले के सदस्य को हटाया गया, धोखेबाज़ी और डकैती से चुनाव जीता गया। चुनाव के बाद ठेके आदि का हिस्सा-बाँट हुआ—इसी प्रक्रिया

में चोट्टि अंचल का आधुनिक समय से परिचय हुआ। निर्वाचित सदस्य और शक्ति-प्राप्त दल के काम-काज भी पेशेवर और दिखावटी हो गये। अब वे दिन न रहे कि तीरथ बेगार भी ले और 'का रे छगन' कहकर बातें भी करे। इस शासन में प्रत्येक का चरित्र दूर कर अपनी श्रेणी की भूमिका में काम लेना था। चोट्टि ने कहा, "अब जो देखोगे वह अपनी जिन्दगी में नहीं देखा होगा। लगेगा, पहले कितने सुख में थे। देखा नहीं कि खून करके चुनाव जीता?"

"बात दूसरी कही।"

"हाँ।"

"क्यों कही?"

"सोचकर देखो, छगन!"

छगन बुड्ढे ने नाक को चिन्ता से सिकोड़, गला साफ कर कहा, "दो बार देखा। उस लड़के को सबके सामने मारा, और बात दूसरी कह दी। उसको मारा सबके सामने और बात कुछ और कह दी।"

"क्या समझे?"

"समय बहुत ख़राब है।"

"ब-हु-त बुरा।"

"यह हुआ क्या?"

"जो होना चाहिए वह हुआ। मोतिया जानकर कुछ नहीं कहती। जान से मार सकते हैं। उन लोगों के लिए असाध्य कुछ नहीं है।"

"सब लोग पैसा जादा दे रहे हैं। फिर भी अच्छा है।"

इस उम्र में भी चोट्टि की आँखें सजीव और चमकीली-काली थीं। आँखें उठा हलकी मुसकराहट के साथ चोट्टि बोला, "चड्ढा भला बन रहा है, इसलिए लाला भी दे रहा है, किन्तु वैसा नहीं है।"

"पता है। चारों ओर मजदूरों की जायेगा है।"

"इसी से दे रहे हैं।"

"ओह! एन० सी० डी० सी० आयेगा।"

"हमारे ऐसे भाग्य नहीं होंगे। सरकारी काम ढीलम-ढाल चाल से होता है। पहले देखेंगे, कहाँ कोयला है, उसमें बरस बीत जायेगा। उसके बाद यहाँ कोयला का दफ्तर खोला जाये या नहीं, यह ठीक करने में बरस बीत जायेगा। घर बनाने में बरस जायेगा। मुझे तो लगता है कि यह अभी भी तीन-चार बरस का मामला है।"

"सो होगा।"

"गुंडे लोग इधर-उधर बहुत जुलुम कर रहे हैं।"

"हमें क्या, नंगे फकीर को चोरों का डर नहीं रहता।"

छगन की बात झूठ हो गयी। 1972 के चुनाव के बाद शासक दल ने बहुत ज्यादा वोटों से जीतकर देश के गरीब-गुरबों के बारे में जिस नीति का अनुसरण किया वह बहुत मनोरंजक थी। पाँच बरस के कार्यकाल में केन्द्रीय शोर-शराबे—घोषणाओं, क़ानून बनाने इत्यादि ने भारत को संसार की सभा में ऊँचा स्थान दिलाने में सहायता की। मुक्ति सूर्य का रूप 'रा'[1] देव के समान ही विलक्षण था। लेकिन 'रा' देवता की तरह ही उसका उद्देश्य था शुद्ध रक्त। उसका परिणाम हुआ—गरीबी हटाओ, बेगार ग़ैर-क़ानूनी है, अब कृषि ऋण ग़ैर-क़ानूनी है, इत्यादि नारे और सुधार कार्यक्रम देश के दूर-दूरान्तर में फैल गये थे। पेड़ों-स्टेशनों-बसों इत्यादि पर पोस्टर बनकर लटक गये थे। किन्तु यथार्थ में चोट्टि और छगन आदि की पिसाई चलती रही। इन्हीं पाँच बरसों के राज्यकाल में धनी को और भी धनी बनाने के काम में, निम्नवर्ग और आदिवासी लोगों को जूतों के नीचे रखने के काम में, सबसे ऊपर, पोर्टफोलियोहीन लल्लू बाबू के खिलौने की तरह भारत का नये सिरे से बनाना, पुलिस की मदद से गुंडे, खून चूसने वाले देवता बनाने के काम में समर्पित हुए। उसका उद्देश्य था खोका बाबू के खिलौना की तरह भारत का पुनर्निर्माण। बाबू को चोट्टि या छगन देख नहीं सकते थे, लेकिन उनका खिलौना बनकर लात खाते रहे। जल्दी ही समझ में आया कि पुरानी कहावत को नये ढंग से लिखने का वक़्त आ गया है। नंगे लोगों को बटमार और डाकुओं का डर बहुत अधिक था।

इस अंचल में चुनाव का प्रचार करने आये सदस्य को अचानक लगा कि यह जगह बहुत गड़बड़ है। उसी के अनुसार वह पार्टी के सेक्रेटरी को सारा कुछ बताता। वह जो बताता उसका सारांश था कि तीरथनाथ और हरबंस दोनों के मालिक रहने पर भी स्थानीय आदिवासी, अछूत उनसे बँधे नहीं हैं, और भी रोजी-रोजगार करने के लिए स्वतंत्र हैं।

सेक्रेटरी ने बताया, "यह हो सकता है, पर उससे क्या?"

सदस्य बोले, "तीरथनाथ और हरबंस से बात करने पर उनकी राय हुई है कि व्यक्तिगत संबंध रहने के कारण वे प्रचलित ढँग को बदलना नहीं चाहते।"

"यह मुझे मालूम है। मेरे पास भी जमीन है, कर्जदार हैं, बेगार हैं। व्यक्तिगत संबंध रहने पर मार-पीट होने का मौक़ा कम आता है।"

---

1. RAW (रॉ)—सरकार का एक जासूसी विभाग।

"अरे, आप नहीं समझते, साले किस तरह आज़ाद ढँग से चलते-फिरते हैं, उस तरह उनकी कमर नहीं टूटी है।"

"खूब समझता हूँ। एक बात याद रखना।"

"क्या?"

"आदिवासी लोग और अछूत लोगों को लेकर ऐसा कुछ मत करना कि जिससे फ़साद हो जाये। मैं पार्टी का सेक्रेटरी भी हूँ। मेरी मदद से तुम जीते हो। भूलना नहीं, तहसील में मेम्बर को मारने के मामले में तुम्हारे नाम से फ़ाइल भी है।"

"क्यों?"

सेक्रेटरी घाघ राजनीतिज्ञ मगरमच्छ की-सी हँसी हँसा और बोला, "रखनी पड़ती है, ठीक जगह पर रखनी पड़ती है। अगर मैं तुम्हारे काम में अप्रिय बन जाऊँ, अगर मुझे...तो वह काम आयेगी। मैंने तो नहीं सोचा था कि तुम उसे जान से मार डालोगे। सोचा था कि निर्देश तुमने समझ लिया है, बम छोड़कर मीटिंग उखाड़ दोगे।"

"हाँ, ग़लती हो गयी।"

"ताक़त आने से ही नहीं होता है। उसे रखना भी जानना चाहिए।"

"हटाओ, जो हुआ सो हुआ। अब मैंने लड़कों से जो कहा है, वैसा ही करूँगा। इलाके बाँट दूँगा। उनको इलाके दूँगा, एक-दो ठेके। बेचारे घर-बार छोड़ कर पार्टी का काम करने आये हैं। थोड़ी-बहुत तो मदद देनी होगी।"

"तो दो न। मैंने क्या 'ना' कहा है?"

"किन्तु...!"

"क्या?"

"वह था परिगणित जाति का तपसीली। उसने तपसीली और आदिवासियों की भलाई भी की थी। उसी से सालों में गरमी छा गयी है।"

"अरे, मारपीट किये बिना क्या क़ाबू में नहीं लाया जा सकता है? अक़्ल चाहिए। क्या करें, यह वे ही समझें। तुम्हारे सामने अभी बहुत काम हैं। आगामी चुनाव में तुम जीते तो मंत्री भी हो सकते हो। मंत्री बनने पर काम दिखाना पड़ेगा। सिर्फ़ बुराई करने से पब्लिक मदद नहीं देगी। इस बार की तरह हर बार वोट नहीं मिल सकते हैं। तुमको भलाई-बुराई दोनों करनी पड़ेंगी। वोटों के मामले में गुंडई वहीं चलेगी, जहाँ पब्लिक भी तुम्हारा समर्थन करती हो।"

"करेगी न।"

"तीरथनाथ-हरबंस अल्पसंख्यक हैं, रेलवे के कर्मचारी आने-जाने वाले हैं, इसी से उनकी संख्या कम है। बहुसंख्यक आदिवासी और अछूत हैं। चोट्टि बड़े आनन्द की जगह है। वहाँ तुमको होशियारी से चलना पड़ेगा।नहीं तो...।"

"क्या ?"

सेक्रेटरी की मुसकराहट और भी ज़हरीली हो गयी। बोले, "बच्चू ! तुम तो कल के बच्चे हो। लेकिन मेरा नाम दक्षिण-पूर्व बिहार में सब जानते हैं। और ईश्वर की कृपा से दिल्ली में भी मेरा मेलजोल है। मेरी बात न मानकर चलने से बहुतों का राजनैतिक जीवन समाप्त हो गया है। यह तुमको भी जान लेना चाहिए। तुम्हारे पिता को 1957 में लाचार होकर ही बैठा दिया था। बेचारे मर भी गये। उनका बेटा होने के कारण ही तुमको ...।"

"हाँ-हाँ। आपकी मदद के बिना मेरा कुछ न होता।"

"आखिरी बात। चोट्टि और ढाइ और कुरमी और नरसिंगगढ़—इन अंचलों का एक इतिहास भी है। कोई भी छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। गाँवों में बहुत छेड़छाड़ करने से खून बह जाता है, नक्सली ढंग की हिंसा होने लगती है। तुम्हारी बेवकूफ़ी से उस अंचल में किसी हिंसा की शुरुआत नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुम गये। वह नक्सली मारा गया है, यह मत भूलना।"

"नहीं भूलूँगा।"

"आदिवासियों के तीज-त्योहार-मेला—किसी में कोई गड़बड़ मत करना। एक काम की बड़ी ज़रूरत है। आदिवासी और अछूत चोट्टि में इकट्ठे हैं। चालाकी से उनमें फूट डालना अच्छा होगा। चोट्टि में चोट्टि मुंडा नाम का एक बुड्ढा है। उस अंचल में उसका बड़ा सम्मान है। उसके लड़के के केस के मौक़े पर आदिवासी अफ़सर दिलीप तरोये ने बहुत मदद दी। तरोये अच्छा अफ़सर है। अब डिरेक्टर ट्राइबल वेलफ़ेयर हो गया है। चोट्टि को अगर हाथ में रखकर चल सकते हो, तो वह अंचल मोटे तौर पर तुम्हारी मुट्ठी में रहेगा। जितनी बातें बतायीं, उन्हें याद रखकर काम करना। हमारे नेता यहाँ की भूमिका नहीं देखते? वे अब पूर्व गोलार्ध के लीडर बन गये हैं। भैया! तुम्हारा काम उनके काम में मदद करना है। अपने पक्ष में उनका माहात्म्य देखा है?"

"देखा है।"

"दीवार पर तसवीर टँग रही है, देखते हो न? वह मैं हूँ।"

"वही तो। अच्छा है।"

"क्या ?"

"किसी से पूछ नहीं सकता। कुछ जानने की इच्छा हो रही है।"

"क्या ?"

"छुआछूत मैं मानता हूँ, आप भी मानते हैं।"

"बिलकुल। वर्णाश्रम हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

"यह क्या सच बात है कि महात्मा जी छुआछूत नहीं मानते थे ?"

"भैया ! वे थे देवता। देवता की बातें क्या आदमी समझेगा ?"

"ठीक कह रहे हैं।"

सदस्य चले गये। सेक्रेटरी ने अब अपने सेक्रेटरी से कहा, "किस माल को अखाड़े में उतारा है, देखा ?"

"देखा, लेकिन क्यों ?"

" 'लेकिन क्यों' क्या ?"

"देवकीनन्दन कैसा अच्छा लड़का था। आपके हाथों का सिखाया ग्रामसेवक लड़का। वह साला धनबाद में मोटर के टायर में शराब भरता था, सिनेमा के टिकटों का रोज़गार करता था, मारवाड़ियों को रंडी सप्लाई करता था। वह खून के मामले में अभियुक्त बना, छूट गया। इसको क्यों लाये ?"

"अब अर्जुन मोदी ऊपर उठ रहा है। हमारे शहर के बाहरी हिस्सों—मुफ़स्सिल—में लोफ़र-गुंडों को लेकर उसकी युवलीग बन रही है। इसी से इस लौंडे को लाया हूँ। भैया, मैं हूँ हवामशीन का मुर्गा, सिनेमा में जैसा देखते हो। जिधर की हवा हो उधर घूमना जानता हूँ। नहीं तो ज़िन्दा रह पाता? आजकल राजनीति में खून-खराबी देख नहीं रहे हो ?"

"हमारा ज़माना चला गया। सब-कुछ सुन्दर चलता था। राजनीति कैसा मुनाफ़े का व्यापार बन गयी थी। सबका मुनाफ़ा रहता था। कितने रास्ते खुल गये। मैंने अपनी साठ बरस की उमर में बंबई शहर भी नहीं देखा। मैं यूथ डेलीगेशन में सिंगापुर-हाँगकाँग-मनीला-जापान चला गया। तमाम ट्रांज़िस्टर और कैमरे लाकर बेचे। क्यों? खून-खराबा तो नहीं किया? उससे कुछ नुकसान हुआ? आजकल क्या है?"

"भैया ! तुम मेरे मन की बात ही कह रहे हो। पुराने देश-सेवक क्या हिंसा चाहते थे? उसने उस मेम्बर को मार डाला। उसके लिए मुझे दुख नहीं हो रहा है? अब 'आदिवासी समाचार' उसके बीवी-बच्चों के लिए रुपये जमा कर रहा है। बताओ तो, कितना सच्चा आदमी था! दस बरस मेंबर रहा। एक पैसा नहीं बना सका! ऐसे आदमी को हटाकर

इसे लाया। इसमें मुझे अच्छा लगता है ?"

"पता नहीं, क्यों मारा ?"

सेक्रेटरी जोश में आकर बोले, "मारना बुरा काम है। फिर भी माने लेता हूँ कि तुझे उसके मारने की ज़रूरत थी। ऐसी पब्लिक जगह में मारा ! हज़ारों लोगों को गवाह बनाकर ! पार्टी की बात नहीं सोची। हमारी पार्टी क्या हत्यारों की पार्टी है ? लोगों ने क्या सोचा होगा ?"

"सच बात है।"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं। वेस्ट बंगाल में 1971 में बरानगर काशीपुर में बिलकुल यही नहीं हुआ। तीन सौ मुंडों ने जाकर दो-ढाई सौ नक्सली लड़कों को मार दिया और पुलिस कुछ नहीं बोली, सिद्धार्थ राय ने भी कुछ नहीं किया। सब दबा दिया। वही जान कर यह लोग जाग उठे हैं।"

"यह क्या ठीक है ?"

"कभी नहीं। तू पुराना गुंडा है। तू क्या सिद्धार्थ राय है ? उस तरह की अँग्रेज़ी आती है ? प्रधानमंत्री के साथ खाना खाता है ?"

"कहाँ की बात करते हो ? प्रधानमंत्री को देखकर पतलून खराब करनी है ? अँग्रेज़ी ! उसे हिन्दी आती है ?"

"देखना चाहिए, क्या करता है।"

सदस्य का पहला काम हुआ, पार्टी सेक्रेटरी के पास से प्रदेश के सेक्रेटरी के पास जाकर सब बताना। प्रदेश सेक्रेटरी बोले, "क्या ? तुमसे यह सब कहा है ?"

"कहा तो है।"

"न-न। बुड्ढे को हटाना पड़ेगा। उनकी यह आदिवासी-अछूत की मुहब्बत और चालाकी से चलने की नीति भारत की आज की राजनीति में नहीं चलती। तुम लड़ जाओ। शुरू में ही विधान सभा में किसी बात को लेकर शोर मचा दो, जिससे कुछ प्रभाव पड़े।"

"गो-हत्या लेकर शोर करूँ ? बहुत चालू समस्या है।"

"ना-ना। बहुत सांप्रदायिक हो सकती है।"

"तो ?"

"देखता हूँ। और सुनो ! रोमियो का मेम्बर को बम से मारना ठीक नहीं हुआ। वह पैसा जानता है। कल कोई और पैसा दे तो तुमको बम मार देगा। उसे तुम जो हो सके, दो।"

"रोमियो, पहलवान और दिलदार—तीनों लोगों को ठेकेदारी दे रहा हूँ, रुपये दिये हैं और इलाके बाँट दिये हैं।"

"ठीक। तो सोच लो, किस बात पर बोलोगे ?"

"गुरू ! मेरे मुँह से तो अच्छी हिन्दी नहीं निकलती।"

"दिलदार बता देगा।"

इसके बाद सदस्य चेलों को लेकर शराब पीने गया। शराब पीते-पीते बोला, "धुत्, यह साफ़ कपड़े पहन कर विलायती चीज़ पीना मुझे ठीक नहीं लगता। मैं तो हूँ जनता का आदमी। चुआई हुई पिऊँगा, लुंगी पहनकर रूमाली बीबी को चिपटाकर धनबाद स्टेशन पर नाचूँगा, तमाशा करने के लिए स्टेट बस का टायर बंदूक से फोड़ दूँगा। अब सब बन्द। अब तो साबुन रगड़ना पड़ता है, दाँत माँजने पड़ते हैं। रूमाली भी कह रही थी, पुरानी पहचानी गंध कहाँ गयी ?"

दिलदार बोला, "वह सब भूल जाओ, गुरू।"

"कैसे ?"

"विधान सभा की बात सोचो।"

"क्यों सोचूँ ?"

"किताब-इताब पढ़ो।"

"तुम पढ़ कर मुझे बताओ।"

"न-न, तुम भी पढ़ो।"

उस पढ़ने में ही मामला बिगड़ गया। सदस्य ने चौथे दर्जे की कुछ किताबें लेकर शिक्षा शुरू की और इतिहास की किताब पढ़ कर वह बहुत खफ़ा हो गया। दल के साथ सदर जाकर इतिहास की किताब के लेखक, मुँड़े सिर, काठिया बाबा के भक्त, निपट भलेमानुस बिरिज तिवारी के घर में घुसकर उसे खूब पीटा और बोला, "अछूतों से प्यार दिखा रहे हो ?"

"कैसे ?"

"क्यों लिखा कि गौतम बुद्ध शूद्र के घर सूअर खाकर बीमार पड़ गये और मर गये ? अछूतों ने भगवान को मार डाला, यह बात लिखने से अछूत सिर पर न चढ़ बैठेंगे ?"

"काहे ?"

"तो ले !" कह कर सदस्य ने बिरिज तिवारी के कागज-पत्तर फाड़ डाले और बोला, "सारी इतिहास की किताबें जला डाल।"

बिरिज तिवारी ने उसी समय अपनी ओर से भरसक शोर मचाया। मामला दूर तक गया। अख़बारों में ख़बर सुर्ख़ियों में छपी। 'आदिवासी समाचार' ने सदस्य के पिछले जीवन की कहानी छापकर अपनी बिक्री बढ़ायी। दिलदार कलकत्ता गया था। भागा-भागा आया। विधान सभा में मामला उठा। सदस्य को दाहिने-बायें खूब डाँट पड़ी। प्रदेश के सेक्रेटरी

तक ने सदस्य को गालियाँ दीं। पार्टी सेक्रेटरी बोले, "बेवकूफ़, गधा, जो दूसरी किताबों में लिखा है, वही तो उसने लिखा। इसी अक़्ल पर तुम मेम्बर बने हो ?"

सदस्य चुपचाप सब सुनता रहा और बोला, "चेले तो कहते हैं कि बुद्ध हिन्दू देवता हैं। कृष्ण के एक अवतार हैं। वह आदमी ऐसा बुरा काम कर गया ?"

"यही तो देख रहा हूँ।"

"हटाओ, मैं अब विधान सभा में मुँह नहीं खोलूँगा। अपना इलाका दुरुस्त करूँगा।"

सबकी जान में जान आयी और अब शुरू हुआ शेर का खेल। सदस्य ने समझा, इस अंचल में सुविधा हुई। अख़बार में फटाफट खबर नहीं निकलेगी। कोई भी आदिवासी या अछूतों के बारे में माथा-पच्ची नहीं करता। दिलदार बोला, "ऐसी फ़ील्ड रहते गुरु, तुम बुद्ध की बात लेकर शोरशराबा करने गये !"

"तुम कलकत्ता क्यों गये, रंडी के बच्चे ? तुम रहते तो इस तरह का किस्सा होता ?"

"अब तुमको छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

चौदह

इसी तरह चोट्टि अंचल के जीवन में रोमियो, पहलवान और दिलदार घुस पड़े। बुद्ध की कहानी पर सदस्य की जो छीछालेदर हुई, उसने भी इस प्रवेश में शीघ्रता की। इसी प्रकार करुणावन शाक्यमुनि चोट्टि आदि के जीवन में अनजाने ही एक तत्व बन गये।

तीरथनाथ, उसके खेत और ज़मींदारी के साथ चोट्टि का कोई संबंध नहीं रहा। हरबंस को नयी ठेकेदारी मिलने से वह काम में लग गया। उसने चोट्टि को बुलाकर कहा, "चोट्टि ! वर्षा बीत गयी है। लालाजी के काम में मैंने पहले नुकसान नहीं पहुँचाया, अब भी नहीं करूँगा। लेकिन अब चामा में फैक्टरी चालू हो रही है। दो सौ क्वार्टर बनेंगे। कितनी ईंटें लगेंगी, इसका ठीक नहीं। लेकिन कुल ईंटें मैं दे रहा हूँ।"

ग़रीब चोट्टि भावी लखपति हरबंस से हँसकर बोला, "यह बहुत अच्छा हुआ, महाराज ! कोई और आदमी भी ठेकेदारी लेकर राजा बन

जाता। तुम राजा बनो महाराज, हम देखेंगे।"

"न-न चोट्टि, वह सब बाद की बात है। अभी तो तुमसे काम की बात है।"

"कहो, महाराज !"

"मेरा तो लेबर लगेगा।"

"हम तो हैं।"

अब हरबंस हँसा। बोला, "बहुत, ब—हु—त-से आदमी लगेंगे। चोट्टि, बीड़ी मत सुलगाओ। एक सिगरेट पियो न ! पीकर देखो न, कैसी लगती है।"

चोट्टि ने सिगरेट ली। सुलगाकर आँखें सिकोड़ीं और बोला, "किस मज़े के लिए पीते हो ? घास की तरह है।"

"बुझा क्यों रहे हो ?"

"रख लूँ। हरमू पियेगा। कोयेल बीच-बीच में हाट से लाता था। उसे अच्छी लगती थी।"

"अब सुनो !"

"कहो, महाराज !"

"लेबर-कुली बहुत चाहिए। गाँव से जो मिलेंगे सो पता है। लेकिन मुझे आदिवासी ज़्यादा पसन्द हैं। तुमको सब मानते हैं। तुम कुरमी, और नरसिंगगढ़ से मेरे लिए कुछ आदमी ले आओ। लाओगे ?"

"कुरमी के लोग आयेंगे क्योंकि उनके आसपास वैसा कोई काम नहीं है। समझो, नरसिंगगढ़ भी गया, वे भी आ गये। किन्तु...?"

"क्या, कहो।"

"उन्हें भी सवा रुपया मिलेगा ?"

क्या देने पर क्या रहेगा, यह हिसाब हरबंस ने मन-ही-मन कई बार लगाया था। वह जानता था कि इनको पाँच रुपये देने पर भी उसे फ़ायदा रहेगा क्योंकि उसका ठेका दो लाख रुपयों का है। वह बोला, "दो रुपये मजूरी दूँगा। पक्का ढाई सौ भुट्टों का सत्तू और एक सौ भेली गुड़ पानी पीने के लिए। एक बात है, काम मुझे तीन महीने में पूरा कर देना है।"

चोट्टि की आँखें सूर्य निकलने के पहले के आकाश की तरह शांत और सुन्दर हो गयीं। वह धीमे से बोला, "महाराज, यह बात कहने से सब बहुत खुश हो जायेंगे। तुम्हारा भला हो।"

"तुमसे साफ़-साफ़ बता रहा हूँ, इस काम के लिए यह रेट है। हमेशा कंट्रैक्ट तो मिलेगा नहीं। तब यह रेट न दे सकूँगा। वह भी बता देना या।"

"वह भी कह दूँगा।"

"तुम्हारे साथ और भी बात है।"

"कहो, महाराज !"

"तुम्हारी उमर हो गयी है। उनके साथ तुम्हें बराबरी का काम नहीं करना होगा। यह सब लेबर ठीक से काम करे, तुम यह सब देखना। तुमको मैं तीन रुपया दूँगा।"

"महाराज, वैसा क्यों करेंगे ? मैं ठेकेदार नहीं हूँ। एक रुपया जादा लेने से मेरी गृहस्थी को बहुत फायदा है। किन्तु मैं ठेकेदार तो नहीं हूँ कि जादा रुपया लूँ। इसके सिवा हम अभी तक मिल-जुलकर काम करते रहे हैं। और महाराज, उमर की बात कहने से मन को दुख हुआ। अभी भी पेड़ काटता हूँ, दस मील चल भी लेता हूँ, अपना भात खुद कमा लेता हूँ। अपने बाप की ओर देखो। वह भी काम करता है।"

हरबंस बोला, "सो तुम जानो। अच्छा, अगर तुम रुपये नहीं लेते, फिर भी उनकी तरह काम नहीं करने दूँगा। तुम तो हमारे एक ही चोट्टि हो। तुम्हारे जाने पर दूसरा नहीं मिलेगा।"

"जाना कौन चाहता है ?" चोट्टि हँसा। बहुत ही दुर्बोध्य हँसी हँसा। बोला, "बहुत जमाना देखा है महाराज, और भी देख रहा हूँ। यह चोट्टि कैसा था ? हम-तुम जहाँ खड़े होकर बातें कर रहे हैं, वहाँ एक बाबू था, मैं तब दस बरस का लड़का था, यहाँ घना जंगल था। गाय लेकर मैं घुसा। गाय बाघ की गंध से भागी। मैं पाकड़ के पेड़ पर चढ़ गया। मेरे सामने आदमी लेकर चला गया। उस समय रेल-लाइन इधर-उधर बन रही थीं। जिस बाघ को मानुस का सवाद मिल जाता, उसके जुलुम से लाइन का काम बन्द हो जाता।"

"चोट्टि, यह पहाड़ क्या ब्लास्ट कर उड़ाया गया है ?"

"नहीं महाराज, हमेशा से एक-सा ही है। बीच में आधे मील तक फाँक है, दो पहाड़ दोनों ओर हैं, हम लोग इन्हें दो सौतें कहते हैं। हमेशा से। बाप-दादे बता गये हैं, धरती बनने के बाद असुरों की पत्नियाँ हरमदेउ के पास झगड़ा करने गयी थीं। हरमदेउ ने उन्हें नीचे पटक दिया। उसी से सारी दुनिया में पहाड़ हो गये। सो यहाँ पहाड़ फाड़ा नहीं गया है। बीच में से रेल निकाली गयी है। ऐसी अनेक बातें हैं।"

"तो फिर चोट्टि, वही बात रही। छगन से कहना पड़ेगा ? उससे तो कहा नहीं है।"

"मैं कह दूँगा।"

हरबंस को अंदर-ही-अंदर कुछ जरूरी काम-सा लगा। क्या बात थी, वह समझ नहीं पा रहा था। वह कंट्रैक्ट के ढंग से ही काम करना चाहता

था, मुंडों को खुश रखना चाहता था। इस अंचल में पोली ईंट बनाने का काम बड़ी अच्छी तरह हो सकता है। हरबंस ईंट बनाने का कारखाना खड़ा करना चाहता था। आदिवासियों और अछूतों के लिए उसके मन में कोई प्यार नहीं है, ऐसा सोचता था। अब लगा कि है। बहुत दिनों की जान-पहचान हो गयी है। इसके सिवा हरबंस खुद ग्रेजुएट है, अख़बार पढ़ता है। लेबर को मोटे तौर पर संतुष्ट रखने लायक़ मज़दूरी देकर अपना काम खड़ा करना चाहता है। सदस्य के चेलों का जंगली गुंडापन, जानवरों की-सी उच्छृंखलता उसे अच्छी नहीं लगती। उनकी तो बात ही और थी। सदस्य खुद जिस तरह का असभ्य और जानवर था, वैसे में अगर वह सदस्य न होता तो हरबंस उसे घर में न घुसने देता। हरबंस के मन में यही उठता रहता कि पिता के साथ कोई सलाह न कर सारे व्यापार में घुसना उसके लिए उचित न हुआ। अंत में वह पिता के पास गया। परतापसिंह ने अब मोटर सर्विस रिपेयरिंग का कारखाना और दूर-दूर तक माल ले जाने वाली ट्रक-सर्विस खोल दी थी। हरबंस की पत्नी, लड़का-लड़की उनके पास ही रहते थे। लड़का-लड़की बोकारो में पढ़ते थे। हरबंस की माँ नहीं थी। विमाता और सौतेले भाई के खेती के काम-काज के उत्तराधिकारी होने से परताप के प्रबल व्यक्तित्व के कारण घर में कोई अशांति न थी। हरबंस की पत्नी, लड़का-लड़की सौतेली माँ को विशेष प्रिय भी थे। ईंटों का भट्टा और चड्ढा बस सर्विस हरबंस की अकेले की थीं।

परताप ने लड़के की बातें ध्यान से सुनीं और वे गंभीर हो गये। बोले, "यह तुमने अच्छा नहीं किया। यह मेम्बर कितना मुनाफ़ा लेगा ?" रेट सुनकर वे बोले, "मैं तो यहीं बैठा था। एक बार भी नहीं पूछा। इस तरह जो ताक़त में आ गये हैं उनके साथ हमारी तरह के लोगों का कारबार करना बहुत मुश्किल है। वे क्या करते हैं, सब जानता हूँ। सरकार से कोयला लेने के बाद क्या हुआ, वह सुनो। ठेकेदार ने लेबर दिया, लेबर की मजूरी से बट्टा लिया। ले-देकर जो बचता है, उसमें से गुंडे लोग लेबर से बट्टा ले रहे हैं। मालिक-मजूर के संबंध में हर जगह यह घुस गये हैं, बट्टा ले रहे हैं। नतीजा होता है कि गड़बड़ होती है। टाउन के सारे साइकिल-रिक्शा वाले हर रोज़ मालिकों को पैसे देते थे। जो नहीं देता था, उसे मार-पीटकर भगा देते थे। बड़ी जगहों में रिक्शावालों की यूनियन इनसे बातचीत करके कुछ समझौता कर लेती थी। लेकिन छोटी जगहों में गड़बड़ हो सकती थी। तुम्हारा वह मेम्बर तो बहुत ही गंदा है। खून-खराबे की बात मालूम है ? खून करके पिछले मेम्बर को हटा दिया।"

हरबंस चुप रहा।

"सब जगह अछूत पिटते हैं।"

हरबंस चुप रहा।

हरबंस का लड़का आकर बाबा के पास चिमटकर खड़ा हो गया और बोला, "अछूत माने अनटचेब्ल। मालूम है, बाबा? बहन को जब चिकेन पॉक्स हुआ, तब मैं बहन को छूता नहीं था। उस समय बहन अछूत हो गयी थी, यही है न बाबा?"

परताप बोले, "समझा, अब जाओ। हम बातें कर रहे हैं।" लड़के से बोले, "चूल्हे में जायें अछूत। मैं अपने लड़के की बात सोच रहा हूँ।"

"क्या किया जाये?"

"ज़रा पूछा नहीं? स्टेट बैंक ईंटों का कारखाना बढ़ाने के लिए लोन—कर्ज़—देता, सीमेन्ट कम्पनी नया टाउनशिप बना रही है, वे तुमको कंट्रैक्ट देते। मैं बात चला रहा था। इस तरह का कारबार सबसे अच्छा है। गरदन पर चोट न लगती। बैंक के रुपयों से कारखाना चलाने पर, सीमेंट कम्पनी को माल बेचने पर इतना अच्छा नफ़ा रहता है हरबंस, कि वेज ऐक्ट के हिसाब से लेबर पेमेंट करने पर भी बहुत मुनाफ़ा रहता है। गुडविल भी बनती है, और नयी-नयी सरकारी अंडरटेकिंग में भी ठेके मिलते हैं।"

"पिताजी, एक बात है।"

"कहो।"

"आप बात चलाइये। मैं भिड़ जाऊँगा। बैंक-लोन से कारखाना चालू करने पर मैं नयी टाउनशिप को माल दे सकूँगा। इनके ज्यादा झंझट करने से बाहर निकल सकूँगा, नुकसान न होगा।"

"वैसा समझना तो यहाँ चले आना।"

"लेकिन फ़ील्ड में काम करना बड़ा अच्छा है, पिताजी। और पोली ईंट इस समय नफ़े की चीज है। और लेबर भी बहुत भला है। कास्टिंग-मोल्डिंग-लेइंग बहुत अच्छा सीख सकते हैं। यह तो कुछ बहुत स्किल का काम नहीं है। हमारा अनस्किल्ड लेबर भी सीख सकता है। मेरी छोटी फ़ैक्टरी है। जान-पहचान के लेबर से काम संभाला जा सकता है।"

"आदिवासी लेबर सबसे अच्छा होता है। सिखाने से सीख जाते हैं, चरका नहीं देते, थोड़ी-बहुत ख़ातिर कर काम करो, बस काम चलेगा।"

"तो वही बात रही।"

"तुम्हारी मुश्किल होगी, लेबर पेमेंट से जब लोग बट्टा लेंगे। मुझे डर है, तभी लेबर ट्रबल होगी।"

"हमें वही फ़िकर है। चोट्टि के लिए बेईमानी हो जाने पर यहाँ आदि-

वासी लेबर मिलना मुश्किल है। बेकार की अशांति भी अच्छी नहीं लगती।"

"अरे, चोट्टि अभी ज़िन्दा है?"

"बिलकुल, बहुत पोढ़ा भी है।"

"तीर चलाता है?"

"उसके चेले चलाते हैं।"

"चोट्टि से क्या कहा?"

"चोट्टि तो एक तरह से आदिवासियों और अछूतों का लीडर है। बताइये तो कितनी शान्ति है! उससे कह दिया, इतना लेबर ले आओ, इतने दिनों में काम पूरा करो। बस, काम हो गया। मेरा ओवरसियर भी उसे पसन्द करता है। मेरी तरह शान्ति से कोई लेबर काम नहीं करता।"

"देखा जायेगा। बैंक का लोन और टाउनशिप का कंट्रैक्ट मैं देखता हूँ।"

हरबंस का मन हलका हो गया। उसने सौतेली माँ का बनाया पालक-पनीर और गोभी-मटर खाया। उसके बाद पत्नी के साथ सिनेमा गया।

चोट्टि ठीक समय पर आदमियों को ले आया। हरबंस से बोला, "छगन के साथ जो लोग आ रहे हैं, उनका जिम्मा छगन का है। मेरे आदमियों का जिम्मा मेरा है। नरसिंगगढ़ के मुंडाओं का जिम्मेदार भागवत है, उराँव लोगों का जिम्मेदार मंगल उराँव है। कुरमी के मुंडा लोगों का जिम्मा इस सुगन का है। और महाराज! ये लोग बात मुझसे कहेंगे, तुम्हारी बात मुझसे कहेंगे। इन लोगों में जो बात न मानें उनको मैं निकाल दूँगा। हमें ढलाई का काम दें।"

"केवल मरद?"

"लड़कियाँ कल से आयेंगी।"

हरबंस ताज्जुब में आ गया। बोला, "कहाँ नरसिंगगढ़, कहाँ कुरमी! इस उमर में तुमने सबको जमा कैसे किया?"

"खुद क्यों जाता? खबर भेज दी। बुला लिया।"

"चले आये?"

"इन लोगों में चालाकी नहीं है, भोले हैं। मुझे मानते हैं।"

"दोपहर को आधे घंटे की टिफिन की छुट्टी होगी।"

हरबंस का ओवरसियर बोला, "काम पर टिफिन भेज देंगे।"

चोट्टि बोला, "वह क्यों? अभी नाम पुकारकर काम पर चले जायेंगे। तभी पनपियाई दे दी जायेगी। उसमें जादा सुविधा है।"

हरबंस बोला, "राइट।"

उसी तरह काम चला। कागज़ के ठोंगे में बँधा सत्तू और गुड़ लेकर सब काम पर गये। जिस तरह यह लोग काम करते थे, उसे देखकर ओवरसियर भी ताज्जुब में पड़ गया। बोला, "देखने की ज़रूरत नहीं। चिल्लाना नहीं पड़ता है, और काम निकल जाता है।"

"चोट्टि के रहने से।"

"ताज्जुब की बात है।"

बड़ी ही शान्ति से काम होता रहा, फिर भी हरबंस के माथे पर से चिन्ता की रेखा नहीं मिटी। वह पिता के पास जल्दी-जल्दी जाता रहा। सीमेंट कंपनी के उपग्रह नये छोटे शहर का कंट्रैक्ट चाहिए, चाहिए स्टेट बैंक का लोन। कंट्रैक्ट रुपयों की आशा में उसने, जो कुल जमा-पूँजी थी, ईंटों के कारखाने में झोंक दी है, उसका भी ध्यान न रहा। उसके मन की विक्षिप्त अवस्था का कारण था इकतालीस मील दूर निकम्मे गाँव में रोमियो और उसके भाइयों का देशप्रेमात्मक कामधंधा।

रोमियो ही उक्त घटना का नायक था। 'रोमियो' नाम उसका अपना उपार्जित किया हुआ था। बाप ने दोनों लड़कों के नाम रखे थे सावन कुमार और तुलसीदास। पटना शहर में छात्र-जीवन लंबा कर सावन कुमार का साइकिल चलाते-चलाते लड़कियों की ओढ़नी छीनने और आँचल काटने में कोई सानी न था। बारह से चालीस तक हर उमर की औरतों से असभ्यता करने में उसने कुशलता प्राप्त कर ली थी और अपने को 'रोमियो' नाम दिया। साथ ही वह युवा लीग का तरुण सेनानी बन गया। वन-भोजन में जाकर वह डाँट खाता। दल की एक लड़की को उसने निर्दोष आनन्द और पापरहित मन से शराब पीकर जन्मदिन की पोशाक में नाचने को कहा। लड़की ने उसे चाँटा जड़ दिया। इसका परिणाम हुआ कि उसने लड़की को जंगल में ले जाकर उसके साथ बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। परिणाम बहुत दूर तक गया। लड़की के पिता को किसी तरह मुक़दमे को अदालत में ले जाने की सुविधा न हुई। इसके बाद लड़की के बड़े भाई—सेना के एक अफ़सर—ने पटना से माँ-बाप को हटा दिया और रोमियो को खूब पीटकर दोनों कानों की लोरें काट लीं। रोमियो इस भाई के ख़िलाफ़ कोई उचित कार्रवाई न कर सका। लोकलज्जा से वह पटना छोड़ मुफ़स्सिल चला गया। दल के युवक नेताओं ने उसे विश्वास दिलाया कि जहाँ भी जाओगे, सहारा मिलेगा। धीरे-धीरे रोमियो को मालूम पड़ा कि लड़की के पीटने से हो या मानसिक कारणों से, पुरुषोचित काम में वह निकम्मा हो गया है। रुपये-पैसे उसकी बात नहीं मानते। तरह-तरह का इलाज हुआ। नरभेड़े को मिट्टी में दबाकर मारने के बाद

उसके अंडकोष को घी में तलकर खाने से पेट फूल गया। वे खुश न हुए। रोमियो को अपनी अक्षमता स्वीकार करनी पड़ी। अब उसके दिमाग़ में ज़मीन चाटना आया। सारे अध्याय के अन्त में अन्तिम प्रयत्न के रूप में वह पटना की एक पुरानी पहचान की वेश्या के पास गया। यह वेश्या पत्थर को भी संगमेच्छुक कर सकती थी, ऐसी उसकी प्रसिद्धि थी। रोमियो ने उसे सोने का हार देने का वादा किया। लेकिन वह वेश्या भी जब असफल रही तो बड़े गुस्से में रोमियो ने उसके शुद्ध मक्खन की तरह कोमल गले को दबा दिया, दबाता गया। यह काम बहुत ही अप्रत्याशित था, और वेश्या जल्दी ही मर गयी। आँखें कोटर से निकल पड़ीं, ओंठ और गले की नली से झागदार ख़ून भर गया। ओठ, नाख़ून और चमड़ी नीली पड़ गये और अंग-अंग सूज गये—सब हो गया। रोमियो कुर्ता और पैंट पहने था। कलेजे में मुक्ति का उल्लास था। उसने समझा कि हत्या कर उसे शान्ति मिल गयी है। हत्या ही उसकी भूमिका है। इसीलिए नियति या सुषमा के भाई ने उसका पौरुष-हरण कर लिया है। अपनी भूमिका में रोमियो वेश्या के घर से निकल आया। इसके बाद तरुण सेनानी की भूमिका में उसने बहुत-से ख़ून किये। बहुत अफ़सोस के कारण गोली मारी, क्योंकि मारने में उसे बहुत सुख मिलता था। जल्दी ही उसने प्रसिद्धि प्राप्त की। उसको उसके भाई तुलसीदास का साला और कानाटा गाँव के पहले के ज़मींदार का लड़का दरिद्रनारायण मिसिर हर तरह की मदद देते थे।

इन दरिद्रनारायण मिसिर और अछूत रैदास का एक ज़मीन का झगड़ा चल रहा था। ज़मीन रैदास लोग बाँट में जोतते थे। लिखित पट्टा था। उक्त साठ बीघा ज़मीन कई पीढ़ियों से अठारह रैदासों की अन्नदाता थी। किसी विकल्प का समाधान किये बिना ही दरिद्रनारायण ज़मीन लेना चाहते थे। मामला बहुत दूर तक गया और आजकल गाँव में पुलिस चौकी बन गयी है। पुलिस पहरा देती रहती हैं। रैदास धान काटते हैं। रोमियो को लगता है कि दरिद्रनारायण की सहायता करना ज़रूरी है। युवालीग के बीस सैनिक लेकर रोमियो जीप के जुलूस में कानाटा में घुसा। झंडा फहराये हुए उसने और उसके चेलों ने अचानक गोली चलाकर पाँच आदमियों का ख़ून कर दिया। उनमें दो स्त्रियाँ और तीन पुरुष थे। रैदास-पट्टी में आग लगा दी, धान जला दिये। उसके बाद दरिद्रनारायण के घर ख़बर देने गया। पुलिस वाले निष्क्रिय दर्शक रहे। रोमियो ने थाने को धमकाया, "आज कोई रिपोर्ट मत लिखना।" रैदासों से कहा, "मैं फिर आऊँगा और छोटी जात वालों की जगह कहाँ है, उसे फिर पहचनवा दूँगा।" दरिद्रनारायण से कहा, "आज हम, जो

तबियत थी, वह कर सके। सब मालिक-महाजनों से कह दो, पाँच बरस में हरिजनों को ऐसी शिक्षा दे जाऊँगा कि सिर उठाने में पाँच हजार बरस लगेंगे। हरिजन, आदिवासी—सब को हटाओ। ऊँची जात में जो गरीब हैं, वे खेती करें, वे ही खेती-बारी करें। बिहार में अगर यह प्रोग्राम सफल हो तो इंडिया में सब जगह चलेगा।"

दरिद्रनारायण बोले, "भैया, मिनिस्टर लोग क्या बोलेगा ?"

रोमियो बोला, "मिनिस्टर लोग ? स्टेट के मिनिस्टर ? अरे दिल्ली मदद देगी, अभी भी देती है।"

दरिद्रनारायण कृतज्ञता का प्रतिदान देना चाहते थे। बोले, "आसाम से गैंडा मारकर उसका सींग लाया हूँ। खाकर देखेंगे ?"

"न-न।"

"तुम अर्जुन थे। बृहन्नला बन गये।"

"भैया, अब सब नया हुआ जा रहा है। बृहन्नाला भी बना, और अर्जुन की तरह बहादुरी के काम भी किये।"

"यह भी ठीक है।"

"फिर आऊँगा। बीच-बीच में इस तरह ऐक्शन करने से हरिजन डरे रहेंगे। सब लोगों के इस बात को मान लेने से आज देश की शकल ही बदल जाती। देखो न, पुलिस कुछ दिनों चुप रहेगी। उसके बाद पकड़ना होगा तो रैदास को ही पकड़ेगी।"

घटना किसी अखबार में नहीं निकली। फिर भी जानकारी हो गयी। सुनकर हरबंस और अधिक घबराया, रोमियो अगर चोट्टि में आ जाये तो ? रोमियो के पीछे राज्य-सरकार, पार्टी-संगठन, युवलीग, पुलिस, दिल्ली—सब हैं। हरबंस क्या करेगा ? उसकी क्षमता कहाँ तक है ? हरबंस अपनी घबराहट की बात किसी से नहीं कह सकता था। रोमियो ने औरतों और बच्चों को गोली मार दी, यह सोचकर ही उसे डर लगता था।

एक दिन वह काम देखने गया। चोट्टि एक पत्थर पर बैठकर बीड़ी पी रहा था। वह चोट्टि के पास खड़ा हो गया।

चोट्टि बोला, "देखने में कितना सुन्दर है !"

"क्या, चोट्टि ?"

"यह जो सब लोग मिलकर काम करते हैं। काम के लिए बहुत दुख था, महाराज ! अब घर-घर में सब हँसते हैं।"

"यह अच्छा है, बहुत अच्छा है।"

"बहुत शान्ति है।"

"हाँ, चोट्टि !"

"लेकिन ऐसा नहीं रहेगा।"

"क्यों ?" हरबंस चौंक पड़ा।

चोट्टि ने काम करते आदमियों की ओर देखते हुए ही कहा, "कानाटा में क्या हुआ, पता है ? जानते तो हो। तुम्हारी शकल देखकर समझ गया।"

"इन लोगों को मालूम है ?"

"सब मालूम है। जमाना खराब हो गया है, महाराज। कानून-अदालत-पुलुस—सब खरीदने-बेचने का हो गया।"

हरबंस को सहसा मानो भीतर से बल मिला और तुरत आन्तरिक सद्भाव से बोला, "मेरे रहते कोई चिन्ता मत करो।"

"मैं ? चिन्ता ? चिन्ता मैं किसी दिन नहीं करता। चिन्ता करने से कोई फायदा है ? जब जैसा देखता हूँ, भरसक सामना करता हूँ।"

"तुम मेरे लिए एक सहारा हो।"

"वह कभी बन सकता हूँ !" चोट्टि ने गरदन ऊँची कर जोरों से कहा, "अरे लड़कियो, तुम हँस क्यों रही हो ? काम नहीं है ?"

छगन की नतनी जोरों से बोली, "काम पूरा कर दूँगी।"

"जल्दी करो।"

चोट्टि फिर बोला, "यहाँ जरा काम की शान्ति है। दूसरी, खाने की शान्ति है, यह भी रहने नहीं देंगे महाराज ! जमाना खराब हो गया है। खून और मारधाड़ बहुत बढ़ गयी है। इतना खून नहीं होता था।"

हरबंस बोला, "मैं तो हूँ।"

"तुम्हारे लोग हैं, बन्दूक भी है। सावधान होकर रहो। यह लोग दनादन गोली छोड़ते हैं, बम मारते हैं।"

एक दिन ब्रिकफ़ील्ड देखने आये हुए दारोगा ने वही बात कही, "मिस्टर चड्ढा, जो कह रहा हूँ वह मेरे-आपके बीच की बात है। कोई पूछेगा तो मैं मानूँगा नहीं। लेकिन बात सुनिए। बन्दूक है ?"

"है।"

"कितनी ?"

"एक।"

"एक और खरीद लीजिये। लाइसेंस बना देता हूँ।"

"क्यों ?"

"साफ़ बात बता रहा हूँ। थाने के हाथों में अपनी कोई क्षमता नहीं है। युवलीग जो कहती है, वही करना पड़ता है। आप तो जानते हैं। मैं जनसंघी हूँ और यह बात कभी छिपायी नहीं। और जनसंघी हूँ या कुछ भी हूँ, किसी दिन काम में गलती नहीं की। मालिक-महाजन कहें,

कारबारी कहें, सबको मदद दी। अब जो कुछ देख रहा हूँ उससे लगता है, इस मेम्बर की आदत बहुत खराब है। रोमियो मुझे धमकाता है। मैं युवलीग की धमकियाँ सहूँगा? लेकिन बंदूक लेने को क्यों कह रहा हूँ? कुछ फ़साद होने पर मैं कुछ न कर सकूँगा। जैसा मामला होगा, वैसा मुक़ाबला कीजियेगा, मैं देखने नहीं आऊँगा। मिस्टर चड्ढा, हरिजन लोग खचड़ई करेंगे तो ज़रूर ठीक करूँगा। कब नहीं किया? लेकिन औरतों और बच्चों पर गोली चलाना? राम-राम!"

हरबंस व्याकुल होकर बोला, "क्या सोचते हो, क्या होगा?"

"क्या पता!"

हरबंस फिर पिता के पास गया। पिता की बातचीत बहुत ही संतोष-जनक थी। पिता को एक लाइन मिल गयी थी। लाहौर में चड्ढा-परिवार प्रसिद्ध था। देश-प्रेमी हरबंस के पिता के कोई चचेरे भाई जलियानवाला बाग़ में मारे गये थे। हरबंस का सौतेला भाई बिहार का हॉकी चैम्पियन था। इन सारी चीज़ों को भुनाकर बड़े चड्ढा ने विधान सभा के सेक्रेटरी को पकड़ा था। सेक्रेटरी ने आश्वासन दिया था। इसलिए हरबंस को बैंक का लोन और कंट्रैक्ट मिलेगा।

हरबंस खुश मन से घर लौटा और देखा कि रोमियो और पहलवान उसके मकान के बरामदे में बैठे ताश खेल रहे हैं। रोमियो बोला, "बैठिये। कुछ बात है। काम कैसा चल रहा है?"

"अच्छा ही चल रहा है।"

"कोई लेबर ट्रबुल?"

"नहीं। मुझे कभी लेबर ट्रबुल नहीं होती।"

"किस तरह?"

"छोटी जगह है। जान-पहचान होने से झंझट नहीं होता।"

"अमरीकन पालिसी है क्या?

"क्या कह रहे हैं?"

"अमरीकन की तो यह पालिसी रहती है। बड़ी कम्पनियाँ लेबर के लोगों को इतना खुश रखती हैं कि झंझट नहीं होता।"

"वही होगा। चाय-वाय के लिए कह दूँ?"

"कहिए, कहिए।"

चोट्टि ऐसी जगह नहीं थी कि अचानक अतिथि आ जाये तो खाने-पीने की चीज़ें ख़रीदकर ख़ातिर की जा सके। ऊधमसिंह माँ और पत्नी को लेकर रहता था, यही ख़ैरियत थी। हरबंस ने ऊधम से कहा, "रोमियो आया है। चाय और पापड़ भेज दो। बहू इधर न आये। बहुत ही गंदा

लगता है।"

पर रोमियो चाय और खाने को छुए बिना फटाक से काम की बात पर आ गया। बोला, "सुना है कि आप आदिवासियों और अछूतों को बराबर मजूरी दे रहे हैं?"

"हाँ।"

"क्यों? उनकी यूनिटी तोड़ने के लिए यह एक अच्छा मौक़ा मिला था, सुनता हूँ कि यहाँ उनकी बड़ी यूनिटी है।"

हरबंस ने देखा और समझ लिया कि रोमियो को देखकर उसके अंदर कोई डर नहीं है। आहिस्ता से बोला, "मेरा ईंटों का कारख़ाना है। थर्मल पावर प्लांट—बिजली का बड़ा कारखाना या ए० सी० सी० की सीमेंट फैक्टरी नहीं है जी। कुल मिलाकर डेढ़ सौ आदमी काम करते हैं। सत्तर लोग मेरे गाँव के और जान-पहचान के हैं।"

"दूसरे?"

"सब मुंडा हैं। आस-पास के।"

"उस प्रॉब्लम का क्या कर रहे हैं?"

"प्रॉब्लम तो है ही नहीं, करें क्या?"

"यह तो बड़ी अजीब बात है। एम्पलायर है, एम्पलाई है—मालिक-नौकर है—और कोई प्रॉब्लम नहीं है।"

"नहीं जी। देखिये न, जिस-जिस गाँव के लोग आये हैं, उस-उस गाँव का एक बुर्जुग आदमी उन लोगों के लिए ज़िम्मेदार है। यह बंदोबस्त चोट्टि मुंडा का है, और चोट्टि को गाँव के ही क्यों, इलाके के सब लोग उसे मानते हैं।"

"चोट्टि मुंडा! नाम तो जाना-माना सा लगता है।"

"सब जानते हैं। ब्रिटिश अमल में छोटे लाट के सेक्रेटरी उससे मिले थे। आजकल के ट्राइबल डिरेक्टर भी उसे जानते हैं।"

"क्या, फ़ाइटर मुंडा है?"

"न-न। भला, ज्ञानी, बुड्ढा आदमी है।"

"आपकी बातें सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ। लगता है आप भी कोई बड़े आदमी हैं, महात्मा। इन सब खचड़ों को लेकर अच्छी तरह से काम कर रहे हैं।"

"मैं तो कुछ नहीं हूँ जी। अपने पिता के आशीर्वाद से ज़िन्दगी चली जा रही है। बाबा के दोस्त लोग ज़रूर नामी-गिरामी लोग हैं। रामेश्वर प्रसाद...।"

"क्या, असेम्बली सेक्रेटरी?"

"हाँ जी। और बिलास सहाय...।"

"क्या, राज्य के मंत्री?"

"हाँ जी। आई० जी० पुलिस भी बाबा के दोस्त हैं।"

"समझा, कह रहे हैं कि गड़बड़ नहीं होगी।"

"गड़बड़ क्यों होगी? आजकल ऐडमिनिस्ट्रेशन—शासन तो अच्छा चल रहा है।"

"चल रहा है और चलेगा।"

"वही तो कहा न!"

"लेकिन सब जगह एक ही तरीक़ा चलाना चाहता हूँ। उनको जब हफ़्ता दें, तो प्रति आदमी चार आना पहलवान का बट्टा रहेगा—ठेकेदारी। आप वह काट कर हफ़्ता देंगे।"

"लेकिन वे तो ठेकेदार नहीं हैं।"

"वह आपके देखने की बात नहीं है। और उनके राज़ी न होने पर कानाटा बनाकर छोड़ दूँगा। आज आपसे बात हो गयी। कल लाला से बात करने आऊँगा। बता रहे हैं कि यहाँ कोई प्रॉब्लम नहीं है, वह उनके दिमाग़ में डाल दिया है। हफ़्ता से बट्टा काटने की बात कहकर देखिये। प्रॉब्लम देख लेंगे।"

"लेबर ट्रबुल उठाने से काम कैसे होगा?"

"ट्रबुल उठायेंगे?"

पहलवान अब बड़े दाँत वाले पशुओं की-सी हँसी हँसा और बोला, "कुछ ट्रबुल नहीं होगा। दो-चार लाशें गिरेंगी, बीस-तीस घर जलेंगे, वे कलेजे के बल काम करेंगे।"

"उन्होंने तो कुछ किया नहीं है।"

रोमियो सुकरात की तरह समझदारों की-सी हँसी हँसकर बोला, "देखिये, 1971 के अगस्त में मिसेज़ मोदी ने राज्यसभा में नक्सल लोगों के बारे में कहा था, नक्सल लोगों से उन्हें खतम करने तक लड़ाई लड़नी होगी। वही हरी झंडी थी। बस, उसके बाद ही घर से निकाल-निकाल कर नक्सलों को मारना शुरू हुआ। उसी से एक महान् उद्देश्य सिद्ध हुआ। नक्सल लोगों के मन में डर समा गया। ऐक्शन धीरे-धीरे कम कर दिया गया।"

"यह लोग क्या नक्सल हैं?"

"पता है। नक्सल लोगों के वक़्त गवरमेंट ने क़ायदा-क़ानून अलग रख दिये। क्यों? नक्सल लोगों को जो कर सके खतम करे—गवरमेंट यही चाहती है। क़ानून बनाती तो कैसे? क़ानून काम का नहीं

[illegible] नहीं आया? अदालत जाओ! अदालत में जाने पर अछूत लोग मार जाते हैं। तब? गवरमेंट अगर चाहती कि हरिजन लोगों को सरकार की मदद मिले तो क्या खुद क़ानून बनाते, और बैठे-बैठे देखते कि यह क़ानून मज़ेदार तमाशा बना जा रहा है? अरे, आपके छोटा नागपुर में इनमें सौ में से चौंतीस हिस्सा कर्ज़ में डूबा हुआ है, सत्तर भाग गाँव के लोग ग़रीबी की रेखा—पावर्टी लाइन—से नीचे रहते हैं। यह क्या गवरमेंट को नहीं पता है?"

"आप कह क्या रहे हैं?"

"मोटी बात है। अछूतों और आदिवासी लोगों को जूते के नीचे रखिये। तभी वे ठीक रहते हैं। सभी को सस्ते में लेबर मिलते हैं। खेती-बाड़ी ठीक से चलती है। और जो सबसे बड़ी बात है, जात-पाँत की महिमा ऊँची रहती है। यह सब बातें आप भी वक़्त आने पर समझेंगे। जो हो, पहलवान हफ़्ते का बट्टा लेने आयेगा।"

हरबंस ने बहुत धीमे से कहा, "नहीं। मैं महीने के महीने दे आया करूँगा।"

"जैसी तबीयत। लेकिन मेरी बात न मानने से कंट्रैक्ट छूट जायेगा। जो भी कहा, याद रखियेगा। गवरमेंट कब क्या चाहती है, उसे हम अच्छी तरह जानते हैं।"

हरबंस ने ऊधमसिंह से सारी बातें बतायीं। ऊधम उसका कर्मचारी भी था, दोस्त भी। सब सुन-सुनाकर ऊधमसिंह बोला, "आप क्या सोच रहे हैं?"

"तुम बताओ, तुम्हें क्या लग रहा है?"

"कहने में हिचकिचाहट हो रही है। रुपये तो आपके हैं।"

"कहो, कहो।"

"उनके हिसाब में हफ़्ता में चार आना काटने पर महीने में डेढ़ सौ रुपये होते हैं। तीन महीने में काम होगा। इन तीन महीनों में साढ़े चार सौ रुपये देने से इधर शान्ति रहेगी, काम पूरा होगा। ऐसी बड़ी रकम भी नहीं है। मैं होता तो दे देता।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ, ऊधम!"

"लेबर ट्रबुल नहीं चाहिए। बहुत बार तीरथ की वजह से टक्कर हुई है। और मुंडा लोग ज़बान की सचाई समझते हैं। चोट्टि समझेगा कि महाराज ने बट्टा काटा, बुराई की। उसके बाद अगर हंगामा हो तो?"

हरबंस फीकी हँसी हँसकर बोला, "मेरी बड़ी इंडस्ट्री होती,

पहलवान ठेकेदार होता, बट्टा लेता, तो सोचने न जाता। इनके साथ जान-पहचान होने से वैसा नहीं कर सकता हूँ। यह मेरी कमजोरी है। फिर भी नहीं कर सकता। मैं तीरथ लाला नहीं हूँ। पहलवान को लहका दूँ, वह लाशें गिरा दे, ऐसा करने पर बाद में लेबर मिलेगा? फिर इतना जुल्म बरदाश्त ही क्यों करूँ? कंट्रैक्ट का रुपया मेम्बर लेगा। इन्हें भी हिस्सा मिलेगा। फिर भी बट्टा दूँ!"

"अभी नहीं देंगे?"

"देना पड़ेगा। लेबर के ऊपर सरफ़ेस कोलियरी के चिरंजीलाल ने पहलवान को लहका दिया। आग भड़की, और कोलियरी बन्द।"

"इनको माल दे देने से आपको छुटकारा मिल जायेगा।"

"मैं कोई गड़बड़ नहीं चाहता।"

"रुपये लेकर रोमियो और पहलवान हँसते हैं। कहते हैं, जेब से दिया, फिर भी उनसे न कह सके।"

"मैंने जैसा समझा वैसा काम किया।"

"आपकी तरह के आदमी से कोई फ़ायदा नहीं। इसके बाद मैं आपको लेबर दूँगा। उन्हें हटा दूँगा। हमें कंट्रैक्ट लेने पर लेबर भी लेना पड़ेगा। नहीं लेंगे तो कंट्रैक्ट खतम।"

"रोमियो कहता है कि मैं तो आपके लेबर के पास जाऊँगा। बड़ों को देने पर उसे भी देना होगा। झंझट होने पर देख लूँगा।"

हरबंस के मन में भी ज़िद बैठ गयी। उसने पिता को दिखा देना चाहा था कि ईंटों का भट्टा चलाकर वह अपनी हिम्मत पर खड़ा होगा। ब्रिकफ़ील्ड उसकी सारी ज़िन्दगी है। वह मन की आँखों से देख रहा था कि सब उजड़ने को हो रहा है।

लाचार उसने चोट्टि से सब कहा। चोट्टि बहुत ठंडे दिमाग़ से बोला, "एक बार जुलुम सह लेने से जुलुम बढ़ता जाता है। महाराज! तुम्हारा जो धरम हो वह करो। हम बट्टा नहीं देंगे। चाहो तो छुड़ा दो। हम समझ लेंगे कि हमारे भूखे रहने के दिन आ गये हैं। लेकिन लड़कर मरेंगे। यह लोग हमें मारना ही तो चाहते हैं।"

"मैं गड़बड़ नहीं चाहता, चोट्टि! इसी से बट्टा दे रहा हूँ।"

"हम भी भीख नहीं लेंगे। एक घंटा जादा मेहनत करेंगे। उसकी मजूरी नहीं चाहिए। तुम्हारा रुपया है, उसमें से कुछ जायेगा। इससे थाने में बता रखो।"

"थाना इनके नाम पर रिपोर्ट नहीं लेगा।"

"कोई नहीं है, जिससे कह सको?"

"[illegible] है?"

"[illegible] पहलवान का आदिवासी अफसर है। यहाँ हरिजन को मारने-[illegible] नहीं देखेगी। लेकिन मुंडा-उराँव को बिगाड़ने से आग लग जाती है, उसे यह लोग नहीं चाहते। आजकल गौरमेन जादा हरामी है किन्तु आदिवासियों को भड़काना नहीं चाहती।"

"अगर तुमको मारे तो?"

"अरे महाराज! तुम्हारा धंधा लाख टके का है। मरने में भी डर लगता है। हम लोगों का धंधा दो रुपयों का है, और हम मरने से भी नहीं डरते। हमें मारे तो अच्छा है। मुंडा लोग आग लगा देंगे। मारेंगे तो जरूर, उसके बाद मरेंगे।"

"मैं ही जाऊँगा।"

हरबंस भागा हुआ पिता के पास गया। वहाँ से सदर गया। बर्तमान आई० जी० पुलिस ने हाल ही में वर्तमान सरकार की ज़हरीली नज़रों में आना शुरू किया था। उसके लिए निकम्मे विभाग बनाने की कोशिश हो रही थी। बहुत बड़े शातिर डाकू का दमन, जिसके परिणामस्वरूप [illegible]वीर-चक्र की प्राप्ति, नरबलि के लिए अपहृत हरिजन बच्चे को बचाना, सूबे के क्षेत्र में प्रधानमंत्री की सफल व्यवस्था, इत्यादि प्रशस्तियाँ उनके नाम के साथ जुड़ी हैं। इसलिए विभिन्न स्थानों पर उनके खूँटे हैं। ऐसे आदमी को जल्दी से फ़ारिग करना आसान नहीं था। राम कहे 'हाँ' और यदु कहे 'ना'। श्याम कहे 'क्यों'? हरि कहे 'कभी नहीं'। आई० जी० को शायद खिसकना न पड़ता। हटना पड़ेगा दिमाग़ी कीड़े के कारण। सब के ही सिर में कोई-न-कोई कीड़ा रहता है। आई० जी० ठहरे ब्रिटिश ज़माने के आदमी। नाश्ते को कहते थे 'छोटा हाजरी'। वे सोचते थे कि पुलिस आई० जी० के पास रेहन रहेगी। पुलिस के कामकाज में वे राजनैतिक दबाव सहन नहीं कर सकते थे। युवलीग की कारसाज़ियाँ उन्हें पसन्द नहीं थीं। विशेष रूप से कानाटा के मामले में वे पुलिस पर ही बिगड़े हुए थे। रोमियो और पहलवान पर और भी चिढ़े थे। हरिजन-आदिवासी लोगों के लिए उन्हें कोई खास अपनापन नहीं महसूस होता था। क़ानूनी बात पर क़ायम रहना उन्हें सही लगता था। लेकिन रोमियो आदि ग़ैरकानूनी काम कर पुलिस की मदद लेते थे, इससे वे बहुत ही क्षुब्ध थे और यथासाध्य उन्हें ठीक करने को तैयार रहते थे।

हरबंस की बातों को उन्होंने ध्यान से सुना और बीच-बीच में 'बाई जोव', 'आडेशस', 'बगर' इत्यादि मंतव्य से समझा दिया कि रोमियो आदि [illegible] जहरीली दवा को छिड़क कर नाश करने लायक़ हैं, उस बारे में वे

हरबंस की-सी ही राय रखते थे।

बोले, "तुम जाओ। मैं देखता हूँ।"

वे गृहमंत्री के पास चले गये। पूरी घटना बतायी। गृहमंत्री बोले, "अर्जुन मोदी के चेले तो आजकल सर्वेसर्वा हो रहे हैं। फिर भी युवलीग के नाम पर यह गुंडई करने देना ठीक नहीं है।"

उन्होंने युवलीग के सेक्रेटरी से बातचीत की। सेक्रेटरी बोले, "वह मेम्बर भी बुड़बक—बेवकूफ़ है। और उसके चेले लोग भी खचड़ा हैं। हम देखते हैं, आप कुछ ज़िकर न कीजिये।"

इतना घास-फूस फूंकने से यह नतीजा हुआ कि हरबंस के मामले में रोमियो ने फिर कुछ बात नहीं कही, लेकिन वह बड़े गुस्से में भरा रहा। हरबंस कंट्रैक्ट के अनुसार माल देकर बच गया। चोट्टि से बोला, "भगवान करेगा तो फिर ईंटें बनेंगी। फिर लेबर लूँगा, और इनको घुसने न दूँगा।"

"इन्हीं लोगों का राज है, महाराज!"

"देखा जायेगा।"

"लाला के काम में मुसीबत आयेगी।"

"क्या कहना है, बताओ? लाला अपनी राय पर चलता है।"

"लाला तीरथनाथ क्या सोचता है, इसका पता नहीं चलता। लेकिन उसका काम शुरू होता है तो हफ्ते के दिन लाला सवा रुपया देता है।"

"दो रुपये की बात थी।"

"दो ही रुपये मिले। बारह आने पार्टी के लड़कों ने काट लिये।"

"क्यों?"

"उनसे पूछो।"

छगन बोला, "ठीक है। कल से बेगार के सिवा कोई नहीं आयेगा, महाराज। आजकल सवा रुपया सेर भी चावल नहीं मिलता।"

तीरथनाथ किसी अदृश्य शक्ति की मदद से दृढ़ आवाज में बोला, "जो करना, सोचकर करना।"

"सोच लिया है।"

"छगन! जो कहता हूँ मान ले, छगन! दिन बहुत बुरे हैं छगन! इन्हीं लोगों का राज है। वे लोग जो कहेंगे, मानना पड़ेगा।"

"मान तो लिया।"

"सिर्फ बेगार से काम चलेगा? वह भी सब आ नहीं रहे।"

"कौन नहीं आया? अजान धोबी, शिव दुसाध और मोहर दुसाध यहाँ नहीं हैं। वे बुखार दिखाने गये हैं, सो डाक्टर ने अस्पताल में रोक लिया। कहा कि छुतहा बुखार है। सुई लगानी पड़ेगी।"

"मोहर की बहू?"

"उसका बच्चा अभी एक महीने का है।"

"तो कितने लोग हुए?"

"समझ लो महाराज, बीस लोग।"

"उनसे काम चलेगा?"

"मैं क्या बताऊँ?"

"तू उनका सरदार है।"

"तो मैं उनसे क्या कहूँ, महाराज? तुम तो दोगे सवा रुपया। जो दो रुपये देगा, उसके पास अगर जायें तो मैं क्या कहूँगा?"

"यह क्या झूठमूठ का झंझट है?"

छगन ने खैनी मल कर मुँह में रखी। उसके बाद बोला, "चड्ढा से बट्टा माँगा, सो हमारी मजूरी नहीं काटी, उसने दे दिया।"

"एं! उसने दिया?"

"जरूर।"

रोमियो धीमी हँसी हँसकर बोला, "लाला जी! चड्ढा ने जो किया है वह मुझे मालूम है। आप क्या वही करेंगे?"

"ना-ना, पर बट्टा भी खतम।"

"क्यों?"

"सिवा बेगार वालों के कोई नहीं आयेगा।"

"नहीं आयेगा।"

"हाँ जी।"

"किधर जायेगा?"

"कलकत्ता में नक्सली हैं। बहोत सेठ-बेठ ने इधर कोलियरी खरीदी है। उधर ही जायेगा।"

"मजूरी?"

"दो रुपये और टिफिन।"

"जाने दीजिये।"

रोमियो सावधान हो गया और चोट्टि गाँव के ग़ैर-बेगारी लोग कोलियरी के काम में लग गये। हफ्ते के दिन मालिक बोला, "पार्टी के आदमी के आने पर हफ्ता दूँगा।"

"क्यों?"

"वह एक-एक रुपया लेगा।"

चोट्टि के लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे। ठीक वक्त पर रोमियो और पहलवान और दिलदार आ पहुँचे। मेज पर बंदूक उतारकर रखी

और पैसे हिसाब करके काट लिये। हँसकर बोला, "अगली बार सवा रुपया काटूँगा।"

यह लोग सब जानते थे कि रोमियो ने अपने हाथों पिछले सदस्य की हत्या की थी। इसी से डर के मारे चुप रहे। बाद में गाँव को लौटते-लौटते बोले, "सात मील आयेंगे-जायेंगे, एक रुपया मिलेगा। उससे तो लाला ही अच्छा है। गाँव में रहकर सवा रुपया। यह भी गौरमेन के आदमी हैं। पहले तो ऐसे रुपये नहीं लेते थे। अब क्या जादा जरूरत पड़ गयी है?"

तीरथनाथ का चेहरा अब काफ़ी उतरा दिखायी पड़ता है। छगन आदि को जूतों के नीचे रखना उसे बहुत ही पसन्द था और मन के मुताबिक़ काम था। लेकिन घटना जिधर जा रही है, वह उसके मन के मुताबिक़ न था। इनका शोषण और इन पर क़ाबू रखना, दबाये रखकर चलना ही वह चाहता था। लेकिन बराबर दबाये रखने पर व्यक्तिगत संबंध का मामला समाप्त हो जाता है, इसे वह नहीं चाहता था। बराबर दबाकर रखने पर कुछ लठैतों और बंदूकधारियों को पालना पड़ता है, इसे वह नहीं चाहता था। मथुरासिंह पुलिस को मार बैठा था। तीरथनाथ चाहता था कि आदमी प्राचीन वर्णानुशासन में विश्वास करें। बिना विरोध कम मजूरी लें, बेगार दें। वैसा होने पर तीरथनाथ की भी तबीयत होती थी कि बीच-बीच में उन्हें पूजा का प्रसाद दे, नयी फ़सल में से थोड़ी दे। आजकल परिस्थिति बहुत उलझी हुई थी।

तीरथनाथ उदास स्वर में बोला, "सारे लोग काम करेंगे? करें। तब यह फड़फड़ाहट क्यों है? आजकल जो राज है, उससे तुम्हारी कमर तोड़ने आते हैं।"

"तुम क्या कमर साबुत रहने दे रहे हो?"

"चालाकी की बात का क्या काम, सना? दादा लोग कहते हैं, अब उन्हें एक-एक रुपया देना होगा। मेरा दोष नहीं है, सना! यह उन लोगों की बात है।"

सना और छगन बोले, "चोट्टि के पास जा रहे हैं।"

"क्यों? उसके पास क्यों? वह क्या मेरा काम करता है?"

"उससे अकल लेंगे।"

"उससे तुम लोग मेरी दुश्मनी न करा देना।"

"उसके पास जा रहे हैं।"

चोट्टि ने सब सुना और बोला, "तुम लोग उससे एक बात कहना। कहना, रुपया मत दो। रुपयों के बदले पिछली फसल का मक्का दे दो।"

तीरथनाथ उस पर ही राजी हो गया। धान के पौधे भरे-पूरे थे।

...गों में दूध भर आया था। हेमन्त समाप्त हो रहा था। ऐसे वक्त काम ...झगड़ा होना ठीक नहीं है। लेबर खोना अक्लमंदी की बात नहीं है। ...गे और तरह-तरह के काम थे। मज़दूर मिलना मुश्किल था। यही नहीं कि लेबर का खिचाव हो। जिस गाँव में चोट्टि मुंडा था उस गाँव में बाहरी आदमी जल्दी आना नहीं चाहते थे। तीरथनाथ बोला, "वही करो, बाप।"

काम करते-करते छगन बोला, "कई दिनों से लगता है, सूरज पच्छिम में निकल रहा है। कई दिनों से लाला ने कई बार 'बाप' कहा है?"

सना बोला, "अब वह कहता है, कभी हम लोगों से 'बाप, बाप' कहलायेगा। उसका कोई विश्वास नहीं।"

तीरथनाथ ने क़ायदे के मुताबिक़ सारी बातें हरबंस से कहीं। हरबंस ने सब कुछ सुन कर कहा, "मन में भी मत सोचियेगा कि पार हो गये। वे बट्टा तो लेंगे ही।"

"मक्का लेंगे?"

"पैसे माँगेंगे।"

"तब?"

"मैंने तो दिये थे।"

"उसमें कितना खर्चा होता है, पता है?"

"पता है। खुश होकर नहीं दिया था। लेकिन गड़बड़ नहीं मचने दी।"

"गड़बड़ नहीं होगी।"

"लालाजी वक्त को पहचानिये। आपको बीच में नहीं चलने दिया जायेगा। या तो इधर, या उधर, एक साथ दो राहों पर नहीं चला जा सकता है।"

"भैया, तुम क्या उन लोगों के खिलाफ़ हो?"

"क्यों? कंट्रैक्ट का माल तो दिया है।"

"पैसे मिल गये?"

"मिल जायेंगे। कुछ तो मिल भी गये हैं।"

"देखें भगवान क्या करते हैं।"

"भगवान बहुत सनकी काम करते हैं।" रोमियो और पहलवान और दिलदार चीख़कर बोले, "कुत्तों को मक्का मत दीजिये। रुपये दीजिये, बट्टा काट लीजिये। जो नहीं लेगा उसे देख लेंगे।"

वे लोग चुपचाप वापस चले गये यानी 'कुत्ते' लोग अपने-अपने घर चले गये। तीन जीपों में रोमियो के लोग तरुण सेना लेकर आ गये। दल का झंडा जीप के ऊपर लगा था, जीप पर दल-नेत्री माँ का चेहरा आँखों से

करुणा की वर्षा कर रहा था। उनको आते देखकर गाँव के लोग जंगल में भाग गये। पहान और पहानी यह देखने को बाहर निकले कि क्या हो रहा है। देखा कि दुसाध-धोबी-गंजू लोगों की बस्ती जल रही है। आग फैल गयी और तीरथनाथ की दूकान भी जल गयी। रोमियो ने और किसी को न पाकर पहान और पहानी को गोली मार दी। उन्होंने छगन आदि की मजूरी के मक्का के गट्ठरों पर पैट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। उसके बाद वे महारानी और युवराज के नाम के नारे लगाते हुए चले गये। उन्होंने तीरथनाथ का रोना-धोना भी नहीं सुना और मक्के के ढेर में से आग उड़कर तीरथ की कचहरी पर फैल गयी। जमा किये हुए मिट्टी के तेल के टीनों की सीलें गर्मी से उड़ गयीं। आग लग गयी।

चोट्टि बोला, "पहान-पहानी की लाश रहने दें। सदर जा रहा हूँ। मोतिया की लाश रहने दें। बुढ़िया भाग न सकी।"

हरमू बोला, "पहले थाने पर।"

स्टेशन के कुलियों ने स्टेशन-मास्टर को जाने के लिए विवश किया। रेलवे का स्टाफ़ मरा है, इसलिए हरबंस की बस ली गयी। स्टेशन-मास्टर ने ली। चोट्टि बोला, "चारों लाशें उठेंगी। एक तरह से मरे हैं।"

थाने के दारोगा ने बेहोश होते-होते घटना नोट की। वे भी अपनी चमड़ी बचाने के लिए साथ चले। सदर गये बिना चारा नहीं था। चोट्टि आदिवासी-डिरेक्टर दिलीप तरोये के आगे लम्बा लेट गया। बोला, "पहान और पहानी ने लाला के खेत में कभी काम नहीं किया था। आग देखकर निकले थे। उनको मार दिया, महाराज, उन्हें मार डाला !"

मामला जटिल हो गया। सारी घटना युवक-सेना के अविवेक के कारण घटी थी। वर्तमान शासन में, बाहरी दुनिया में, हरिजनों के बारे में बहुत ढोल पीटे जाते हैं, लेकिन असली आदेश सब जानते हैं। हरिजनों और अछूतों के मर जाने पर भी कुछ आता-जाता नहीं। यही तो 1969 में सिंहभूमि के सुरमही और दूसरे गाँवों में पुलिस ने एक जमींदार का मान रखने के लिए चार सौ आदमियों को गिरफ़्तार किया था और सबके सामने औरतों पर पाशविक अत्याचार किये, कई गाँव जला दिये, आदमियों को मार डाला था।

इस शासन में इन सारे कामों में पुलिस बहुत कुशल है। आई० जी० समझ गये कि उनके विदा होने का समय आ पहुँचा है, और इस समय युवलीग को यथासाध्य ठीक करने के उद्देश्य से बोले, "मिस्टर तरोये तो ठीक ही कह रहे हैं। मान लिया कि अछूत लोग बहुत नासमझ हैं। महाजन के साथ संबंध अच्छा न रख सके। लेकिन बात क्या हुई? एक रेल-वर्कर [illegible]। उनकी लेबर यूनियन खफ़ा हो गयी। मरी एक बीमार बुढ़िया। लाशघर में तो देखा कि उसकी हड्डियाँ भी काली हो गयी हैं। मरा मुंडा लोगों का समाज-प्रधान पुरोहित और उसकी पत्नी। यह लोग न तो महाजन की ज़मीन जोतते थे, न यह सब झगड़े में थे। लॉ और ऑर्डर—कानून और व्यवस्था—उल्लू के पट्ठों के हाथों में पड़ने पर इस तरह होगा ही। सुरमही-आपरेशन में पहले के आई० जी० थे। कोई बात उठी थी ?"

दिलीप तरोये ने जहाँ तक हो सका, अपने खूँटों को हिलाया-डुलाया और कहा, "आदिवासियों पर बहुत अत्याचार हुआ है। जाँच की ज़रूरत है। मैं जानता हूँ कि चोट्टि मुंडा और परलोकगत पहान उस अंचल में विभिन्न वर्गों में अच्छा संबंध बनाये रखते थे।"

प्रशासन ने समझा कि यह अखबारों में बदमाशों की गढ़ी ख़बरें नहीं हैं। एस० डी० ओ० और आई० जी० चोट्टि गये। वहाँ मदद देने का वादा किया और जिनके घर जल गये थे उन्हें पच्चीस-पच्चीस रुपये मिले। पहान की लाश के अधिकारी उसके भतीजे को सौ रुपये मिले। सबने ताज्जुब में पड़कर कहा, "चोट्टि के सदर गये बिना क्या कुछ मिलता। चोट्टि जो करता है वह क़िस्सा बन जाता है।"

रेल के कुली के परिवार को भी कुछ हर्जाना मिला। चोट्टि अंचल पर सख्त रोक लगा दी गयी कि इस संबंध में किसी संवाददाता को कोई समाचार न दिया जाये।

हाकिम-हुक्कामों के चले जाने के बाद एक शाम को चादर से कान और सिर ढककर खों-खों खाँसते हुए चोट्टि के घर आनन्द महतो पहुँचे। बोले, "तुम्हारा नाम नहीं रहेगा। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। बताओ क्या हुआ था।"

"अपने लिए फिकर नहीं है। पहान का चेहरा और पहानी की नंगी छाती पर घाव देखकर मैं कोयेल का दुख भूल गया हूँ। लेकिन नाम निकलने से चोट्टि जल जायेगी।"

"नाम नहीं निकलेगा।"

"अगर निकले तो ? फिर घर जलेंगे, लाशें गिरेंगी, तुम देखोगे ? तुम्हारा वह मेम्बर मर गया, कुछ कर सके ?"

आनन्द महतो उदास हँसी हँसकर बोले, "क्या समझते हो कि मेरी हालत अच्छी है ? मेरे दिन भी खतम हो गये हैं।"

"काहे, महाराज ?"

"समझ रहा हूँ।"

"मार डालेंगे ? यही कहो।"

"यह तो वे ही जानें। देख नहीं रहे हो, रात-बिरात छिपकर आया हूँ !"

"यही बात है।"

चोट्टि समझ गया कि आनन्द महतो भी मुसीबत में हैं और यहाँ आने से वे मारे जा सकते हैं। ताक़तवर जब किसी को मारना चाहता है, तो उसे मरना ही पड़ता है। पिछला सदस्य, मोतिया के काले हाड़, पहान और पहानी की फटी छाती—उसके साथ वह अपने को एक समझ रहा था। बोला, "अभी टेम है। चले जाओ।"

"तुम कुछ बताओगे नहीं ?"

"अभी नहीं। अभी सबकी नज़र चोट्टि पर है।"

आनन्द महतो बोले, "तुम्हारे लिए यह जगह छोड़ दी गयी है। सब जगह देखा जाता है कि एक बार जहाँ कुछ हो जाता है, वहाँ वे बार-बार आते हैं।"

चोट्टि भौंहें सिकोड़े चुप लगाये रहा। उसके बाद बोला, "रेल के कुली को मारा, वही गलत काम किया, पहान-पहानी को भी ! यह क्या जमाना चल रहा है, बता सकते हो, महाराज ? ये चाहते क्या हैं ? सुरमही में जो हो गया, धामूड़ा में भी वही हुआ। दुसाध-गंजू-अछूतों को मारने को गौरमेन का कोई आदमी अच्छा नहीं समझता। गौरमेन अगर चाहती है कि अछूत आदिवासी मर जायें, तो मार डालो। लड़कर मरें। लड़कर मरेंगे, समझेंगे कि यह एक काम किया।"

"वह नहीं चाहती। तुम लोगों के बिना उनकी ज़मीन कौन जोतेगा ?"

"अभी जाओ। कोई देखेगा।"

"तुम बताओगे नहीं ?"

"डाइ पार कर बरामू में पेड़ काटने जाऊँगा। वहाँ आओ।"

"वहीं आऊँगा।"

"अभी जाओ। होशियार रहना। महाराज, मरने पर कुछ नहीं। जिन्दा रहने में बहुत दुख हैं।"

"मैं चलूँ।"

"ठहरो, टिशन होकर नहीं।"

"न-न, रेल-लेबर यूनियन के लड़के मुझे लाये हैं।"

"वे कहाँ हैं ?"

"बाहर।"

चोट्टि ने उन्हें बुलाया। बोला, "सब लोग थोड़ा गुड़ खाओ, नमक खाओ। गुड़ खाने से संबंध अच्छा रहेगा। नमक खाने से मुझे फँसाओगे

नहीं।"

आनन्द बोला, "चोट्टि, कब जाओगे ?"

"आठ-दस दिन बाद। अभी तो पहान-पहानी के शमशान के पत्थर लगाना है। पहान के भतीजे को पहान बनाना है। यह पहान लिखा-पढ़ा था। भतीजा अगर वैसा न हुआ तो मुझ पर और भी जिम्मेदारी आ जायेगी।"

आनन्द महतो चले गये। चोट्टि के अनुरोध पर मृत पहान का भतीजा पहान बना। जले घर फिर से नये सिरे से बनाये गये। चोट्टि ने जंगल के ठेकेदार से मुसीबत की बात कहकर दरवाजों और खिड़कियों के लिए थोड़ी लकड़ी ली। तीरथनाथ ने अपेक्षा की थी कि छगन आदि घर छाने के लिए फूस माँगेंगे, खाने का अनाज ख़रीदने के लिए कर्ज़ माँगेंगे। लेकिन उसके पास कोई नहीं आया। उसका जड़हन पड़ा रहा। ख़बर भेजने पर भी लोग बेगारी करने नहीं आये। सारा कुछ ख़तम हो जाने पर छगन आदि के व्यवहार ने तीरथनाथ को चोट पहुँचायी, उसे ख़फ़ा भी कर दिया।

तीरथनाथ को बड़ा दुख हुआ। कचहरी जल गयी। हिसाब-बही और कागज जल गये। सरकार में लगान के कागज़ की ज़रूरत हो सकती है, उससे हिसाब-किताब की एक बही जल जाने से कोई नुक़सान न था। वह तो क्षण-भर में बन सकती थी। गुमाश्ता बना सकता था। लेकिन तीरथनाथ की लक्ष्मी वे सारे खाते थे जिन खातों में लेनदारों के रुपये और अनाज के क़र्ज़ का हिसाब लिखा था, जिन खातों में आधार पर तीरथनाथ सूद और बेगार लेता था, वह सब खाते फिर से तैयार करने पड़ेंगे।

वह काम सिर्फ़ धनबाद का अमीनचन्द कर सकता था। दो-सौ बरस पुराने दस्तावेज़-पट्टे-चिट्ठे-व्यापार के पट्टे वह बना सकता था। तीरथनाथ ने निश्चय किया कि उसे लाकर डबल सेट खाता बनवायेगा। अमीनचन्द ने तीरथनाथ के गुमाश्ते से कहा कि वह पाँच हज़ार रुपये लेगा।

तीरथ को राजी होना पड़ा। और सान्त्वना की आशा से वह अपनी रखैल धोबिन के पास गया। सबसे बड़ा आघात इस प्रेमिका ने दिया। बहुत बरस पहले मोतिया ने तीरथनाथ के लिए कुटनी का काम किया था। तीरथनाथ बहुत ही मुग्ध था। उस समय उस औरत की उम्र थी बाईस बरस। मोतिया की बिचवई से बात चली, औरत को माहवारी पैसा मिलेगा, उसका घर बनेगा। धीरे-धीरे उसके लड़का भी हुआ। छुटपन में लड़का मोतिया के पास ही रहता था। रोमियो वग़ैरह के हाथों

उस दिन उस औरत का घर भी जल गया था। तीरथनाथ ने अपनी कचहरी का मकान मरम्मत करवाने के लिए गवर्नमेंट से पच्चीस हज़ार रुपये लिये और काम के लिए मिस्त्री मँगवाया। अब उसे ध्यान आया कि इसके बाद जड़हन की खेती कटाई-मड़ाई, रबी के लिए खेतों को तैयार करना था। उसके लिए मजूरों की जरूरत थी। उसे गुंडों पर गुस्सा आया। यह क्या सुरमही या धामूड़ा है? लंकाकांड मचाकर छोटी जात वालों को सज़ा दोगे? रेल-लेबर यूनियन में सबको पता चल गया था कि तीरथनाथ एक ही हरामी है। उसी की ज़मीन के पीछे इतनी गड़बड़ी हुई थी।

मानों उसे लांछित करने के लिए ही अनवर ने इतने दिनों से पड़ी हुई बंजर ज़मीन को फलों के बगीचे में बदलना चाहा। उसने खुल्लम-खुल्ला छगन से और चोट्टि से कहा, "बीच-बीच में फ़ुरसत के वक्त ज़मीन को ठीक कर दो। दो-ढाई घंटे काम करो। उससे ही काम हो जायेगा। इस काम के लिए सवा रुपये के हिसाब से दूँगा। मैं यह नहीं चाहता कि हर रोज़ काम चले।"

चोट्टि बोला, "उससे नजर पड़ेगी।"

"दस आदमियों से ही चल जायेगा।"

"यही अच्छा है।"

पचास रुपये पेशगी दिये। "पाँच रुपये के हिसाब से यह दस आदमियों के हैं। मजूरी देने के वक्त सवा-सवा रुपये के हिसाब से काट लूँगा।"

"बहुत खूब, महाराज!" चोट्टि बोला, "इन लोगों के घर जलकर राख हो गये। उन्हें जमीन के लिए कुछ दो। उपजाऊ जमीन है। जमीन तो बिना मालिक के रहती नहीं हैं, महाराज! जमीन के भी आत्मा होती है। वह आत्मा अच्छी है या बुरी, किसे पता? थोड़ा कुछ देने पर उसका गुस्सा ठंडा होगा। उसके बाद जमीन खुश हो जायेगी।"

"सो तुम करो। जो करना हो करो।"

"तुम्हें करना होगा।"

"इन सब बातों में लाग-डाँट तो न होगी?"

चोट्टि ने भौंहें सिकोड़कर जैसे कुछ सोचा। उसके बाद बोला, "लगता तो नहीं। टीशन तो गौरमेन का है। कुली के मरने पर कुली-स्टाफ जोश में हैं। लाला अभी कुछ न बोलेगा। खेती के काम के लिए उसे भी चिन्ता है। चड्ढा नहीं बोलेगा।"

"तो यह बात रही।"

तीरथनाथ इससे दुखी हो गया। उसने अपने को हारा हुआ भी पाया।

[illegible] बोला, "इससे मान नहीं रहता। अपने खेतमजूर, बेगारों को मैं [illegible]ऊँगा। बाहर के लोग क्यों आयें?"

पत्नी फीके चेहरे से बोली, "आप जानें। ऐसा होने पर घर पर [illegible] पड़ती है। मैं तो इसीलिए लड़कों को पटने में रख कर पढ़ा रही हूँ। वह जमीन की बातें नहीं समझते। नौकरी बहुत अच्छी चीज होती है।"

"अरे, मेरे मरने पर वे कचहरी में बैठेंगे।"

"परमेश्वर जैसा करें। साँप काटने से इसी जाड़े में दुधारू गाय मर गयी। फलता अमरूद का पेड़ सूख गया।"

"क्या करें?" कह कर तीरथनाथ अपनी रखैल धोबिन के पास गया।

वह बोली, "कहाँ आये? घर में क्या है?"

"घर के लिए सोच है? घास-फूस—बाँस सब भेजे दे रहा हूँ।"

"न, न, सब लोग देखेंगे।"

"तो रुपये ले।"

"बासन-कपड़े-बिस्तर—चौकी सब चला गया।"

"तुझे नहीं दूँगा तो किसे दूँगा?"

धोबिन बहुत रोती रही। रो-रो कर ही उसने चार सौ रुपये वसूल कर लिये। उसके बाद तीरथनाथ अमीनचन्द से मिलने धनबाद गया। वहाँ एक दिन रहना पड़ा। घर लौटने पर पत्नी बड़ी खुशी में ईर्ष्यायुक्त हँसी हँस कर बोली, "घर की औरत से ज्यादा दूसरों को सर चढ़ाने से यही होता है। धोबिन रुपये लेकर भाग गयी।"

"झूठ बात।"

"पता लगा लीजिये न।"

"मैं उसे पकड़ लाऊँगा। खचड़ी!"

"वह पटना भाग गयी। वहाँ लांड्री खोलेगी।"

"चली गयी? मुझे छोड़कर चली गयी?"

तीरथनाथ ने ज़िन्दगी में ज़मीन और सूद के सिवा किसी इंसान को अपना प्यार नहीं दिया था। यह धोबिन ही एकमात्र अपवाद थी। पत्नी ने सोचा था कि तीरथनाथ गुस्से में फट पड़ेगा। लेकिन तीरथनाथ बहुत टूट गया था। उसने अपने लड़कों को धोबिन की तलाश करने को लिखा। बहत्तर बरस के बुड्ढे का अनुरोध उन्होंने नहीं सुना और तीरथनाथ ने रक्तचाप के रोग से बिस्तर पकड़ लिया। बहुत दिनों तक हकीमी इलाज में रहकर वह स्वस्थ हुआ। उससे रोमियो ने कहा, "पता लगा। ठोकर मार

कर ले आऊँगा ।"

"न-न ।"

तीरथनाथ के मन में शिकायत थी कि रोमियो आदि अगर बहुत अधिक अत्याचार न करते तो धोबिन चली न जाती । उसे यह जानने की तबीयत थी कि धोबिन क्यों गयी ? इतना जानने के लिए वह मन-ही-मन मरा जा रहा था । रोमियो कहे जा रहा था, "छोटी जात वालों में कृतज्ञता थोड़े ही होती है !"

हरबंस के ड्राइवर को उसने छिपा कर पटना भेजा । ड्राइवर सब-कुछ जानता था । उसने ख़बर ला दी । बोला, "लाला जी, क्या कहें ?"

"क्या कहा ?"

"कहा नहीं जाता ।"

"कहो, कहो ।"

बोली, "आपने उसकी पट्टी जलवा दी । उसके बाद आपके रुपयों से घर बनाकर रहने पर उसे सब लोग पत्थर मारते ।"

"कब्भी नहीं मारते ।"

"और उसे मोतिया के लिए दुख था ।"

"क्यों ?"

"मोतिया उसकी नानी थी, लाला जी !"

"यह कैसे ?"

"हम सब जानते थे ।"

तीरथनाथ को सब मान लेना पड़ा । यह वियोग का कष्ट भी । उसके बाद वियोग का दुख खेतीबारी ने भुला दिया । थोड़े आदमियों के सिवा बेगारों में कोई शक्ल नहीं दिखाता था । रोमियो को बताने से ही मजूर मिलते । पर तीरथनाथ का मन उसकी गवाही न देता था । फिर किसी चीज़ से गड़बड़ न हो जाये । तभी उसने बाहरी मजूरों की तलाश की और यह भी जाना कि रोमियो आदि के कारनामों से बाहरी लोग यहाँ आने से डरते थे । धान के पौधों को झुका देख कर उसका कलेजा फटता था । मान अलग रख कर उसने छगन आदि को बुलवाया ।

छगन बोला, "चोट्टि से पूछ लूँ ।"

"क्यों ? उससे क्यों ?"

"उसे बताये बिना मुश्किल होगी ।"

चोट्टि के पास से लौट कर छगन बोला, "हम काम कर देंगे । लेकिन मजूरी हर रोज देनी होगी ।"

"ले लेना ।"

"किसी को बट्टा नहीं देंगे ।"

"वैसा ही होगा ।"

"मेरे बेगार जायेंगे । बाकी सब मुंडा लोग हैं ।"

"क्यों ?"

"चोट्टि ने कहा है ।"

"वही होगा । थाने में पड़ रहा हूँ, गधे की लातें सहनी पड़ेंगी ।"

इस तरह झुक जाने से रोमियो कट गया, लेकिन तीरथनाथ बोला, "आप ज़मीन की बात क्या समझेंगे ? अभी माने बिना फसल का क्या होगा ? छोटी जात है, खचड़े हैं, फिर भी काम तो कर देंगे ।"

"अरे, आपके पीछे सरकार है, और आप एक फ़सल की ममता छोड़ नहीं सकते ?"

"नहीं जी ।"

"आपकी-सी भैंस की अकल के महाजनों की वजह से देश की उन्नति नहीं हो रही है । नाश हो फसल का । छोटे लोगों को क़ाबू में रखिये । बाहरी मजूरों से काम लीजिये । आठ आने मजूरी दीजिए । आपके गाँव के लोग भूखे मरेंगे और तब आपके पैर पकड़ेंगे । एक फ़सल गयी, किस बात की परवाह है ? स्टेट बैंक से लोन लीजिये ! ट्रैक्टर से खेती कीजिये । खेती के काम में इनकम टैक्स में भी रियायत है ।"

"सो तो मैं भी चाहता हूँ ।"

"काम में तो नहीं करते । मुंडा लोगों को घुसा दिया, इनमें बहुत खचड़ई है । इससे गड़बड़ न हो ।"

"चोट्टि मुंडा ने सब किया ।"

"कौन हरामी है ? उसे तो जानता हूँ ।"

"न-न, चोट्टि कोई मामूली मुंडा नहीं है ।"

"तो जाइये । उसके पैरों में तेल मलिये ।"

"जी, मैं कोई गड़बड़ नहीं चाहता ।"

"देखूँगा, वे बट्टा कैसे नहीं देते ? चड्ढा तो फिर कंट्रैक्ट लेगा, है न ? चीनी की मिठास जानकर चींटे छोड़ देंगे ?"

"यह नहीं कह सकता ।"

"और देखें, विजया मोदी भी वही चाहते हैं । नहीं तो हरिजन-अत्याचार का कोई समाधान क्यों नहीं होता ?"

"आप अच्छा जानते हैं ।"

"देखेंगे, इसके बाद उनके बदमाशी करने पर मदद माँगना न भूलिएगा । हम तो सैनिक हैं । गड़बड़ का सामना करना ही हमारा

काम है।"

"बताऊँगा।"

"चोट्टि मुंडा को भी मत छोड़िएगा।"

तभी युवलीग के सेक्रेटरी सहसा बोल पड़े, "चोट्टि! चोट्टि मुंडा! उसको न तंग करना, रोमियो! उसने मेरे चाचाजी की जान बचायी थी। चाचाजी दारोगा थे, और एक जंगली सूअर ने उन्हें घायल कर दिया था।"

तीरथ बोला, "वह तो मेरी खेती में हुआ था।"

किस्सा फिर से कहा-सुना गया। तीरथ बोला, "बेगार में, कर्ज में, सूद में मैं उन्हें दबाये ही रहता हूँ। सिर नहीं उठाने देता हूँ। यह बड़ी अकल का काम है। गोली चलाने और घर जलाने में बहुत शोरगुल होता है।"

रोमियो बोला, "जिस चीज की जरूरत होती है, वह किया जाता है।"

इस तरह तीरथ के निकट छगन और चोट्टि आंशिक रूप से जीते। चोट्टि अंचल में क्षणिक शान्ति रही।

आनन्द महतो और चोट्टि की मुलाक़ात छिपकर हुई। कटे साल के ढेर पर बैठकर आनन्द महतो ने जल्दी-जल्दी सब लिख लिया। चोट्टि बोला, "सब बता दिया। तुम्हारे कारन से हमारे ऊपर हमला हुआ तो तुम भी नहीं बचोगे।"

आनन्द थोड़ा मुसकराकर बोला, "मार डालोगे?"

"जरूर!" चोट्टि भी मुसकराया। "हरमू के कारण हमला होने पर उसे भी मरना पड़ता। अब तो मेरा यह कहना है महाराज, जिसके कारन हम चोट खायेंगे, उसे मारेंगे। तुमसे फिर कहता हूँ, मैं मरने से नहीं डरता।"

"न-न, किसी को पता नहीं चलेगा।"

लेकिन इस वक्त प्रशासन कितना मुस्तैद था, सच्ची खबर का गला घोंटने में कितना निर्मम था, यह आनन्द महतो ने नहीं समझा था। इस संवाद के लिए उसे चेतावनी दी एक मिशनरी फ़ादर ने। आनन्द ने रिपोर्टाज पढ़ा, उसने टेप कर लिया और कैसेट को सुरक्षित झब्बे की जेब में रख लिया। आनन्द की लिखी रिपोर्ट उसे देकर बोले, "इस तरह क्यों रखा?"

"सावधानी से कोई नुक़सान नहीं है।"

उसने लिखित रिपोर्ट फाड़ डाली और कैसेट के साथ दिल्ली उड़ गया। वहाँ प्रशासन के कोपभाजन, भारत छोड़ने वाले एक विदेशी संवाद-दाता को उसने वह कैसेट दिया। संवाददाता के प्रयत्न से कैसेट से फिर

एक कैसेट लेकर बंबई में एक अख़बार के पहुँचा दिया गया और पंद्रह दिन बाद इटली से प्रकाशित एक अँग्रेज़ी साप्ताहिक और बंबई के एक साप्ताहिक में स्थान और पात्र की जगह ए० बी० सी० रखकर समाचार निकला। प्रशासन को पहले केन्द्र में होश आया। राज्य सभा में विख्यात शोर मचाने वाले एक विरोधी सदस्य ने न्यायिक जाँच आदि की माँग करते हुए शोरगुल किया। अब राज्य-प्रशासन को होश आया। आई० जी० महसा बदलकर पुलिस को नैतिक शिक्षा देने और हिंसा न करने की शिक्षा देने वाले पद पर भेज दिये गये। दिलीप तरोये को आदिवासी कुटीर शिल्प के बारे में अधिक ज्ञान देने के लिए दिल्ली बुलाया गया। आनन्द महतो की चलती साइकिल के दोनों ओर से दो ट्रकों ने आकर उसे कुचल दिया। दोनों ट्रकों पर लिखा था, 'बातें कम, काम अधिक' और पीछे लिखा था 'टा-टा'। 'गॉड इज गुड'। 'आदिवासी समाचार' अख़बार के दफ़्तर और कार्यालय में आग लग गयी। रोमियो आदि के नेतृत्व में युवलीग वालों ने विधान सभा में न्यायिक जाँच की माँग की और 'सदर बंद' का आह्वान किया। कमीशन बैठा। इधर केस चला। दोनों ट्रकों के ड्राइवरों को दो ट्रकों का मालिक बना देने के बाद उन्हें असावधानी से ट्रक चलाने और आदमी मारने के लिए और कोई बात न कर जेल भेज दिया गया। इसी तरह 'बातें कम, काम अधिक' निर्देश राष्ट्रीय जीवन में फलप्रद रहा।

इस तरह घर की मुसीबत तो ठीक कर ली गयी, पर विदेशों की मुसीबत? अब भारतीय प्रेस में कुछ इस तरह लिखा निकलता, "नक्सल लोग जिस तरह इधर भारतीय गणतंत्र की जड़ में कुल्हाड़ी मारते हैं उधर उसी तरह भारत के दुश्मन भी बुराई करते हैं।" उसके बाद कुछ लिखा हुआ प्रकाशित होता जिसके साथ प्रमाणस्वरूप तमाम चित्र रहते, जिसका प्रतिपाद्य विषय रहता कि प्रधानमंत्री आदिवासियों की मित्र हैं। चित्रों में दिखायी देता कि प्रधानमंत्री के चारों ओर काले-काले चेहरे के वयस्क नर-नारी और उनकी गोद में कथरियों में टोडा-मारिया-बाइगा-हो-मुंडा इत्यादि बच्चे रहते। इस तरह सब खुश रहते और मामला समाप्त हो जाता।

रोमियो की सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हुईं, क्योंकि हरबंस चड्ढा ने स्टेट बैंक के अनुदान से ब्रिकफ़ील्ड बड़ी कर ली और उसके उद्घाटन के लिए कम्यूनिटी विकास और शिल्प विभाग के मंत्रियों को बुला लाया। सीमेंट नगरी की ईंटों का ठेका उसे मिला और तीरथनाथ की राय के अनुसार उसने चोट्टि में आधुनिक युग ला दिया, क्योंकि अब उसने एक गाड़ी ख़रीद ली थी।

हरबंस का जो चचेरा भाई जंगल का ठेकेदार था, उसे हरबंस ने कुली लाने का ठेकेदार बना दिया। जंगल की ठेकेदारी जवान चचेरे भाई के कंधों पर डाल दी। रोमियो ने सोचा कि अब जिस तरह भी हो चड्ढा को ठीक करने की ज़रूरत है। वह एक दिन पहलवान के साथ आया और बोला, "सुना है कि आप लेबर को धोखा दे रहे हैं। क्या यह ठीक बात है?"

"किस तरह?"

"ग़रीब आदिवासी और अछूत हिसाब नहीं समझते, सरकारी सहायता से ब्रिकफ़ील्ड बढ़ा ली। सरकारी मजूरी दिया करते हैं?"

"लेबर कमिश्नर का तय किया हुआ रेट देता हूँ।"

"इस बात का क्या विश्वास?"

"आपको विश्वास है या नहीं, इससे मुझे क्या?" हरबंस खुश होकर बोला, "सरकारी ऑडिटर ऑडिट करेंगे।"

"जाने दीजिये, ज़रूरत होने पर याद कीजियेगा।"

"ज़रूर।"

"यहाँ किसका मकान बन रहा है?"

"संतरी रखना पड़ेगा न!"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तो लेबर मिल रहा है?"

"मिलेगा।"

"तो इस कंट्रैक्ट में कितना बट्टा दे रहे हैं?"

"जी, इसमें तो बट्टा होता ही नहीं। जो होता था पहले हो चुका। और लेबर पेमेंट के लिए भी और आदमी हैं।"

"कौन?"

"बाहर का। सरकारी क़ानून के मुताबिक़।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। अब चोट्टि शहर बनेगा!"

"आप लोगों के आशीर्वाद से।"

रोमियो चला गया। उसके मुँह से सब-कुछ सुनकर युवलीग का सेक्रेटरी बोला, "तुम लोगों के कारण काम का नाश हो रहा है। उस समय जाकर वह हालत न करते तो इन पाँच लाख रुपयों के प्रॉजेक्ट से हमारा हिस्सा अलग करने की किसकी ताक़त थी? जाने दो, अब कोई गड़बड़ मत करो। वक्त आने पर घुस पड़ेंगे।"

"क्या वह ज़माना नहीं आयेगा?"

"आयेगा, आयेगा।"

समय बीतता गया, बीतता गया। चोट्टि और छगन को चड्ढा के

ईंटों के भट्टे में अकुशल श्रमिकों की मजूरी मिलती रही। चड्ढा और चोट्टि के बीच जो बन्धन था, वही जान-पहचान में दूरी बन गया। अब काम घंटे के हिसाब से होता था। मजूरी दूसरे लोग देते थे। चोट्टि बोला, "यह अच्छा है। आज जिस तरह तीन रुपये रोज मिल रहे हैं, चीजें महँगी होते-होते उन तीन रुपयों का दाम होता है आठ आने। हो यही। जब की जैसी रीत है। चड्ढा को पकड़े रहने पर कोई भूखा नहीं मरेगा।"

"सवेरे बुलाकर चड्ढा ने क्या कहा था?"

"बाहरी मुंडा-लेबर को भगा दिया। उनसे कहा, 'जो ज़रूरत हो चोट्टि से कहना।' मोहर बोला, "तुम हो तो मैं बेफिकर हूँ। हमारी जो समझ में आता है वही हमारी क्षमता है।' सो बाद में मैं भी उनके बराबर तीन रुपये रोज लेकर घर लौटा। हमारी मजदूरी बढ़ाना भी चाहते हैं।"

"बढ़ी मजूरी क्यों नहीं ली?"

"तू बता कि दिन बीतने पर मैं चार रुपये लेकर घर आऊँ, तू तीन रुपये लेकर आये, उससे हममें बुराई नहीं घुस जाती?"

"ठीक बात है।"

"चड्ढा लाला से अच्छा है। लेकिन झगड़ा और फूट रखना कौन नहीं चाहता? वे आपस में मिलकर देखें। यह मालिकों का ढँग है।"

"मुंडानी हल्दी क्यों पीसती है?"

चोट्टि मुसकराकर बोला, "नाती की, हरमू के नन्हे की, सगाई है।"

हरमू के बेटे की शादी होगी। नये पहान की लड़की थी। कोयेल की पत्नी मुँगरी जलंधर रोग से मर गयी। स्टेशन के छोटे-से पेड़ के नीचे एक चमचमाती चाय की दुकान खुली। सबको चौंकाकर तीरथनाथ के लड़के ने पटना शहर में आर्यसमाजी ढँग से एक मद्रासी नर्स से शादी कर ली। चोट्टि के मेले में फिर तीर का खेल शुरू हुआ। चोट्टि ने हँसकर हरमू से कहा, "अब पूरे बरस मुंडा और दूसरी जात वाले एक होकर रह तेहैं, एक साथ काम करते हैं। मेले के दिन सारे मुंडा धनुक लेकर एक बार मुंडा बनना चाहते हैं।"

"मेरे बेटे का उधर मन नहीं है।"

"नहीं रहा।"

"वह तुम्हारा नाती है न!"

"अब वह सब सोचने से चलता है, हरमू? समय बदल रहा है।"

समय बदल रहा है। चोट्टि को समय के बदलने की कोई प्रतीक्षा नहीं थी। वह दर्शक मात्र था और उसकी सक्रिय भूमिका एक-सी ही

नगण्य रही। किन्तु रोमियो, पहलवान और दिलदार प्रतीक्षा करते थे। वे और भी क्षमता, और भी अधिक कमाना चाहते थे। अब ज़माना उनका था।

सोचा हुआ समय आ गया—इमर्जेंसी, आपातकाल।

हर गाँव और हर शहर में इमर्जेंसी दो रूपों में आयी। जेल का फाटक-फट्टा खुलता और कैदियों को निगल लेता। अख़बारों की आवाज़ बन्द हो गयी। लेकिन चूँकि शहर के लोग लड़ते लाल होते हैं और थोड़े में ही खुश हो जाते हैं, इसलिए वे खुश थे। लोड शेडिंग—बिजली का बन्द होना—कम हो गया, ट्रेनें वक्त से चलने लगीं। सारी गाड़ियाँ 'वर्क मोर-टॉक लेस'—'काम ज़्यादा बातें कम' के अनुसार ठीक से चलतीं, और तो और, सरकारी दफ्तरों में भी बाबू दिखायी देने लगे।

इसका नतीजा हुआ कि गाँवों में अँधेरा छा गया। चूँकि भारतवर्ष गाँवों का देश है, इसलिए इमर्जेंसी का असली चेहरा गाँवों को मालूम पड़ा।

चोट्टि अंचल में पहली चोट खायी हरबंस के चचेरे भाई राजबंस ने। रोमियो उसके लकड़ी की चिराई के कारखाने में एक बार दिखायी पड़ा। जीवन सब कामों में 'क' के कारण 'ख' वाले तर्क को मानकर नहीं चलता। तत्व और तथ्य में अन्तर रहता ही है। डॉक्टर अमलेश खुराना और बासमती उराँव की बिलकुल अलग कहानी के दृष्टांतों से इस बात की व्याख्या हो सकती है। जो भी हो, रोमियो इसलिए वहाँ नहीं गया था कि तोहरी में स्थित लकड़ी की चिराई का कारखाना भूस्वर्ग कश्मीर की तरह सुन्दर था। वह गया था पहलवान के कारण। रोमियो, पहलवान और दिलदार जिस मेंबर के आदमी थे, वह सदस्य आजकल इनकी खोज-खबर नहीं रखता था। उसने साफ़-साफ़ कह दिया था कि वह और लोगों से काम चला लेगा। चोट्टि और उससे लगे अंचल में मँझला-सँझला-अमीर-नया-छोटा इत्यादि नामों से उद्योगों का आरंभ हुआ और उन उद्योगों की नाली में देशी-विदेशी धन बाढ़ के पानी की तरह हरहरा कर भर गया, इसलिए रोमियो वग़ैरह अंचल को अपने क़ब्ज़े में कर अपनी-अपनी तरह बैठ गये। सदस्य, सब जगहों से चार-चार 'कट' पाकर खुश रहेगा। और अलमूनियम का कारखाना कहने को अब सदस्य की ही बेनामी मिल्कियत में था। इसलिए अब सदस्य के लिए और कुछ सोचना संभव न था।

उसने कहा, "तो हाँ, मेरे इलाके में आर्थिक विकास के लिए क्या ज़रूरी है जिसकी समीक्षा के लिए एक डॉक्टर आयेंगे।"

"डॉक्टर?"

"हाँ हाँ।"

यहाँ यह बता देने की ज़रूरत है कि आंचलिक समस्या और ज़रूरतों की समीक्षा के लिए डॉक्टर आयेंगे, इससे यह सदस्य समझते थे और एक ही साथ सरल स्वभाव से समझ लिया कि यह चिकित्सक होंगे। उसका परिणाम हुआ कि बाद में बहुत फ़साद हुआ। इन अमलेश खुराना की उम्र थी छत्तीस। बहुत मेधावी होने के कारण और बिजया मोदी के एक विश्वस्त पुत्र होने के कारण एम० ए० पास करने के बाद से ही कोई-न-कोई फ़ाउंडेशन इन्हें ज़रूरत से पकड़कर आर्थिक सहायता दे रहा है। 'ज़रूरत से पकड़ना' बात ही ठीक है क्योंकि संसार के एक शहर से दूसरे शहर, एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय, और सेमिनार से सेमिनार में जा-जाकर उनके दिन बीत रहे थे। सिर्फ़ भारतवर्ष से ही उनका परिचय नहीं हुआ। इसी कारण वह भारत-विशेषज्ञ और सामाजिक-आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में परिचित थे। उनका विश्वास सांख्यिकी में था, यथार्थ में नहीं। आजकल उन्होंने भारत के लघु कुटीर उद्योग के बारे में फ्रांस में बैठकर एक बम छोड़ा था। बम बहुत ही मनोरंजक था।

उन्होंने कहा था, भारत की सारी ग़रीबी की जड़ है खेती और उद्योग पर निर्भरता। भारत में किसी खेती-बारी, बड़े उद्योग की ज़रूरत नहीं है। मनुष्यों की मानसिकता में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने से मनुष्य बिजली की तेज़ी से फटाफट सब काम करेगा। इसके लिए किसान लोग हाथों से कागज़ बनायें, मछुए चटाई बिनें, कुम्हार कपड़े बनायें, जुलाहे छोटे-छोटे बल्ब बनायें, बढ़ई जानवर के बालों से ऊन बनायें। इससे अद्भुत गुणों वाली तमाम चीज़ें बनेंगी। खाद्य और उद्योग के क्षेत्र में भारत को जिन चीज़ों की ज़रूरत है, उन्हें भारत बाहरी दुनिया से ख़रीद सकेगा। अमलेश ने किसान-लोहार-बढ़ई इत्यादि तमाम कामों में लगे कुछ आदमियों को लेकर अनुसंधान करके यह भी सिद्ध कर दिया कि यह लोग अपने-अपने पेशों से थक गये हैं। जिस काम के प्रति उन्हें उत्साह नहीं होता उस काम में वे किस प्रकार निपुणता प्रदर्शित करेंगे?

यह बम सारे विश्व में बहुत ही ज़ोरदार था—विद्वानों की मंडली में दैनीकेन की भविष्यवाणी की तरह ही इसने शोर मचा दिया। भारत सरकार सदा से अवास्तविक अध्ययन और सांख्यिकी पर आधारित उन सारी सामग्रियों को अच्छा समझती थी जिनके आधार पर पूरे तौर पर कोई अवास्तविक परिकल्पना खड़ी की जाये—जिसे साकार करने में

अपात्र को अरबों रुपया दिया जाये—और जो किसी दिन भी साकार न हो, या होने पर भी किसी काम न आये। इसीलिए एक अविश्वसनीय रक़म देकर अमलेश को भारत लाया गया। यहाँ यह बता देना ज़रूरी है कि अमलेश के समान विद्वान के सिद्धान्त-प्रतिपादन और भारत सरकार द्वारा इस प्रकार के सिद्धान्त को सहायता दिये जाने में कोई ख़राब नीयत नहीं थी। दोनों दलों के मन में भारतवर्ष को त्रिमूर्ति भवन के बग़ीचे की तरह सुन्दर बनाने की इच्छा थी।

स्थानीय सदस्य अपनी रंडी या अपने लुच्चेपन के सिवा अपनी 'काट' कुछ न समझते थे। ये छोड़ने लायक़ दोष न थे, क्योंकि इसी के आधार पर विधान सभा के अधिकांश सदस्यों को मनोनीत किया जाता है। आज भी। पिछड़े क्षेत्रों में। स्थानीय सदस्य यह भी नहीं समझते कि अमलेश खुराना के पीछे भारत सरकार और दूसरी कोई विदेशी सरकार है।

उस पर डॉक्टर खुराना के लिए तोहरी में सबसे अच्छा मकान किराये पर लेने का हुक्म आया। तोहरी में कोई दर्शनीय बँगला न था। इसलिए उसने एस० डी० ओ० से कहा, "अस्पताल का एक वार्ड खाली करा दीजिये।"

"क्यों?"

"इस डाग्दर के लिए।"

इमर्जेंसी में सब चलता था। पर डॉक्टर के ठहरने के लिए अस्पताल से रोगी निकाल देना अभी तक नहीं हुआ था। एस० डी० ओ० क्या करें, यह सोच नहीं पा रहे थे और उनका भाग्य अच्छा था कि तभी मजिस्ट्रेट का आदेश आ गया। एस० डी० ओ० ने खुद निश्चिन्त होकर राजबंस चड्ढा को बुलाया। बोले, "भारत सरकार एक वैज्ञानिक को भेज रही है। उसके साथ कुछ लोग रहेंगे। तोहरी में तो वैसा कोई मकान है नहीं। आपका मकान तो बन्द ही रहता है।"

"हाँ सर, मैं तो हमेशा नहीं रहता। अभी तो लहरा फ़ारेस्ट में तम्बू लगाया है। कितने दिनों के लिए मकान चाहिए?"

"तीन महीने के लिए। किराया मिलेगा।"

"नहीं सर, किराये पर नहीं दूँगा।"

"क्यों?"

'पिताजी ने मना किया है।"

"सोचा होगा कि सरकार मकान लेने पर छोड़ेगी नहीं?"

"नहीं सर! मेरी क्षमता वह बात सोचने की है? आप लोग धड़ाधड़

पर रिक्वीज़ीशन कर लेते हैं और पुलिस चौकी बैठा देते हैं। हम बिलकुल जंगली हैं, हम लोगों से क्या कुसूर हुआ कि इतनी पुलिस यहाँ उतार दी? सो अगर आप कहें कि सरकार मकान चाहती है तो मेरी क्या ताक़त है कि मैं 'न' कहूँ।"

एस० डी० ओ० काम में होशियार छोकरा था, बुरा आदमी नहीं था। जंगल-बेल्ट में हाकिम-हुक्काम-गौरमेन का प्रधान आधार जंगल का ठेकेदार होता है। राजबंस चड्ढा एक नम्बर का ठेकेदार नहीं, पर बेकार भी न था। चड्ढा को एस० डी० ओ० पसन्द करते थे, क्योंकि वह अच्छी रुचि का शरीफ़ था, लेबर से गड़बड़ नहीं करता था। एक नम्बरी ठेकेदार होने से तैमूर लंग होता। वह अभी तक वैसा नहीं बना था। आदिवासियों के साथ राजबंस का बर्ताव अच्छा था।

एस० डी० ओ० बोले, "तीन महीने का किराया लीजिये।"

"न-न। लेकिन आप बँगला देख लें। एक ओर अस्पताल है। उधर मेरा लकड़ी चीरने का कारखाना है। थोड़ा शोरगुल रहेगा।"

"देखें।"

मकान देखकर एस० डी० ओ० बोले, "असबाब भी है। किराया लेंगे नहीं। एक काम करूँ। रंग-रोगन करा दूँ, गेट मज़बूत करा दूँ, वह गाड़ी रखेंगे। और एक बाथरूम बनवा दूँ।"

"बाथरूम का इन्तज़ाम है। फ़िटिंग और टंकी बैठाने से हो जायेगा।"

सात दिन में सब हो गया। इसके बाद स्टेशन वैगन में खुराना आ पहुँचे। उनकी पत्नी और सेक्रेटरी एक खसिया युवती थी। टाइपिस्ट केरल का एक युवक था। ड्राइवर मराठा था। खाना पकाने वाला बेयरा एक गोआनी था।

अमलेश पहुँचते ही क़ायदे से व्यवस्थित हो गया। एस० डी० ओ० ने जब कहा, "आपको कुछ ज़रूरत हो तो बताइयेगा।" तब बोले, "ज़रूर। मेरे काम के लिए एकान्त ज़रूरी है। नहीं तो स्कैंडल में काम नहीं कर सकूँगा।" एस० डी० ओ० ने मन-ही-मन कहा, 'स्टेट्स दिखा रहा है।' ऊपरी तौर पर बोले, "बताइयेगा। अब लंच?"

"हमारे पास सब है। पानी कहाँ है?"

"कुएँ में।"

"उबाल लेंगे। और मुझे कुछ मुंडा गाँव, कुछ उराँव गाँव, कुछ मुंडा और उराँव मिले-जुले गाँव, कुछ दुसाधों के गाँव, कुछ धोबी और गंजू गाँव, कुछ राजपूत गाँव, कुछ राजपूत और ब्राह्मणों के मिले-जुले गाँव, कुछ कोढ़ रोगी-प्रधान गाँव चाहिए।"

"इसके मतलब ?"

"मतलब क्या साफ़ नहीं है ?"

"इस तरह की बस्तियों के गाँव तो नहीं हैं।"

"तो आप पता नहीं रखते। मुझे मिस्टर शुकुल ने रिपोर्ट बनाकर दी है। मुझे पच्चीस गाँवों की ज़रूरत है।"

"मैं यहाँ तीन बरस से हूँ। सूखे में प्रायः सारे गाँव मेरे घूमे हुए हैं। इस तरह का कोई गाँव नहीं देखा।"

"तो ?"

"सिर्फ़ मुंडा या सिर्फ़ उराँव हों, ऐसा गाँव मिलना मुश्किल है। मिले भी तो बहुत अंदर मिलेगा। पूरी तरह दुसाध या गंजू या धोबी गाँव ? नहीं हैं। प्योर राजपूत गाँव ? केवल राजपूत गाँव में रहने पर धोबी-नाऊ के काम कौन करेगा ? जिन्होंने रिपोर्ट तैयार की है उन्होंने इस अंचल की जानकारी के आधार पर नहीं की है।"

जीन्स और कुरता पहने अमलेश की खसिया पत्नी शुद्ध हिन्दी में बोली, "उस समस्या का हल आसानी से कर लिया जायेगा। हर गाँव में एक-एक जात के टोले को हम एक-एक गाँव मान लेंगे। बस।"

"लेकिन कुष्ठ रोगियों का गाँव ?"

"वह भी नहीं है ?" दुनिया-भर के विश्वविद्यालय जिसके घर हैं, वही अमलेश खुराना भारत के संबंध में बहुत निराश हो गये।

"न। तब तोमारू मिशन के कुष्ठ ग्राम में जा सकते हैं।"

"उससे तो काम नहीं चलेगा।"

"मुझे तो पता नहीं कि आपका क्या काम है। लेकिन जो सारे गाँव वास्तव में हैं, उन्हें आपको घुमाकर दिखा सकता हूँ।"

अमलेश बोला, "वह कैसे होगा ? मेरा काम है प्राजेक्टेड-इकनॉमिक-नेसेसिटी की सर्वे करना।"

"बुरा न मानिये। उससे क्या होगा ?"

प्रशासनिक अफ़सरों पर अमलेश को बेहद अवज्ञा थी। इसीलिए वह बच्चों को समझाने वाली आवाज़ में बोला, "यह वैज्ञानिक प्रक्रिया—मेथोडोलॉजी—में सर्वेक्षण के काम का है। इसके आधार पर गवर्नमेंट इस अंचल की उन्नति के लिए योजना बनायेगी।"

एस० डी० ओ० बहुत ही खिन्न होकर बोले, "आपकी वास्तविक जानकारी है। किन्तु शुकुल थियोरेटिक एकेडेमेशियन हैं—उनकी रिपोर्ट बहुत अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि वह वैज्ञानिक पद्धति से तैयार की हुई है !"

ऐसे अंचल के एस० डी० ओ० होने पर सामान्यतः स्वाभाविक लोगों के साथ ही मिलना होता है जो ज़मींदार-महाजन-गुंडे दादा लोग-बराँभन-पुरोहित-वैष्णव, साधु-ग़रीब, आदिवासी-खेतमजूर-हरिजन-लड़ाकू जात वाले चालाक ठेकेदार होते हैं। वास्तविक सत्य को उड़ाकर सिद्धान्त के आधार पर राष्ट्रीय समस्या के समाधान करने वाले विद्या में उद्धत योजना-बिहारी को देखकर एस० डी० ओ० को मजाक सूझा। ज़ोरों से हँसकर वह बोले, "लगे रहिये सर ! रिपोर्ट के साथ मेल खाता अगर एक गाँव भी निकाल सकें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। हाँ, जब किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बता दीजियेगा।"

"हाँ, हाँ, बताऊँगा। राजनैतिक अशान्ति है या नहीं, यह जानने के लिए आपके ही पास आऊँगा।"

"पर कहीं गाँव देखने जाने पर मुझे ख़बर कर दीजियेगा।"

"क्यों ?"

"आपकी जान की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। साथ में गार्ड दे दूँगा।"

"पुलिस ? हिन्दुस्तानी पुलिस से मुझे नफ़रत है।" पीछे बड़ी मदद होने से बलवती श्रीमती अमलेश बोलीं, "पता है, वे हरिजनों को मारते हैं और महाजन को मदद देते हैं; वे औरतों को, बुड्डों को, बच्चों को मारते हैं।"

"बहुत ताज्जुब की बात है। लेकिन फिर भी मैं गार्ड दूँगा।"

"अगर न लूँ तो ?"

"मेरी नौकरी पर मुसीबत आयेगी।"

मिसेज़ अमलेश बोलीं, "यह तो अच्छा ही है। ब्रिटिश विरासत के कट्टर नौकरशाह बनकर क्या आप नया भारत बना सकेंगे ? नौकरी छोड़कर सीधे खेती कीजिये, हल पकड़िये।"

एस० डी० ओ० इज़्ज़त के साथ विदा हुए। अमलेश को मकान पसन्द आया। सॉ मिल देखकर अमलेश बोले, "वह क्या है ?"

"लकड़ी चीरने का कारख़ाना। सॉ मिल।"

"इधर ?"

"अस्पताल।"

"अच्छा।"

एस० डी० ओ० हाकिम के पास पहुँचे। मैजिस्ट्रेट से सब बताया। बोले, "मैं क्या करूँ ?"

"साथ में गार्ड दे दीजियेगा।"

"और ?"

"जो कहे वही कीजियेगा ।"

"कामकाज चूल्हे में गया ।"

ये दिल्ली के पालतू बच्चे हैं। प्योर कास्ट विलेज—शुद्ध जातीय ग्राम—चाहिए, कुष्ठ वर्ग के गाँव चाहिए। दिल्ली में बैठे-बैठे एक आदमी ने चोट्टि अंचल पर रिपोर्ट लिखी, फ्रांस से एक और आदमी आया। वह जो कुछ लिखेगा, उसके आधार पर दिल्ली इस अंचल की प्रगति की योजना बनायेगी !

"रुपये ढाले जायेंगे ।"

मैजिस्ट्रेट हँसकर बोले, "असली बात नहीं समझे ? सरकार ज़रा भी नहीं चाहती कि उन्नति बन्द रहे। किन्तु सरकार निर्भर करती है सैद्धांतिक लोगों पर, और आधुनिक शिक्षा सैद्धांतिकों को आधारहीन बना देती है। फिर यह खुराना कौन है, यह पता नहीं। पर दिल्ली की नज़रों में यह रुख चिड़िया का अंडा है ।"

एस० डी० ओ० को लगा कि अंचल की सारी समस्याओं को जैसे-का-तैसा रखकर इस पवित्र भूमि पर रुख पक्षी का अंडा उतारे बिना भी ठीक था। लेकिन उन्होंने यह बात कही नहीं। डालटनगंज के बिशप ने जब बेगार के बारे में रिपोर्ट तैयार की थी तो एस० डी० ओ० ने उनकी सहायता की थी। 1973 में बिशप की रिपोर्ट के परिणामस्वरूप राज्य सभा और विधान सभा में जो शोर मचा था, उसके कारण एक अध्ययन-दल आया और पाँच गाँवों को लेकर उनकी विवेचना की। एस० डी० ओ० ने उसमें भी सहायता की थी। इसका नतीजा हुआ कि वे राज्य प्रशासन में बहुत अप्रिय हो गये। अब खुराना के मामले में बात कर उन्होंने झंझट को आगे नहीं बढ़ाया।

दरअसल खुराना ने यहाँ बिलकुल अनजाने अशांत जल में तूफ़ान उठा दिया और वे चोट्टि मुंडा के फिर से किंवदन्ती बनने में सहायक हुए। इसका कारण बनी बासमती उराँव।

बासमती उराँव चोट्टि ग्राम के धौताल उराँव की लड़की थी और ढाइ ग्राम के बिरजू उराँव की पत्नी थी। बासमती और बिरजू राजबंस की ओर से जंगल में पेड़ काटते थे। बासमती पेड़ के टुकड़े बटोरकर ले आती। तोहरी के लकड़ी चीरने के कारख़ाने में वे दोनों आते-जाते थे। बिरजू वहाँ लकड़ी चीरने का काम सीखता था।

इमर्जेंसी के बाद रोमियो समझा कि चड्ढा हाथों से निकल गया। किन्तु रोमियो ने पहलवान से कहा, "लेबर से बट्टा लेना हमारा हक़ है। उससे राई जमा होकर बेल बन जाता है। एक बात और है। चोट्टि गाँव में

[illegible]दड़ के बाद चोट्टि के लोगों ने समझ लिया है कि हम उनको भूल गये हैं ।"

"भूला नहीं, गुरू ।"

"वे तो राजबंस चड्ढा के पास भी मजूरी करते हैं ।"

"कैसे ? ईंटों का भट्ठा तो नहीं है ?"

"सब है। थोड़ा-थोड़ा काम करता है ।"

"तो वहाँ जाऊँ ?"

"जाओ ।"

पहलवान वहाँ गया और राजबंस से बोला, "अब जैसे दिन हैं वैसा नियम है। सबकी मजूरी में से रुपया-रुपया बट्टा लूँगा। आपसे जमा करूँगा। इन सालों के बदन की बू से मुझे घिन आती है...।" उसके मुँह की बात पूरी न हो पायी। डंडे की चोट से वह ज़मीन पर गिर पड़ा। साथ-ही-साथ किसी औरत की गुस्से भरी आवाज़ सुनी, "तू कौन है ? अंधा है ?"

पहलवान उठ खड़ा हुआ और इस बात का जवाब देने जा रहा था कि बोलने वाली को देखकर गूँगा हो गया। देखा तो देखता ही रह गया। बासमती ने सिर पर उठाये लकड़ी के कटे टुकड़े को उतार फेंका और खड़ी हो गयी। पहलवान ने शायद उसे पहली बार देखा था। बासमती ने उसे अच्छी तरह पहचान लिया और कुछ कहने जा रही थी, पर चुप हो गयी। राजबंस सूखे गले से बोला, "बासमती, चली जा !"

"ठहर ।" पहलवान बोला।

राजबंस धीमी आवाज़ में बोला, "इस तरह मत कीजिये ।"

पहलवान बोला, "ज़बान संभाल, पंजाबी के बच्चे ! मेरी जो तबीयत होगी करूँगा। तेरी ताक़त है कि तू मुझे रोक ले ?"

बासमती झटपट चली गयी। ग़ायब हो गयी। पहलवान बोला, "शाम को आकर तेरी बासमती को उठा ले जाऊँगा ।" वह चला गया। पहलवान का इस तरह बिगड़ना बहुत स्वाभाविक था, क्योंकि बासमती के शरीर में अनुपयुक्त और वर्णनातीत यौवन था। जहाँ लकड़ी उठायी जा रही थी, राजबंस उसी समय वहाँ गया। वहाँ चोट्टि को देखा। देखकर उसे कुछ ढाढ़स हुआ। बोला, "चोट्टि, तुम ?"

"हाँ महाराज, देखिये, चार कोड़ी की उमर होने में पाँच साल और बाकी हैं। अब रोज काम नहीं कर पाता। हरमू बिरजू से भूसा खरीदेगा, वह बात कहने आया था। सो यह लोग बोले, जरा बैठो ।"

"तुम आये, यह अच्छा हुआ ।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

राजबंस ने संक्षेप में बताया। सुनकर चोट्टि बोला, "अभी लड़कियों को छोड़ दो महाराज, वे घर चली जायें।"

बासमती बोली, "उनके डर से ?"

"साँप से जो न डरे वह बेवकूफ होता है।"

अब बिरजू की तलाश हुई और पता चला कि बिरजू दो मील दूर काम करता है। उसके आते-आते शाम हो जायेगी। चोट्टि ने बहुत कम बात की। सोचता रहा, बोला, "आज मुझे अपने कारखाने में रहने दोगे ?"

"क्यों नहीं रहने दूँगा, चोट्टि ?"

कल तुम्हारे साथ उनके सेक्रेटरी के पास चलूँगा। पता है, वह सेक्रेटरी कौन है ? जिस दारोगा का सूअर ने पीछा किया था, जिसे मैंने बचाया, उसके भाई का बेटा है। तुम्हारे भाई तब लड़के थे। तुम बहुत छोटे थे।"

"चलो, चलेंगे। इनकी वजह से कामकाज बन्द होगा।"

"अपने लड़के-लड़कियों को बेइज्जत नहीं करने दूँगा।"

बासमती आदि अपने-अपने घर चले गये। चोट्टि बोला, "बासमती, लकड़ी के गोदाम चली आना। वह रोमियो तुम लोगों की टोली पहचानता है। और बिरजू का धनुक ले आना।"

अब बासमती को डर लगा। वह धीमी आवाज़ में बोली, "तुम्हारे लिए सत्तू-गुड़ ले आऊँगी।"

जागीरसिंह ने राजबंस का काठ-गोदाम देखा। इन लोगों पर उसे बहुत गुस्सा था। वह बोला, "आज रात को तीनों दादा-गुंडों को साफ कर दूँगा।"

"न, वे लोग काठ-गोदाम जलायेंगे।"

तीसरे पहर पहलवान, रोमियो और दिलदार आये। जंगल सुनसान पड़ा था। वे लोग बिरजू की टोली में गये। बासमती नहीं मिली। तब रोमियो बासमती की सास को मारने लगा। पीट-पाटकर उससे भला-बुरा कहकर चला गया। उसके बाद काठ-गोदाम जाने के पहले तीनों ने जीप में बैठकर बोतल खोली। इधर बिरजू के दोनों भाई और मगध उराँव काठ-गोदाम की ओर भागे।

रात हो गयी। जागीरसिंह ने फुसफुसाकर कहा, कि अब बदमाशों की मरम्मत करने में वह पूरा जोर लगायेगा। पहलवान जब देखो तब आकर उसके कैश से पंजा मारता है और उस दिन रोमियो ने उसे अकेला पाकर डंडा मारा था।

चोट्टि बोला, "यहाँ कुछ नहीं। महाराज मारे जायेंगे।"

"इधर काहे ? जंगल में।"

"मेरी बात के मुताबिक काम करना।"

"तुम क्या तीर मारोगे ?"

"सो देखा जायेगा।" चोट्टि ने अब फुसफुसाकर आदेश दिया और राह देखने लगा। यथासमय जीप आकर खड़ी हो गयी।

"बासमती, ओ बासमती !"

उन्होंने दरवाज़ा ठेला। तीनों लड़खड़ाते-लड़खड़ाते अंदर घुसे। दिलदार ने टार्च जलायी। बिरजू, जागीरसिंह और दूसरे लोग टार्च की रोशनी के मुँह पर पड़ने पर हँसे। उसके बाद वे झपट पड़े। रोमियो ने गोली छोड़ी। जागीरसिंह ने उसे धक्का मारकर गिरा दिया और तेज़ी से उसके मुँह में कपड़ा ठूँस रस्सी से बाँधने लगा। चोट्टि बोला, "सूअर फंदा बाँधना।"

बाँध-बूँधकर उन्हें कोने में डाल दिया गया। तभी सहसा सुनायी पड़ा, "यहाँ क्या हो रहा है ?"

अमलेश खुराना और उनका केरलीय सहायक थे।

"यह क्या ? यह कौन हैं ?"

बहुत ही अविश्वसनीय था। फिर भी अमलेश रोमियो आदि को पहचान गया। बोला, "अरे, यह युवलीग के लीडर हैं न ?"

एक बुड्ढा, दुबला-पतला, बहुत ही शांत मुंडा बोला, "हाँ, महाराज ! तुम कौन हो ? यहाँ क्यों आये ?"

"मैं सेंट्रल गवर्नमेंट का रिसर्च ऑफ़िसर हूँ। गड़बड़ सुनकर आ गया। इनको बाँधकर क्यों रखा है ?"

चोट्टि ने सारी बातें बतायीं। अमलेश बोला, "कैसा ताज्जुब है ! युवलीग के लीडरों की यह हरकतें ?"

"हाँ, महाराज !"

"तुम कौन हो ?"

"चोट्टि मुंडा।"

"तुम्हारा नाम तुम्हारा नाम...," डॉक्टर बता रहा था, "तुम तीर चलाते हो, यही न ? सुना था।"

"हाँ महाराज।"

"इनका क्या करोगे ?"

"हमारी क्या ताकत है ? इन्होंने तो बंदूक चलायी थी। लगती तो कोई मर जाता। इसी से बाँध दिया है। इनके सेक्रेटरी को दिखाऊँगा।"

"बहुत गलत है, युवलीग के होकर...।" अमलेश आदि चले गये।

सवेरा हुआ। बासमती और बिरजू को राजबंस की जीप में बैठाकर

राजबंस और चोट्टि छह मील दूर गये। युवलीग के सेक्रेटरी और दल के सेक्रेटरी से सब बताया। युवलीग का सेक्रेटरी काठ-गोदाम चला आया। कहीं से ख़बर पार एस० डी० ओ० और दारोगा आ पहुँचे। चोट्टि ने बताया, "लड़कियों को बेइज्जत करने पर हम मार डालते हैं। मैं तो मरा ही हूँ, मरने से नहीं डरता। तीर था, उससे तुम समझ सकते हो, जिसे मारना चाहता मार सकता था। मारा नहीं कि तुम चड्ढा पर हमला करते।"

तभी अमलेश खुराना ने मंच पर प्रवेश किया और उनका विवरण बताया। एस० डी० ओ० मन-ही-मन खुश हुए। युवलीग वालों का चेहरा उतर गया। खुराना के पीछे कौन था, यह उन्हें मालूम था। चोट्टि ने मौक़ा समझकर खुराना से कहा, "महाराज, यह अब बदला लेंगे। मैंने सुना है कि तुम गौरमेन को जानते हो। सो तुम सच्ची बात क्यों नहीं लिख देते?"

"जरूरत होने पर लिख दूँगा।"

एस० डी० ओ० युवलीग के सेक्रेटरी से बोले, "यहाँ का मामला यहीं मिटाने की जरूरत है।" उसने अलग ले जाकर एस० डी० ओ० से कहा, "खुराना को पता चल गया है। सब काम बिगड़ गया है। वह क्या बतायेगा, उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, पहलवान वगैरह को बचाने में तो नहीं फँस जाऊँगा?"

एस० डी० ओ० बोले, "उन्हें छोड़ दो।"

चोट्टि बोला, "पहले तुम बता दो महाराज, कि इनकी वजह से कोई दंगा-फसाद न होगा।"

युवलीग के सेक्रेटरी बोले, "नहीं। कोई डर नहीं है।"

अमलेश बोला, "लेकिन मैं नहीं छोड़ूँगा। मैं आया हूँ यह सर्वे करने को कि उनको क्या ज़रूरत है। मैं तो देख रहा हूँ कि युवलीग के लीडरों के हाथों से आदिवासी औरतों की इज्ज़त बचाने की ही सबसे पहले ज़रूरत है। मैं यही रिपोर्ट लिखूँगा।" अमलेश सहसा चल दिया।

एस० डी० ओ० माथा पोंछकर बोले, "खुराना को कौन रोकेगा?" युवलीग वाले भी बहुत दुखी हुए। अब चोट्टि आदि बाहर चले गये। जागीरसिंह मुसकराता हुआ बैठा रहा।

युवलीग वालों ने तीनों को खोल दिया। जागीरसिंह बोला, "ए हे हे, अस्पताल का भंगी भेज दीजियेगा, सर! सब गंदा हो गया है। हग-मूत दिया है।"

तीनों जीप पर बैठे। युवलीग के सेक्रेटरी तीनों को देखते थे और अविश्वास में सिर हिला रहे थे। युवलीग के ऑफ़िस में पहुँचकर उसने मुँह

...ा। और कहा, "इस तरह खुराना के सामने सब-कुछ विज्ञापन की तरह ... दिया... खुराना कौन है, यह पता है? उसके रिपोर्ट देने पर क्या होगा, यह मालूम है?"

पहलवान बोला, "सब समझ गया हूँ।"

रोमियो सिर्फ़ यह बोला, "मैं देख लूँगा।"

"किसे?"

"सबको।"

युवलीग के सेक्रेटरी बोले, "बहुत हो चुका। अब हँसी मत करना।" रोमियो ने उसकी बात को कोई महत्त्व नहीं दिया। बोला, "खुराना कौन है? वह क्या जानता है? और कुछ न कर अगर कुत्तों के नाम पर सदर में कुछ मुकदमे ठोक दूँ तो? वह विलायती पंडित है, अदालत में गवाही देनी होगी तो भाग खड़ा होगा।"

दल के सेक्रेटरी चुप न रहे। वे भी ज़रूरी भाग दौड़ करते रहे, जिसका नतीजा हुआ कि सदर में एक सुसज्जित छोटे-से बँगले में रोमियो के तीन दादाओं की बुलाहट हुई। वहाँ तीन केरल के अफ़सर मेज़ पर बैठे थे। ईज़ीचेयर पर अमलेश खुराना का केरलीय सेक्रेटरी उठंग हुआ बैठा था। मेज़ पर बैठे एक युवक अफ़सर ने पूछा, "क्या यह रिपोर्ट सच है?" उसने रिपोर्ट पढ़ी। प्रतिवाद करने को तैयार रोमियो को रोककर उसने पूछा, "रिपोर्ट सच है?"

"मैं कहता हूँ...।" अफ़सर मुसकराहट दबाये रहा। उसके बाद बोला, "इआड का नाम सुना है? इन्वेस्टिगेट-ऐप्रिहेंड-डिस्ट्रॉय यानी जाँच करो-समझो-खत्म कर दो! सुना है न? गुड। खुराना के रहते हुए उस अंचल में कोई गड़बड़ नहीं चाहिए। गड़बड़ होने से 'इआड' हो जायेगा।"

"सुना है, सर!"

"याद रखना। जा सकते हो।"

अमलेश का केरल का सेक्रेटरी बोला, "इनको मीसा करा देना ठीक होगा, बाहर रखने की क्या जरूरत है?"

अफ़सर बोला, "खुराना कई महीने रहेगा। अभी मैं रहूँगा। किसी वजह से, इसे नोट कर लो।" रूलर से नक्शा दिखाकर बोला, "यहाँ कोई अशांति नहीं चाहिए। तुम्हारी तरह के लोग गरदन पर बोझ हैं।"

इस झाड़ के बाद औरों ने समझा कि 'इआड' छेड़ने वाली चीज़ नहीं है, पर पहलवान नहीं समझा, और कई दिन बाद खुराना के सेक्रेटरी को रास्ते के किनारे स्टॉल पर चाय पीते देखकर बोला, "अरे, क्यों न बताया कि आप 'इआड' वाले हैं?" सेक्रेटरी मुसकराकर उठ आया और पहलवान

की गरदन में कहीं पर दबाकर उसे दर्द से बेचैन कर जीप पर बैठा लिया। सदर में उक्त बँगले में ले गया। उसके दो दिन बाद सदर अस्पताल में तरह-तरह अंदरूनी चोटों के लिए इलाज कराकर होश में आये पहलवान ने छुटकारा पाया और शरीर को ठीक करने के लिए अलमुनियम फ़ैक्टरी के बँगले में चला गया। अब उसने इस कहावत का असली मतलब समझा कि 'गोखरू साँप की पूँछ से कान खोदना ठीक नहीं।

इन कारणों से अंचल में एक तरह की शांति रहने लगी। किन्तु शांति के भीतर बिजली थी। अंदर-ही-अंदर तनाव था। मानों कोई किसी का विश्वास नहीं करता था। हरबंस और राजबंस के पास से अपेक्षाकृत अच्छी मजूरी पर छगन और चोट्टि थे। रोमियो बट्टा लेने नहीं आता था। तीरथनाथ चुपचाप रहता था। छगन आदि के 'सोहराइ' परब पर सत्तू-गुड़-दही खाते-खाते छगन बोला, "सब बड़ा अच्छा हो गया है। अनवर की जमीन पर चारे लग गये हैं। मुझे इस बार जमीन से खूब मक्का मिला। चोट्टि गया हुआ था, इसलिए पार्टी के बाबू लोग दबे रहे। इसीलिए वे चुप रहे।"

चोट्टि पेड़ की टेक लगाये बैठा उत्सव देखं रहा था। वह बोला, "इतनी चुप अच्छी नहीं है रे!"

"क्यों?"

"देख, फिर क्या करें।"

छगन का युवक भांजा यहाँ नया-नया आया था। वह बोला, "तीन बरस में दो हमले किये। हमारे घर जलाये, चार आदमी मरे। मेरी बासमती को लेकर क्या हुआ!"

"और भी होगा।"

"और भी?"

"हवा से समझ में आ रहा है।"

"वह क्या?"

"अरे वह गौरमेन।"

"वहू ने आज कपड़े बदले हैं। पैज पहनी हैं।"

अमलेश, उनकी पत्नी और सेक्रेटरी के साथ स्टेशन-मास्टर भी था। अमलेश ने पूछा, "यह क्या हो रहा है?"

छगन बोला, "हम लोगों का परब है।" इनके लिए चौकियाँ बिछा दी गयीं, ये बैठ गये। अमलेश बोला, "ताज्जुब है, ताज्जुब है! उधर यूरेनियम और मोनाज़ाइट में रिच ज़मीन है, ट्रेन चल रही है—और एक साथ ही चल रहा है आदिवासी परब!"

सेक्रेटरी बोला, "यह आदिवासियों का पर्व नहीं है।"

"तब?"

"यह लोग दूसरी परिगणित जाति के हैं।"

"लेकिन कुछ मुंडा दिखायी पड़ रहे हैं!"

"वे निमंत्रित हैं।"

"ताज्जुब है, ताज्जुब है! परिगणित लोग ही अलग-अलग क्यों नहीं रहते? उनके निमंत्रण पर मुंडा क्यों आते हैं? सोचने में ही तकलीफ़ होती है। मेरे लिए इंडिया बहुत जटिल है।"

उनकी पत्नी बोली, "हम तो 1976 में बाहर चलेंगे, डार्लिंग!"

"ऐंड आई सी चोट्टि—मैं चोट्टि को देख रहा हूँ—चोट्टि!"

"महाराज!"

"एक मेला चाहिए।"

"क्या कहा, महाराज?"

"मेला चाहिए।"

"मेला क्या यों ही मिल जाता है महाराज?" चोट्टि हँसने लगा।

केरलीय सेक्रेटरी अब इस अंचल की देहाती हिन्दी में बोला, "यह एक मेले में सिनेमा बनाना चाहते हैं। उसमें तीर चलाने का खेल रहेगा, लड़के-लड़कियाँ नाचेंगे। देउता भूत भगायेंगे, सूर्य को सूअर की बलि दी जायेगी।"

चोट्टि बोला, "ऐसी बात है!"

"क्या हुआ? सारा बंदोबस्त कर दो। पैसे मिलेंगे।"

"महाराज! तुम तो बच्चों की-सी बातें करते हो। सुना है कि सहर में सब-कुछ मिलता है। सो महाराज, हम लंगोटी पहनने वाले कंगाल हैं। हममें क्या सामर्थ है, बताओ कि माघ में बेर और जेठ में पका आम ला दें? पैसा देकर तुम आम के पेड़ से कहो, बेमौसम फल दे, तो देगा?"

यह बात सुनकर सेक्रेटरी हँसने लगा। बोला, "कैसी ग़लत बात कह दी, चोट्टि? निश्चय ही जो कुछ कहा वह ग़लती थी।"

"महाराज, दसहरा के दिन इस चोट्टि में मेला होगा। उस मेले की देखने लायक सोभा है। उसमे तमाम गाँवों के बहुत-से मुंडा आयेंगे। खूब नाचेंगे, खूब नगाड़े बजेंगे, उसके बाद सब तीर चलाने आयेंगे। वह मेला होगा। उसके बाद, तुम लोगों की दीवाली के दिन सब कुरमी पहाड़ के ऊपर जायेंगे, वहाँ देउ और पहान भूत को भगायेंगे, उसके बाद सूरज देवता को बुलाकर सूअर बाँधकर बलि देंगे—यह पहाड़ के ऊपर होगा। एक काम और है। तुमने कहा सब बेवस्था कर दो, रुपये देंगे। वह होगा?"

सेक्रेटरी ने अमलेश से सब कहा और चोट्टि से बोला, "मेले के समय तसवीर खींची जायेगी। तुम क्या अब भी तीर चलाते हो?"

पहान बोला, "नहीं, वे निर्णायक बनते हैं।"

अमलेश बोला, "अब नहीं चला सकते?"

चोट्टि के ओंठों पर हलकी मुसकराहट खेल गयी। वह बोला, "क्या पता! कब से धनुक नहीं उठाया है!"

"ज़रा दिखाओ न।"

सबने चोट्टि को पकड़ा। चोट्टि ने अन्त में अमलेश के सिर पर से बेंत की टोपी उड़ा दी और पेड़ की डाल से लटकता फल ज़मीन पर गिराकर सबको संतुष्ट कर दिया। अमलेश ने जेब से दस-दस रुपये के दो नोट निकाल कर दिये। बोला, "सब मद पियो, आनन्द मनाओ।"

वे लोग चले गये। चोट्टि बोला, "जा, मद ले आ। यह आदमी लड़कों की तरह है।"

यह एक दिन बीता। और दिन भी आये और गये। उसके बाद एक दिन डुग्गी पिटी। चोट्टि मेला के तुरन्त बाद। डुग्गी सुनकर सब लोग स्टेशन चले आये। दारोग़ा सूखे हुए ओंठ चाटकर बोला, "तुम लोगों को बता देने का हुक्म है।"

"क्या हुआ?" सना ने घबराकर सोचा।

"जो हो रहा है बाप लोगो, उसे सोचकर मेरा सिर चकरा रहा है। कभी पता नहीं था, सोचा भी नहीं था कि ऐसा होगा।"

"क्या हुआ?"

"ठहरो, उसके पहले नोटिस पढ़ दूँ।" दारोग़ा ने थूका और बोला, "पहले थोड़ा पानी पी लूँ। गौरमेन ने तुम लोगों को राजा बना दिया है।"

अब उसने पढ़ा: "24 अक्टूबर, 1975 को यह आर्डिनेंस जारी होता है, जिसके अनुसार आज की तारीख़ से बेगार प्रथा बन्द होती है, वह ग़ैर-क़ानूनी है। सब बेगार अब आज़ाद हैं, अब उन्हें बेगारी नहीं देनी होगी। अब—किसी तरह किसी से ज़बरदस्ती बेगार नहीं करायी जा सकेगी। उसके बाद क़ानून की हज़ारों किचकिच हैं, उन्हें नहीं पढ़ूँगा। असली बात है, मालिक और महाजन के जो दस्तावेज़ थे, पुराना कर्ज़ था, वह भी खत्म हो गया। कोई कर्ज़ अदा नहीं करना होगा, किसी मालिक को बेगार नहीं देनी होगी। पुराने क़र्ज़ के एवज़ अगर महाजन के पास मकान या ज़मीन गिरवी होगी, उसे महाजन लौटा देगा।"

"महाराज!" चोट्टि ने हाथ उठाया।

"कहो, चोट्टि!"

"मालिक अगर बेगार ले, घर-ज़मीन न लौटाये, करजे के लिए तंग करे, तो करजदार बेगार क्या करेगा?"

"अदालत में नालिश करेगा।"

"इसकी क्या सजा है?"

"तीन बरस जेल और जुर्माना।"

चोट्टि हँसा, हँसता ही रहा।

"हँस क्यों रहे हो, चोट्टि?"

"महाराज, कानून बनाया। कानून तो बना, किन्तु कानून में रख दिया पत्थर, उससे कानून ठोकर खा जाता है। करजदार, बेगार, मालिक के नाम पर नालिस करेगा? किस जोर पर, महाराज?"

सिर हिलाया, चोट्टि ने सिर हिलाया। दारोग़ा चला गया। अब छगन और दूसरे मुंडा दौड़कर पास आ गये। बोले, "दरोगा यह क्या कह गया? यह तो समझ में नहीं आ रहा है, चोट्टि!"

"हमें कौन समझायेगा? कानून जारी किया है हमारी भलाई के लिए, किन्तु उसका कभी पता नहीं चलता है।"

"चलो, तोहरी चलें। वह गौरमेन सच्ची है। समझा देगी। कल ही वहाँ चलें।"

"पहले चड्ढा के पास चलें।"

हरबंस को शाम की गाड़ी से अख़बार मिला था। उसने चोट्टि को बताया, "खबर तो अच्छी है चोट्टि, लेकिन...।"

"इतनी अच्छी कि बिस्वास नहीं होता।"

"जैसा कह रहे हो। सुनो, मैं सदर तो हमेशा जाता रहता हूँ, पता लगा आऊँगा। एक नया अफसर आया है, उससे पूछ आऊँगा।"

"पहले वाला आदमी अच्छा था।"

"यह भी बुरा नहीं है। इसने जो कल-कब्जे हिलाये हैं, उसी से तो दारोगा आकर बता गया, नहीं तो यह दारोगा हिलता?"

"उसे भी पता चल गया है कि कानून से कुछ नहीं होगा। इसी से मजाक में बोला, तुम राजा हो गये।"

"कानून तो बुरा नहीं है, चोट्टि! लेकिन कानून से कुछ काम नहीं होता, क्योंकि कानून कभी काम में लाया नहीं जाता।"

"सब पता है, महाराज!"

"पता लगाकर तुम्हें बताऊँगा। काम का होने से मैं बहुत खुश होता; यह क्या किसी सभ्य देश में होता है?"

"होता है, महाराज ! हमेसा होता रहेगा। बताइये तो क्यों न होगा ? हमारा क्या है ? जब हम हक चाहेंगे, तो पार्टी के लड़के मारेंगे, और पुलुस उनके कहने पर चलेगी ।"

"हाँ ।"

हरबंस का चेहरा कठोर हो गया। उसकी और राजबंस की जानकारी बहुत ही आधुनिक और कड़वी थी।

दूसरे दिन चोट्टि और कई आदमी तोहरी गये ।

अमलेश बोला, "यह तो बहुत साफ़ बात है, चोट्टि ! बेगार नहीं। पिछला कर्ज़ चुकाना नहीं पड़ेगा। यह पहली...ठहरो, ठहरो। शंकर !"

"येस ?"

"आह ! आह ! कैसा मौक़ा है !"

"किस बात का ?"

"अख़बार में बांडेड लेबर ऐक्ट निकला है।"

"हाँ ।"

"यह अभी तक ज़रख़रीद गुलाम थे। आज हम कुछ आज़ाद लोगों को देख रहे हैं। तुम इनको बैठाओ। मैं मूवी लेता हूँ। तुम टेपरिकॉर्डर में इनकी प्रतिक्रिया सुनो, माने उसे ले लो।"

शंकर बोला, "खूब कहा खुराना, हम उसे सिंडिकेट कर सकते हैं—एक साथ कई जगह प्रकाशित कर सकते हैं ख़ूब, ख़ूब ! इन्हें बैठाओ, चाय पिलाओ।"

चोट्टि ने हाथ उठाया। बोला, "पहले समजा दो, महाराज ! अगर करजदारों पर अत्याचार कर मालिक सूद ले, बेगार ले, तो क्या करेंगे ? कानून में ऐसी कोई बात है ?"

"एस० डी० ओ० की अदालत में शिकायत करेंगे।"

"उसके बाद ?"

"क़ानून के मुताबिक़ सज़ा होगी।"

चोट्टि चुप रहा।

"क्या हुआ ? चुप हो गये ?"

"बताओ तो, क्या कहूँ ?" चोट्टि की आवाज़ में युगान्त के बाद युगान्त की वेदना का हाहाकार था। और शंकर ने टेपरिकॉर्डर चलाया। चोट्टि बोला, "क्या कहूँ, बताइये महाराज ! सालों पहले किसी दिन किसी ने लिये पाँच सेर धान, दस सेर मक्का, तीन रुपये। उसकी कीमत, बाप रे ! सोने से जादा। उस करज को चुकाने में पीढ़ी के बाद पीढ़ी बेगार देती, करज नहीं चुकता। सूद देते, देते चलते, असल नहीं चुकता। पेट के लिए

[illegible] करज-पर-करज लेना पड़ता...।"

"कहो, कहो।"

"नालिस करें तो न्याय मिलेगा ! कौन नालिस करेगा ? तुम गौरमेन हो, तुमसे पूछता हूँ, कौन नालिस करेगा ? मालिक-महाजन को जान से मार डालने पर थाना उसका कसूर नहीं देखता। करजदार बेगार एक बात कहे तो उसे पकड़ लिया जाता है। मेरे बाप ने उस लाला के बाप के जुलुम से पागल होकर फाँसी लगा ली। मेरे लड़के, उस हरमू को इस लाला ने जमीन के जुलुम पर जेहल भेज दिया। लाला के नाम पर कोई नालिस करेगा, महाराज ? सूखा और अकाल लगे रहते हैं। लाला के पास जाकर खाना-करज लेना पड़ता है। अदालत !" चोट्टि की आवाज़ वेदना से भारी और ऊँची हो गयी। "गाँव में रहते हैं मुंडा, अछूत। उन्हें लिखना-पढ़ना आता है कि जिससे कानून और हक समझ सकें ? वहाँ वकील-पेसकार मुंडा उराँव-अछूतों की चमड़ी नहीं छील लेते हैं ?—यह कानून कौन बनाता है ?"

"गवर्नमेंट।"

"कहाँ रहती है यह गौरमेन ?"

"दिल्ली में।"

"वह बहुत दूर है न ?"

"हाँ।"

"बनाये कानून, अच्छा करती है, दूर रहती है। किन्तु जंगल में रहने वाले आदिवासी-अछूत मरते हैं, यह नहीं जानती ?"

"नहीं, यह ठीक नहीं है।"

"जानना चाहती तो जान सकती थी।"

"चुप रहो।"

चोट्टि चौंक कर चुप हो गया। अब शंकर ने रिकॉर्डर चलाया। चोट्टि की आवाज़ सुनायी दी। सब अचंभे में आकर हँसने लगे। सुनते रहे। अमलेश बोला, "बहुत अच्छा। अब उनकी बात सुनो।"

सबकी आवाज़ें रेकॉर्ड की गयीं और सभी ने वह सुनीं। शंकर बोला, "फिर किसी दिन फ़िल्म खींची जायेगी।"

वक़्त पर कैसेट भारत में और विदेशों में प्रचारित हुआ। उसमें चोट्टि की बातें नहीं थीं और छगन का उल्लसित वक्तव्य था।

सारी जानकारी ने चोट्टि के लोगों को बहुत ताज्जुब में डाल दिया, ख़ुशी भी दी। छगन बोला, "आज कैसा दिन है, बताओ तो, चोट्टि ?"

सना बोला, "चोट्टि के मन में ख़ुशी नहीं है।"

छगन बोला, "यह तो बेगार नहीं है। हम लोगों की खुशी उनकी हो सकती है या नहीं; बताओ तो, चोट्टि!"

चोट्टि बोला, "आम कैसे हैं, यह तो खाकर ही मालूम होगा।"

"उसके मतलब?"

"कानून को मालिक-महाजन मान लें, तब तो कुछ बात ही नहीं है। वे क्या मान लेंगे? मुझे नहीं लगता। इस कानून से आग लग जायेगी।"

सब लोग अपने-अपने घर गये। लेकिन चोट्टि की जानकारी फिर भी ख़त्म नहीं हुई। हरबंस ने उसे दूसरे दिन बुलाया। बोला, "चोट्टि, अभी भी आदिवासी अफ़सर है, और कुछ नहीं जान पाये हैं। नया कानून है न! कहा कि जान सकने पर बताने की कोशिश करेंगे...एक बात है।"

"क्या, महाराज!"

"चोट्टि, तुम तो बेगार नहीं हो?"

"ना, महाराज!"

"तो इस कानून के लिए इतनी दौड़-धूप क्यों कर रहे हो?"

चोट्टि फ़ौरन बोला, "मैं नहीं हूँ महाराज, किन्तु सना, बुधा, मितुआ बेगार हैं। और भी मुंडा, छगन आदि के कितने ही लोग हैं। इसी से चक्कर लगाता हूँ। किसी के घर में आग लगने पर क्यों बुझाते हैं? तुम्हारा घर भी जल सकता है। मैं नहीं किन्तु कितने लोग हैं, हरमू का लड़का भी हो सकता है।"

"कानून तब तक ठीक हो जायेगा।"

"कानून ही तो है, महाराज! उसी से मोतिया और पहान मरे थे! किसी को जेहल--सजा हुई? हरमू ने क्या किया था कि जेहल गया? ना महाराज! जब तक दिकू लोगों के हाथों में कानून चलाने की सामर्थ है, तब तक दिकू का ही हक देखेंगे।"

सहसा हरबंस को लगा कि चोट्टि की नजरों में वह भी 'दिकू' है और संभवतः चोट्टि उस पर भी विश्वास नहीं करता है। उसके बाद बोला, "मैं कह रहा था...।"

"कहो महाराज!"

"मेरा एक दोस्त है। वह जमींदार जरूर है,—कालेज में मेरे साथ पढ़ता था। अब गोमोह-धनबाद में आदिवासियों की भलाई के लिए जाने क्या काम किया करता है। ठहरो, 'आदिवासी मंगल भारती' या ऐसा ही कुछ है। उससे अचानक भेंट हो गयी। पिता के घर आया था। वह एक बार तुमसे मिलना चाहता है।"

"क्यों?"

"पता नहीं। यह बात किसी से बताना मत।"

"वह भी नक्सली है?"

"न-न, लेकिन आजकल जमाना अच्छा नहीं है। यहाँ उपद्रव कम है, नहीं आयेगा। आने पर खबर दूँगा।"

"महाराज, उससे कुछ जुलुम तो नहीं खड़ा हो जायेगा? जो बुरा करते हैं, सो तो करते ही हैं। आदिवासी-अछूतों की बुराई करने का हक सबको है। जो भलाई करना चाहते हैं, वे भी नहीं समझते। इससे पुलुस जुलुम करती है। घर जलाना, लहास गिराना, अब अच्छा नहीं लगता, महाराज!"

"न, न, मैं भी सावधानी से आना-जाना करता हूँ—चोट्टि! मुझसे भी तो कोई खुश नहीं है।"

हरबंस की बात से लगा कि उसने दोस्त से 'हाँ' कह दिया है, लेकिन अब उसके लिए पछतावा है।

हरबंस का दोस्त जब आया तो दिखायी पड़ा कि वह गेरुआ कुर्ता और पाजामा पहने है, लेकिन उसका अन्तर वैसा गेरुआ न था। चोट्टि से बातें करते-करते वह दूर ईंटों के भट्टे की ओर निकल गया। उसके बाद बोला, "तुमसे मेरी जान-पहचान न थी, लेकिन तुम्हारे बारे में बचपन से सुनता आया हूँ। धनबाद में पुराण मुंडा जब मरा था, तो मैं ही उसकी देखभाल किया करता था।"

"पुराण! पुराण मर गया! कब?"

"पाँच बरस पहले।"

"क्या हुआ था?"

"तपेदिक।"

"पुराण मर गया?"

"उससे सुना था। और भी सुना था। आनन्द महतो ने तुम्हारे पास से आकर मुझे सब बताया था।"

"तुम उसके आदमी हो, महाराज?"

"न, वह अखबार निकालते थे। मेरे दोस्त थे।"

"तुम क्या करते हो?"

"मेरा नाम स्वरूप है। मैं...क्या बताऊँ!"

"नक्सली हो?"

"उनकी तरह कुछ-कुछ काम तो करता हूँ, लेकिन नक्सल नहीं हूँ। पुलिस ज़रूर मुझे नक्सल ही कहती है। लेकिन मेरा उद्देश्य है कि जहाँ तक

हो सके, आदिवासियों के अधिकारों को देखना और उनकी रक्षा की कोशिश करना। हमारा लक्ष्य है, आदिवासियों के लिए एक अलग राज्य बनाना।"

"महाराज, सपना देख रहे हो !"

"सपना भी तो देखना ही होता है, चोट्टि !"

"बीरसा ने देखा था। भगवान बन गया। कभी सदर में उसकी मूरती के पैरों के पास बैठा रहता था। लड़का जेहल में था। वह भगवान बन गया, और उसके मुंडा वैसे ही मरते रहते हैं।"

"सपने भी देखने होते हैं।"

"बुरा न मानना, महाराज, आदिवासियों को राज्य दोगे, पर अछूत कहाँ जायेंगे ? वे भी हमारे मरने पर मरते हैं।"

"उनकी और तुम्हारी समस्याएँ क्या एक हैं ?"

"जहाँ मुंडा-ग्राम और उराँव-ग्राम और हो- ग्राम हैं, वहाँ तो तुम्हारी बात ठीक है। किन्तु सारे आदिवासी वैसे ग्रामों में नहीं रहते हैं, महाराज ! हमारे चोट्टि ग्राम में अछूत-आदिवासी रहते हैं। काम-काज में, सुख-दुख में हम एक हैं। देखो महाराज ! आदिवासी-अछूत के सिवा कोई घर-जमीन छोड़कर नहीं जाता, डूब नहीं जाता। तुम अपने उस राज का सपना देखो। क्या इस राज में दिकू नहीं होंगे ?"

"ना। दिकू नहीं, महाजन नहीं, जमींदार नहीं, पुलिस नहीं। वहाँ कोई अत्याचार नहीं होगा।"

"महाराज ! तुमने वह राज बताया। मैंने मन-ही-मन देख लिया। देखा कि वहाँ बहुत जमीन है।"

"हाँ, चोट्टि !"

"तो उनको भी वह जमीन दो। हाथों में न दे सकोगे, सपने में दो। उसमें तो कुछ खर्च नहीं होता।"

"समझ लिया। लेकिन यह सपना नहीं रहेगा।"

"एक टोकरी गेहूँ के लिए आदमी जिनको जनम-जनम खरीद रखता है, वे एक कट्ठा जमीन छोड़ेंगे, महाराज ?"

चोट्टि की बातें उस आदमी को बार-बार विचलित कर रही थीं। क्यों कर रही थीं, यह चोट्टि की समझ में नहीं आ रहा था। वह मुंडा था, धैर्य और स्थिरता उसके खून में थी। वह आदमी बोला, "मेरी बात सुनो जिसके लिए तुमसे बात करने आया हूँ !"

"कहो, महाराज !"

"बेगार बन्द करने का कानून बन गया। अब यह कानून चलाना तो

दूर रहा, कानून बन जाने से ही मालिक-महाजन बिगड़े रहेंगे।"

"मैं तो सबसे यही कह रहा हूँ।"

"उनको सरकार मदद देगी। युवलीग के गुंडे-दादा मदद देंगे, गवर्नमेंट आँखें बन्द किये रहेगी।"

"वह भी जानता हूँ।"

"तुम्हारे यहाँ चोट्टि से कोमांडि तक अच्छा जंगल है। वहाँ हमारी चौकी है। गड़बड़ होने पर हम आकर लड़ेंगे।"

"उसके बाद ?"

"देखा जायेगा।"

"छिपकर क्यों रहते हो ?"

"सरकार का एक कानून है—मीसा। मीसा में सबको पकड़ रही है। हमारा अस्पताल, सेवा-प्रतिष्ठान भी हैं। शुरू में उन सब से ही काम शुरू किया। फिर भी अब हमको पकड़ते हैं।"

"इसीलिए बुलाया है ?"

"चोट्टि, बासमती उराँव की घटना के बाद चोट्टि ग्राम में गड़बड़ होने की संभावना कम है। बेगार कानून को चालू करने का आन्दोलन यहीं से शुरू किया जाये।"

"किसको लेकर, महाराज ?"

"तुम लोगों को लेकर।"

"महाराज ! तुम्हारी बात पर सबने बलोया-आन्दोलन किया। उसके बाद ? पार्टी के बाबू मारेंगे, पुलुस औरतों को नंगा करेगी, फटाफट जेहल भेजेगी, तब ? तब कौन बचायेगा, कौन वकील देगा, कौन मालिकों के जुलुम से घर बचायेगा ?"

"तुम्हारी बात झूठ नहीं है। फिर भी...।"

"तुम दिकू होकर हम लोगों की बात सोचते हो, यह तो अच्छी बात है। किन्तु हमारे लिए काम करना चाहो तो हम लोगों के बीच रहो। हम लोगों को सिखाओ जिससे कि अपना हक हम खुद समझें।"

"यहाँ मौका था, चोट्टि !"

"फिर महाराज ! दुसाध-गंजू लोगों की भलाई के लिए भी सोचते हो ? मैं बुद्धू मुंडा हूँ, बेगार न करके भी उन लोगों की बात सोचता हूँ, बेगारों की, और तुम अपने उस सपने के राज में भी उन लोगों को थोड़ी-सी जमीन नहीं दे सकते हो ?" चोट्टि हँसने लगा।

"सोचकर देखता हूँ।"

"तुम मदद दोगे, पुलुस पकड़ेगी नहीं ?"

"पुलिस ? 'इयाड' लग गया है।"

"वह क्या है, महाराज ?"

"हमारे जैसे लोगों के पकड़ने के लिए विशेष पुलिस।"

"यह देखो। दिकू के भला होने पर भी दिमाग ठीक नहीं रहता। तुम्हारे पीछे पुलिस के आदमी हैं, और तुम हमको मदत दोगे ?"

"डरने से काम चलता है ?"

"बलि के बकरे की तरह मरने से भी फायदा नहीं। बुरा मत मानना।"

इसी तरह बिना किसी निर्णय पर पहुँचे बातें चलती रहीं। स्वरूप साइकिल पर बैठकर चला गया। चोट्टि और भी दुखी और गंभीर होकर लौटा। हरमू बोला, "तोहरी के उस पगले गौरमेन ने खबर भेजी है। कल तुम्हारे साथ कुछ बातचीत करने आयेगा।"

"फिर बातचीत ! दिकू बातें करना खूब जानते हैं। बहू ! तेल गरम कर दे, पैर दुख रहे हैं।"

दूसरे दिन वह तोहरी गया। अमलेश बोला, "मैजिस्ट्रेट और एस० डी० ओ०—जो हो, यह सब कमेटी करेंगे।"

"कर सकते हैं।" शंकर ने संशोधन किया।

"कर सकते हैं ! परिगणित और आदिवासियों में से तीन-तीन आदमी लेकर एक कमेटी बनाने की बात है। उसमें तुम रहोगे।"

"उसमें क्या होगा, महाराज ?"

"तुम देखोगे कि बेगार कानून को लागू करने में कौन रुकावट डालता है, कौन गड़बड़ करता है ?"

"महाराज, यह सब क्या बातें हैं ?"

"क्यों ?"

"यह क्या तमासा कर रहे हो ?"

"तमाशा कर रहे हैं ? यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"अगर सारे मालिक बेगार लें, गौरमेन पुलुस से, पार्टी के लड़कों से उन्हें मदत मिलेगी, यह तुम्हें नहीं मालूम है ? उस दिन यहाँ लकड़ी के गोदाम में जो कुछ हुआ, तुम न होते तो हमारी लहासें निकलतीं। फिर भी कहते हो, चोट्टि, तुम देखो, किस तरह कानून लागू किया जाये ? यह कैसा तमासा है ?"

शंकर बोला, "वह ठीक कह रहा है।"

"तो कैसे होगा ? मैंने रिपोर्ट दे दी है...।"

"खुराना, कोई स्टेट नहीं मानना चाहती कि बेगार है। और क़ानून जो बना है...मीटिंग में जाने पर ही समझोगे।"

राज्य के अनुसार उच्च स्तरीय मीटिंग में अमलेश खुराना ने अपनी सारी अनजानी बातों को बताया, इस सबकी उसको जानकारी ही न थी। दिल्ली और बाहरी दुनिया में उसकी काफ़ी प्रसिद्धि हो सकती थी—भारत सरकार उसे किसी योजना के बनाने के लिए सर्वेक्षण करने किसी अंचल में भेज सकती थी—किन्तु राज्य के काम में इन सब मामलों का कोई महत्व नहीं।

पहले अमलेश को ही बोलने दिया गया और अमलेश ने पहले चोट्टि के वक्तव्य सहित टेपरिकॉर्डर बजाया। उसे सुनकर उपस्थित समर्थ लोगों में 'क' बोले, "क्या वाहियात है, रे भाई ! इनको रिलीफ़ देने के लिए बांडेड लेबर ऐक्ट ? इन्हें जनम-जनम बेगार रखना ठीक है। हमारे आन्ध्र प्रदेश में तो बहुत हुआ—तेलंगाना, गिरिजन, नक्सल—कुछ कर सके ? आन्ध्र में हमेशा ऊँची जाति वालों का शासन रहेगा। बेगार रहेगी।"

अमलेश बोला, "यह तो आपका बहुत ग़लत और अन्याय का रुख़ है। आपके हाथों क़ानून मज़बूत होगा।"

"क्यों ?"

"पढ़कर देखिये।"

"देखा है। आप बहुत अच्छे आदमी हैं। स्कॉलर—विद्वान। मैं भी इकोनॉमिक्स में फ़र्स्ट क्लास पाकर आई० ए० एस० बना। मैं जानता हूँ, स्कॉलर के दिमाग में किस तरह के विचार आते हैं। लेकिन मैं क़ानून को शक्तिशाली क्यों बनाऊँ ? यह मंत्री हैं। इनसे कहियें। ये तो राज्य सरकार के आदमी हैं।"

मंत्री बोले, "डॉक्टर खुराना, ऐडमिनिस्ट्रेशन यानी प्रशासन बड़ी गड़बड की चीज़ है। यह स्कॉलर लोगों का काम नहीं है।"

अमलेश समझ गया कि जिस पर ज़िले के सर्वेसर्वा क़ानून मज़बूत करने का हुक्म देने की बात है, वही मंत्री प्रशासनिक कार्यों में विद्वान व्यक्ति का आना नहीं चाहता। जो ज़िले के सर्वेसर्वा हैं, वे आदिवासी या परिगणित बेगारी को ख़त्म करने क़ाबिल कीड़े-मकोड़े समझते हैं। उसे लगा, इन सब नासमझ, अंधे और हिंसक लोगों से यह क़ानून शक्तिशाली न बन सकेगा और वह इस ख़बर को यथासमय यथास्थान भेज देगा।

मंत्री बोले, "पहले शान्त होकर सब-कुछ सोचना होगा। मैं तो इतनी जल्दी इतनी जरूरी मीटिंग बुलाने का कोई कारण ही नहीं समझता। डॉक्टर खुराना हैं, इसीलिए मीटिंग बुलायी गयी ? और किसी राज्य में क्या यह क़ानून काम में लाया जा रहा है ?"

अब शंकर ने उँगली उठायी और रूखी आवाज़ में बोला, "सब स्टेटों

में डॉक्टर खुराना नहीं हैं। इस स्टेट में बांडेड लेबर ऐक्ट काम में लाने का कारण अधिक है, क्योंकि आंध्र-बिहार-उत्तर प्रदेश में नीची जाति वालों पर अत्याचार भी बहुत होते हैं। आपका राज्य पश्चिमी बंगाल के पास है। यहाँ भी सशस्त्र युद्ध होने की संभावना बहुत ज्यादा है।"

मंत्री हँसने लगे और बोले, "क़ानून को कौन सफल बनाना चाहता है? कोई चाहता है? देखिये, न, शब्दावली हमें कितना मौक़ा दे रही है—राज्य सरकार ज़िला मैजिस्ट्रेट को ऐसी क्षमता का भार दे सकती है, 'मेकन्फ़र'—परामर्श ले सकती है—इस आर्डिनेंस की सारी धाराएँ सफल करने की जैसी ज़रूरत है। 'ले सकती है,' 'परामर्श ले सकती है' क्यों? 'विल कन्फ़र'—परामर्श लेगी—क्यों नहीं? मुझे तो इस शब्दावली में अपने बच निकलने की राह दिखायी दे रही है। अब आप कहिये।"

'ख' को देखकर 'क' बोले, "माननीय मंत्री, मुझे सुनिश्चित भार दें, मैं भी उनको वह भार दूँगा।"

अमलेश बोला, "ऐक्ट या आर्डिनेंस की भाषा ठीक कर देने से आप ऐक्ट को सफल बनायेंगे?"

मंत्री बोले, "नहीं डॉक्टर खुराना! सेंटर कुछ समझता नहीं। ऐक्ट पास कर बैठा रहता है। देखिये, क्या अछूत, क्या आदिवासी—इनकी भलाई के लिए कोई ऐक्ट बनाने पर, सेंटर को मालूम है, वह कभी काम में नहीं आता। क्यों नहीं आता? उससे आग लग जायेगी। अछूत और आदिवासी क्या कोई 'फ़ैक्टर' हैं? और ज़मीन के मालिक, महाजन, ज़मींदार—ये सरकार के सहारे हैं। चुनाव में रुपये कौन देता है? वोटों को कौन अपने अधिकार में रखता है?"

"मेरे पास सब डिटेल्स हैं। ये अमीर ज़मींदार और महाजन सरकार को दस हज़ार रुपये देकर, टैक्स का धोखा देकर, मौक़े से दस लाख रुपये कमा लेते हैं।"

"डॉक्टर साब! यह तो होता ही है। भारत के स्वतंत्र होने से लेकर अब तक यही चला आ रहा है। नेता लोग क्या इसे नहीं जानते? या विजया मोदी को नहीं मालूम है? देखिये न, खेत-मज़दूरों का मिनिमम वेज ऐक्ट। भारत के किसी राज्य में स्टेट लेबर डिपार्टमेंट ने उसे लागू नहीं किया है। और क्या केवल सरकार? जो लाल झंडा उठा कर किसान आंदोलन करते हैं, वे भी मिनिमम वेज पर एक बात भी नहीं कहते। कम्युनिस्ट होने पर भी वे सच्चे इंडियन हैं, और इस बात को जानते हैं कि मिनिमम वेज देने पर बड़े-बड़े किसान बिगड़ जायेंगे। और अमीर किसानों

को ख़फ़ा करने पर कृषक आंदोलन नहीं चलता।"

"यह बहुत भयंकर बात है!"

"शान्त हो जाइये, डॉक्टर खुराना! जो लोग ग़रीबों की भलाई का ऐक्ट काम में लाने पर ज़ोर नहीं देते, वे कांग्रेसी हों या कम्युनिस्ट, वे ग़रीबों, अछूतों और आदिवासियों को अपनी तरह के पंडितों से अधिक प्यार करते हैं। वे जानते हैं कि ऐक्ट काम में लाने पर मालिक-महाजन के हाथों वे बेचारे ग़रीब लोग मारे जायेंगे।"

"आप लोग भारत को मध्ययुग में रख देंगे!"

'अरे, कोई अछूत-आदिवासियों के लिए कुछ करता क्यों नहीं? इस-लिए कि उन्हें चाहता है। फिर भी तो, मिस्टर शंकर ने जो कहा, बिहार में, आंध्र में, उत्तर प्रदेश में हरिजनों पर अत्याचार कम हो गये हैं। व्यावहारिक बनिये।"

"तो आप लोग इस ऐक्ट को काम में न लायेंगे?"

"आदर्शवाद नहीं चाहिए डॉक्टर खुराना, यथार्थ चाहिए। मैं बिहार के अछूत और आदिवासियों को जान से ज्यादा प्यार करता हूँ। लेकिन मैं यथार्थवादी हूँ। आजकल इमर्जेंसी चल रही है। पुलिस के पास काफ़ी ताक़त है, युवलीग के पास बंदूकें हैं, अख़बारों की ज़बान भी बन्द है। आजकल क़ानून को लागू करने की बात आये तो क्या मैं अपने बिहार के अछूत-आदिवासियों को शेर के मुँह में झोंक दूँ? यह कैसे होगा?"

"बुलशिट्!—निकम्मा!" कहकर अमलेश निकल आया। बोला, "शंकर, मैं रिपोर्ट दूँगा कि इन सबको मनोचिकित्सा की ज़रूरत है। बहुत मनोरंजक है, समझे? इनकी मानसिकता में मध्ययुग और सामन्ती विचार घुसे हुए हैं। यह हैं अमरीका के नीग्रो-भक्षकों की तरह।"

"हाँ, रिपोर्ट देना।"

"शंकर, उन लोगों ने जो कहा, वह क्या ठीक है?"

"परिगणित और आदिवासियों की उन्नति या भले के लिए बना कोई क़ानून काम में क्यों नहीं आता?"

"सुना तो।"

"उनकी बातों में कोई जवाब नहीं मिला।"

"कह सकते हो।"

"ऐक्ट फलदायक न होगा, यह जानकर भी इस इमर्जेंसी के वक़्त में प्रधानमंत्री ने यह ऐक्ट क्यों बनाया?"

"क्यों न बनातीं?"

"क्यों बनातीं?"

"नाइस ऐक्ट—बढ़िया क़ानून है। सुनने में अच्छा है। भारत के बाहर उनका सम्मान बढ़ गया। अब वे ग़रीब की लिबरेटर हैं, यह समझा जाता है।"

"मज़ाक कर रहे हो?"

"बिलकुल नहीं, हज़ार सब-कुछ होने पर भी, क़ानून बनाने के पीछे उद्देश्य तो अच्छा है। यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।"

"ऐक्ट में 'हो सकता है' को 'किया जायेगा' नहीं किया जा सकता?"

"देखो, जब कोई क़ानून बनता है, तो उसकी भाषा के बारे में जानकारों से सलाह ली जाती है।"

"चोट्टि मुंडा को कमेटी में लेने से अच्छा रहता।"

"न, कोई ब्लडी—बदमाश—युवलीग वाला उसे मार डालता। उसके सिवा, चोट्टि भिन्न मत का है।"

"अरे इसीलिए तो। डिसीडेन्ट—भिन्न मत के आदमी को थोड़ी शक्ति दो, थोड़ा महत्व दो, वे ठंडे पड़ जायेंगे।"

"चोट्टि उस तरह का आदमी नहीं है।"

"न। सच्चा आदमी है।"

"हाँ। लेकिन वह सच्चा आदमी ही देश की सुरक्षा के मामले में बहुतेरे उजबक मंत्रियों से डेंजरस हो सकता है।"

"क्यों?"

"वे ही हिंसा करते हैं।"

"शंकर, हम लोग क्या उसे मार डालेंगे?"

"न, न। उसके जिन्दा रहने की ज़रूरत है उसके रहने से कभी-न-कभी हम दूसरे हिंसा पैदा करने वालों को पकड़ सकते हैं।"

"उनका क्या करेंगे?"

"मार डालेंगे।"

"चोट्टि को?"

"तब देखा जायेगा! सुनो, तुम अपनी थियरी और सर्वे लिये रहो। कार्रवाई के स्तर पर तुम्हारी तरह के आदमी रुकावट ही पैदा करते हैं।"

अमलेश बच्चों की-सी सरलता से बोला, "लेकिन मुझे ऐक्शन-आपरेशन देखना अच्छा लगता है। हिंसा बहुत ज़रूरी है।"

"जब बन्दूक का कुन्दा अपने हाथ में हो तो ज़रूरी है। नॉट द अदर वे राउंड...।"

"शंकर, तुमने कितने लोगों को मारा है?"

"आ:! छोटे बच्चे इतने सवाल नहीं करते। घर चलो, गोली खाओ

और सो जाओ। कल रिपोर्ट भेजना।"

"क्या जानते हो, अख़बारों का मुँह बन्द करना ठीक नहीं हुआ? किसी ख़बर का पता नहीं चलता। अजीब बात है।"

"गो ऐंड टेल हर—जाकर उन महिला से कहो।"

"अच्छा, चुप रहता हूँ। लेकिन क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?"

"बहुत बकबक कर रहे हो।"

अमलेश चुप रहा। शंकर बोला, "चोट्टि को मत छोड़ना। पकड़े रहना। हर आदमी को देख कर ही जाना जा सकता है। यहाँ जो भी हो, चोट्टि किसी-न-किसी तरह उसमें रहता है। वह एक घटना है।"

"उससे क्या प्रमाणित होता है?"

"यह प्रमाणित होता है कि वह बहुत ही चालाक है, या उसका दिमाग़ ही इस तरह का है?"

"मुझे वह अच्छा लगता है।"

"मुझे भी। मुझे भी वह अच्छा लगता है।"

"हम युवलीग का विरोध क्यों कर रहे हैं? और, यह युवलीग के सब लड़के स्काउंड्रल—बदमाश—हैं। उनको सबक़ देना पड़ेगा। वह बस झमेला बढ़ाते हैं।"

"वे तोहरी पहुँच जायेंगे।"

सोलह

अमलेश आदि ने जिस तरह मीटिंग की, उसी तरह चोट्टि आदि ने भी मीटिंग की। अब बेगार ग़ैर-क़ानूनी था। यह जोश धीरे-धीरे ठंडा पड़ गया था। लेकिन अभी भी सब बहुत घबराये हुए थे। ख़ुश होना उचित था, पर ख़ुश हुआ नहीं जा रहा था। वे तीरथनाथ के बेगार थे। तीरथनाथ की ओर से कोई सुगबुग नहीं थी। छगन ने चोट्टि से कहा, "चल, तेरे पहान के घर के छप्पर में चल कर बैठें।"

"चल।"

"यह हम लोगों की क्या हालत है! दर्द है, पर बच्चा नहीं। जिस तरह जच्चा का हाल होता है, वैसा ही!"

"समझा।"

"तू क्या समझेगा, चोट्टि! तू तो बेगार था नहीं।"

"नहीं समझता।"

"तुम साले बड़े चालाक हो।"

"ब—हुत। देखा नहीं, दालान-कोठा खड़ा कर लिया? छगन! अब मेरा जिन्दा रहने को मन नहीं होता रे।"

"क्यों?"

"इस कानून के पीछे-पीछे चली आती हुई कोई गड़बड़ है। मैं अब देख नहीं सकता, छगन! मेरा मन दुखी होता है।"

"चोट्टि, तेरे और मेरे मुँह से यह बातें नहीं सोहतीं।"

"चल, कहीं चलें, मैं तो जा रहा हूँ।"

"यह क्या देख रहा हूँ, चोट्टि? यह तो फूस की रस्सी है! वाह रे बहार! लाल धागे से लपेट दी है, देखने में कैसी अच्छी लगती है!"

"हरमू की माँ का काम है। आजकल खाना बनाने का काम पतोहू करती है, नतपतोहू। सो वह बैठी तो रह नहीं सकती। वही लकड़ी लाती है, वही आँगन बुहारती है। और क्या करती है सो तो तुझे पता है।"

"खूब जानता हूँ।"

चोट्टि की पत्नी कुछ महीनों पहले सहसा एतोया के घर गयी थी। वहाँ जाकर उसने क़ायदे के मुताबिक़ एतोया और उसकी बहू के साथ झगड़ा किया था। आज कोयेल मर गया है। एतोया का बाप नहीं था तो क्या ताऊ नहीं था? एतोया की माँ मुँगरी मर गयी थी तो क्या ताई नहीं थी? एतोया की लड़की सात बरस की हो गयी है। उसे लेकर बीच-बीच में चोट्टि जाना नहीं होता? जैसा एतोया है, उसकी बहू भी वैसी ही है।—यह सब कह कर बकते-झकते चोट्टि की बहू एतोया की लड़की को लेकर चली आयी। लड़की बड़ी चंचल और मनमोहिनी थी। इस घर में सबका दुलार पाकर उसके दिन अच्छे बीत रहे थे। लेकिन उस लड़की का पेट दर्द से ऐंठा जा रहा था। चोट्टि की पत्नी उसे अस्पताल ले गयी। डाक्टर ने कोई दवा दी जिससे लड़की के पेट से एक बड़ा-सा कीड़ा निकला।

चोट्टि की पत्नी दूसरे ही दिन सना की बहन की नातिन को लेकर अस्पताल पहुँची। बड़ा ताज्जुब है कि उसके पेट से भी एक या दो कीड़े निकले। धीरे-धीरे चोट्टि की पत्नी का इस बुढ़ापे में अस्पताल पर गहरा विश्वास हो गया। अब वह लड़के-बच्चों को अस्पताल ले जाने, उनका टिकट बनवाने, डाक्टर को दिखाने, दवा लेने वाली एक जोशीली औरत बन गयी थी। छगन, चोट्टि, उराँव या किसी के भी घर में कोई बीमारी होने पर अब वे चोट्टि की पत्नी के पास चले आते थे। चोट्टि की पत्नी फ़ौरन उनको लेकर अस्पताल चली जाती।

चोट्टि ने कहा, "अच्छा काम हो रहा है रे!"

"क्यों? तुम अच्छा काम करो, मैं भी कर रही हूँ।"

"घूम भी आती है।"

"हाँ जी, अच्छा लगता है। गयी-आयी, अस्पताल में भी तरह-तरह के आदमी आते हैं। जरा बातचीत हो जाती है। उसके बाद लौटने में टीशन में बैठ गयी, थोड़ी-सी चाय पी, अच्छा लगता है जी!"

"तू चाय पीती है?"

"वे पिला देते हैं।"

"कौन?"

"जिनको ले जाती हूँ।"

"तू काम करती है, दाम भी लेती है।"

"जरूर। चाय पिऊँगी, बीड़ी पिऊँगी। टरेन आयेगी उसे देखूँगी। अच्छा लगता है।"

रोज़ तो अस्पताल जाना-आना होता नहीं था। उसके बाद बाक़ी समय में चोट्टि की पत्नी लकड़ी इकट्ठा करती। कपड़े सीती थी, मुर्ग़ियों और बकरियों की देखभाल करती, आँगन में मिर्चें और बैंगन लगाती। फूस बटकर रस्सी बनाती। लकड़ी के अड्डे बनाकर डोरी से बाँध, बैठने के लिए चौकी बनाती। बैठी न रहती।

छगन और चोट्टि पहान के घर पर ही बैठे। चोट्टि बोला, "आज हमारे पास बात करने के लिए एक ही चीज है—बेगार। कानून बना है, यह सबको पता है। मैं या मेरे बेटे और नाती बेगार नहीं हैं, यह भी पता है। फिर भी मुझे आना पड़ा, क्योंकि मैं डर गया हूँ।"

"कैसे?"

"बासमती उराँव के साथ जो कुछ हुआ, उस समय वह सब गौरमेन के सामने हुआ। उस गौरमेन का बहुत रोब-दाब है। उसी से लीग के लड़कों ने कोई ज़ुलुम नहीं किया। नहीं तो आज उनकी जितनी ताकत है, उतना ही रोब है, और हाथों में बंदूक भी है। पहले के मेंबर को मार डाला। चोट्टि ग्राम में क्या किया, कोई भूला नहीं है!"

"तो उससे क्या?"

"कौन बोला? अ, उपा! तू क्या कह रहा है?"

उपा बोला, "पुरानी बातें क्यों कर रहे हो?"

"पुरानी बातों में नयी बात के बीज बोये हुए हैं।"

"अब कानून बन गया है। नहीं बना है?"

"बना है।"

"तब बेगार क्यों देंगे ? तुम तो देने को कहोगे ।"

"तू यह ठीक नहीं कह रहा है। चोट्टि कभी किसी को हुकुम नहीं देता।"

"अरे उपा !" उपा का बाप दुखी मुंडा गरज उठा, "जब वह हमसे वैसी बात कहे, तब कहना, तू अभी कल का लड़का है।"

चोट्टि बोला, "दुखा रे ! पंचायत न होने पर भी, सब लोग तमाम बातें जरूर कहें। बोल उपा !"

"मुझसे गलती हुई। तुम कहो।"

"तो अब कह रहा हूँ। मोतिया और पहान-पहानी, रेल का कुली मरे तब आदिवासी अफसर, पुलुस के बड़े साहब ने हमारी बात कुछ सोची थी। उससे ही फिर उन लोगों ने जुलुम नहीं उठाया। नहीं तो बाढ़, धुतरा, सराहि गाँवों में ऐसा जुलुम हुआ, घर जले, लहास गिरीं, औरतों को—कहने में जबान रुकती है, औरतों को बच्चे वाली बना दिया, और पुलुस खड़ी तमासा देखती रही। कोई न्याय नहीं हुआ। जले-झुलसे घर बनाते-बनाते वे फिर आ गये। हाँ ! महाजन की ओर से ! पार्टी के लड़के ! उन्होंने फिर जुलुम उठाया।"

"कहो, कहो, चोट्टि !"

"चोट्टि में जब हुआ तब हम गये। अफसर, पुलुस ने हमारा दुख समझा, इसी से फिर जुलुम नहीं उठा और कुली के कारन रेल यूनियन ने भी मदत दी थी। बासमती की बेला गौरमेन आ खड़ी हुई। उसी से फिर जुलुम नहीं उठाया। किन्तु उपा, और लड़को-जवानो, सोचकर देखो, जिन्होंने ऐसे जुलुम किये, उनको क्या जेहल हुई, या जरीमाना हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ।"

"जुलुम-पर-जुलुम उठाकर, गरीबों की लहास गिराकर जिन्हें सजा नहीं होती, वे जब चोट्टि ग्राम के लोगों पर किसी रोब से—किसी बड़े आदमी की मुराद के बाद जुलुम नहीं कर सके, तब वे यह नहीं भूल गये थे, मन में गुस्सा रखे रहे। वह गुस्सा भी लाला के सूद की तरह सौ गुना होकर बढ़ा। अब तोहरी में वह गौरमेन रहते हुए चुप रहेंगे ?"

"उसके बाद ?'

"जुलुम उठायेंगे।"

"हाँ, वह तो उठायेंगे।"

"अब क्या करें, यह बताओ ?"

"दो काम कर सकते हैं।"

"क्या, क्या ?"

चोट्टि अब निर्मल हँसी हँसा और बोला, "एक काम इस तरह है। 'बेगार नहीं देंगे' कहने से वे आकर लहास गिरा देंगे, घर जला देंगे। आजकल काला कानून चल रहा है, उससे पुलुस को बेसी सुबिधा है। पुलुस कुछ करेगी नहीं और उनको मदत देगी। जैसा न्याउ चाहिए, हमें अदालत जाना पड़ेगा। मैंने बहुत लोगों से पूछकर जान लिया है, और तोहरी के गौरमेन से कह आया हूँ, इस कानून में चोरगली हैं। हम लोगों को लेकर गौरमेन तमासा कर रही है। पूछा, कोई मालिक अगर फिर भी बेगार चाहे तो हम क्या करेंगे ? किस राह जायेंगे ? कानून क्या कहता है ? गौरमेन ने कहा, क्यों ? अदालत चले जाओगे। तुम समज लो ! मुंडा अदा—लत जायेगा ! मुंडा, उराँव, दुसाध, गंजू—पेट के लिए करज लिये बिना जिनके दिन नहीं बीतते, वे मालिक-महाजन के नाम नालिस करने जायेंगे ! इसी से, हर साल की तरह तुम लोग बेगार दो। उससे मालिक गुंडे-दादा लोगों से शिकायत-उकायत न करेगा, वे भी जुलुम नहीं उठायेंगे।"

छगन बोला, "उससे क्या हम लोग बच जायेंगे ? बाढ़, धुतरा, सराहि में क्या किसी ने कहा था 'बेगार कानून नहीं मानते' ? वहाँ क्यों जुलुम हुआ ?"

"छगन ! सब-कुछ जान-बूझकर ऐसी बातें कर रहे हो ! क्यों हुआ ? क्यों होता है ? होता है, हर बरस होता है। हमेशा से होता है। वहाँ बेगार और खेत-मजूरों पर महाजन के जुलुम की बात रहती है, तुम पर बनिया-राजपूत-बरामन के जुलुम की बात रहती है। पुलुस-महाजन एक थैली के हैं, यह बात रहती है। गौरमेन के दल के दिकू महाजन को मदत देने की बात में रहते हैं, सब बातें एक-साथ होने पर आग लगती है। जितनी बातें बतायीं इनमें कौन-सी सही नहीं है, बताओ ? यह सब हैं, इसी से बाढ़ और धुरता और सराहि में आग लगी।"

"चोट्टि ! मैं तेरी तरह इतनी बातें नहीं समजता। तू कहता है एक बात, जुलुम के डर से हम बेगार देते रहें। यह भी कहा, बेगार देते रहने से, छोटी जात होने से, ऊँची जात को मान देते रहने से भी जुलुम होता है; क्योंकि महाजन-पुलुस-पार्टी एक मेल के होते हैं।"

"सच कह रहा हूँ या गलत ?"

"सच।"

"और काम कैसा है ? चोट्टि, मैं इतना नहीं समझता। तू बता, छगन, जात-पाँत के आदमियों के लिए मैं यह काम करूँगा।"

"ना, छगन ! मैं बेगार नहीं हूँ। इसलिए बेगार क्या करे, यह मेरा

बताना ठीक नहीं है। मैं कह सकता हूँ, यह एक रास्ता है। तुम सोच लो। तुम खुद सोचकर काम करो।"

"और काम क्या है, सुनें?"

"वह ऐसे है। थोड़ा पानी पिऊँगा पहानी, बहुत प्यास लग रही है।"

पहान ने कहा, "सब पानी पियो। बातें बहुत हैं।"

पहानी पीतल की थाली में भीगे चने, राब, मिट्टी के घड़े में पानी, अलमुनियम का गिलास ले आयी। सबने चना-राब चबाये, ऊपर से गिलास से पानी पिया। चोट्टि बोला, "कुएँ का जल बड़ा मीठा है। या हमारे कलेजे का खोदा पानी है, पहानी?"

"तुमने समज लिया! चोट्टि नदी के गड्ढे का पानी है।"

"यह गड्ढा खोदने की अकल तब हुई थी। नहीं तो जल के बहाने लाला हमें जरूर मारता। हाँ देखो, अभी सब मौजूद हैं, बताऊँ। आसमान की हालत बहुत खराब है। कई साल हम माफ किये गये, इस साल लगता है सूखा आ रहा है। नदी का कलेजा अच्छी तरह खोदकर रखना अच्छा है, ऐसा लग रहा है।"

छगन बोला, "चोट्टि, तू मरना मत रे! तेरे मरने पर हम डूब जायेंगे। जो अभी मालूम है, वह भी याद नहीं आता।"

"तुम सब देखो, छगन मुझे मीठी बातों में कैसे भुलाता है। जहाँ चोट्टि मुंडा नहीं है, वहाँ सब डूब जाते हैं, पानी-आकास का हाल नहीं समजते।"

"और बात कहो।"

"कहूँ, उपा? वह काम बहुत सीधा है!"

"क्या?"

"कोई बेगार न देना।"

"नहीं देंगे। तुम बताओ, न देने पर बहुत जुलुम होगा।"

"निस्चय जुलुम होगा। उसमें भूल नहीं है। फिर भी हमारे दिमाग में खचड़ई घूम रही है। दारोगा आकर कह गया है, बेगार गैरकानूनी है। बस। कोई बेगार मत दो। अब तो चड्ढा के यहाँ चलो। लकड़ी काटने का काम हो। कुछ काम मिल रहा है। सब काम किया। चिरंजीलाल गोमोह से आ रहा है। कुरमी पहाड़ पर पत्थर तोड़ना, लाल मिट्टी—मोरम—बनाने का काम करायेगा। वहाँ भी जायेंगे।

"तुम लोग बताओ, यह बात अच्छी लग रही है?

"लाला के पूछने पर तुम कहना, यह क्या? दारोगा बता गया है, अब बेगार गैरकानूनी हैं। इसीलिए नहीं करेंगे।"

"वह जुलुम उठाये तो?"

"वह बात बता रहा हूँ। देख, हम लोगों के कहने की बात यह है। कानून तो हम कभी जान नहीं सकते। दोनों चड्ढा भाई अच्छा बेवहार रखते हैं, मजूरी देते हैं, और वे जो देते हैं, दूसरे भी वही देते हैं। किन्तु वे मजूरी भी हमें चालाकी से देते हैं। गौरमेन के कानून से नहीं देते। हम वह कानून नहीं जानते। किन्तु यह बात अच्छी तरह जानते हैं, कि बेगार नहीं है, हमारी तरह के खेतमजूरों के लिए उनके लिए गौरमेन का कानून है। उसमें हमें देने की बात दिन में छह सेर धान और पौन सेर सत्तू है, सवा दो सेर चावल और पौन सेर सत्तू नहीं। सब औरत-मर्दों के लिए। और बच्चों-लड़कों को देने की बात साढ़े चार सेर धान और पौन सेर सत्तू, पौने दो सेर चावल और पौन सेर सत्तू नहीं। जो मालिक यह नहीं देगा, वह कीमत लगाकर रुपये देगा। अब बताओ, यह कानून जो बना है, उसे सब जानते हैं। किन्तु किसी दिन हमें बताया नहीं। और कोई मालिक-महाजन उस हिसाब से मजूरी नहीं देता।"

"यह कानून कब बना?"

"छगन के गोद के नाती की उमर में। दो बरस हुए।"

"कुछ पता नहीं।"

"बताना चाहते नहीं, इसलिए नहीं जानते।"

"कुछ नहीं मालूम। लाला जब जो कुछ देता है, ऐसा भाव दिखाकर देता है, जैसे बड़ी दया कर रहा हो।"

"हम लिखना-पढ़ना जो नहीं जानते। हरमू जब जेहल गया, बहुतेरे मुंडा, उराँव, दुसाध-धोबियों को जेहल में देखा, उससे पूछो। वे जमीन के मामले में जेहल में थे, किन्तु उनके क्या कसूर हैं, वे नहीं जानते। दो आदमी खेतमजूर थे, वे जिसकी खेती पर काम करते थे, उस मालिक ने खेत की जमीन बेंच दी। यह उन्हें मालूम नहीं था। खेत जोतने जाने पर नये मालिक के जुलुम से जेहल गये।"

हरमू बोला, "जेहल में रहते-रहते बुड्ढे हो गये।"

"ऐसी बात है! हम कानून नहीं जानते। पुलुस बेकानून मारती है, इसलिए पुलुस को दिकू लड़के अदालत में ले जाते हैं, यह भी देखा। कैसे ले जा सकते हैं? वे कानून जानते हैं, इसलिए ले जा सकते हैं।"

"अब बताओ।"

"खेतमजूरी कानून नहीं पता। किन्तु यह कानून तो दारोगा बता ही गया। इसी से कहता हूँ, कोई बेगार मत दो। लाला काम कराये तो मजूरी दे, जिस तरह सब देते हैं, उस तरह मजूरी लेकर काम करना। लाला अगर राजी न हो तो मत करना।"

उषा ने पूछा, "जुलुम करे तो?"
"उसे भी तुम खुद सोचो।"
"मारेगा? पार्टी के लड़के, पुलुस आयेंगे।"
"जरूर, यह तो उनके लिए परब है।"
"तब?"
"खुद सोचो।"
"हम भी मारेंगे।"
"सब एक रहोगे, या फूट जाओगे?"
"एकजुट रहेंगे।"
"तुम्हारे अकेले की बात नहीं है। छगन क्या कहते हैं, देखो?"
छगन बोला, "अगर हम भी एक रहें तो तू क्या करेगा?"
चोट्टि बोला, "तू अगर पहली राह चलेगा, तब तो मेरा कोई काम नहीं।"
"तू बुड्ढा सियार! दूसरी राह पर है?"
"सो तो हूँ। बुड्ढों से कोई काम होता है?"
"तुझे इस बात का जवाब नहीं मालूम?"
"समजता हूँ। किन्तु सब बाप अपने-आप समज गये। जुलुम उठने पर लड़की-लड़के, बुड्ढे-बुढ़िया, नन्हे बच्चे भी मरेंगे।"
"अरे, पहले ही मरने की बात! वह बात लाला के साथ हो। उठे जुलुम। तभी न?"
"बुराई को पहले सोच लेना अच्छा है, रे छगन! मैं चलूँ।"
"कहाँ?"
"घर चलूँ। तुम लोग सोचकर देखो, मुझे बताना। बेगार लोगों से बात करो, तुम लोगों को सोचकर देखने की जरूरत है।"
"अगर कह दूँ, बेगार नहीं!"
"पहले सोच देखो तब मेरा काम है।"
"बेगार नहीं दो-चार घर। फिर अभी तो बँधुआ हैं। हिसाब के खाते तो जल गये, फिर बनवाकर ला रहा है।"
"वह खाता उसकी जान है, उसी लिए बनवा रहा है।"
दो घंटा बाद हरमू आकर बोला, "वे लोग आ रहे हैं। बेगार नहीं देंगे, और जो ठीक करेंगे, आकर बतायेंगे। किन्तु...।"
"क्या? कहो।"
"तुमको कौन समजायेगा? किन्तु हम तो बेगार हैं नहीं, आबा? फिर भी उनके साथ सामिल होंगे...!"

"वे जायेंगे, मुंडा भी कितने हैं, शरीर बचायेंगे? बचाया जायेगा?"
"नहीं, बचाया नहीं जायेगा।"
"अभी मिट्टी का तेल तो ला, जरा देखें।"
"क्यों?"
"पैर दुखते हैं। गरम कर लगाऊँगा।"
हरमू की माँ नमक और किरासिन के तेल की कटोरी लालटेन पर रखकर ले आयी। बोली, "इस तरह का काम मैं करूँगी? लड़ने जायेगा बाप, सो लड़ने वालों की मालिस करूँ, यह काम मेरा है!"
"लड़ाई कहाँ है, माँ?"
"यह लोग करेंगे।"
"धुत्!"
"मैं तुझसे जादा समजती हूँ।"
"सपना देखती है।"
"हरमू! तू मेरे पेट में था, या मैं तेरे पेट में?"
चोट्टि की पत्नी ने लड़के को डाँटकर भगा दिया और चोट्टि से बोली, "कहाँ गये, क्या किया, जिन्दा लौटोगे या नहीं, यह सोच-सोचकर हमेसा पागल रही। तब कोयेल था, उसके बाद मुँगरी थी। अब मेरी बात तो थोड़ी सोचो!"
"किसकी बात की फिकर करूँ, बता?"
"यह मैं जानूँ?"
"बहू!"
"कहो।"
"सोमचरी!"
चोट्टि की पत्नी ऐसी अचंभे में आयी कि लगा, खड़े-खड़े गिर पड़ेगी। होश आया तो उसे बड़ी शर्म लगी। उसने झटपट चारों ओर देखा। नहीं, आस-पास कोई न था। उसके बाद बोली, "तुमको लाज नहीं आती? माँ बन गयी, नाती का बच्चा होने पर दादी बनूँगी, ऐसी बुढ़िया को नाम लेकर कोई बुलाता है?"
"मैं बुलाता हूँ।"
"नहीं, लाज आती है।"
"नहीं, झूठ बोलती है, बड़ी खुश है।"
"चुप रहो। यह क्या बुढ़मस है?"
"बूढ़ा? तुझे उठा-चिपटाकर नाचूँगा।"
"चुप रहो।"

"अब क्या हो, पता नहीं। क्या करूँगा, पता नहीं। पर सब सोचते हैं कि चोट्टि मुंडा सच्चा आदमी है।"

"सच्चा तो है ही।"

"दूसरों की बात नहीं। खुद सच्चा रहने के लिए बीच-बीच में सच्चा काम करना होता है।"

"क्यों करते हो ? कभी 'ना' कहा है ? पुराण के लिए नहीं गये ? नक्सली लड़के को घर नहीं ले आये ? पहान, कुरमी के पहान को बचाने नहीं गये ? 'ना' नहीं कहा, 'ना' कहूँगी भी नहीं, किन्तु मेरा कलेजा फट जाता है। कोयेल नहीं रहा, मुँगरी नहीं है, जो मेरे पास थे, उनमें से कोई नहीं रहा। कलेजा सुन्न हो गया लगता है। मैं चलूँ, जाकर उन सबको देख आऊँ। बहू ! तू कहाँ है ? हरमू ! चटाई ला दे।"

हरमू ने एक खूब बड़ी चटाई लाकर धम्म से डाल दी। बोला, "माँ, घास से चटाई सब लोग बुनते हैं। ऐसी बड़ी-बड़ी कोई नहीं बुनता। जब खेती नहीं रहेगी, तो मैं हाट में जाकर तेरी बिनी चटाई बेच आऊँगा।"

"बेच देना।"

"वह बहारदार रंगों के तागे कैसे लगाये हैं !"

"इसे न लेना, हरमू !"

"क्यों ?"

"इसे तोहरी में गौरमेन ने माँगा है।"

सब आकर चटाई पर बैठ गये, सना और छगन ने दोनों दलों की बात बतायी---ना, वे बेगार देने नहीं जायेंगे। देखा गया कि उपा मुंडा, युगल गंजू---यह सारे जवान लोग और आगे की सोच रहे हैं।

उपा बोला, "बाहर से खेत-मजूर नहीं लाने देंगे। हम से ही काम कराना पड़ेगा।"

चोट्टि बोला, "अच्छा है। अब और भी काम है।"

"क्या ?"

"यहाँ जो बात होगी उसे बाहर ले जाने पर मैं वैसा करने वाले बेईमान की जीभ पकड़ कर खींच लूँगा।"

"बता, तू क्या कह रहा था ?"

"क्या कर रहे हैं, यह तोहरी की गौरमेन को बता कर रखूँगा।"

"यह बात !"

"बातें और भी हैं।"

चोट्टि ने स्वरूप से अपनी आलोचना की बात भी बतायी, और कहा, "मैं खुद जंगल जाऊँगा। वे कहते हैं, हमें मदत देंगे।"

"वह बात मालूम हो जायेगी।"

"और भी बात है। अगर वैसा हो तो उन दो-चार लोगों को सायद छिप कर रहना पड़े, तब उनके पास रह सकेगा।"

दूसरे दिन चोट्टि ने घर पर बताया, "कोई पूछे तो बता देना कि मैं हाट गया हूँ।"

स्वरूप ने बताया कि चोट्टि से कोमांडि के बीचोंबीच जंगल में उनका डेरा है। वह बिलकुल फैला हुआ जंगल है। पहाड़ के ऊपर जंगल छितरा है, नीचे घना है। चोट्टि के पास का सारा जंगल चोट्टि का जाना हुआ था। वह बलोया लेकर घुस जाता। वहाँ भटकने के लिए नहीं घूमता था, जहाँ-जहाँ छोटे कुंड थे, वहीं जाता ! अपने को छिपाये रखने वाला इंसान, जलाशय के पास ही रहेगा।

पहले दिन पता नहीं चला। शाम को घर लौट कर बोला, "पाँव दुख रहे हैं। अब पहले की-सी सक्ति नहीं रही।"

पत्नी बोली, "कल हरमू साथ जायेगा। अकेले नहीं जाने दूँगी।"

हरमू का साथ रहना अच्छा है। हरमू बोला, "चलो, चलकर भेड़िया मारें। उस पहाड़ के पीछे उतर कर गहरी कुंडी है, आबा ! अभी भी हाथी-डुबाऊ है।"

"अब हाथी ! पहले जंगल में घुसते थे तो, कहाँ बाघ, कहाँ हिरन, बहुतेरे जानवर थे। अब अकेला हाथी नहीं दिखायी पड़ता !"

"चलो, दिखा दूँगा।"

जंगल गहरे से गहरा होता गया। सचमुच चोट्टि के आगे से हिरन भागा। आहा, ठहरो। चोट्टि किसी से उसकी बात नहीं बतायेगा। जंगल में यहाँ पतले रास्ते भी नहीं हैं। सड़े पत्तों में पैर धँस जाते हैं, जमीन ठंडी है। कुंडी बहुत बड़ी है और किनारे की ओर गहरी नहीं है। चोट्टि बोला, "पहले तो मालूम न था।"

"अभी भी हाथी उतरते हैं।"

कुंडी पार कर स्वरूप से भेंट हुई। स्वरूप के बदन पर हरी शर्ट और हरी पैंट थी। उनका अड्डा पहाड़ की गुफा में था। स्वरूप उनको ले गया, ले जाकर बैठाया। चोट्टि ने देखा कि तीस व्यक्ति हैं और सभी दिकू नहीं हैं। लगभग दस लोग आदिवासी हैं। स्वरूप बोला, "पहले पानी पियो।"

चोट्टि ने पानी पिया। सब बातें खुलकर कहीं। स्वरूप बोला, "अब की बार ठुकाई होगी। अपने बेटे को भेज देना। ये पंद्रह आदिवासी तुम्हारे बेटे के साथ गाँव चले जायेंगे और हर घर में छिप कर रहेंगे। लड़ाई के वक़्त वे भी इनको देखेंगे। ऐसा होने पर आसानी से बाहरी

आदमी नहीं समझे जायेंगे। यहाँ सब नहीं हैं। ख़बर रोज़ दी जायेगी।"
"जरूरत होने पर लड़कों को दोगे?"
"ज़रूर। अरे, यहाँ इस अंचल का यह डेरा है, कुरमी पहाड़ के ढाल के जंगल में एक और है।"
"ये लड़ेंगे?"
"तुमसे सीखे हैं, लड़ेंगे क्यों नहीं?"
"क्यों रे, तू नरसिंगगढ़ का बिशाई है?"
"हाँ जी, ख़ूब निशाना मारना सिखाया था।"
"और कौन है?"
"पहचान के बहुत लोग हैं, सब तुम्हारे चेले हैं।"
चोट्टि के मन में अजीब उलट-पलट होने लगी। स्वरूप बोला, "अच्छा हुआ, आज मैं था। कल आते तो मुझे न पाते।"
बिशाई बोला, "जो ख़बर दे वह पिसी मिर्च और थोड़ा नमक ले आये। कम पड़ गया है।"
"तुम लोग खाली सत्तू खा रहे हो?"
स्वरूप बोला, "राँधना नहीं होता। धुआँ उठेगा।"
"तुम अभी भी भागे हुए हो?"
"अब हम कीमती आदमी हैं, चोट्टि! सिर पर कीमत लगी है।"
स्वरूप उनको शॉर्टकट से रास्ता दिखा लाया। बोला, "सिराही की ख़बर मालूम है? कुछ सुना है?"
"लक्ष्मण साहू ने युवलीग को बुलाकर दो बार गाँव जला दिया है।"
"दो युवलीग वाले बहुत घायल हो गये हैं, लक्ष्मण का लड़का भी घायल हुआ है।"
"तुम वह काम करते हो?"
"गाँव के भी कई लोग थे। सिराही के आस-पास कोई जगह मिलती तो अच्छा रहता। अब पुराना डेरा छोड़ना ठीक होता।"
"सिराही से थोड़ी दूर उत्तर में एक बेला का रास्ता है। दमोह में जंगल भी है, और मुंडा लोगों के श्मशान के पत्थर भी बहुत हैं। वह कभी मुंडा ग्राम था।"
"अच्छा बताया। तो यही बात रही।"
"बुड्ढा हो गया हूँ न, इसी से सोचता हूँ।"
"फिर भी तो आये हो।"
"उनसे सोचने को कहा था, वे ठीक कर रहे हैं, इसीलिए आया हूँ।"

"उन्होंने अपने-आप ठीक किया?"
"हाँ, महाराज, वह सब बातें बाद में होंगी।"
"दो दिन आराम करो, चोट्टि! उसके बाद हरमू की माँ की बुनी हुई चटाई सिर पर रख कर तोहरी चलेंगे।"

अमलेश घास की बुनी चटाई देखकर ताज्जुब में पड़ गया। उसकी पत्नी ने महसूस किया कि अमरीका के नावाजो-इंडियन[1] लोगों के बने कम्बलों के अतिरिक्त ऐसी आश्चर्यजनक आदिवासी कला उन लोगों ने नहीं देखी थी और उस चटाई का पैसा लेने के लिए दोनों चोट्टि से ज़िद करने लगे। वे उसका दाम जानना चाहते थे।
चोट्टि बोला, "इसके दाम नहीं होते।"
"क्यों?"
"पहले चीज को अच्छी तरह देख लो।"
चोट्टि की पत्नी ने टुकड़े-टुकड़े कर चटाई बुनी थी। उसके बाद लाल-पीले धागों के टुकड़ों से उन्हें जोड़ा था। लाल और पीले धागों का नमूना बड़ा सुन्दर था।
"हम तो बार-बार कह रहे हैं कि ख़ूबसूरत बनी है।"
"इसके दाम नहीं होते, महाराज!"
अमलेश बहुत ही बड़े आदमियों की-सी हँसी हँसा और वह हँसी देख कर समझ में आता था कि ऊपर से चाहे जितना दोस्ताना करे, असल में चोट्टि को और चोट्टि के-से सारे लोगों को वह कीड़े-मकोड़ों-सा तुच्छ समझता था। अमलेश बुद्धि में, वृत्ति में नीचे पड़े इंसान के प्रति करुण होकर बोला, "दाम न हों, ऐसी कोई चीज नहीं होती, चोट्टि! जो इंसान की मेहनत से बना हो उसका दाम होगा ही होगा।"
चोट्टि सहिष्णुता की सुन्दर मुसकराहट के साथ बोला, "महाराज! जंगल की घास से मेरी पत्नी ने चटाई बनायी है। मेरे भाई की नातिन, भाई नहीं है, ने लाल-पीले धागे दिये हैं। मैं सिर पर लाद कर लाया। अब बताइये, इसका दाम कैसे चुकेगा? जंगल की घास के दाम नहीं। और हरमू की माँ की बिनाई का दाम आँका नहीं जा सकता। वह बुढ़िया सबको प्यार से बिन कर देती है।"
शंकर बोला, "ठीक कहा, चोट्टि! मेरी माँ की सिलाई की हुई एक डिजाइनदार बिछावन है। उसमें बहुत बढ़िया ढँग के बेल-बूटे हाथी-घोड़ों

1. अब अमरीका में रेडइंडियन की समाप्तप्राय एक जाति।

के नक्शे हैं। मैं इनका दाम नहीं लगा सकता। लेकिन कई चटाइयाँ होने से घर के फ़र्श पर बिछायी जायेंगी।"

"बाजार में खरीद लो, महाराज ! औरतों को दो पैसे मिल जायेंगे।"

"कहो, और क्या ख़बर है ?"

चोट्टि ने स्वरूप की बात नहीं बतायी। तीरथनाथ को उषा आदि बाहरी खेत-मजूर नहीं लेने देंगे—यह भी नहीं बताया। सिर्फ़ यह कहा, "अब तुम्हारी मदत चाहिए, महाराज ! कभी किसी ने बताया नहीं, इसीलिए पता नहीं कि खेत-मजूरी कानून हुआ। मुझे उस दिन पता चला। किन्तु वह बात जाने दें। इस कानून की बात दारोगा बता गया, इससे मालूम हुआ। अब चोट्टि के बेगार कह रहे हैं कि दारोगा भी तो गौरमेन है, वह जब बता गया, तो अब बेगार न देंगे। और पिछला करज भी न चुकायेंगे।"

अमलेश और शंकर बोले, "ठीक।"

"किन्तु मैं कह रहा हूँ, तुम्हें बता रखूँगा।"

"सोच रहे हो, कोई गड़बड़ होगी !"

"महाराज ! चोट्टि की जबान से क्यों कहलाना चाहते हो ?"

शंकर बोला, "कहो न।"

"कोई बात न कहने से भी जुलुम होता है। बेकसूर, बेपाप की लहास गिरती है, यह तो बड़ी बात है, कानून बना है, बेगार न देंगे।"

"समझे।"

"बताये जा रहा हूँ।"

"देख रहे हैं, दारोगा को बता रखना होगा।"

"पार्टी के लड़के और पुलुस मिले हुए हैं।"

"हम तो हैं।"

चोट्टि चला गया। अमलेश बोला, "क्या करें, शंकर ?"

"थाने से कहेंगे कि बेगार लोगों को मदद दे, यानी जो मारे उसे पकड़े और मारे। मतलब युवलीग के तीनों गुंडे।"

अमलेश छोटे बच्चे की आवाज़ में बोला, "क्यों ?"

"इस तरह का संघर्ष होने पर स्वभावतः दूसरे संघर्षशील लोग साथ देना चाहेंगे। मेरा काम बहुत आसान हो जायेगा।"

"यह कौन हैं ? सी० पी० एम० एल०—मार्क्सवादी-लेनिनवादी साम्यवाद वाले ?"

"उस नाम के झंडे में यह लोग काम नहीं करते। लेकिन उद्देश्य मोटे तौर पर एक ही है। किसान के हाथों में ज़मीन रहेगी। ज़मींदार और [illegible] को हटाना होगा। अपने अधिकार के लिए किसान सशस्त्र संग्राम [illegible] देंगे।"

"यह तो अच्छी बात है।"

"बिलकुल।"

"सक्रिय सघर्षशील लोगों को पकड़ कर क्या करेंगे ?"

"उनका सफ़ाया करेंगे—एलिमिनेट।"

"वे लोग तो रोमियो से बहुत अच्छे लोग हैं।"

"जरूर।"

"तब ?"

"हर खेल का एक नियम होता है, खुराना !"

"मुझे तुमसे बीच-बीच में डर लगता है।"

"उससे साबित होता है कि तुम अक़्लमंद हो।"

शंकर ने एस० डी० ओ० को बताया, थाने को बताया। दारोग़ा ने नाकुर-नूकुर किया और तीसरे पहर के क़रीब उसे आई० जी० का टेलीफ़ोन मिला, "ईडियट—जाहिल ! अपनी हद नहीं पहचानते ? शंकर जो कुछ कहे वह करना।"

"हाँ सर ! करूँगा।"

लाचार होकर दारोग़ा ने फ़ोन रख दिया कहा, "ताज्जुब है। हमेशा बंदूक की नली अछूत-आदिवासियों की ओर रखी। अब नली घुमानी होगी !"

शंकर फिर आया और बोला, "जिस दिन जरूरत होगी उस दिन 'दूसरे केस में दूसरी जगह गया था'—यह बात नहीं सुनना चाहता।"

"नहीं, सर !"

दारोग़ा ने समझ लिया कि शंकर और खुराना कोई बड़े लोग होंगे। बोला, "सर्विस दूँगा सर, लेकिन तब आप एक सर्टिफ़िकेट दीजियेगा।"

"यह बातें युवलीग के कानों में पड़ने पर...।"

"नहीं पड़ेंगी, सर !"

शंकर बहुत पुलकित होकर तेज़ नोकवाली लम्बी घास में लपेटी बहुत-सी मछलियों को हाट से ख़रीद कर घर लौटा। मेरी से बोला, "इन्हें पकाने को कहो। बहुत ताज़ी और ज़ायकेदार मछलियाँ हैं।"

अमलेश बोला, "सारी बातें हो गयीं ?"

"हाँ।"

"काम होगा ?"

"पता तो है, हम दिल्ली के सिवा किसी को किसी सवाल का जवाब

देने को लाचार नहीं हैं।"

इस तरह सारी बातें हुईं। उधर तीरथनाथ ने रोमियो से कहा, "कुछ समझ में नहीं आता। सब चुपचाप हैं।"

"बेगारों को बुलवा भेजो। कहो, जो कहना है बता जाओ। उसके बाद जो, करना होगा, हम करेंगे।"

तीरथनाथ के गुमाश्ते ने छगन और सना आदि को बुलवाया। छगन और सना ने तीरथ से कहा, "क्या बात है, महाराज?"

"धान कटाई का समय हो रहा है न।"

"तो हम क्या करें?"

"हर बरस क्या करते थे?"

"हर बरस बेगार देते थे।"

"इस बरस क्या नया हो गया?"

"सो क्या है, महाराज!—दारोगा गौरमेन है, बता गया कि इस साल से बेगार गैरकानूनी है। फिर बेगार क्यों दें?"

"नहीं दोगे?"

"नहीं, महाराज!"

"धान पड़ा रहेगा?"

"ना, हम ही काटेंगे। मजूरी लेंगे।"

"अच्छा!"

"हाँ, महाराज!"

"बेगार न देने से बाहर के मजूर लेंगे।"

"ना महाराज। वह न होने देंगे।"

"नहीं होने दोगे?"

"ना महाराज, वह नहीं होने देंगे। खेत-मजूर की आमदनी का भी कानून है। चोट्टि न बताता तो न जानते। उसे रेट से नहीं चाहिए, जो दो वही देना।"

"ठीक, सुन लिया।"

"हम कहलाने से ही आ जायेंगे।"

"चोट्टि का नाम क्यों लिया? वह तो बेगार नहीं है। और हरमू जेहल जाने से हमारे खेत का काम भी नहीं करता है।"

"उनको अलग रखकर हमारा काम चलेगा?"

छगन चला आया। तीरथ रोमियो के पास पहुँचा। रोमियो ने तीरथ को काम का उपदेश दिया। तीरथ ने कहलाया कि वह राजी है। लेकिन मजूरी वह हफ़्ते-के-हफ़्ते देगा। यह बात सुनकर चोट्टि बोला, "वह मजूरी

[illegible] लगेगा।" वह फिर तोहरी गया और हरमू पिसी मिर्च और [illegible] और करौंदों का अचार लेकर जंगल गया। धान की कटाई चलती [illegible]। हफ़्ता देने का दिन आया।

छगन, सना आदि कचहरी गये। स्वरूप के भेजे मुंडा और उराँव पल-भर राह देख रहे थे। वह बहुत ही शान्त और धीर थे। बहुत देर राह न देखनी पड़ी। प्रचंड गर्जन-तर्जन सुनायी पड़ा। हरमू के लड़के के बाल ताँबे-से लाल होने से वह 'लाल' नाम से ही परिचित था। लाल चीखता-चिल्लाता आया। "बीस लोग बन्दूक उठाये हैं। एक पैसा नहीं देने देंगे। हम थाने जा रहे हैं।"

थाने से दारोगा और जीप में चढ़कर शंकर के आने के पहले ही रोमियो की गोली से उपा का पिता दुखा गिर पड़ा, और अब छगन आदि पत्थर फेंकने लगे, और मुंडा तीर छोड़ने लगे। तीरथनाथ ने भागने की कोशिश की और सुना, "कहाँ जा रहे हो, महाराज? खेल में सबको उतारा, खेल नहीं देखोगे?" तीरथ ने चोट्टि के हाथों में तीर और धनुष देखा।

पुराने डर ने उसे पकड़ लिया और वह 'मारना मत चोट्टि' कहते हुए गिर पड़ा। उधर रोमियो आदि कचहरी-घर में मानो अटक गये और धान के ढेर में आकर आगवाला तीर गिरा, घर के बीच। पहलवान, रोमियो और दिलदार ने दूसरे जवानों से कहा, "गोली चलाते हुए निकलो।" वे निकले और उन्हें तीर लगे। तीर छोड़ते और पत्थर चलाते हुए वे धान के ढेरों के पीछे बैठ गये। एक तीर लगने पर एक आदमी चिल्लाया, "तीर में बिष है, बिष है तीर में।" चोट्टि खंभे की ओट से निश्चित लक्ष्य पर "तीर छोड़ रहा था, सना से कह रहा था, "बन्दूक वाले हाथ को पहले घायल कर दे।" उसने तीर से रोमियो, दिलदार, पहलवान तीनों के बन्दूक चलाने वाले हाथों के कंधों में तीर मारे, बन्दूक गिर गयीं। दूसरे युवक नेताओं को बैठते देख घबड़ा गये और उनके फटाफट तीर लगे। पेड़ के ऊपर से उपा का भाई चिल्लाकर बोला, "पुलुस!" और स्वरूप के दल के आदिवासी लोग पल भर में भाग गये। पुलिस के आते ही युवक फिर पवित्र संकल्प में जल उठे और एक साथ जोरों से चिल्ला पड़े। तीरथनाथ का गल्ले का गोदाम खोल कर छगन आदि मुट्ठियाँ भर-भरकर पिसी मिर्चें फेंकने लगे।

दारोगा, पुलिस, एस० डी० ओ०, शंकर! अब क्रम से तीर बरसना रुक गया और आगे बढ़कर चोट्टि ने एस० डी० ओ० से कहा, "दारोगा ने कहा था, इसलिए इन्होंने बेगार नहीं दी। लाला के साथ मजूरी की बात थी। उनकी बात पर यह लोग हफ़्ता लेने आये थे। लाला

ने इनको घर में छिपा रखा था। उसने बन्दूक उठायी।" रोमियो को दिखा कर कहा, "उसने दुखा को मार डाला। जब दुखा 'पानी' चिल्लाया तो उसने दिलदार की ओर दिखा कर कहा, 'इसके मुँह में मूत दो।' तब हम धनुष ले आये। अब दुखा तो नहीं है। युगल दुसाध भी देखो बदन में तीर लगने से मर गया।"

"तीर से ऐसा जखम होता है!"

"मेरे हाथ में धनुक था, महाराज! इनकी तकदीर अच्छी है कि बन्दूक चलाने वाले हाथ को जखमी किया है। तुमने, 'महाराज, तीर का जखम तो देखा, और गोली का जखम नजर नहीं आया?"

"आया, चोट्टि!" शंकर बोला।

"अब?"

एस० डी० ओ० बोले, "घायलों को अस्पताल ले जाना होगा। यह क्या? यह तो मर गया? तीर में ज़हर था?"

"हो सकता है। गोली में बारूद नहीं रहती?"

"तीरथनाथ कहाँ है?"

"मुझे क्या मालूम?"

शंकर बोला, "चोट्टि, अब छोड़ दो। हम आ गये है।"

चोट्टि जैसे पिछले डेढ़ घंटे में नया आदमी बन गया हो। वह बोला, "छोड़ क्यों दूँ? अभी समज लो। मालिक के पास खेत-मजूर हफ्ता लेने आये थे। उस पर मालिक ने इन दुसमनों को बुलाकर क्यों तैनात किया था? पहले गैरकानूनी काम किसने किया? उसके बाद महाराज, हफ्ता? उसे लिये बिना कोई नहीं जायेगा। पहले तुम हफ्ता बाँट दो।"

दो पुलिस वालों ने बीस बन्दूकें और गोलियाँ उठा लीं। शंकर बोला, "सब इकट्ठा करो। घायलों को उठाओ।"

'इयाड' के दबाव में यह पहले का न किया हुआ काम करना पड़ रहा था, इसलिए एस० डी० ओ० ख़फ़ा हो गये और तीरथनाथ से बोले, "आपको साथ ले जायेंगे। साफ़ पानी को गन्दा कर तूफ़ान खड़ा कर दिया, अब म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा?"

शंकर बोला, "यह सब बातें बाद में।"

रोमियो ने शंकर से कहा, "इयाड हो या कुछ भी हो, हरामी के बच्चे, तुझे मैं देख लूँगा।"

"आह! दैट नाइस गाई!"

शंकर ने तीन गुंडे-दादा लोगों के कंधे में लगे तीरों को पकड़ कर हिलाया, वे चीख़ पड़े। शंकर बोला, "बढ़िया, बढ़िया काम, चोट्टि! तीनों

के दाहिने हाथ शायद अलग करने पड़ेंगे।"

ज़ख्मी लोगों और लाशों का चालान किया गया। सबने समझ लिया था कि युगल भी जल्दी ही लाश हो जायेगा। अब औरतें, लड़के-लड़कियाँ और बच्चे आ पहुँचे। काले-काले चेहरों की भीड़ बहुत घबराने वाली थी। चोट्टि की पत्नी आकर चोट्टि का हाथ पकड़ कर खींच रही थी। धीमी आवाज में बोली, "वे लोग चले गये हैं।" चोट्टि ने सिर हिलाया। चोट्टि ने ज़िद न छोड़ी। जले धान, उलट-पलट कचहरी, घायलों की चीख़-पुकार, दुखा की पत्नी का करुण रुदन—सारा कुछ चारों ओर लिये तीरथनाथ ने हफ़्ता बाँट दिया। उसके बाद थाने में इजहार देने गया। चोट्टि भी साथ गया। बोला, "मैं बेगार नहीं हूँ, खेत-मजूर भी नहीं हूँ, लेकिन दुखा को जिस तरह गोली मारी है, उससे दिमाग पर खून चढ़ गया है।"

घायल लोग अस्पताल गये, और चोट्टि, छगन और तीरथनाथ थाने गये। शंकर के रहने से रिपोर्ट में कुछ बारीकी न हो सकी। युवलीग के सेक्रेटरी और पार्टी के सेक्रेटरी से शंकर बोला, "जिले का सारा कुछ तो आपके अधिकार में हैं। इस बेल्ट में दख़ल मत दीजियेगा।"

युवलीग के सेक्रेटरी ने जब सुना तो समझा, जिन्दगी की सारी चीज़ों की तरह अमरूद-शरीफ़ों का मौसम, फ़िल्म 'सपनों का सौदागर', लड़कियों के बालों में पोनी टेल बाँधने का फ़ैशन, जीवन में आयी सारी चीज़ों की तरह, शंकर और खुराना का आंचलिक निवास भी क्षणस्थायी है, तब उसने उन तीन गुंडों से कहा, "फ़िकर मत करो, भैया। यह लोग चले जायें तो चोट्टि गाँव जला देंगे। लेकिन तुम्हारा भाग्य अच्छा है। चोटि मुंडा अगर चाहता तो तुम्हारा गला छेद डालता।"

रोमियो गरज कर बोला, "दाहिना हाथ अलग कर दिया जायेगा। तीर के लोहे में जंग लगी थी, उससे टिटनेस हो सकता है।"

"चोट्टि के हाथ में तीर! सीधी बात है?"

"भैया, बन्दूक की गोली से भी ज़ोर से और एक के बाद दूसरा तीर चलाये जा रहा था। देखकर भी आँखों को विश्वास नहीं होता था।"

"तीरथनाथ को मैं न छोड़ूँगा। सर पर 'इयाड' लेकर उसका तुम लोगों को बुलाना ठीक नहीं था।"

"वह खचड़ा है।"

चोट्टि-आपरेशन के बहुत ही ज़हरीले परिणाम हुए। दिलदार धनुष्टंकार में मर गया। रोमियो का दाहिना हाथ कंधे से अलग कर देना पड़ा। पहलवान का दाहिना हाथ कोहनी से अलग करना पड़ा। दिलदार और तीरों की चोट से मरे युवकों के परिवारों को एक-एक लाख

रुपये और एक-एक पेट्रोल पंप मिले। रोमियो इन दो व्यक्तियों को मरणोत्तर 'परमवीर चक्र' भी दिलाना चाहता था, पर वह न मिला।

किसी को जेल-हवालात नहीं हुई। अपमानित तीरथनाथ ने गुमाश्ते को ठीक ढंग से मजूरी देकर धान काटने को कहा, और परिवार के साथ लाला तीर्थयात्रा को चला गया। युगल और दुखा के परिवार को अमलेश ने पचास-पचास रुपये सहायता देकर 'महानुभाव' नाम पाया। इसके सिवा अकेले, इस जगह से अपरिचित शंकर चोट्टि के घर आये और बोले, "उस हंगामे के दिन बाहर का कौन-कौन था, चोट्टि ?"

"बाहर का ? कौन था ? कोई नहीं था।"

"तुम्हारे तीरों में भी जहर रहता है ?"

"रह सकता है।"

"ख़ुद जो करना हो करो चोट्टि, बाहर के लोगों की बात में मत आना। वे तुम्हारे दोस्त बनकर आते हैं। वह धोखा है।"

"यह तो बताओ कि वह कैसे मानूँ ? मेरे पास बाहर के लोगों की तुम पूछते हो। और तुमने तो मदत दी।"

"बस इतना कह कर जा रहा हूँ।"

"कहाँ आओगे ?"

"ढाइ की तरफ़।"

"अच्छा।"

"हमारे न रहने से वे लोग अत्याचार कर सकते हैं। लेकिन बताओ तो, उससे क्या ! तुम भी लड़ सकते हो, हाकिम और थाने की मदद मिलेगी।"

चोट्टि ज़रा मुसकराया। बोला, "मजाक कर गये, महाराज !"

"नहीं-नहीं।"

शंकर और खुराना ढाइ चले गये और इस तरह युवलीग को हरी रोशनी दिखा गये। अब चोट्टि ग्राम खुला मैदान था।

सत्रह

इन बातों को सुनकर स्वरूप मामूली-सा हँसा और बोला, "डेरा अच्छा था, छोड़ना पड़ा। अब भी कुरमी पहाड़ के उस ओर तो रहना हो ही सकता है।"

"चल सकोगे ?"

"दल ही तो आता-जाता हूँ।"

"ता ध्यान से सुनो। चोट्टि नदी दक्खिन में बहते-बहते कुरमी घूमकर ठी के जंगल में घुस गयी है। वह कोठी कब किसकी थी, पता नहीं। गल दो मील तक बहुत घना है। ज़मीन बराबर है, नदी अलग हो गयी है। हाथियों का झुंड उस रास्ते से होकर पलामू के रिजा फ़ोरेस्ट जाते हैं। इसी से कोई घुसता नहीं।"

"पहाड़ नहीं हैं ?"

"न। पहाड़ पर रहेंगे। मचान बाँधकर। उस जंगल में बहुधा कोई आता-जाता नहीं, क्योंकि जंगल नदी के बीच है, पानी से जमीन दलदली है, साँप भी बहुत हैं।"

"इनको वहीं ले जाऊँगा।"

"तुम कहाँ जाओगे ?"

"दूसरे अड्डे पर। होशियार रहने की ज़रूरत है। हम लोगों की हालत ठीक नहीं है। यह बात तो सच ही है कि हमारे संगठन की तरह कई संगठनों को समाप्त करने के लिए अंचल में 'इयाड' घुस आया है।"

"वहाँ चले जाओ।"

"ज़रूरत होने पर बताऊँगा कैसे ?"

"अगर मौक़ा मिलेगा तो आदमी भेज दूँगा। नहीं तो नदी जहाँ जंगल में घुसी है वहाँ पच्छिम में एक बहुत ऊँचा आसमान-फोड़ शिशु पेड़ है। उसके नीचे एक बड़ा-सा पत्थर है। पत्थर पर पेड़ की डाली तोड़कर लड़के रख आयेंगे। रोज नज़र क्यों रखोगे ? मेरा घर तो बिशा को मालूम है। चला आयेगा।"

"वही अच्छा है।"

"और तुम सब भागते क्यों हो ?

"सबके नाम पर बहुत-से मामले जमा कर लिये गये हैं।"

"देरी मत करो। हवा अच्छी नहीं है।"

हवा अच्छी नहीं है। रहती ही नहीं। स्वरूप आदि के हट जाने के बाद ही मानो हवा से हाल-चाल मालूम कर परित्यक्त जंगल में पुलिस की सेना घुस पड़ी। जंगल का कोना-कोना खोज डाला और निकल गये।

रिपोर्ट : चोट्टि-कोमांडि फ़ारेस्ट के गिर्द उस दिन भी कोई भूमिगत दल था। एक गुफ़ा में जली बीड़ी, दियासलाई के ख़ाली डिब्बे, मोमबत्ती के टुकड़े और क़ागज़ के ठोंगे मिले। स्मरणीय है कि चोट्टि गाँव की घटना में कम-से-कम पैंतीस आदिवासियों ने तीर चलाये थे। वे क्या सब उस

गाँव के रहने वाले थे ? युवलीग के मरे जवानों के शरीरों में था काफ़ी तेज़ कुचला जहर। ध्यातव्य है कि पतले और छोटे तीरों के फनों में कुचला ज़हर था। 'आदिवासी जंगल भारती', 'बीरसा दल', 'आदिवासी सेवक समिति' में इस तरह के तीर देखे गये हैं—इन सारी संस्थाओं के हमलों—कार्रवाइयों में। द्वितीय और तृतीय दलों के अस्तित्व तो क़रीब-क़रीब नष्ट हो चुके हैं। पहले दल का ही संगठन शक्तिशाली है। आदिवासियों की सहायता से दल मज़बूत है और स्वरूपप्रसाद अभी भी सक्रिय है...।

शीघ्र ही 1976 आया। जुलाई। बरसात देर से हुई, फिर भी हुई तो। पानी की टेढ़ी-मेढ़ी धाराएँ कलकल कर चोट्टि नदी की खुली छाती पर कूद पड़ीं। हरी-हरी दूब से धरती लहलहा उठी। जंगलों और गाँवों के पेड़ वर्षा में स्नान कर जीवित हो उठे और टाहाड़ के शिवमन्दिर के पुजारी का हाथी स्टेशन के पास के तालाब में घुस गया और उसमें से निकलना नहीं चाहता था। स्टेशन पर एक पेड़ गिर गया। तीरथनाथ गाँव को लौट आया। इस समय वर्षा से सींची हुई सरस धरती में बीज छिड़कने की बात थी। तीरथनाथ कुछ बोरे सरकारी बीज लेकर ट्रेन से उतरा। इन्हीं दिनों एक दिन ब्रिक-फ़ील्ड होकर ऊधम शार्ट कट से जा रहा था कि उसे धारीदार साँप ने काट लिया। मोटे मोज़े पर से साँप को दाँत गड़ाने का मौक़ा न मिला, लेकिन ऊधम डर के मारे लुढ़क गया। ख़बर सुनकर चोट्टि भी भागा और साथ में तोहरी के अस्पताल गया। वह ऊधम से कहता जा रहा था, "महाराज, बच जाओगे। डर नहीं है, महाराज ! ठीक से काटा नहीं है, महाराज !" डॉक्टर ने भी डॉक्टरी भाषा में चोट्टि की बात ही कही। इसके बाद वे ऊधम को लेकर घर लौटे। हरबंस घबराकर बोला, "स्वरूपप्रसाद के साथ मैं ही तुमको मिला दूँगा, किसी से बताना मत।"

"ना, महाराज !"

"उसकी तलाश बहुत चल रही है।"

"ऐसी बात है ?"

घर लौटने पर चोट्टि का छोटा लड़का, सोमचर, बोला, "बिसाइ आकर बैठा है, आबा ! तुमसे कुछ कहना है।"

बिसाई बोला, "पता, है स्वरूप कहाँ गया है ?"

"मुझे कैसे पता होगा ?"

"जंगल में जितना पानी था, उतने साँप थे। स्वरूप दवा ले आया।

[illegible] न का भूखा हूँ, सत्तू-मिर्चें लाने को कहकर कहाँ गया ? कुछ सुन [illegible] मेरे दल का कोई कहीं पकड़ा गया है, कुछ सुना है ?"

"तुम लोगों के ठिकाने कहाँ-कहाँ हैं ?"

"नरसिंगगढ़ और ढाइ।"

"इसी से डुग्गी पिट रही है कि अनजान आदमी को कोई सत्तू-मिर्चा नहीं बेचेगा।" चोट्टि ने सोचा और बोला, "अभी अँधेरा है। जरा ठहरो।" उसने अपना जमा किया हुआ देखा और बोला, "वहाँ तुम कितने लोग हो ?"

"तीस आदमी।"

"सब मुंडा हैं।"

"एक दिकू है। स्वरूप का भाई।"

"ठहरो।"

चोट्टि ने निकलकर उपा को बुलाया। सब सुनकर उपा हर घर से सत्तू-नमक-मिर्चें ले आया। चोट्टि ने भी दिया। उसके बाद सोमचर और उपा बिसाई के साथ अँधेरी बरसात की रात में नदी का किनारा पकड़कर चले। उनको लौटते-लौटते रात बीत गयी।

उसके बाद चोट्टि गाँव के मुंडा और अछूतों की तोहरी में राजबंस के लकड़ी गोदाम से लगे बँगले में पुकार हुई जहाँ चोट्टि के जीवन का अधिकांश भाग क़िस्से-कहानी में, मज़ाक में, या चाय या कॉफ़ी पीने में बीता था। अमलेश और शंकर के साथ। स्वरूप के लेटे शव के सिरहाने एक अजनबी शंकर बैठा था और बहुत ही अजनबी आवाज़ में वह बोला, "एक-एक कर अच्छी तरह देखो, पहचानते हो या नहीं ?"

स्वरूप के हाथों और पैरों में कोई नाखून न था, नंगे शरीर पर काले-काले छेद थे, पुरुषांग मांस का कीमा बना था। चोट्टि ही आगे बढ़ा। साफ़ आवाज़ में बोला, "न, कभी नहीं देखा, नहीं पहचानता हूँ।"

सबने यही कहा। रक्तहीन स्वरूप के शरीर से मक्खियाँ उड़ती थीं और फिर बैठती थीं।

उन लोगों ने वापस आकर देखा कि गाँव में पुलिस चौकी है। चोट्टि नदी के किनारे हरा पोलीथीन का तंबू लगा है। चोट्टि धीमी आवाज़ में बोला, "अपने-अपने घर चले जाओ। हालत बहुत खराब है। बहुत ही खराब। उपा, अँधेरा होने पर मेरे घर आना।"

उपा जब आया तो वह बोला, "उस बार तू और मेरा सोमचर आगे रहकर बार-बार तीर चला रहे थे। झट से घर जाकर कह आ, और

सोमचर को लेकर जंगल में भाग जा। उन लोगों को बता देना, यह मेरा कहना है, स्वरूप मर गया। सबके मरने में फायदा नहीं है। वे लोग कुरमी पहाड़ के जंगलों में चले जायें। वहाँ कोई न जायेगा। तुम भी चले जाओ। उनके साथ छिपे रहो। कुरमी का रतन मुंडा तुम लोगों को नमक और सत्तू दे जायेगा। जो लोग हैं उनको भी देगा।''

''चले जायेंगे।''

''तेरा बाप मरा, तू सामने था, सोमचर भी था।''

वे चले गये। यह जाना कितना मौक़े पर हुआ, यह दूसरे दिन समझमें आया। जब पुलिस ने गाँव के हर घर में उपा और सोमचर को तलाशा। ''वे लोग धनबाद चले गये हैं।'' सुनकर पुलिस ने पूछा, ''किसके पास गये हैं?''

चोट्टि असंतुष्ट होकर बोला, ''यह क्या मुझे मालूम है? इन दोनों की फड़फड़ाहट सबसे जादा है। मजूरी मिली तो इन्हें पीली बनियान ख़रीदनी ही चाहिए। ये बाबू साहब पैरों में रबड़ की चप्पलें भी पहनेंगे। धनबाद जाकर कोयला खोदेंगे, जादा रुपये लेंगे, छिनेमा देखेंगे। देखो महाराज! हाट में किसी ठेकेदार ने उन्हें लालच दिया था। इन ठेकेदार को पकड़ सकते हो? इन लोगों के भड़काने से मुंडा लड़के भाग जाते हैं।''

''ख़बर मिलने से ख़बर देना।''

''जरूर देंगे। किन्तु क्यों, महाराज?''

''खबर देना।''

पुलिस के चले जाने पर चोट्टि ने पत्नी से कहा, ''लड़कों को जंगल क्यों भेज रहे हो, कहकर रो रही थी न? अब समझी?''

''पकड़ने पर मार डालते।''

''जरूर। स्वरूप दिकू लड़का था, पढ़ा-लिखा लड़का, सुना है परेशनाथ में उन लोगों का घर है। पिता वकील है। उसे भी मार डाला।''

इसके बाद ही तीरथनाथ की तलबी आयी: ''धान बोने का वक्त है। चले आओ, जो बेगार है वह आये।''

कोई नहीं गया। छगन ने तीरथ के गुमाश्ते से कहा, ''बेगारी गैरकानूनी है, इससे उस बार नहीं दी। इतना जुलुम हुआ। इस बार क्यों दें?''

''अकल होती तो देते।''

शंकर को नयी भूमिका में देखकर सरकार और प्रशासन के बारे में उसका पुराना अविश्वास दुगुना बनकर लौट आया और वह बोला, ''इस बार अत्याचार और भी ज़बरदस्त होगा।''

चोट्टि बहुत कुछ समझता था, फिर भी सब-कुछ न समझता था। अफ़सर रुखी कठोर आवाज़ में बोला, ''पहली स्टेज में कोई रुकावट नहीं आयी। मैं देखना चाहता हूँ कि स्वरूप के दल के लोग इनकी मदद करने आते हैं या नहीं? सिर्फ़ स्वरूप का पकड़ना ही काफ़ी नहीं है। मैं उसके दल को पकड़ना चाहता हूँ। राजनीति में उतरकर जो हिंसा का सहारा लेगा, जिस दल का, जिस विश्वास का भी आदमी हो, उसे पकड़ना होगा। मुझे मालूम है कि स्वरूप के दल के साथ उनका कम-से-कम एक बार साथ हुआ था। इस बार भी होना स्वाभाविक है। इसी से, पहले स्टेज में युवलीग ऐक्शन करे। इस ऐक्शन के मौक़े पर उनकी मदद के लिए स्वरूप के दल का अगर कोई न आये, तो उन्हें देखकर युवलीग को हटा दूँगा। इससे उनके मन में विश्वास होगा, वे असावधान हो जायेंगे। बाद के ऐक्शन में स्वरूप के आदमी आयेंगे ही।''

''युवलीग को बताने की ज़रूरत है?''

''बिलकुल नहीं। लफँगों के साथ मेरा कोई मेल-जोल नहीं है। वे मेरे लिए तभी तक काम के हैं, जब तक स्वरूप के दलबल को पकड़ने में लगें। वे अशिक्षित, असभ्य और बदमाश हैं।''

छगन ने तीरथ के बुलाने का कोई जवाब न दिया। उसके बाद हथकटे रोमियो और पहलवान पचास गुंडों को लेकर पार्टी का झंडा उड़ाते हुए चोट्टि गाँव आये। पुलिस के अफ़सर रूखी आवाज़ में बोले, ''यह क्या? आप लोग क्या चाहते हैं?''

पोलीथीन के तंबू से सिर निकालकर शंकर बोला, ''यह क्या हो रहा है? पिकनिक है क्या? बंदूक क्यों नहीं लिये हुए हैं?''

रोमियो गुस्से के मारे अंधा हो रहा था, बोला, ''आज एक पवित्र काम का दिन है। जितने गुलामों के बच्चे हैं, सबकी गर्मी निकाल दूँगा, और इस 'इयाड' को मारकर पिछला बदला लूँगा।''

हा-रा-रा-रा, भारत माता की जय, विजया मोदी अमर रहे, युवलीग ज़िन्दाबाद, इत्यादि स्लोगन लगाते-लगाते वे तीरथ के गुमाश्ते को खींचकर ले आये। बोले, ''ज़रा दिखा दो कौन-कौन हरामी बेगार न देगा?'' तीरथ भागा-भागा आया। बोला, ''भैया, अब इस बार मत मारो। पहले बात करो। बात से काम आसान होता है। बाप रे! मुझे तो डर लग रहा है। उस बार तो भाग गया था। कब तक भागता रहूँगा?''

रोमियो बहुत उल्लास के साथ बोला, ''भाग जा हरामी के बच्चे! डरपोक आदमी, तेरा कलेजा तो कबूतर का है।''

छगन का घर दिखाकर गुमाश्ता भाग गया और रोमियो बन्द दरवाज़े पर लाठी पीटने लगा। उसने भागते हुए छगन की पीठ पर गोली मारी और साथ ही छगन का मकान जलने लगा। औरतें खिड़कियाँ तोड़कर निकलीं। फिर गोलियाँ चलीं, जिसके बाद धुएँ के पीछे से तीर आने लगे। पैर में तीर लगने से तीरथ चिल्लाकर गिर पड़ा। पल भर में दृश्य मनोरंजक हो गया। धुएँ और आग में पड़े युवलीग वाले बेतहाशा गोलियाँ चला रहे थे और धुएँ को पार कर दिखायी दिया कि छगन के घर के पीछे ऊँची ज़मीन पर कई बिना बैल के गाड़ियाँ थीं, उन पर भूसा लदा था। उनके पीछे कुल पंद्रह मुंडा थे, जिनके हाथों में तीर थे। शंकर ने उन्हें दूरबीन से देखा और बोला, "नहीं, वे लोग नहीं हैं।" तभी वर्षा होने लगी। युवलीग वाले थोड़ा बौखला गये। लेकिन तीर आते रहे। युवलीग का एक व्यक्ति चीख़ उठा, एक और। वे फिर गोली चलाने लगे। माइक पर शंकर की आवाज़ सुनायी पड़ी, "दोनों ओर के लोग रुक जाओ। पुलिस आ रही है।"

रोमियो ने अब एक युवलीग वाले की पीठ पर लाठी मारी। "उस 'इयाड' को मारो गोली !"

शंकर आ गया और रोमियो का बायाँ का हाथ पीछे की ओर मरोड़ दिया। युवलीग वाले के सिर पर रिवाल्वर का मुट्ठा मारा। पुलिस फ़ौरन युवलीग को निरस्त्र कर तेज़ बरसात में उन्हें धकियाती हुई कैंप ले गयी। शंकर ने युवलीग को मन-ही-मन गालियाँ दीं और पुलिस से कहा, "मुर्दों और ज़ख्मी लोगों को उठाओ।"

छगन और युवलीग का एक आदमी जिन्दा तो थे, पर बहुत अधिक घायल थे। एक युवलीग वाले के कलेजे में तीर था, वह मरा हुआ था। छगन की भतीजी पुतली और रामकुमारी धोबिन मर चुकी थीं। चोट्टि के तीर-कमान भी छीन लिये गये। चोट्टि ने शंकर की किसी बात का जवाब नहीं दिया और छगन को बड़े जोश के साथ बुलाता रहा। तीरथनाथ दूर पर सहारा लिये रोता हुआ बैठा था। वह बोला, "बाप ने कभी नहीं मारा। तुम लोगों ने मेरा पैर तोड़ दिया। ऐसी बेईमानी !"

चोट्टि दूसरी ओर देखकर बोला, "कई बरस हो रहे हैं, लाला टरेन से कट जाता, मैंने बचा लिया। अब ? जब उसने मेरे बेटे को जेहल भेजा था तब। आज इन अनवर आदि से हमारे लड़के-लड़कियों को मरवा रहा है और मेरे नाती को कहता है बेईमान !"

"तुम्हें नहीं कहा।"

"मैं मारता तो पैर में न मारता।"

दोनों औरतों की लाशों के आगे खड़े होकर शंकर युवलीग की नीचता पर बार-बार सिर हिला रहा था। देखकर लगता था कि वह शोक में विह्वल है। चोट्टि ने उसकी ओर देखा तक नहीं। शंकर खुश हुआ। इसी तरह की निष्कलंक और शुद्ध, क्रुद्ध प्रतिक्रिया की ही उसे कामना थी। चोट्टि, तुम चोट्टि ही रहो, उससे मैं स्वरूप के दल को पकड़ सकूँगा।

घायल और मुर्दे ट्रेन से एक ओर भेजे गये, दूसरे लोग दूसरी ओर। शंकर ने बाक़ायदा एक केस खड़ा किया और युवलीग ही भड़काने वाली है, ऐसा सिद्ध हुआ। किसी तरह केस अदालत नहीं पहुँचा और घायल छगन और युवलीग वाले एक ही सदर में, एक ही अस्पताल में बहुत आहिस्ता-आहिस्ता ठीक होने लगे। छगन बच जायेगा, यह जानकर चोट्टि बोला, "अब जेहल दें, फाँसी दें, दुख नहीं है।" किसी तरह चोट्टि आदि सब डाँट-डपट सुनकर लौट आये।

फिर पुलिस ने जंगल छाना, तलाश करती फिरी।

अब चोट्टि ने जैसे सब समझ लिया। चोट्टि में पुलिस चौकी रह ही गयी। बरसात में ईंटों का भट्टा पानी में डूब गया। वहाँ किन्हीं लोगों ने तीरथ के गुमाश्ते को शाम के अँधेरे में कम्बल में लपेटकर और गिराकर पीटते-पीटते बेदम कर दिया। तीरथ ने अस्पताल से लौटकर गुमाश्ते को अस्पताल भेज दिया। गुमाश्ता किसी का नाम न बता सका। छगन बोला, "न मैं जाऊँगा, न किसी को जाने दूँगा।"

इस घोर वर्षा में चोट्टि ही कुरमी गया। उसने रतन मुंडा से कहा, "उस दिन गौरमेन अपनी आँखों से शीशा लगाकर हमें देख रहा था। गोलियाँ चलीं, लाशें गिरीं, उस हरामी ने काँच नहीं हटाये। अब लगता है, बिसाई आदि को खोज रहा है। तू पता लगा आ, नरसिंगगढ़, ढाइ में उत्तर में उनका बाद में कहाँ अड्डा है ? मेरे ऊपर वह नजर रखे है। तुम लोगों में से कोई उनको हट जाने के लिए कह दे। हमें छोड़ क्यों दिया है ? जब जरा-जरा-सी बात पर चमड़ी उधेड़ देते हैं, फिर मैंने तो एक लड़के को मार दिया है।"

"सुना है, गौरमेन बहुत मदत दे रही है।"

"उजबक ! बेवकूफ ! गधे ! गौरमेन तो बेकसूर मुंडा-दुसाध को मार रही है। वह मदत क्यों देगी ? लगता है साँप काट नहीं रहा है, चूम रहा है। वह मुझे जेहल या फाँसी देते तो विश्वास करता।"

"तुम जैसा कहो। हम तुम्हें जानते हैं।"

"फिर यह बात न सुनूँ !"

"छगन बच गया।"

"अब रुपयों का खेल नहीं रहा। छगन का घर हम बना रहे हैं। चड्ढा और अनवर कुछ रुपये दे रहे हैं। चड्ढा से टूटी ईंटें माँगकर ले रहा हूँ। अब छगन पक्के घर में जायेगा।"

इस घटना के तीन महीने बाद, पवित्र देवी-पक्ष में फिर बहुत बड़ा पुलिस कैम्प लगा। शंकर फिर रंगमंच पर उतरा! वह मन-ही-मन थोड़ा घबराया हुआ था। उसने अपने को खुद ही सेंसर किया था। 'इयाड' का प्रशिक्षण था। अपनी ग़लती या कमज़ोरी दिखायी देते ही 'इयाड' अफ़सर अपने को कर्म-क्षेत्र से हटा लेगा। 'इयाड' के दूसरे विश्लेषण करने वाले की राय में इन कारणों से शंकर की व्यर्थता प्रमाणित होती थी—(क) चोट्टि ग्राम में पहली बार कार्रवाई के वक़्त उसको समझना चाहिए था कि स्वरूप के आदमी ऐक्शन में थे। (ख) चोट्टि-कोमांडि जंगल के घेरे में पुलिस को पहले ही घुसना चाहिए था। (ग) स्वरूप को मार डालना बड़ी भारी मूर्खता थी। ज़िन्दा स्वरूप को पहले टॉर्चर देना, उसके बाद उसकी सुश्रूषा आदि करते रहना ठीक था। ज़िन्दा स्वरूप को मोहरे की तरह रखने से उसके दल-बल को पकड़ा जा सकता था।

शंकर को एक चांस दिया गया था। निश्चय ही वह अकसर उसे मिलता। इस बार एक ऐक्शन होगा और स्वरूप का दल आयेगा। अगर न आये, तो शंकर, ऐक्शन का असर मिट जाने पर, चोट्टि मुंडा और उसके गाँव को रोमियो आदि के हाथों छोड़कर खिसक आयेगा।

'इयाड' के अफ़सर ने युवलीग के सेक्रेटरी को बता रखा था कि रोमियो किसी भी कारण से शंकर के काम में अड़चन न डाले। 'इयाड' यों ही पलामू के जंगलों में नहीं क़ायम किया गया है।

रोमियो ने यह धमकी सुनी और ज्यों उसका मन मानो उलझा जंगल हो, वह अपने विश्वस्त साथी से बोला, "वह अगर 'इयाड' है तो मैं भी युवलीग हूँ। भारत में युवलीग के क़दमों को कौन रोक सकता है? उसने दो बार मेरा अपमान किया है। अब मैं उसका बदला लूँगा। इस जंगल में, एक बुड़बक सदस्य का चमचा बन कर मैंने दाहिना हाथ तो खो दिया। जिसकी वजह से खोया, वह क्या ज़िन्दा रहेगा?"

"कौन? चोट्टि?"

"चोट्टि तो दूसरे नंबर का दुश्मन है। इनकी हमें तीर मारने की हिम्मत कहाँ से हुई? उसी शंकर के कारण। शंकर उसे मदद देने गया। शंकर और चोट्टि! तीरथ एक ही डरपोक है। साला न दादा लोगों को रखता है, न बंदूक। मैं इस बार उन दोनों को ख़तम कर दूँगा। उसके बाद चला जाऊँगा धनबाद। यहाँ क्या रखा है? रकम पीटो, लेबर को मारो,

[illegible] वर्कर्स को मारो, कोई किसी बात को पूछने वाला नहीं है।"

"गुरु! जो कहो सो करूँगा। लेकिन कुछ न हुआ तो?"

"अरे, अभी भी इस अंचल में ज़िन्दा शंकर से उसकी लाश में ज़्यादा ताक़त है।'

"ठीक है, गुरु!"

शंकर यह सब ज़रा भी न जान सका। इस बार 'इयाड' के अफ़सर भी आये। शंकर समझा कि उस पर भी अब नज़र रखी जा रही है। 'इयाड' ने शायद यह सोचा है कि शोषित आदिवासियों के संपर्क में रहते-रहते शंकर में डिमॉरलिज़ेशन आ गया है। आहा! यह बात सच नहीं है, इसे प्रमाणित करने का मौक़ा शंकर को मिल गया है।

और पुलिस की छावनी देखते ही चोट्टि ने अपनी ज़मीन से औरतों और बुड्ढों और बच्चों को नदी के उस पार अपनी ज़मीन पर भेज दिया। कहा, "और जो हो, गोलियों से न मरने दूँगा।"

उनके चले जाने के बाद ठंडी साँस लेकर चोट्टि बोला, "इस बार सब-कुछ ज़्यादा खतरनाक होगा। अब मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

उसने छगन को हटा दिया। छगन अभी गाँव में आया था। उसने सिर हिला कर कहा, "इस बार गौरमेन और पुलिस के सामने लाशें गिरेंगी। हम सबके घर जायेंगे।"

सामान्य घटना ऐसी ही लग रही थी और रेल के कुली चड्ढा के ईंटों के भट्टे पर चले गये।

रोमियो और उसके साथी आये। इस बार वे सौ से ज़्यादा थे। शंकर प्रतीक्षा में परेशान, कान खड़े किये था। स्वरूप के आदिवासी क्यों नहीं आ रहे हैं? वे पकड़े क्यों नहीं जा रहे हैं? मरते नहीं? पकड़े तो वे जायेंगे ही। उनको किसी तरह की हिंसा का अधिकार नहीं है। सारा अधिकार सरकार का है।

चोट्टि गाँव में सन्नाटा था। संकट का सन्नाटा।

शंकर ने समझा कि रोमियो आदि बिखर गये हैं, गाँव की ओर जा रहे हैं। वह तंबू से निकला, आँखों पर दूरबीन लगायी। आः! चोट्टि आदि ज़रूर उस बैलगाड़ी के पीछे हैं, अभी बंदूकें चलेंगी, तीर आयेंगे। प्रत्याशा में उसके चेहरे पर मुसकराहट आयी। भयानक हिंसा की आपात-स्थिति में ही 'इयाड' अफ़सर पूरी तरह सहज महसूस करता है।

तभी विस्मयजनक बात सुनायी पड़ी, "अरे? हरामी के बच्चे!" —और कहने के विस्मयजनक क्षण में पाशविक उल्लास में जवाब मिला, "साले, आज तुझे कौन बचायेगा?"—क्या हो रहा है, यह समझने के पहले

ही शंकर के पास एक युवलीग वाला दौड़ कर आया और उसने छह नली रिवाल्वर की सारी गोलियाँ शंकर के उस कलेजे में उतार दीं जिसमें स्वरूप के दल को एकदम ख़त्म करने की कामना बसी थी। इसके साथ ही सीटी बजी, तेज़ सीटी। युवलीग वाले ने रोमियो को बताने के लिए सिर घुमाया और 'इयाड' अफ़सर की गोली से गिर गया। पुलिस, चारों ओर से स्पेशल पुलिस निकल पड़ी और बड़ी अजीब घटना हुई। पुलिस अब युवलीग के लड़कों का ही पीछा कर रही थी। ये मारने और पीछा करने और डराने के अभ्यस्त थे। मार खाने और पीछा किये जाने के नहीं। इसलिए वे 'इयाड' की हत्या के महापाप के कारण पुलिस द्वारा पीछा करा सकते थे, यह जान कर चौंधिया गये। इसके बाद वे ही रस्सी से बँधकर वैगन में बैठे। बन्द वैगन में पुलिस उन पर टूट पड़ी। दारोग़ा ने काँपते-काँपते रोमियो और पहलवान को डंडा मारने में लगे 'इयाड' अफ़सर से कहा, "सर, यह युवलीग वाले हैं।"

"मैं 'इयाड' वाला हूँ।"

सबको वैगन में चढ़ाकर इंजन के साथ उस अकेले वैगन को जोड़कर उसे छोड़ दिया गया। चोट्टि-लाइन पर से सुरक्षित दूरी पर खड़े खुशी से उछले पड़ रहे थे, तोहरी से जीप के बाद जीप में 'इयाड' के हेडक्वार्टर को, खुराना को बताया गया, 'पैक ऑफ़'—डेरा-डंडा उठाओ। इसके बाद 'इयाड' से नियम से जान बचाकर उनकी क्रमिक धुलाई चलती रही। धारावाही रूप से। परिणामस्वरूप युवलीग, कांग्रेस, पुलिस, 'इयाड'—चारों में ज़ोरों का तनाव चला। पहले यह तीन दल तीन महीने तक लड़ते रहे, चुपचाप लड़ते रहे। कोई फ़ायदा नहीं हुआ। खुराना ने दिल्ली में श्रीमती को बताया कि पलामू पुनर्निर्वाचन में उनके दल को ही वोट देगा। पहले बताये चुपचाप युद्ध में 'इयाड' अविचल रहा। 'इयाड' से जवाबदेही का अधिकार राज्य के रूप में किसी को नहीं था। 1977 की जनवरी में आपात-स्थिति का अन्त हुआ। कुरमी के जंगल से निकल कर स्वरूप के दल के आदिवासियों में से एक-एक, दो-दो कर मुंडा-उराँव-प्रधान गाँवों में फैल गये। कालों में काले मिल गये। उसके बाद आया चुनाव। पाँसा पलट गया। उषा और सोमचर अब गाँव लौटे।

चोट्टि बोला, "डर और त्रास के दिन क्या बीत गये? कौन जाने?"

"कट रहे हैं, आबा!"

"ना हरमू, अब मुझे विश्वास नहीं रहा।"

"कांग्रेसी लड़के तो गये।"

"ये नये लोग क्या करते हैं, सो देखो।"

[illegible] छिपकर चोट्टि को बता गया कि रोमियो और पहलवान जेल में हैं।

"उससे क्या होगा?'

"मुकदमा नहीं हो रहा है। जेल में सड़ें।"

"छोड़ देंगे।"

"ना, ना। अब दूसरी सरकार है।"

"देखते चलें।"

"देखें।"

1978 के बीचोबीच रोमियो और पहलवान जेल से निकले। टूटे शरीर से धनबाद में सुविधा न होगी—यह जानकर वे जल्दी जनता दल के चारों ओर चक्कर काटते रहे। 'इयाड' के गुस्से से उन्हें युवलीग न बचा सकी। इसलिए उन्होंने युवलीग को 'चूतिया संगठन' कहा। कहा, "राजनीति बहुत खराब चीज़ है" और इफ़रात में रुपये देकर राजबंस चड्ढा की ठेकेदारी बड़ी होकर चोट्टि में क़ायम हुई। यह ख़बर पाकर चोट्टि क्षीण हँसी हँसा। बोला, "उषा, सोमचर, रहमू, तुम लोग समझो। उस चड्ढा ने यह काम किया। हमको उनके हाथों में छोड़ दिया। एक बार भी नहीं बताया। दिकू-दिकू एक-से होते हैं।"

"यही होता है।"

चोट्टि गाँव के आदिवासी और अछूतपाड़ा में फिर पुराना डर भरने लगा।

अठारह

1977 में इस अंचल से जो चुने गये, उन्होंने निर्वाचन के बाद ही चोट्टि में मीटिंग की। ट्रेन रुकी, सदस्य उतरे। स्टेशन स्टाफ़ ने कुर्सी, दरी, फूलमाला और चाय-मिठाई का प्रबन्ध किया। सदस्य झुके हुए बीमार-से आदमी थे। उन्होंने बताया कि इन्दिरा गांधी का पतन और जनता सरकार का आना कितनी बड़ी घटना है। उसके बाद बोले, "पिछले राज की तरह जनता सरकार का भी विश्वास अहिंसा की नीति में है। चोट्टि ग्राम में सचमुच पिछले शासन में कई दुखद घटनाएँ हुई थीं। लेकिन हिंसा का जवाब हिंसा नहीं, अहिंसा है। जिस तरह जनता सरकार सारे भारत की उन्नति चाहती है, उसी तरह चोट्टि की उन्नति भी चाहती है। इन आदिवासी और परिगणित ग़रीब इलाक़ों की उन्नति होगी ही। लेकिन

उसके लिए इन्तज़ार करना पड़ेगा। अंचल की शिकायतों की प्रार्थना वे ध्यान से देखेंगे और जितना हो सकेगा, करेंगे। लेकिन किसी समस्या के हल होने में देर हो रही है, इसलिए लोग धीरज न खोयें, क़ानून को अपने हाथों में न लें। सरकार और क़ानून में जनता का धैर्यपूर्ण विश्वास अटल हैं, इसी से गणतांत्रिक भारत में प्रजातंत्र सफल होगा।"

ये सारी बातें कह कर, कलाई पर बँधी घड़ी देखकर वे बोले, "भाई, तुम ग़रीब हो इसलिए दुख मत करो। तुम्हारे प्रधानमंत्री के पास भी दो-चार ही कपड़े हैं।" बात समाप्त करते ही उन्होंने सामने से एक नंग-धड़ंग रेल-कुली के बच्चे को गोदी में उठा लिया और नक़ली दाँत निपोरकर हँसने लगे। एक आदमी ने अभागी शक्ल वाले छोकरे के साथ उनकी तसवीर खींची। उसके बाद ही वे बच्चे को उतार कर सहसा गरज उठे, "इन बच्चों के हाथों एक सुन्दर भारत बनेगा। आइए, उस काम में हम हाथ लगायें।" उनका गरजना सुनकर दरी पर बैठे दो-एक नंगे लड़के रो पड़े। सभा समाप्त हो गयी।

चोट्टि सिर हिलाता रहा, हिलाता ही रहा। बोला, "चल, छगन! हम-तुम बहुत दिनों के साथी हैं। मेरा हरमू जब चार बरस का बच्चा था, तेरी माँ से शादी करना चाहता था तो तेरी माँ बहुत हँसी थी। चल, हम नदी के किनारे चलें, बैठ कर दो घूँट मद पियें, कुछ दुख-सुख की बातें करें।"

वे चोट्टि नदी की रेत पर बैठे। छगन बोला, "सब-कुछ बदल गया, किन्तु नदी नहीं बदली।"

"कुछ नहीं बदला है। बस जुलुम बढ़ता जा रहा है।"

"इस मेम्बर को जानता है?"

"नहीं।"

"धनबाद में ठेकेदारों की बहुत धूम है। वहाँ इसका भाई ठेकेदार है। ठेकेदार का जुलुम पुलिस के जुलुम से जादा रहता है। इसके भाई ने बहुत रुपये दिये। उसी से अब यह मेम्बर बना है। इसका भाई ठेकेदार है।"

"समझा।"

"क्य ासमझा?"

"ठेकेदार होने की वजह से यहाँ से अब लेबर लेगा। ठेकेदार लोग कोयला खान के जमींदार होते हैं। और हम लोगों जैसे देहाती मुंडा-दुसाध उनके बेगार होते हैं। स्वरूप कोयला खान में काम करता था। उसे मालूम था।"

"वही होगा। हमारे भाग्य में अच्छा क्या होगा?"

"ठेकेदार लोग तो कांग्रेसी होते हैं। बातों से लगता है यह कांग्रेसी है। किन्तु नाम बदल गया है।"

"सो तो है ही।"

"अब फिकर दूर हुई। फिर पकड़-धकड़ और जुलुम होगा?"

"कौन जाने!"

चोट्टि थोड़ा हँस कर बोला, "हमें अपने-आपही पता चल जायेगा, छगन! जेठ-असाढ भी आ रहे हैं, और लाला जमीन भी परती नहीं रखेगा। तब पता चल जायेगा। लाला तब जुलुम करेगा।"

तीरथनाथ ने 1977 के जून में बताया, "काफ़ी हो गया है। उसकी ज़मीन और किसानों को लेकर बहुत हंगामा हो चुका है। वह भी नयी सरकार का स्वागत करता है—नये ज़माने का। अब बात-चीत कर काम शुरू करने की ज़रूरत है। यह सब बातें उसके और उसके खेत-मजूरों के बीच होना ही उचित है। चोट्टि मुंडा ने लम्बे समय से तीरथ के खेतों में काम नहीं किया था। उसकी उम्र हो चुकी थी, वह सम्मानित व्यक्ति था। उसे इन सब बातों में नहीं लाना चाहिए।"

छगन बोला, "बाद में जवाब दूँगा।"

"अभी बताओ, छगन!"

"महाराज, कोई बेगार नहीं देगा। मजूरी दो, पनपियाई दो, तब काम हो सकता है।"

तीरथ आवाज़ में बहुत ही अनुनय भरकर बोला, "ऐसी बात मत कर, छगन! ऐसा कहने से फिर जुलुम होगा, और मान या न मान, मैं जैन हूँ। बूढ़ा हो गया, यहीं पैदा हुआ। मैं कोई जुलुम नहीं चाहता।"

"फिर कांग्रेसी लड़कों को लायेंगे, महाराज?"

"कांग्रेसी? इस इलाके में कांग्रेसी कौन है? सब जनता हैं।"

"सब?"

"सभी।"

"महाराज, तुम जुलुम चाहते नहीं, हम नहीं चाहते। फिर भी जुलुम होता है। तुम जुलुम नहीं चाहते तो क्या चाहते हो?"

"बेगारी तो उठी नहीं, बाप।"

"कानून नहीं बना है?"

"कानून है, बेगारी भी है।"

"तो हम भी कहते हैं कि बेगार कोई न देगा।"

"तुम लोग अपना भला नहीं समझते। लड़के आयेंगे।"

"बात बढ़ाने से फायदा नहीं, महाराज!"

ख़बरें निश्चय ही प्रापर चैनल द्वारा घूमीं—क्योंकि सहसा एस० डी० ओ० चोट्टि आये, लगभग घंटे भर के लिए। गहरी सहानुभूति चेहरे पर लपेट कर छगन से बोले, "सब समझ गया। इमर्जेंसी के वक्त ग़लत घटनाओं में जो लोग मर गये हैं उनके परिवारों को कुछ हर्जाना देने के लिए हम कोशिश कर रहे हैं। अब इमर्जेंसी नहीं है, लेकिन क़ानून मानकर चलने की ज़रूरत तो है ही। क्या बात हुई तीरथनाथ बाबू के साथ, सो सुना ?"

"मेरी बात हुई है।"

"क्या बात ?"

"महाराज बेगार लेंगे, मजूरी नहीं देंगे। मैंने कहा, हम बेगार नहीं देंगे। उस पर वह बोला, कांग्रेसी लड़के अब जनता के लड़के हैं। वे आयेंगे। ज़ुलुम करेंगे।"

"ऐसी बात है," एस० डी० ओ० सोच में पड़ गये। बोले, "इमर्जेंसी नहीं है। फिर भी इस तरह की बातें !"

"महाराज, क्या बताया, क्या नहीं है ?"

"इमर्जेंसी।"

"वह क्या है ?"

"वह बहुत बुरा समय बीता है। इमर्जेंसी ख़तम होते ही नये चुनाव हुए। तुम सबने वोट दिये। सो देखो, चोट्टि को लेकर तो बहुत हुआ। बेगार अब ग़ैरक़ानूनी है, यह जिस तरह सच है, उसी तरह यह भी सच है कि जितना संभव हो बातचीत से समझौता कर लेना चाहिए।"

'महाराज, बुरा न मानना। हमारे गोली लगी थी, नहीं सोचा था कि बच जाऊँगा। और तुम भी लाला की बात मान लेने को कह रहे हो ?"

"यह तो नहीं कहा।"

"लाला हमारी कोई बात नहीं सुनेगा। हम उसकी सारी बातें सुनें और मानें, तो ऐसा समय बुरा क्यों नहीं है, बताइये तो ?"

एस० डी० ओ० ने मन-ही-मन नोट किया कि छगन की बातों का तरीक़ा बाग़ियों का-सा है और वे बोले, "ख़ुद कुछ मत करना। ज़रूरत होने पर ख़बर देना। और हाँ, स्वरूपप्रसाद के आदिवासी 'मंगल भारती' के लोग तमाम ख़ून-डकैतियों के मामले में फँसे हैं और वे फ़रार हैं। उनका पता मिलते ही पुलिस को बताना, इनाम मिलेगा।"

"अच्छा, महाराज !"

चोट्टि सब सुनकर बोला, "बुरा समय कैसे काटा, वह तुम लोग

[illegible], आँखों से देख रहे हैं।"

[illegible] कुछ देर तक चुप रहा। उसके बाद बोला, "और काम क्या [illegible] सब लोग चड्ढा के ईंटों के भट्टे में काम करेंगे।"

"यही ठीक है।"

"जंगल का काम कर नहीं सकेंगे। अब कांग्रेसी लड़के उस ठेकेदारी को [illegible] रहे हैं।"

किन्तु अंचल में लेबर का खिचाव हुआ। सदस्य बेकार के लिए सदस्य नहीं बने थे। उनका भाई इस समय धनबाद में बड़ा नामी ठेकेदार था। और बड़े भाई का लड़का ही उसका सबसे बड़ा रक्षा-कवच था। वह ट्रेड-यूनियन चलाता था। धनबाद की खानों के कुली उसके साम्राज्य में थे। भाई मज़दूर भरती करने वाले को और कुछ आदिवासियों और परिगणित जाति वालों को भेजता, विशेषतः आदिवासी धनबाद जाते रहे थे। चोट्टि सूखी हँसी-हँस कर बोला, "कोयला कुली इस खान में काम करेंगे, पुराण मुंडा बनकर निकलेंगे।"

अचानक तीरथनाथ ने भी समझा कि केवल अत्याचार से लेबर नहीं मिलेगी। पहले तो इस अंचल की छितरी हुई बस्ती है। फिर ख़ुद सदस्य की परोक्ष सहायता से अगर लेबर चली गयी तो खेत कौन जोतेगा ? लाचार होकर उसे ही कहना पड़ा, "मजूरी दूँगा, काम करो।"

"दिन के दिन, हाथों-हाथ।"

"हफ़्ता दूँगा।"

"हाँ, हफ़्ता दोगे गुंडे बुलाकर !"

"वह सब हो चुका।"

छगन अपनी आदत के ख़िलाफ़ ग़ुस्से में भरकर बोला, "हो गया ? जो हो गया ! युगल और दुखा—मेरी लड़कों की जान लौटेगी ? मेरी पीठ सीधी होगी ? क्या हो गया ?"

तीरथ बोला, "दस दिन डाकू के मगर एक दिन साधू वाला हाल है। जो करना हो कर। किन्तु मेरे भी दिन आयेंगे।"

यह बात सुनकर उषा के घर में रहने वाला स्वरूप के दल का मुंडा बोला, "न, न, और नहीं सह सकते।"

चोट्टि बोला, "तू फिर कुरमी के जंगल में चला जा। तुम्हारे ऊपर इनाम है। लाला के उस लड़के के पास जाने पर मौत, गाँव में पुलिस आने पर मौत।"

उसकी बात ही सच हुई। तीरथनाथ तोहरी चला गया। सारी बात

सुनकर रोमियो ने कहा, "इस वक्त हमें लेबर की ज़रूरत है। इस वक्त तुम्हारी बात कौन सोचे?" रोमियो ने 'आप' नहीं कहा। "तुमको मदद देने में मेरा यह हाल हुआ। तो तुमको क्यों मुश्किल हो रही हो?" उसने ज़ोरों से कहा, "और तुम भी मान लो न!"

तीरथ खिन्न होकर बोला, "आप लोगों को तो हरजाना भी मिल गया, कुछ फ़ायदा ही रहा।"

"बापू 'इयाड' ने जो हमारी धुलाई की, उसकी आधी भी धुलाई होने पर तुमको पता चलता। रुपयों से उस धुलाई का हरजाना वसूल नहीं होता।"

लाचार तीरथ गाँव लौट आया। अब उसे लगा कि उसके बेटे जो कहते थे, वही ठीक है। क्या होगा ज़मीन-जायदाद का बेकार झमेला लेकर पड़े रहने से? बहुत उमर हो गयी। सब बेच-वाच कर पटना चले आओ। शायद उनकी बात ही ठीक है। उसे लगा, जैसे जमीन-जायदाद के मज़े में किसी ने कड़वाहट पैदा कर दी हो। अपने ही दुख से तीरथनाथ को रोना आ गया। सब-कुछ कैसा था! चोट्टि, छगन सब जिस तरह मामूली मजूरी लेते थे, बेगार देते थे, कभी व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं बिगड़ता था। गाँव के लोग कैसे बदल गये हैं! तीरथनाथ तो वैसा ही है। बेगार तो रिवाज़ है, या जुलुम है? वे लोग बदल क्यों गये? कब से तीरथ उनके परबों पर नहीं गया? पहले देखने जाता था। जिनके साथ यह किचकिच हो, तीरथ आज भी उनके साथ खुलापन समझता था। उसे किताब पढ़ने या सिनेमा देखने या रेडियो सुनने का शौक नहीं था। दिल बहलाने के लिए वह मोतिया धोबिन से क़िस्से सुना करता था। धोबिन के नाम से प्रेमिका की बात याद आयी और तीरथ ने मन-ही-मन कहा, 'मेरे कलेजे में चोट पहुँचायी है, उसमे तुझे ही महापाप होगा।' और साथ-ही-साथ उसे खुशी हुई। उसके बाद लगा, इस बार रबी में अरहर बोना है। चोट्टि के पिता बिसरा के साथ उसके पिता तो कब कौन फ़सल बोनी होगी, इस पर सलाह लेते थे। उसने गहरी साँस ली, रोमियो ने मदद नहीं दी!

रोमियो और पहलवान हरबंस चड्ढा की ब्रिकफ़ील्ड में चोट्टि आये। उनके साथ जनता के युवक पक्ष के चार लोग थे। चोट्टि और छगन के पहचाने चेहरे थे। तब भी हाथ में बन्दूक रहती थी, अब भी थी। रहती ही थी।

रोमियो ने हरबंस से कहा, "यह हमारे लेबर हैं।"

"किस तरह?"

"घर बेचकर आपने उनके घुसने का दरवाज़ा भी तो बेच दिया।"

"इस बात के क्या मतलब हैं?"

रोमियो सहज भाव से झूठ बोलने में अभ्यस्त था, "भाई ने तो अच्छा कहा था कि जंगल की ठेकेदारी बड़े मुनाफ़े का रोज़गार है। वह चरका था। कारबार नुक़सान का है। सो जो भी हो, सारी जायदाद के साथ ही कारबार लिया है।"

"उससे क्या?"

"तो जायदाद माने क्या लेबर नहीं होता?"

"लेबर की बात लेबर के साथ है।"

"उनको कल भेज देंगे।"

"कभी नहीं। मेरे साथ बात कर वे काम कर रहे हैं।"

"अरे पंजाबी कारबारी! तुम समझते नहीं!"

"खूब समझता हूँ, बिहारी ठेकेदार मुंडे।"

युवा जनता में से एक बोला, "नहीं चड्ढा, तुम समझते नहीं। बाद में समझोगे।"

वे चले गये, हरबंस एस० डी० ओ० के पास गया। वे बोले, "वे लेबर खचड़े हैं। मुझे पता है कि वे रोमियो और पहलवान से पेशगी रुपये लेकर भी आपके यहाँ काम में लग गये हैं। आप उनको छोड़कर दूसरा लेबर लें।"

"यह कह क्या रहे हैं? वे एक दिन के लिए भी नहीं गये।"

"आपको बताकर जायेंगे? आदिवासी और तफसीली लोगों की बदमाशी आप नहीं समझते। आप उनकी तरफ़दारी लेकर बात न करें। स्वरूपप्रसाद का नाम कभी सुना है?"

"सुना है।"

"उसके दल के साथ आपके लेबर की साँठ-गाँठ है। उस दल को पकड़ने में ही तो शंकर मारा गया।"

"इन्होंने ही तो मारा।"

"ओ हो, उन लोगों ने तो उसकी क़ीमत भी चुकायी, चड्ढाजी! वह बात मत भूलियेगा। देखिये, जो कुछ कह रहा हूँ।"

हरबंस ने बहुत देर में समझा कि रोमियो के गड़बड़ करने पर एस० डी० ओ० इस शासन में उसे मदद न देंगे। ठंडी साँस लेकर उसने कहा, "क्या करूँ? चुटकी बजाते लेबर कैसे मिलेगा?"

"टाइम ले लीजिये, टाइम। म्यूचुअल किये दे रहा हूँ। आपस में।"

"म्यूचुअल—आपस में?"

"हाथ का काम पूरा कर लें। वे भी तो ठेकेदारी लेने के बाद जंगल

में नहीं घुसे हैं। देख-दाख लें।"

उन्होंने ही रोमियो को सब बताया। रोमियो बोला, "ठीक है। मैं उन्हें बस एक बार हाथ में पाना चाहता हूँ। चड्ढा नहीं, लाला नहीं, मैं अकेला हूँ, ऐसी हालत करना चाहता हूँ। उसके बाद मैं देख लूँगा कि उन्हें किस तरह क़ाबू में किया जाता है। उनकी चमड़ी उधेड़कर जूते बनवाऊँगा।"

रोमियो उस मौक़े का इन्तज़ार कर रहा था। बरसात आयी। बरसात में पेड़ों की कटाई नहीं होती। ब्रिकफ़ील्ड का काम भी नहीं होता। रोमियो मौक़ा देखने गया कि कोई हमला या कार्रवाई करने पर किस तरह मदद मिलेगी, और सरकार की तरफ़ से लकड़ी जमा करने का ठेका ढँग से मिले। वे लोग बहुत दिनों के लिए ग़ायब हो गये और हर तरफ़ से झगड़ा ख़त्म हो गया, यह सोचकर सबको चैन आया। लेकिन वे अक्टूबर के शुरू में लौटे। पवित्र देवी-पक्ष चल रहा था। चोट्टि स्टेशन के कर्मचारी दुर्गापूजा करेंगे, इसलिए मूर्ति का ऑर्डर कलकत्ते गया। इस उपलक्ष में 'संकट-तारिणी दुर्गा' और 'छिपा रुस्तम' तसवीर लाने की बात हुई। और पहले की बातों को भूलकर रोमियो ने बताया कि पूजा के बाद ही उसे जंगल में लेबर की ज़रूरत है। चड्ढा के खाते में जितने लोगों के नाम हैं, सबकी ज़रूरत है। एस० डी० ओ० ने कहा, "बात थी कि चड्ढा और लाला के काम हो गये हैं...।"

"न, न, मेरा सरकारी कंट्रैक्ट है।"

बात चोट्टि ग्राम में फैली। कई दिन सब चुप रहे। उसके बाद दिशा ने कहा, "मैं, उपा और सोमचर चले जायें। इस जुलुम में पुलुस आयेगी। हमें स्वरूप बना देंगे। सारे जवान लड़कों का जाना ही अच्छा है।"

चोट्टि बोला, "जाओगे कहाँ?"

"देखें।"

वे लोग कब गये, कितनी रात को, किसी को पता न चला। चोट्टि ने समझ लिया कि अब सोमचर से उसकी भेंट न होगी, भेंट नहीं होगी हरमू के बेटे लाल के साथ। अब वे लौट न सकेंगे। रोमियो, पहलवान और चार आदमी जंगल देखने गये। चड्ढा के आदमी ही उन्हें ले गये। रोमियो बोला, "तुम चले जाओ। इस तरह के जंगल में हम खो नहीं जायेंगे।'

हँसते-हँसते वे जंगल में घुसे, घुसते ही गये। चारों युवक लौट आये। वे जीप लेकर तोहरी के बँगले से शराब लेने गये।

उन्होंने ही रोमियो और पहलवान को अन्तिम बार जीवित देखा था। उसके बाद बाज़ार से और भी शराब लेकर वे गये थे। 'गुरु' की आवाज़

[illegible] अपने-अपने ढँग से हरी घास पर लुढ़क गये थे। तब उन्होंने [illegible] सुनी और चूँकि वे कायर थे, इसलिए 'भालू है' कह कर जीप [illegible] लौट आये। उसके बाद बाक़ी शराब समाप्त की। नशे की [illegible] उन्हें लगा कि जंगल में अगर रोमियो और पहलवान भालू के हाथों पड़ जायें तो मर सकते हैं, नहीं भी मर सकते हैं। ज़िन्दा लौटने पर [illegible] उनसे बुरा बदला लेंगे। इसी बार कंट्रैक्ट लेने में पहलवान ने एक पिछली युवलीग वाले के पेड़ू में ऐसा डंडा मारा था कि वह ख़ून का पेशाब करते हुए अस्पताल में मर गया। उस पर भी पहलवान का कुछ नहीं हुआ। इन चारों को मारने पर भी उन लोगों का कुछ न होगा। इसलिए जान बचाने के लिए धनबाद चलो। तोहरी से धनबाद जाने के [illegible] नशे में चूर वे एक आदमी की खान में धँस गये। दूसरे दिन निकलने में दोपहर हो गयी। ड्राइवर मारा गया, एक आदमी दिमाग़ में चोट लगने से बेहोश होकर अस्पताल में पड़ा रहा। बाक़ी दो आदमियों ने तरह-तरह की चोटों के साथ अस्पताल में बिस्तर पकड़ा।

इसका परिणाम हुआ कि रोमियो और पहलवान की कोई ख़बर ही नहीं मिली। दुर्घटना की रात को ही चोट्टि गाँव के लड़के घर लौटे। सोमचर और लाल बोले, "हम गये थे, इस बात को कोई न जाने। दिशा चला गया।"

"कहाँ गया?"

"कुरमी।"

"क्यों?"

"वह फिर अड्डे को भागेगा।"

दुर्घटना के दूसरे दिन तलाश करने पर रोमियो और पहलवान नहीं मिले। उनका क्या हुआ, यह कोई न बता सका। अंत में जंगल में गायें चराते एक उराँव लड़के ने लकड़बग्घे और सियार की खींचतान सुनी। कुतूहलवश आगे बढ़ने पर उसने रोमियो और पहलवान की लाशें देखीं। दोनों के शरीरों में तीर लगे थे।

इसके परिणामस्वरूप जैसा शोरगुल हुआ, वह अप्रत्याशित था। उनके शरीरों का दाह-संस्कार प्रधानमंत्री के हाथों किया गया। कांग्रेस और जनता—दोनों ही कार्यालयों से शव पर मालाएँ चढ़ायी गयीं। और सदर के पुलिस-शिकारी कुत्ते लेकर जंगल में घुसे। सबने इस घृणित हत्या को धिक्कारा। पुलिस ने कहा, "जब तीर है तो आदिवासियों ने मारा है।"

पुलिस गाँव-के-गाँव छानती रही। अन्त में पुलिस ने आशा छोड़ दी। जानवर की तरह हूटे मारने पर भी किसी ने कुछ क़बूल नहीं किया। एस०

डी० ओ० से हरबंस और तीरथ बोले, "किसने मारा है ? यह क्या आसान बात हुई ? इसके बाद हम तीर खायेंगे ?"

एस० डी० ओ० पवित्र संकल्प से वज्र के समान कठोर होकर बोले, "इतना बड़ा अन्याय सहन नहीं किया जायेगा।"

"क्या करेंगे ?"

"सारे तीरंदाज आदिवासियों को चोट्टि के मेले में लाऊँगा। पुलिस से घिरवाकर रखूँगा। उसके बाद देख लूँगा।"

"अरे, पहले हम लोगों की हिफ़ाजत का इन्तज़ाम कर दीजिये। हम और लालाजी अब डर गये हैं।"

"कर रहा हूँ।"

"चलिये, लालाजी !"

दोनों एक साथ घर लौटे। इस तरह रोमियो और पहलवान की मृत्यु सार्थक हुई। लाला और हरबंस दोनों दो युगों के आदमी थे। उनकी महान मृत्यु से यह दोनों मिल गये। हरबंस बोला, "आपके घर में तो नौकर-चाकर ही हैं। अब आप मेरे घर में क्यों नहीं रहते ? आप अकेले पड़े हैं, यह जानकर मुझे तो चैन नहीं आयेगा।"

"जैसा कहो, भैया !"

एस० डी० ओ० ने तहसीलदार को बुलाकर गाँव में डुग्गी पिटवाने की बात कही। इस बार चोट्टि के मेले में आना ज़रूरी था। जो न आयेगा उसे दोनों महानायकों का हत्यारा समझकर पकड़ लिया जायेगा।

चोट्टि गाँव में भी डुग्गी पिटी। स्टेशन पर पूजा का ढोल बजा। वहाँ भीड़ नहीं थी। मुंडा और परिगणित लोगों की उपस्थिति वहाँ अवांछित थी। यह समझा गया कि सबको ही आघात लगा है। रोमियो और पहलवान के अंचल के सारे आदिवासियों को मार डालने पर किसी को 'अप्रत्याशित' न लगता। आदिवासी हों, तफ़सीली-परिगणित जाति वाले हों, रोमियो उन्हें मारे, यह तो होता ही है। लेकिन किसी एक या कई आदिवासियों का रोमियो आदि को मारना अप्रत्याशित घटना थी। रोमियो आदि मारते थे, मरते नहीं थे। सारे शासनों में यही नियम है।

ढोल की आवाज चोट्टि के घर में आयी। दूर से आदिवासी और तफ़सीली औरतें और बच्चे ललचायी नज़रों से स्टेशन की ओर देख रहे थे। चोट्टि ने कुछ सोचा, सोचा और सोचता ही रहा। उसके बाद बोला, "सोमचर, चल, श्मशान के पत्थर पर फूल चढ़ायें।"

चोट्टि ने कोयेल, मुँगरी, बाबा, माँ की समाधियों के पत्थरों पर फूल चढ़ाये। उसके बाद हवा की ओट होकर झुककर बीड़ी सुलगायी। बोला,

[illegible] स्वर में, "तुम लोगों ने उन्हें मारा ?"

"[illegible]।"

"कौन-कौन था ?"

"दिशा, उषा और लाल।"

"और कोई न था ?"

"नरसिंगगढ़ के मुंडा रास्ते पर नज़र रखे हुए थे।"

"किसने मारा ?"

सोमचर ने सब साफ़-साफ़ बताया। "इस हत्या की योजना दिशा की थी। उसने पहले ही कहा था, कि ये जिन्दा रहे तो फिर जुलुम होगा। जुलुम करने के लिए स्वरूप के सारे दल को पकड़ना था। इनके मरने पर भी जुलुम होगा। जब जुलुम से बचा नहीं जा सकता तो इनकी हत्या ही ठीक है।"

"सारे बातें दिशा ने अकेले कही थीं ?"

"पहले अकेले। उसके बाद सब ने ही राय दी। पहले वे चले गये और नरसिंगगढ़ के मुंडा लोगों से बातें कीं। तीर-धनुक एक बरगद की डाल पर छिपाकर रख दिये गये। उसी गाछ पर वे छिपे रहे। राजबंस चड्ढा के पुराने आदमी जंगल दिखायेंगे, यह अन्दाज उन्होंने लगा लिया था। रोमियो और पहलवान ने जंगल में बहुत घने घुसकर उनके लिए सुविधा कर दी। सोमचर के चारों आदमी चारों ओर से घिर आये। पहलवान ने जान की भीख माँगी थी। रोमियो ने उन लोगों को गालियाँ दीं।"

"मारा किसने ?"

"जिनका हक था। स्वरूप के कारण दिशा ने एक को, दुखा के कारण उषा ने दूसरे को।"

चोट्टि चुप रहा। उसके बाद बोला, "चलो, घर चलें। और किसी को मत बताना।"

"ना।"

"दिशा नहीं, तू, उषा और लाल मेरा पैर छूकर किरिया खा कि किसी से नहीं कहेगा।"

उन्होंने क़सम खायी। चोट्टि ठिठककर गुमसुम रहा। वह बहुत ही भिन्न प्रकार का हो गया। खेत पर बैठे आवाज में सहसा बहुत ही जोश लाकर हरमू से बोला, "एतोया तुम्हारा एक भाई है। यह बात किसी दिन भूलना मत, हरमू !"

"नहीं, आबा !"

अचानक वह हरमू की माँ से रात में बोला, "तुझे पता नहीं, लेकिन

मचान के सिरहाने दीवार में एक डिब्बा गड़ा है। उसमें रुपये हैं। बहुत दिनों के जमा किये हुए हैं। तीन बीसी ऊपर एक रुपया है।"

हरमू की माँ से फिर दिन में कहा, "अब काम मत कर। थोड़ा पास बैठ।"

हरमू चिन्ता में पड़ गया। बोला, "आबा, तबियत कैसी है? कैसा लग रहा है, क्यों आबा?"

"बयस तो हो रही है, बाप! बाप गया, माँ गयी, कोयेल, मुँगरी—तमाम लोगों को मरते देखा, सबकी याद आ रही है।"

"नहीं, आबा! सहा नहीं जाता। तुम नहीं तो चाँद-सूरज नहीं। उस दिन की बात सोच नहीं सकता।"

"हरमू! बीरसा भगवान मर गये, धानी मर गया, स्वरूप मरा, चाँद-सूरज निकलते हैं बाप, मेरे मरने पर भी निकलेंगे। एक बात है।"

"क्या?"

"छगन भी बूढ़ा हो रहा है। उससे कहना कि मेले के दिन वह ढोल लेकर जाये। उसका बहुत दिनों का शौक है।"

"कह दूँगा।"

"और लाल सबसे कह आये, जो बूढ़े हैं, वे भी मेले में आयें।"

"सब डरे हुए हैं, आबा!"

चोट्टि हरमदेउ बन गया और अलौकिक मुसकराहट से चेहरा दीप्त कर बोला, "डर क्या है, बाप? मैं हूँ न?"

"डर गया।"

ढोलक सुनते-सुनते चोट्टि बोला, "डरना मत। पूजा नहीं देखने दी, ढोलक से डर रहे हैं। इस बार मेले में क्यों बुला रहे हैं? ना, कोई तीर छोड़ रहा है, उन्हें मार रहा है, पकड़ लेंगे।"

"हाँ, आबा!"

"इस तरह डरने से तो काम नहीं चलता।"

चोट्टि की ख़बर पर सब लोग उसके घर आये। चोट्टि बोला, "इस बार मेले में क्यों बुला रहे हैं, यह सब लोगों को मालूम है?"

"मालूम है।"

"किन्तु सब जाओगे।"

"सब?"

"हाँ, कुत्ते-कौए के सिवा गाँव में कोई न रहेगा। लड़के-लड़कियाँ भी जायेंगे। मुझे तुम लोगों ने बहुत काल तक बहुत मान दिया। सो यह मेरा हुकुम है। सब मेले में जायेंगे।"

"...जायेंगे, जायेंगे।"

"...हुकुम और है।"

"...हो, हे चोट्टि!"

"तीर-खेला के पहले नाच-गान है। तब तुम सबको बता देना, खुद भी ध्यान रखो, खेला के समय कोई तीर से निशाना नहीं लगायेगा।"

"तो यही होगा।"

"सब जाना, कोई डर नहीं है।"

सब आये थे। युवक लोग बहुत बुड्ढों को पीठ पर लादकर लाये थे। 1978 के विजयादशमी के दिन मेले में बहुतेरे आदिवासी आये थे। उतने आदिवासी किसी दिन किसी मेले में नहीं आये थे। सभी धनुक और तीर लाये थे। और हज़ार आदिवासियों पर नज़र रखने के लिए आये थे—ढाई सौ हथियारबन्द पुलिस। एस० डी० ओ०, दारोग़ा, तीरथनाथ, हरबंस—सभी आये थे। हवा में बहुत तनाव था।

नाच और गान बहुत थोड़े समय चला। उसके बाद शुरू हुई तीर चलाने की प्रतियोगिता। भिन्न-भिन्न गाँव के और कुलों के मुंडा और उराँव नगाड़े पर चोट मार रहे थे, डिम-डिम-डिम। लेकिन कोई आदिवासी आगे नहीं बढ़ा। एस० डी० ओ० तीखी निगाहों से देखते रहे, और मन-ही-मन उनका गुस्सा उमड़ता रहा।

मुँह के आगे भोंपू लगाकर वे चिल्ला उठे, "कोई क्यों नहीं आ रहा है? समझा है कि नहीं आओगे तो पार पा जाओगे? हर बुड्ढे को पिटवाऊँगा, जवान को पिटवाऊँगा, गोद के बच्चे को छीनकर थाने में जमा रखूँगा। बच्चों को वापस चाहोगे तो खूनियों को पकड़वाना होगा।"

सब चुप! बहत्तर नगाड़े बजने लगे, डिम-डिम-डिम। बहत्तर गाँव के आदमी आये थे।

"मत सोचो कि कोई मेले से घर लौटेगा। तीर खेलने क्यों नहीं आ रहे हो? क्यों नहीं आ रहे हो?"

चोट्टि अपनी पत्नी की ओर देख रहा था। हरमू की माँ की आँखें फैल गयीं। वह छगन की ओर देख रही थी। उसके बाद सबके ऊपर आँखें फिर गयीं। सब उसकी ओर देख रहे थे।

"क्यों नहीं आ रहे हो?"

चोट्टि निर्णायक लोगों की जगह से उठ खड़ा हुआ। हवा में ठंडक थी। ठंडक से भरी हवा में चोट्टि अठत्तर बरस का बुड्ढा मुंडा दिखायी दे रहा था। उसके सारे चेहरे पर और बदन पर अनगिनत रेखाएँ थीं। उसके

सफेद बाल पीछे की ओर गरदन के पास पीतल के छल्ले में लगे थे। कानों में सोला खोंसा हुआ था, उजली छोटी-सी धोती पहने था। धनुक और एक तीर। अपना तीर, वह हर बार व्रत पूजा के आचार के नियम से निर्णायक बनने के समय साथ लाता और ले जाता। मंत्रपूत तीर था। उसका उठ खड़ा होना ऐसा हुआ कि पल-भर में सारे नगाड़े रुक गये। अकेले छगन का चेहरा चमक उठा। उसका सिर नीचा हुआ और बड़ी गहरी ममता से वह हलके-हलके नगाड़ा बजाने लगा, अविच्छेद्य गम्भीर वेदना के साथ। चोट्टि ने उसकी ओर देखा और मुँह फेर लिया।

वह बोला, "कोई नहीं आयेगा महाराज, उन्हें मार दो।" एस० डी० ओ० अचानक चौंक पड़े और भोंपू उसके हाथों में देकर बोले, "तुम, तुम उनसे कहो।"

"बात तो उनसे कहने की नहीं है महाराज, तुमसे कहने की है। कौन मर रहा है, महाराज? खूनी को पकड़ने के लिए सब मर्दों को मारेंगे, सारे बच्चों को माँओं के कलेजे से खींचकर थाने में रखेंगे?"

"चोट्टि!"

"ठहरो महाराज! आज यहाँ खड़े-खड़े सारी बातें याद आ रही हैं। उस लाला के बाप के कारण मेरा बाप मरा। किसी दिन धोखे-अविश्वास की कोई बात नहीं हुई, फिर भी मेरे लड़के को जेहल भेजा, और उसे मैंने रेल के पहियों से बचाया। किसी दिन मुंडा, उराँव, दुसाध, धोबी अविश्वासी नहीं हुए। उससे क्या मिला, महाराज? हमें क्या दिया? हमें क्या दिया? जिनके खून के लिए हमारे ऊपर जुलुम होगा, उन्होंने जुलुम नहीं किये? लड़के-लड़कियों की इज्जत लेने गये थे, पहान-पहानी-मोतिया-रेल कुली-दुखा-युगल—छगन के घर के लड़के-लड़की सब मर गये, तब तो पुलुस आयी नहीं, महाराज? इस तरह का काम नहीं—इस तरह काम नहीं दिखाया।"

चोट्टि थोड़ा रुका। गला साफ़ किया। काले-काले चेहरों में जान आ गयी थी।

चोट्टि बोला, "तुम किसी को कैसे पकड़ोगे? इन्हें क्या मालूम है? अब सुनो, उनको मैंने मारा है।"

"ना—!" हज़ार गले बोल उठे।

"तुमने!"

"हाँ महाराज! अब मेले के जितने दुकानदार हैं, तुम सब मुंडा—उराँव—दुसाध—धोबी—सब-के-सब साक्षी हो। मैं वह काम कर रहा हूँ। जंगल में छिप आया और मन-ही-मन कहा, अब उनके हाथों किसी दिन

[illegible] लोगों की सफाई नहीं होगी, अब उनकी जान नहीं छोड़ूँगा। [illegible] जुलुम उठाये हैं, बहुत लहासें गिरायी हैं, गौरमेन ने उन्हें [illegible]।" कहते-कहते चोट्टि की आवाज़ ऊँची होती गयी और फटने [illegible] तरह मारा, जानते हो? पिछली रात को जब सब सो रहे [illegible] आकर गाछ में धनुक छिपा दिया। दूसरे दिन 'कुरमी जा रहा हूँ' बता कर यहाँ चला गया। जब लड़के चले गये तो बहुत सुविधा हुई। तभी [illegible] को 'माँ' नहीं कहने दिया महाराज!" चोट्टि ने चोंगा छोड़ दिया। छाती पर हाथ ठोककर कहा, "मैंने मारा, हाँ, मैं चोट्टि मुंडा हूँ। फिर इसके लिए एक बार जुलुम करो तो चोट्टि ग्राम में लाला और चड्ढा, तुम लोगों में कोई भी अपनी कचहरी में जिन्दा नहीं बचेगा। पुलुस? अँधेरे [illegible] जब [illegible] के दल के लोग तीर मार कर कुचले बिष को लहू से बुझायेंगे तो कौन पुलुस किसे बचायेगी? कोई जुलुम नहीं।"

चोट्टि की पत्नी किनारे हो गयी। छगन नगाड़ा बजाता रहा। उसकी मुसकराहट दुर्बोध थी।

एस० डी० ओ० उतरे चेहरे से बोले, "तुम! तुमने तीर मारे? तुम क्या निशाना देख सकते हो?"

चोट्टि निर्मल मुसकराहट से मुसकराया और बोला, "दिखाता हूँ।" उसके बाद मुंडारी भाषा में जल्दी से बोला, "धानी मुंडा! अपने निकट अपनी सच्चाई के लिए तुम्हारा नाम लेकर आज तुम्हारा तीर चला रहा हूँ।"

चोट्टि छोटे और तेज क़दमों से निशाने के विपरीत चला गया। सबसे कहा, "तुम लोगों को कोई डर नहीं है।" उसके बाद तीर छोड़ा। लक्ष्य-बेध किया।

उसके बाद वह निरस्त्र खड़ा रहा। खड़े-खड़े ही वह चिरकाल के लिए नदी, किंवदन्ती, अविनश्वर में घुल-मिल गया। जो एकमात्र मनुष्य ही हो सकता है। सारे आदिवासी आन्दोलनों को वर्तमान में ले आया, इस वर्तमान में जहाँ आदिवासी और परिगणित लोगों का संयुक्त आन्दोलन है।

कुछ पल और बीते। चोट्टि ने धनुक हरमू को दे दिया। हरमू ने उसे उठा लिया। बोला, "अ—ब मुझे पकड़ लो। मेरा एक ही तीर था।"

एस० डी० ओ० जादू-मंतर के प्रभाव को काट कर उठ खड़े हुए, आगे बढ़े।

किन्तु तभी आकाश में धनुक के साथ हाथ उठाकर हज़ारों आदिवासी

चिल्ला उठे, "नहीं !" जो आदिवासी नहीं थे, उन्होंने भी निषेध में हाथ उठाये।

एक ओर चोट्टि, दूसरी ओर एस० डी० ओ०, बीच में शून्य में उठे हजारों धनुक थे। और भी हजारों उठे हाथों में सावधान रहने की घोषणा !